एंटन रेफ़्रेग्फ़ियेे



सोवियत संघ की तसवीर

Anton Refregier

SKETCHES OF THE SOVIET UNION

(An Artist's Journey)

एंटन रेफ़ेभ्फ़िये

सोवियत संघ की तसवीर

(एक चित्रकार का यात्रा-वर्णन)

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक : नरेश वेदी

Антон Рефрежье
ОЧЕРКИ О СОВЕТСКОМ СОЮЗЕ
На языке хинди

P $\frac{11301\text{-}015}{014(01)\text{-}79}$ सोवियत संघ में मुद्रित

विषय-सूची

यह पुस्तक १६५६ और १६७४ के बीच सोवियत संघ की छः यात्राओं का परिणाम है। कुछ यात्राएं अल्पकालिक थीं और विभिन्न संगठनों तथा समूहों के निमंत्रण पर थीं — सोवियत शांति समिति, सोवियत विदेश सांस्कृतिक संबंध समिति, सोवियत कलाकार संघ (तीसरी अखिल-संघीय कांग्रेस में भाग लेने के लिए), व्यंग्य-पत्रिका 'क्रोकोदील' (जो अपनी पचासवीं वर्षगांठ मना रही थी) के निमंत्रण पर, और एक बार मास्को ललित कला संग्रहालय में मेरे चित्रों की प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए। इन वर्षों में मैंने आज़रबैजान, उक्रइना, जार्जिया और रूसी संघ के कई शहरों को देखा।

अरसे से मेरी कामना थी कि मुझे एक औसत सोवियत नागरिक की ज़िंदगी जीने का मौक़ा मिले। पहले की यात्राएं बहुत ही छोटी थीं, बहुत औपचारिक, बहुत से होटल, बहुत सी दावतें, बहुत सी रस्मी बैठकें और मुलाक़ातें। लेकिन इसके बावजूद कि अपनी पिछली यात्राओं के दौरान, जिनमें मैंने कई हार्दिक मित्र बनाये थे, मुझे लोगों और ख़ासकर कलाकारों की ज़िंदगी की ख़ासी अच्छी जानकारी मिली थी, फिर भी यह मेरा आख़िरी और लंबा प्रवास ही था कि जिसने मुझे ज़्यादा गहरी और सम्यक समझ प्रदान की।

यह १६७३ की गरमियों की बात है कि मैं और मेरी पत्नी एक साल वहां बिताने के लिए गये। यह एक बहुत ही प्रेरणादायी और सार्थक अनुभव था।

सोवियत संघ में हमारा आगमन संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति की मास्को यात्रा और इस भेंट से जनित तनावों को कम करने के बारे में हुए समझौते से प्रसूत बदलती फ़िज़ा में हुआ था।

उस साल बहुत कुछ हुआ। शायद सबसे महत्वपूर्ण घटना अक्तूबर में विश्व शांतिकामी शक्तियों की कांग्रेस थी, जिसमें मैंने भाग लिया था और जहां मुझे सांस्कृतिक सहयोग के विषय में इस विशाल सभा को संबोधित करने का अविस्मरणीय अनुभव हुआ था।

कलाकार संघ ने विज्ञान अकादमी की एक नयी इमारत में एक फ़्लैट का बंदोबस्त कर रखा था। इस सुसज्जित फ़्लैट में दो बड़े कमरे, एक बड़ी सी बैठक, ग़ुसलख़ाना, ख़ासी बड़ी रसोई और शयनकक्ष से लगी बालकनी थी, जिससे एक बाग़ और पेड़ दिखाई देते थे। मकान मास्को के एक नये इलाक़े में, लेनिनस्की प्रोस्पेक्त के पास ही बड़ी अच्छी जगह स्थित था। मेत्रो से वह नगर-केन्द्र से पंद्रह मिनट की ही दूरी पर ऐसे इलाक़े में था कि जहां बीस साल पहले ही तत्कालीन नगर-उपांत के सब्ज़ी बाग़ों और गांवों के सिवा कुछ भी न था।

फ़्लैट ने हमारे लिए मित्रों के साथ अंतरंग संध्याएं बिताना, घर पर खाना पकाना और ख़रीदारी करना संभव कर दिया। पास ही हमें कई सुविधाजनक दूकानें मिल गयीं — एक बेकरी, एक मिठाई की दूकान, दुग्धोत्पादनों की दूकान और अधपका खाना बेचनेवाली दूकानें। एक दिन टहलते-टहलते मैं ख़ासकर शिकार ही बेचनेवाली दूकान पाकर ख़ुश हो गया। यहां मैं हिरन,

बारहसिंगे, भैंसे और ख़रगोश और भांति-भांति के जंगली पक्षियों का मांस ख़रीदा करता था। मुझे ख़रीदारी करने में मज़ा आता था और कुछ ही समय के भीतर मुझे पड़ोस में रहनेवाले आदमी की तरह ही जाना और माना जाने लगा। पास ही दो सिनेमा थे, वे बस तो इतने ही दूर थे कि टहलते-टहलते चले जायें और नया मास्को सरकस भी ट्राली से १० मिनट के फ़ासले पर ही था।

जल्दी ही हमने परिवहन-प्रणाली की जानकारी हासिल कर ली, जो मेत्रो, बस या ट्राली द्वारा हमें सीधे या सवारी बदलने से मास्को के सभी हिस्सों में ले जाती थी। मास्को मेत्रो अपनी सफ़ाई और ख़ूबसूरती के लिए दुनिया भर में मशहूर है और चौथे दशक के मध्य में पहली लाइन के खुलने के बाद से उसका ५ कोपेक का (लगभग ६.५ सेंट या ५५ पैसे) किराया एक बार भी नहीं बढ़ाया गया है।

लाटविया, तुर्कमेनिया, अर्मीनिया की यात्राओं ने मुझे सोवियत संघ के विराट क्षेत्र का अतिरिक्त चित्र प्रदान किया। अपनी धाराप्रवाह रूसी के कारण मैं गाइडों या अनुवादकों के बिना आज़ादी से घूम सकता था। और कलाकारों, संग्रहालयकर्मियों, संपादकों, रेडियो तथा टेलीविज़न और कल-कारख़ानों में काम करनेवालों के साथ मेरी व्यापक जान-पहचान और विश्व शांति परिषद में निर्वाचित सदस्य के नाते मेरी सहभागिता ने मेरे लिए कितने ही दरवाज़े खोल दिये और मुझे सोवियत जीवन के बहुत से पहलुओं का व्यापक परिचय पाने का अवसर प्रदान किया।

हम थियेटर जाते, फ़िल्में और टेलीविज़न देखते। टेलीविज़न विशेषकर सहायक था, क्योंकि वह सोवियत संघ की ज़िंदगी में एक खुली खिड़की की तरह था।

हम कलाकारों – वेरेईस्की, गोर्यायेव, इमारीनोव और त्सीगल – के साथ बढ़िया सप्ताहांत बिताने उनके ग्रीष्म कुटीरों में जाते। और कितनी ही बार मैं निकीत्च, मिरेल शगीन्यान, मीनायेव तथा अन्य श्रेष्ठ कलाकारों के स्टूडियों में भी गया हूं।

अपनी पुस्तक में कई जगह मैंने सोवियत प्रकाशनों का उपयोग किया है – कुछ को संक्षिप्त करके और कुछ के मुक्त अनुवाद का।

काफ़ी बातें छूट भी गयी हैं। यद्यपि मैंने बोल्शोई थियेटर की नयी बैले प्रस्तुति 'आन्ना करेनिना' और ऑपेरा 'खिलाड़ी' सहित अन्य थियेटर भी काफ़ी देखे, पर मैंने यह अनुभव नहीं किया कि मैं सोवियत थियेटर के बारे में लिखने के लिए काफ़ी जानता हूं।

चाहता हूं कि नौजवानों से बातें करने के लिए मेरे पास कुछ समय और होता। कल-कारख़ानों और फ़ार्मों के लोगों के साथ मुझे संबंध और गहरे बनाने चाहिए थे। चाहता हूं कि मैंने बैले जगत के लोगों के साथ, लेखकों, संगीतज्ञों और वास्तुकारों के साथ कुछ और समय बिताया होता। मैंने सोवियत संघ की परिधि में आनेवाले आधे से भी कम जनतंत्रों को देखा और एस्तोनिया, मोल्दाविया, क़ज़ाख़स्तान, क़ीर्ग़िज़िया, बेलोरूस, उज़्बेकिस्तान, लिथुआनिया, ताजिकिस्तान न जा सका, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अलग और समृद्ध संस्कृति है। हो सकता है कि कभी आगे चलकर मुझे इसका मौक़ा मिल सके कि मैं इनके बारे में अनुपूरक लिख सकूं।

मैं वियतनाम के संघर्ष के कठिनतम वर्षों में सोवियत संघ आया था और इस तथ्य के

बावजूद कि सोवियत जन वियतनामी संघर्ष का सक्रिय समर्थन कर रहे थे और मैं उस देश का रहनेवाला था कि जो सैगोन की प्रतिक्रियावादी शक्तियों की सहायता कर रहा था, मैंने कभी भी किसी भी तरह के वैरभाव को न देखा और न अनुभव ही किया और जल्दी ही मैं यह जान गया कि सोवियत लोग संयुक्त राज्य अमरीका की विदेश नीति को अमरीकी लोगों के प्रति अपने रवैये से अलग करते हैं, जिनकी वे खुलकर सराहना करते हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका में जिन लोगों ने इस पुस्तक की पांडुलिपि पढ़ी है, उनमें से कुछ का ख़याल है कि मैंने गत महायुद्ध के बारे में सामग्री को बहुत ज़्यादा जगह दी है। हमारे देश में, जहां फ़ासिज़्म का अनुभव, उसके ख़िलाफ़ संघर्ष लगभग मुरदा इतिहास बन चुका है, लोगों का यह विचार सही हो सकता है। लेकिन सोवियत संघ में यह इतिहास ज़िंदा है। निजी तौर पर मैं सोवियत लेखक कोन्स्तांतिन सीमोनोव से सहमत हूं, जिन्होंने हाल ही में लेखक के कर्तव्य के बारे में बोलते हुए यह कहा था :

"कभी-कभी हमसे यह पूछा जाता है कि क्या युद्ध का विषय कहीं कला में अपनी आवश्यकता से अधिक तो नहीं जी लिया है? क्या द्वितीय महायुद्ध को बीते बहुत समय नहीं गुज़र गया है और हो सकता है कि अब समय आ गया है कि जब शांति के बारे में और सिर्फ़ शांति के बारे में ही लिखा जाये?

"मैं मानता हूं कि अब समय आ गया है कि जब शांति के बारे में सोचा जाये। और शांति के बारे में हम जितना ही सोचें, उतना ही बेहतर है। लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूं कि शांति के बारे में सोचते समय गत महायुद्ध के बारे में भूल जाना क्षम्य है।

"जो लोग यह चाहते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध को कभी आगे चलकर इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में वस्तुतः अंतिम विश्वयुद्ध कहा जाये, उन्हें शांति के बारे में सोचते समय युद्ध के सबक़ों को याद करना चाहिए और दूसरों को उनकी याद दिलाना चाहिए।"

सोवियत संघ में मेरे निवास के एक साल के दौरान मैंने प्रदर्शनियों में भाग लिया, अनेक लेख प्रकाशित कराये, कई व्याख्यान दिये और मेरी कृतियां कई बार समाचारपत्रों में छापी गयीं। और शांति कांग्रेस की बैठकों के दौरान तो मुझे अपनी कलाकृतियों के साथ एक ही सप्ताह के भीतर पांच सोवियत प्रदर्शनियों में उपस्थित होने का विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुआ था।

कलाकारों के स्टूडियों और सार्वजनिक प्रदर्शनियों में मैंने काफ़ी कलाकृतियों के चित्र खींचे और इस तरह रंगीन पारदर्शियों का एक ख़ासा अच्छा संग्रह बना लिया, जिन्हें मैंने संयुक्त राज्य अमरीका लौटने के बाद अपने व्याख्यानों में दिखाया है।

इस पुस्तक पर काम मास्को में शुरू हुआ था और वह लेनिनग्राद से न्यूयार्क तक अटलांटिक को पार करते समय सागर के इस अपार विस्तार पर जारी रहा। पुस्तक का काफ़ी भाग मेरे वुडस्टॉक स्थित घर में लिखा गया। मेक्सिको में छुट्टियां बिताने के लिए जाते समय मैं पांडुलिपि को साथ ले गया और कुछ विवरणों को मैंने गुआनहुआतो के सुरम्य पहाड़ों में पूरा किया और पुस्तक को अंतिम तौर पर मैंने वसंत में देश जाकर ही ख़त्म किया। इस पर काम करते समय, इतने प्रिय लोगों और स्थानों के बारे में लिखते समय मैंने अपार आनंद का अनुभव किया है।

अपनी पुस्तक 'एक कलाकार की यात्रा' (१६६५) की प्रस्तावना में मैंने कहा था:

"एक ही व्यक्ति के लिए किसी भी चीज़ के सभी पहलुओं को देख पाना बूते के बाहर की बात है। हर आदमी की आंखें उसके मस्तिष्क द्वारा अनुभूत किये जाने के लिए जो चुनती हैं, उसका निर्धारण आदमी के स्वभाव और उसके जीवन के समस्त अतीत द्वारा होता है।

"इस तरह निर्माता को ईंट और मसाले का ढांचा दिखाई देता है, तो मां को पारिवारिक प्रेम से आलोकित और स्नेहसिक्त घर नज़र आता है।

"यात्री के साथ भी ऐसा ही है। उद्योगपति की आंख सामग्री और उत्पादन पर, किसान की बुआई और कटाई पर, तो पत्रकार की निगाह शीर्षकों की सामग्री पर टिकती है।

"मैं कलाकार हूं। मैं दूसरे आदमी की आंखों से देख, या उसके कानों से सुन या उसके दिमाग़ से सोच नहीं सकता, इसलिए इस पुस्तक में आंकड़े कम ही हैं। इस पुस्तक में कोई प्रतिकूल कथन नहीं हैं – ये दोनों ही अन्यत्र पर्याप्त मात्रा में मिल सकते हैं।

"मैंने जो देखा और सुना, अनुभव किया और जाना – वह था लोग। काम करते लोग। आराम करते लोग। हर्षविह्वल लोग और शोकातुर लोग। उनकी आशाएं और उनके भय। उनके सपने। और इसीके बारे में यह पुस्तक भी है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक हममें घनिष्ठतर समझ पैदा करने में योगदान करेगी – वह समझ, जो हमें स्थायी शांति के अधिक निकट ले जायेगी।"

यह बात आज के लिए भी सही है।

मैं आशा करता हूं कि प्रस्तुत पुस्तक में मैं पाठक के साथ जिस जानकारी का सहभागी बन रहा हूं, वह संदेह और ग़लतफ़हमी को ख़त्म करने में सहायक होगी, अन्य देशों में लोगों में सोवियत जनता के बारे में जो मिथ्या प्रचार किया जाता है, उसका निराकरण करेगी। मेरा दृढ़ विश्वास है और इसके लिए मेरे पास इतने अधिक उदाहरण हैं कि सोवियत संघ के निवासी शांति के आकांक्षी हैं और सोवियत संघ के शत्रु होने का मिथक एक झूठ और गढ़ंत है।

कलाकार और व्यक्ति के नाते मैंने अपनी ज़िंदगी का काफ़ी भाग शांति के लिए कार्य को समर्पित किया है, क्योंकि मैं यह स्पष्ट देख सकता हूं कि युद्ध या युद्ध के ख़तरे से रहित दुनिया के लोगों के लिए शानदार ज़िंदगी के दरवाज़े खुल सकते हैं। यह विश्वास मेरे लिए एक सृजनात्मक, प्रेरणात्मक शक्ति रहा है।

और इसलिए मैं फिर कहूंगा कि मुझे आशा है कि यह पुस्तक शांतिमय सहअस्तित्व के लिए आवश्यक, स्थायी शांति के निर्माण में आवश्यक ज्ञान और समझ में योगदान करेगी।

मेरा बच्चा जल्दी ही पैदा होनेवाला है। अपने बेटे या बेटी के लिए मुझे ऐसी दुनिया चाहिए, जिसमें शांति हो।



१. रूसी संघ – मास्को

लाल चौक। क्रेमलिन

रूसी भाषा में "लाल" शब्द का दो अर्थों में प्रयोग होता है – रंग के लिए और ख़ूबसूरत के लिए और दोनों ही मास्को के लाल चौक के लिए पूर्णतः सार्थक हैं।

लाल चौक असल में एक लंबा आयत है, जिसकी एक तरफ़ लाल ईंटों की बनी दुर्ग की लंबी दीवार है, जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बुर्ज और फाटक हैं। सबसे ऊंचे बुर्जों पर याक़ूत के पंचकोने लाल सितारे हैं, जिन्होंने शाही रूस के पुराने धातु के दुहरे सिरोंवाले उक़ाबों की जगह ले ली है।

चौक के दूसरे सिरे पर, विश्वविख्यात संत बसील के गिरजाघर के सामने, मुख्य प्रवेशद्वार, स्पास्की बुर्ज है, जो अब सिर्फ़ बड़े अधिकारियों या विदेशी राज्याधिकारियों के लिए ही उपयोग में आता है। संत बसील का गिरजाघर रूसी वास्तुकला की सबसे अनूठी और नयनाभिराम मिसालों में एक है। उसके कितने ही गुंबज हैं, जिनमें कोई भी दूसरे जैसा नहीं है। गुंबज तरबूज़ की फांकों या अनन्नास की याद दिलानेवाले उभरे हुए गहनों या आड़ी-तिरछी जाली के स्थूलीकृत नमूने पर बने हुए हैं और यह सब चटकदार रंगों में रंगा हुआ है।

एक प्रसिद्ध दंतकथा है कि किस तरह ज़ार इवान (जिसे इवान भयानक कहा जाता है) ने, जिसने इसे बनाने का आदेश दिया था, इमारत को पूरा हुआ देखा और उसकी भव्यता से प्रभावित हो वास्तुकार-निर्माता से पूछा कि क्या वह, इसके बाद, कोई इससे भी ज़्यादा सुंदर इमारत बना सकता है। आदमी ने जवाब दिया, "जी, हां।" यह सुनते ही इवान ने उस आदमी को अंधा कर दिये जाने का हुक्म दे दिया।

गिरजाघर के पास ही नागरिक कूज़्मा मीनिन और राजा द्मीत्री पोझार्स्की का स्मारक है, जो सत्रहवीं सदी में रूस की आज़ादी के लिए लड़े थे। कभी यह स्मारक चौक के बीच में हुआ करता था, लेकिन हाल के वर्षों में इसे इधर ले आया गया, ताकि त्यौहारों के मौक़ों पर यहां जलूस बनाकर निकलते लोगों के लिए जगह की जा सके।

यहां मुझे अपने एक दोस्त का सुनाया क़िस्सा याद आ गया। "मैं अमरीकी टूरिस्टों के एक दल में था और एक दिन, लाल चौक में घूमते हुए मेरी निगाह रंगबिरंगी पोशाक पहने कुछ लोगों पर पड़ी, जिन्होंने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। मैंने सोचा कि क्रेमलिन की पृष्ठभूमि में उनके दल का चित्र बहुत सुंदर आयेगा। मैंने अपना कैमरा फ़ोकस किया कि तभी मैंने एक पुलिसवाले को अपनी तरफ़ इशारा करते देखा। 'तसवीर खींचने की इजाज़त नहीं होगी', अपने कैमरा को नीचा करते हुए मैंने सोचा। लेकिन बात ख़त्म कहां हुई थी, क्योंकि पुलिसवाला तो मेरी तरफ़ ही आ रहा था। मेरे दिमाग़ में एक विचार कौंध गया – 'हे भगवान! पड़ गये अब मुसीबत में! शायद मुझे गिरफ़्तार कर लिया जायेगा।' जब पुलिसवाला मेरे पास आया और उसने अपनी उंगली से मेरे कैमरा की तरफ़ इशारा किया, तो मैंने नीचे देखा और तब समझा कि वह मुझे लैंस-रक्षक – उसकी काली टोपी – दिखा रहा था, जिसे मैं उतारना भूल गया था!"



चौक के बीच में, क्रेमलिन की दीवार के पास, भव्य लेनिन समाधि है। कहा जाता है कि इसे वास्तुकार अलेक्सेई श्चूसेव ने एक रात में ही डिज़ाइन किया था और लकड़ी का अस्थायी ढांचा ढाई दिन के भीतर बनाया गया था। बाद में मूल डिज़ाइन को क़ायम रखते हुए इसका लाल ग्रेनाइट से फिर निर्माण किया गया। लेनिन की मृत्यु के बाद १९२४ में डिज़ाइन की गयी यह इमारत उस समय प्रचलित निर्माण शैली को प्रतिबिंबित करती है और उल्लेखनीय बात यह है कि यह समकालीन वास्तुकृति प्राचीन क्रेमलिन की पृष्ठभूमि के साथ कितनी अच्छी तरह से मेल खाती है, जिससे सिर्फ़ यही सिद्ध होता है कि सभी कालों और संस्कृतियों की श्रेष्ठतम चीज़ों को एक साथ रखा जा सकता है। समाधि पर दो प्रहरी दिन-रात दरवाज़े के दोनों ओर निश्चल खड़े रहते हैं, जो थोड़ा सा अधखुला रहता है।

सुबह ही समाधि के प्रवेशद्वार पर लोगों की लकीर बंधना शुरू हो जाती है, जो जल्दी ही अलेक्सांद्रोव्स्की उद्यान के उतार तक पहुंच जाती है। सोवियत संघ के सुदूरतम कोनों और विदेशों से लोग यहां आते हैं। समाधि के पीछे सोवियत संघ के प्रमुखतम व्यक्तियों का क़ब्रिस्तान है। यहां स्तालिन, कलीनिन, स्वेर्दलोव तथा अन्य नेता समाधिस्थ हैं। ईंट की दीवार में सर्वप्रथम अंतरिक्ष-यात्री गगारिन, जर्मनी की क्लारा ज़ेत्किन, जापान के सेन कातायामा और अमरीकी जॉन रीड, जिन्होंने क्रांति के दिनों मास्को में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दस दिन, जब दुनिया हिल उठी' लिखी थी, के भस्मी कलश प्रतिष्ठापित हैं।

क्रेमलिन भित्ति की दूसरी तरफ़ भूतपूर्व सीनेट की इमारत है, जो अब एक प्रशासनिक भवन है और इसके पीछे भव्य गिरजे हैं। क्रेमलिन में अब त्रोइत्स्की बुर्ज से प्रवेश करके कांग्रेस प्रासाद की नयी सफ़ेद संगमर्मर की इमारत की बग़ल से गुज़रा जाता है। यहां सादे सफ़ेद रंग की सुनहरे गुंबजोंवाली अविश्वसनीय सौंदर्य की एक पुरानी इमारत है, जिसके सलीब टीन के रस्सों से जगह पर जमे हुए हैं। गिरजाघरों के भीतर आदमी को चित्रों में अवगुंठित होने की अनुभूति होती है – फ़र्श से मेहराबदार छतों तक फैले भित्तिचित्र दूसरी तरफ़ जाकर उतरते हैं, उनमें चित्रित गोलस्तंभ और कई-कई मोमबत्तियों के शमादान हैं (अब भीतरी भाग में बिजली की बत्तियों का मंद आलोक रहता है)।

मूलतः काष्ठनिर्मित क्रेमलिन गढ़ी तातार हमले में जलकर ख़ाक हुई, फिर बनी और आख़िर, जैसे कि वह अब दिखाई देती है, ईंट की मौजूदा शक्ल में बनी। इसे एक और हमले का तब सामना करना पड़ा, जब सितंबर, १८१२ में नेपोलियन ने आबादी और सेना द्वारा परित्यक्त नगर में प्रवेश किया और अपनी सेना को क्रेमलिन में और घोड़ों को गिरजाघरों में टिकाया।

चौक में एक बार फिर लड़ाई अक्तूबर क्रांति के निर्णायक वर्ष में हुई थी, जब मज़दूरों की टुकड़ियों और लाल गार्ड इकाइयों ने ज़ारशाही के रक्षकों से लड़कर उन्हें भगाया था।

नवंबर, १९४१ में, जब नात्सी सेनाएं मास्को को घेरे में लेती जा रही थीं, तब क्रांति के उपलक्ष्य में यहां पारंपरिक फ़ौजी परेड हुई थी, समाधि की छत पर सलामी मंच के सामने से मार्च करके निकलती पलटनें सीधे मोरचे पर चली गयी थीं।



जून, १६४५ में वर्लिन के सोवियत सेना के अधिकार में आने और मित्रराष्ट्रों के सामने नात्सी जर्मनी के आत्म-समर्पण के वाद चौक में विजय परेड हुई थी।

एक दिन दैनिक 'प्राव्दा' पढ़ते समय मेरी निगाह में जून, १६४५ की विजय परेड की एक कहानी आयी, उन लोगों की कहानी, जिन्होंने उस परेड में भाग लिया था, और उनकी मौजूदा ज़िंदगियों की, वे जो काम कर रहे हैं, उसकी कहानी और युद्ध की उनकी यादों की कहानी।

जिसने भी यूरोप में फ़ासिज़्म के विरुद्ध मरणांतक संघर्ष के, धुरी राष्ट्रों, जिनका घोषित लक्ष्य संसार का आपस में विभाजन करना था, के अंग – जापान – के ख़िलाफ़ हमारी जंग के उन दिनों को देखा है, उसे उस परेड के प्रसिद्ध चित्र की याद आयेगी, जिसमें लाल सैनिक नात्सी पताकाओं को लाल चौक की पटरी पर घसीट रहे हैं।

एक ख़ास नाम – स्केपेंको – ने, और इससे भी अधिक इस बात ने मेरी निगाह को पकड़ लिया कि यह सैनिक जिस नगर का रहनेवाला था, किसी अद्भुत कारण से उसका नाम न्यूयार्क था। मुझे उससे मिलने की जिज्ञासा हुई। मैंने अपने मित्रों से बात की और इंतज़ाम कर दिया गया।

एक दिन तीसरे पहर के आरंभ में ही दरवाज़े पर घंटी वजी और जव मैंने उसे खोला, तो मैंने वहां एक आदमी को खड़े देखा, जिसे मैं चित्र से पहचान गया – वेशक, उम्र में वह ज़्यादा का लग रहा था और ज़रा भारी हो गया था।

आदमी ने अंदर आते हुए अपना परिचय दिया, "स्केपेंको!"

"कैसा क्षण है!" मैंने सोचा, "कैसी विरल मुलाक़ात है!"

"सचमुच, जव लोगों ने कहा कि एक अमरीकी कलाकार मुझसे मिलना चाहता है, तो मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूं!" स्केपेंको ने कहा।

मैंने कहा, "मैंने पढ़ा था कि आप जिस शहर के रहनेवाले हैं, उसका नाम न्यूयार्क हुआ करता था। यह वड़ी अजीव वात है। यहां हम दोनों ही न्यूयार्क के हैं – जिनमें हज़ारों मील का फ़ासला है। जव मैंने उस मशहूर परेड के बारे में हाल की रिपोर्ट पढ़ी, तो मेरा मन किया कि आपसे मिलूं और वातें करूं।"

हम कमरे में जाकर वैठ गये। दीवार पर लटके 'ओगोन्योक' के मई-दिवस अंक के आवरण ने स्केपेंको के ध्यान को खींच लिया।

"अरे, आपने वनाया था यह! यह मेरे पास है," उसने कहा।

मैंने उसे अपनी कृतियों के चित्र दिखाये और फिर हम वातें करने लगे।

"मैं वर्लिन में था। हमारी रेजीमेंट हमारे देश की सीमाओं से लेकर सारे रास्ते लड़ती हुई गयी थी। जानते हैं न कि वर्लिन लगभग वरवाद हो गया था। एयर मार्शल ग्योरिंग ने वादा किया था कि कोई भी विमान जर्मन रक्षा पांतों को भेद नहीं पायेगा। लेकिन हमारे हवाई जहाज़ और तोपख़ाने तो वहां पहुंच ही गये। हमारे जवानों ने राइख़स्ताग पर लाल झंडा लहरा दिया और लोगों ने अपनी खिड़कियों में आत्म-समर्पण के सफ़ेद कपड़े लटका दिये। हम आवादी को खिला रहे थे, कुछ व्यवस्था सी स्थापित कर रहे थे कि तभी, जून में मास्को से राजधानी भेजने के लिए ४० आदमी छांटने का आदेश आ गया। हमें कारण नहीं मालूम था, लेकिन घर, अपनी

ज़मीन पर वापस पहुंचने की संभावना ही रोमांचक थी। मैं छांटे गये लोगों में एक था," स्केपेंको ने कहा।

"मैं तो समझता था कि यह चुनाव बेमिसाल बहादुरी की बुनियाद पर किया गया था," मैंने कहा, पर स्केपेंको ने बात को अनसुना कर दिया।

"२४ जून की सुबह हम लेनिन संग्रहालय के पास क्रांति चौक में हाज़िर हुए। हममें से हर एक को एक-एक नात्सी पताका दे दी गयी। पताका-स्तंभ के सिर पर धातु की एक-एक तख़्ती लगी हुई थी, जिस पर किसी न किसी यूरोपीय शहर का नाम लिखा हुआ था। ये जर्मन अधिकार की पताकाएं थीं। मेरे लिए, और मेरे ख़याल से हम सभी के लिए इस पताका को हाथ में थामना बड़ी प्रबल उत्तेजना की बात थी – वह जिसकी प्रतीक थी, उसके लिए घृणा और साथ ही इस अनुभूति पर गर्व का मिश्रण सा कि हमने उसे फ़ासिस्टों से छीना है!

"परेड में हमें सबसे पीछे रहना था और बहुत देर तक हम और लोगों को गुज़रते देखते रहे। हलकी सी बारिश हो रही थी। आख़िर हमारी बारी आयी। अलग-अलग मोरचों से लाये गये दो सौ लोगों ने क़तारें बनायीं, पताकाओं को ज़मीन पर झुका दिया और अपना मार्च शुरू किया। चौक में प्रवेश करने के साथ हमने लोगों का एक शोर सुना, जो गूंजकर सारे चौक में फैल गया। जब हम समाधि के पास पहुंचे, तो जो बाजे बज रहे थे, वे अचानक ख़ामोश हो गये। क्षण मात्र के लिए निस्तब्धता छा गयी और फिर ढोल बज उठे! मुझे रोमांच हो आया।

"जैसे-जैसे हमारी क़तार लेनिन समाधि के आगे से गुज़रती गयी, हर आदमी बारी-बारी से पताका भीगी पटरी पर फेंकता गया। ढेर किसी दैत्य जैसा लग रहा था – सफ़ेद, काले और लाल कीचड़ में सने कपड़े के ढेर से पतली टांगों जैसे छोटे-छोटे डंडे बाहर निकल रहे थे।

"नात्सी पताका को फेंकते समय मुझे सामने समाधि, क्रेमलिन की दीवार और हलकी हवा में हिलोरें लेते लाल झंडे दिखाई दिये। बाक़ी ख़ामोशी में ढोलों की आवाज़ को सुनते हुए मुझे किसी बहुत ही ज़बरदस्त, बहुत ही शानदार बात की प्रखर अनुभूति हो रही थी। सारी मुश्किलों, सारी लड़ाई, हमारे देशवासियों की मौतों, हमारे नगरों के विनाश का अंत हो गया था! मैंने अनुभव किया, यह विजय है, यह हमारी विजय परेड है!"

लाल चौक के पास

लाल चौक से चलकर मैं हलके उतार से अलेक्सांद्रोव्स्की उद्यान की ऊंची, अलंकृत बाड़ और फाटक के सामने से निकलता हुआ अक्तूबर क्रांति अर्धशताब्दी चौक को पार करके मास्को होटल (जिसे उसी वास्तुकार ने डिज़ाइन किया है, जिसने लेनिन समाधि का निर्माण किया था) से प्रोस्पेक्त मार्क्सा के नीचे से पैदल सड़क पार करने की सुरंग की सीढ़ियां उतरा, दूसरी तरफ़ आया, भीड़भरे ज़ीने पर चढ़ा और फिर सड़क पर निकल आया। यहां, बायीं तरफ़ अठारहवीं सदी की एक हरी और सफ़ेद इमारत – ट्रेड यूनियन भवन – है, जहां पहले अभिजात क्लब हुआ करता था। मैं यहां कंसर्टों या सभाओं के लिए कितनी ही बार आ चुका हूं। इसके नयनाभिराम

भीतरी भाग में स्तंभदार हॉल है, जिसके ऊंचे, सफ़ेद स्तंभ बालकनी तक चले गये हैं और स्तंभों के हर जोड़े के बीच एक विशाल बिल्लौरी शमादान लटका हुआ है।

यह मास्को के विशिष्ट जनों के जमाव की जगह थी – कंसर्टों, धर्मार्थ बॉल-नृत्यों, कविता पाठों, चुने हुए बच्चों के लिए बड़े दिन की अपराह्न पार्टियों की, जिसमें बड़े दिन का पेड़ होता था, मास्को सरकस के जोकर होते थे और आइस्क्रीम और केक होते थे। यहां शामों को रेशमी टोप और समूरी अस्तरवाले कोट पहने आदमी सुंदर महिलाओं के साथ निजी बग्घियों और टमटमों में आया करते थे और उन्हें भीतर ले जाने के लिए दरवाज़े पर वरदी पहने चौकीदार हाज़िर रहता था।

जनवरी, १९२४ की कड़ी सरदी में इस दृश्य में नाटकीय परिवर्तन आ गया, जब लेनिन को "अलविदा" कहने के लिए, जिनका शव अंतिम दर्शन के लिए स्तंभदार हॉल में रखा हुआ था, इस इमारत में घुसने के इंतज़ार में सफ़ेद बर्फ़ की पृष्ठभूमि में काली आकृतियों की, हज़ारों-हज़ार लोगों की क़तारें फाटक से मकड़ी के जालों की तरह फैल गयी थीं।

इस इमारत से फूलदार उद्यानों से भरे स्वेर्दलोव चौक तक पैदल कुछ ही दूरी का रास्ता है, जहां बोल्शोई थियेटर की शानदार इमारत है, जिसके स्तंभ कांसे के चार घोड़ों और एक सवार को उठाये हुए हैं। १८२५ में पुराने थियेटर के स्थल पर निर्मित मौजूदा इमारत का उन्नीसवीं सदी के मध्य में एक विनाशक अग्निकांड के बाद पुनर्निर्माण किया गया था। रिख़ार्द वाग्नेर यहां सबसे पहले संगीत-संचालन करनेवालों में एक थे और उनका नाम उन अनेक विश्वविश्रुत हस्तियों – संगीतज्ञों, गायकों, नर्तकों, मंच अभिकल्पकों – में एक है, जिन्होंने बोल्शोई को विश्व-विख्यात बनाया है।

बोल्शोई थियेटर के सामने एक छोटा सा पार्क है, जिसमें एक फ़ौवारा है और रेतीली पगडंडी के किनारे बेंचें पड़ी हुई हैं। यहां हर साल, विजय-दिवस के दिन दोपहर को पेड़ों की डालों पर लोग हाथ के बने सूचना-पट टांग देते हैं, जिन पर लिखा होता है – "इस जगह ३६वें रिसाला डिवीज़न के लोग इकट्ठा होते हैं", "पांचवें बकतरबंद टैंक डिवीज़न के जमा होने की जगह यह है", आदि-आदि। पुराने साथियों के इस मिलन में भाग लेने के लिए लोग दूर-दूर से यहां आते हैं। अत्यंत मर्मस्पर्शी और कारुणिक पुनर्मिलन होते हैं – उन लोगों के, जिन्होंने बरसों से एक-दूसरे को नहीं देखा है। वे पुरानी यादें करते हैं, रोते हैं। शाम को, जब लोग चले जाते हैं, तो बिजली की रोशनियों में एकदम सफ़ेद-झक दीखते ये सूचना-पट पेड़ों पर टंगे रह जाते हैं।

पार्क से मैं चौक को पार करके सामनेवाली तरफ़, वीक्तोर अर्ख़ांगेल्स्की के साथ लंच के लिए होटल मेत्रोपोल आ गया। मेरा ख़याल है कि मेत्रोपोल पुराने मास्को के उज्ज्वल नवकला (आर्ट न्यूए) युग की सुंदरतम इमारतों में एक है। यह इमारत १९०३ में पूरी हुई थी और सिर्फ़ अपने समय के रीतिबद्ध अलंकरणों से ही नहीं, बल्कि रूसी रहस्यवादी चित्रकार व्रूबेल के विशाल मृतिकाशिल्पीय फलकों से भी अलंकृत है।

मास्को में लंच – मध्याह्न भोजन — अभी भी ज़रा समस्या साबित हो सकता है। कोई नहीं कह सकता कि कब 'इंतूरिस्त' अपने पर्यटकों के किसी बड़े जत्थे के लिए पूरे के पूरे भोजनकक्ष

को ही अपने क़ब्ज़े में न ले ले। दरवाज़े पर एक भारी-भरकम और गुस्सैल दरबान का पहरा होता है और उसका फ़तवा "न्येत मेस्त" (जगह नहीं हैं) अंतिम और अपरिवर्तनीय होता है। संभाव्य बाधा से बचने के लिए हमने होटल में गली से प्रवेश किया, संगमर्मरी ज़ीने पर चढ़कर लॉबी में पहुंचे और वहां से भोजनकक्ष में घुसे। अपने अवसर को और भी सुनिश्चित करने के लिए मैं दो उंगलियां उठाये-उठाये सीधा हैड वेटर के पास गया और अंग्रेज़ी में बोला, "टू (दो) !" मेरा चटकीला, धारीदार कोट भी सहायक सिद्ध हुआ। हमें कलकल करते फ़ौवारे के पास एक छोटी गोल मेज़ के आसपास बैठा दिया गया। इस भव्य वातावरण में यह हलका सा शोर बड़ा शांतिदायी होता है। मुझे याद आ गया कि बहुत पहले, जब बचपन में विशेष अवसरों पर मुझे यहां लाया जाता था, तो इस फ़ौवारे में सोना मछलियों पर मैं किस तरह मुग्ध होता था।

वेटर के आगमन के, जो एक ऐसी घटना है, जो समय की अनिश्चित सीमा तक जा सकती है, इंतज़ार में बैठे-बैठे वीक्तोर ने कहा, "यह पुराने अभिजात वर्ग का मिलनस्थल हुआ करता था। हां, ज़रा अपनी दायीं तरफ़ बैठे लोगों को तो देखो।"

मुझे मध्य एशिया – उज़्बेकिस्तान – का एक परिवार नज़र आया। पुरुष का चौड़ी कपोलास्थियोंवाला चेहरा तांबई रंग का था, उसके काले बालों पर मुसलमानों द्वारा पहनी जानेवाली टोपी थी। स्त्री अनोखी धारीदार रेशमी पोशाक, हार और चूड़ियां पहने हुए थी और उसकी गुंथी हुई चोटियां काली थीं। उनके साथ बड़ी-बड़ी काली आंखोंवाले, जो धनुषाकार भौंहों के कारण और भी बड़ी लग रही थीं, उनके तीन बहुत ही सुंदर बच्चे थे।

"जानते हो एंटन, यह याद रखने लायक़ दृश्य है। सोवियत सत्ता की स्थापना और शाही रूस के भूतपूर्व उत्पीड़ित इलाक़ों के अल्पसंख्यकों की जातीय स्वतंत्रता के पहले आदमी के लिए इन लोगों को इस भोजनकक्ष में बैठे देख पाना शायद ही संभव होता। बेशक, बशर्ते कि आदमी अपने इलाक़े के अत्यल्प धनिक वर्ग का न होता। लेकिन तब उसकी बीवी अपनी जातीय पोशाक न पहने होती – वह मास्को की महिलाओं की नक़ल करती होती।" तभी वेटर मेन्यू कार्ड लेकर आ गया। हमने अपनी-अपनी पसंद की और डेढ़ घंटे खाने का आनंद लिया, जो भोजन परोसे जाने में लगनेवाला सामान्य समय है।

वहां से निकलकर हम सड़क पार करके बोल्शोई थियेटर आ गये और वहां से मास्को होटल की तरफ़ चल दिये। कोने पर हम दायें गोर्की सड़क में हो लिये और कुछ टिकट ख़रीदने के लिए विख्यात मास्को कला थियेटर गये। मैं सोच रहा था – यह स्तानिस्लाव्स्की और नेमीरोविच-दानचेंको का घर है, मास्को कला थियेटर के सांगीतिक स्टूडियो का आवास है, 'कार्मेंसीता तथा सिपाही' जो प्राचीन ऑपेरा-पाठ की एक चौंकानेवाली प्रस्तुति है, राबिनोविच की मंच सज्जाएं, 'लीसिस्त्राता', 'दांतोन' का – जो सभी इतने स्मरणीय हैं – घर है। मुझे याद आया कि इस कंपनी ने अपने १९२६ के अमरीका के दौरे में कितनी सनसनी मचायी थी।

फिर हमने सड़क पार की और लाल ग्रेनाइट के आधारवाली नयी इमारतों के साथ-साथ चलने लगे। वीक्तोर ने कहा, "ये वे•पत्थर हैं, जो नात्सी 'विजित' मास्को में बनाये

जानेवाले अपने भावी 'विजय स्मारक' के लिए लाये थे। देखते हो न कि हमने ख़ुद इनका कितनी अच्छी तरह से उपयोग किया है!"

शादी

अलेक्सांद्रोव्स्की उद्यान के कोने में, आयुधशाला बुर्ज के पास क्रेमलिन प्राचीर मे लगी हुई अज्ञात सैनिक की समाधि पर अमर ज्योत जलती रहती है। किसी भी अपराह्न को, लेकिन विशेषकर सप्ताहांतों में, नवयुगल विवाह संस्कार से सीधे यहां आते हैं। वे ऊंचे, अलंकृत फाटक से प्रवेश करते हैं। दूल्हा काले लिबास में होता है और दुलहिन आम तौर पर लंबी सफ़ेद पोशाक में, पीछे लटकती ओढ़नी, सफ़ेद दस्तानों से ढंके हाथों में थमा उसका वैवाहिक गुलदस्ता।

धीरे-धीरे वे सीढ़ियों के पास आते हैं, आहिस्ता से उन पर चढ़ते हैं। संबंधी तथा इष्टमित्र उनके पीछे-पीछे होते हैं। जलती ज्वाला की कोर पर या उसके पीछे एक लंबी शिला पर दूल्हा-दुलहिन गुलदस्ता रख देते हैं और क्षण भर मानो ध्यान करते खड़े रहते हैं। दिन ढलते-ढलते शिला नाना रंगों के एक विशाल गुलदस्ते से पूरी तरह से ढंक जाती है।

वे यहां गरमियों में आते हैं, जब बाग़ में फूल खिले होते हैं और सरदियों में आते हैं, जब सारा भूदृश्य बर्फ़ से ढंका होता है और अपने डालिया, कार्नेशन और गुलाब अर्पित करते हैं। और इस प्रथा पर यहां सिर्फ़ राजधानी में ही नहीं, बल्कि हर कहीं चला जाता है – लोग अपने-अपने शहरों में जाकर गत युद्ध के वीरों के स्मारकों पर अपने पुष्प चढ़ाते हैं।

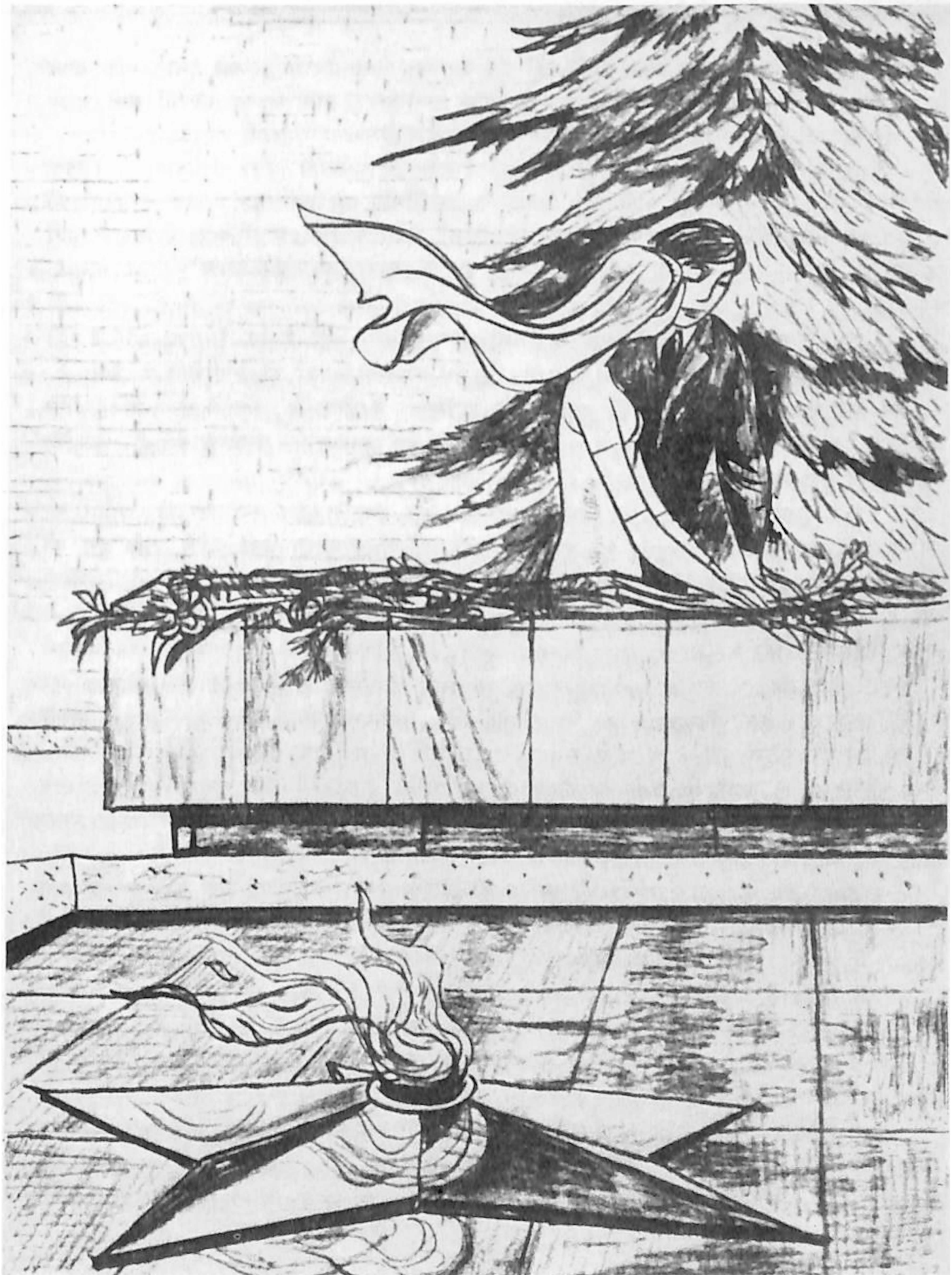
एक बार मुझे एक शादी में निमंत्रित किया गया। (विवाह की औपचारिक कार्रवाई सुरुचि-पूर्वक सज्जित विवाह-प्रासाद में सरकारी अधिकारी के सामने होती है। वहां से स्मारक पर फूल चढ़ाने और उसके बाद माता-पिता या किसी दोस्त के घर अथवा किसी रेस्तरां में बढ़िया दावत के लिए जाया जाता है)।

मैं जिस दावत में शामिल हुआ, वह एक दोस्त के घर थी। मेज़ पर भांति-भांति के स्वादिष्ट व्यंजनों से लदी प्लेटें और दमकती हुई बोतलें सजी हुई थीं।

क्षण भर को नवयुगल से अलग बात करने का मौक़ा मिला, तो मैंने स्मारक पर जाने की इस परंपरा के बारे में पूछा।

"यह एक परंपरा है, जो किसी तरह चल ही पड़ी है," दुलहिन ने कहा। "हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गये थे, चाहे अब यह एक प्रथा जैसी ही बन गयी है। वहां, एक ऐसे निजी सुख के क्षण में, जिसे हम बहुत ही गहराई से अनुभव करते हैं, इस विरोधाभास दृश्य और क्रेमलिन प्राचीर की सन्निधि में उस स्थान की भव्यता से बड़ी गहन भावना की अनुभूति होती है।

"हम वहां इसलिए जाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हम आज इसलिए ज़िंदा हैं कि दूसरों ने जानें दी हैं। मेरे पति को कभी किसी युद्ध में लड़ना नहीं पड़ा है। अपनी ज़िंदगियों में आगे देखने के लिए हमारे पास इतना सारा है। हमें इस सुख की, जो हमारा है, अनुभूति उन लोगों की



क़ुरवानियों ने दी है, जिनकी जानें जाती रही हैं। यह एक ऐसा यथार्थ है, जो हमारे साथ सतत वना रहता है, जिसे हम भूलते नहीं और जिसे हम उसी तरह अपने बच्चों को भी नहीं भूलने देंगे, जिस तरह हमारे माता-पिता ने हमें उसे जानना और समझना सिखाया था।

"हम दोनों ही लड़ाई के वाद पैदा हुए थे। हमारे वड़े होते-होते हमारे आसपास की ज़िंदगी आरामदेह और सुविधापूर्ण हो चुकी थी। शहरों का पुनर्निर्माण हो गया था, पुरानी इमारतों की मरम्मत हो गयी थी, नये शहर पैदा हो गये थे। हमारे देखने के लिए घावों के कोई निशान नहीं रह गये थे, लेकिन लोगों ने जो स्मारक खड़े किये थे, वे हमारे अनुवोधक, हमारी चेतना, हमारा अंतःकरण वन गये।

"आप जानते हैं कि हमारे यहां एक भी परिवार ऐसा नहीं है कि जिसका कोई-न-कोई युद्ध में न मारा गया हो। और इसका अनुभव उन सव एकाकी स्त्रियों की उपस्थिति में होता है, जो अव वूढ़ी हो चुकी हैं, उन सभी युवाओं की उपस्थिति में होता है, जिनके माता-पिता दोनों जाते रहे हैं। इसलिए हम उन वहुत से लोगों को, अपने जैसे युवाओं को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने अपना सभी कुछ न्यौछावर कर दिया था।

"वहां गुलदस्ता चढ़ाना कोरा प्रतीक नहीं है। यह हमारी गहन कृतज्ञता को, शांति की हमारी आकांक्षा को व्यक्त करता है। हम उन शक्तियों को अनदेखा नहीं करते, जो युद्ध को वढ़ावा देती हैं। हम जानते हैं कि हमारी सरकार की नीति शांति को वढ़ावा देना और वचाना रही है। हमारा संविधान किसी भी रूप में युद्ध के प्रचार का निषेध करता है। हमें स्कूलों में संसार के सभी लोगों का आदर करना सिखाया जाता है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम शांतिवादी हैं। हम. जनगण. के अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के अधिकार का समर्थन करते हैं। हमने वियतनाम की जनता को सक्रिय सहायता प्रदान की। आप शायद जानते हों कि उस वीरतापूर्ण युद्ध के चरम के समय हज़ारों सोवियत नवयुवक ऐसे थे, जो राष्ट्रीय मुक्ति सेना की तरफ़ से लड़ने के लिए स्वयंसेवक वनकर जाना चाहते थे। मैं जानती हूं कि हमारे देशवासियों ने स्पेनी जनता को गृहयुद्ध में अपनी सरकार की रक्षा करने के लिए भरसक सहायता प्रदान की थी। और अव चिली की ट्रेजेडी तो हमारे सामने ही है।

"हमारे देश में हमारे बच्चों को अतीत की चेतना प्रदान करने का एक कारगर कार्यक्रम है। गरमियों में बच्चे महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के संघर्ष-स्थलों की यात्रा करते हैं। वच्चे वूढ़े सैनिकों से जाकर मिलते हैं, उनसे वातें करते हैं और अज्ञात वीरों का पता लगाते हैं।"

मैंने परिवार के वारे में, लोगों के वीच संवंधों के वारे में, वहुत ही कम उम्र में शादियों पर, जो वहुत दिन नहीं चलती हैं, चिंता के वारे में, शानदार शादियों पर वहुत अधिक ख़र्च के वारे में और बच्चों के, नयी पीढ़ी के पालन-पोषण, माता-पिता के दायित्व के वारे में वहुत वहस-मुवाहसा सुना।

एक नानी ने मुझसे कहा, "हमारी पीढ़ी को इतना कम नसीब था, इसलिए हम बच्चों का ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान रखकर उन्हें विगाड़ रहे हैं। वे शायद हर ही वात को सहज मानते हुए वड़े हो रहे हैं। मेरे ख़याल में लोग इस अति संरक्षण और अति लाड़ पर पछताने लगे हैं। लेकिन

मेरे ख़याल में यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया ही तो है। देश-निर्माण के अपने प्रारंभिक वर्षों में हमें बहुत ही कम मिल पाया था और युद्ध में हमें इतनी ज़बरदस्त हानि उठानी पड़ी। और, आख़िर, हम नयी ज़िंदगी बना किसलिए रहे हैं? आनंद के लिए; निस्संदेह, भावी पीढ़ियों के लिए। हमारी समस्या हमारे बच्चों में उन्हें जो चीज़ें उपलब्ध हैं, उनके लिए आदर-भाव पैदा करना, उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास प्रदान करना है।"

मुझे शुरू वसंत का एक दृश्य याद आ गया, जब बर्फ़ पिघल रही थी और पैदल चलने की पटरियों पर पानी के डबरे बना रही थी। पटरी पर सफ़ेद समूरी कोट में गठरी बने अपने नाती के साथ एक बुढ़िया जा रही थी। बच्चे के कोट के कालर के नीचे पारंपरिक तरीक़े से बंधे मफ़लर ने उसे इस तरह उठा रखा था कि जिससे बच्चे की सिर्फ़ आंखें, बुना हुआ ऊनी टोपा और ऊंचे बरसाती जूते ही नज़र आते थे। डबरे के पास आने पर बुढ़िया ने बच्चे को, जो उसके लिए बहुत बड़ा और भारी था, उठा लिया और इसके बावजूद कि वह ऊंचे बरसाती जूते पहने था, उसे उठाये-उठाये ही डबरे को पार किया। घटना मामूली सी है, लेकिन अर्थगर्भित है।

एक मित्र ने बताया, "चूंकि ज़्यादातर परिवारों में मां-बाप दोनों ही काम करते हैं, इसलिए अपने बच्चों का काफ़ी लालन-पालन हम अपनी मांओं, नानियों-दादियों पर छोड़ देते हैं।"

मैंने कहा, "अमरीका में हमारे नौजवान जब तक अपनी आज़ाद ज़िंदगियां बनाने के लिए घर छोड़ नहीं देते, चैन नहीं ले पाते हैं। और यहां मैं देखता हूं कि आपके बच्चे आपके साथ ही रहते हैं – बेटा अपनी बीवी को अपने मां-बाप के घर लाकर रहता है।"

"हां," मेरे दोस्त ने कहा। "किसी हद तक तो इसलिए कि अभी हाल ही तक फ़्लैट पाना मुश्किल हुआ करता था और किसी हद तक इसलिए भी कि यह एक परंपरा रही है। हमारे यहां पारिवारिक संबंध बहुत घनिष्ठ हैं। लेकिन मेरा ख़याल है कि यह भी बदल रहा है।"

'सोवेत्स्काया कूल्तूरा' (सोवियत संस्कृति) समाचारपत्र समय-समय पर "माता-पिता का विश्वविद्यालय" शीर्षक स्तंभ को पूरा पन्ना देता है। मुझे एक अंक विशेषकर हृदयस्पर्शी लगा, जिसमें कुछ सुविख्यात व्यक्तियों के अपने बच्चों और भाई-बहनों को लिखे पत्र प्रकाशित हुए थे। स्तानिस्लाव्स्की के अपने बेटे को पत्र, विक्तर ह्यूगो, रोम्मां रोलां, एर्न्स्त थेलमान, चार्ल्स डिकन्स, चेख़ोव के पत्र। बच्चों में साहस, मानव-मूल्य, जीवन के प्रति निस्स्वार्थ दृष्टिकोण और दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना पैदा करने के लिए लिखे गये पत्र। सोवियत जनता के दैनंदिन जीवन में, उसकी चेतना में इस प्रकार का साहित्य प्रवेश करता है। यह आम जनता की शिक्षा है, व्यक्ति को अतीत की अंतर्निहित नकारात्मक स्वार्थमय सहजवृतियों से मुक्त करने का संघर्ष है। 'सोवेत्स्काया कूल्तूरा' इस सामग्री को माता-पिता के ध्यान में लाता है, अपने बच्चों को शिक्षित करने के कार्य में सहायता देने के लिए उन्हें विचार, ठोस सामग्री प्रदान करता है।

उसी समय 'लितेरातूरनाया गज़ेता' (साहित्यिक समाचारपत्र) ने बालक के लालन-पालन पर एक चर्चा प्रकाशित की। चर्चा का प्रारंभ सेरोव नामक पाठक के पत्र के प्रकाशन के साथ हुआ था, जिसने शिक्षा के बारे में कुछ बड़ी सख़्त अवधारणाएं प्रस्तुत की थीं। कई पाठक इन

अवधारणाओं से असहमत थे। मेरोव के पत्र का विश्लेषण करते हुए एक अन्य पाठक ने लिखा, "इसमें एक बहुत ही चिंतनीय प्रवृत्ति लक्षित होती है, जो 'अतिमानव' की अवधारणा की सीमा तक पहुंच जाती है और एक स्वार्थसाधक लक्ष्य की सिद्धि के लिए किसी भी साधन को उचित ठहराती है।"

निकोलायेव नामक इंजीनियर ने लिखा, "मेरोव के पत्र में मुख्य विचार यह है कि युवाओं को 'संघर्षकर्ता' के चरित्र की सबसे पहले और शेष गुणों की बाद में आवश्यकता है। सक्रियतापूर्वक संघर्ष करने की तत्परता, जीवन में अपने अधिकारों पर अड़े रहना जैसी विशेषताएं निस्संदेह वांछनीय हैं और मेरी राय में यह गुण हमारे अधिकांश युवाओं में विद्यमान है। यह शायद हमारे सोवियत युवजन का सबसे चारित्रिक लक्षण है। यह अपने को छोटे-बड़े सभी रूपों में अभिव्यक्त करता है। जब हमारे देश के अनबसे इलाक़ों में घुसना ज़रूरी होता है, तो नौजवान खोज पर जाते हैं। जब नये उत्पादन निचयों को खोजना होता है, तो वे उन्हें ढूंढ़ते और पाते हैं। और क्या यह 'संघर्षकर्ता' का गुण ही नहीं है, जो युवाओं को कई-कई साल लगातार सारे दिन काम करने और शामों को अध्ययन करने में समर्थ बनाता है? और कोई थोड़े से लोगों को नहीं, बल्कि लाखों को! वीरता, सक्रियता, आत्मविश्वास की आवश्यकता – ये हमारे अधिकांश युवाओं में विद्यमान हैं और यह एक ऐसा गुण है कि जो सबसे अधिक स्वतः – हमारे मार्गदर्शन के बिना ही विकसित होता है।

"हमारा युवजन विशेष अवस्थाओं में, भगवान, ग़रीबी, बेरोज़गारी, मालिकों और बुढ़ापे के डर के बिना बड़ा हो रहा है। यह हमारी और समाजवादी जीवन-प्रणाली के वातावरण की एक ज़बरदस्त सामाजिक उपलब्धि है। हमारा समाज युवजन को वीरता और साहस प्रदान करता है। साथ ही उसे इसकी भी कम चिंता नहीं है कि इस वीरता और शक्ति का बुरे लक्ष्यों के लिए उपयोग नहीं किया जायेगा।

"क्या यह हमारे नौजवानों का 'वीर' चरित्र ही नहीं है, जो उन्हें बसों और पार्कों में अपने ट्रांज़िस्टरों को पूरी आवाज़ से खोलते समय अपने आसपास के लोगों की उपेक्षा करने देता है?" पत्र लेखक ने पूछा। "मानसिक आलस्य और भावना का अभाव आदमी के जन्मजात श्रेष्ठतम गुणों को भी मार सकता है। जैसे बच्चा (खेल में) अपने साथियों से पिछड़ जाता है और जब संवेदनशीलता और उदारता के अभाव के कारण वह इसे स्वीकार नहीं कर पाता, तो वह आत्मविश्वास प्राप्त करने की सक्रिय कोशिश करता है और यह आत्मविश्वास वह आम तौर पर अपनी दुष्टता के अनुपात में ही खोजता है।

"और अगर परिवार और स्कूल इस निर्णायक दौर को अनदेखा कर दें, तो चरित्र क्षत गुणों के साथ और कभी-कभी समाजविरोधी प्रवृत्तियों के साथ निर्मित होता है और लोगों के साथ सामाजिक संबंधों में विपत्तियां लाता है।"

इसे पढ़ते हुए मैंने सोचा कि यह समस्या कितनी सार्विक है और इस बात को समझना कितना आवश्यक है कि समाजवादी समाज में व्यक्तियों के समाजविरोधी आचरण का – "व्यवस्था-विरोधियों" के पैदा होने तक का – क्या कारण है। बच्चों और माता-पिता के संबंधों पर हाल के

एक अनुसंधान का हवाला देते हुए पत्र लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि पारिवारिक इकाई में अपर्याप्त संपर्क और "बोलचाली" संबंध है।

"... बच्चे माता-पिता की अपेक्षाओं को आंख भींचकर नहीं स्वीकार करना चाहते, बल्कि ज़्यादा स्वतंत्रता पाने की कोशिश करते हैं, जो कभी-कभी अपने माता-पिता का विरोध करने के दूषित रूपों और अपने सामाजिक अनुभव के अल्पांकन की तरफ़ ले जा सकता है। माता-पिता को आम तौर पर अपने बच्चों से इसलिए असंतोष होता है कि बच्चे दैनिक जीवन के संगठन में पर्याप्त भाग नहीं लेते हैं – माता-पिता को अपने बच्चों का अपने ख़ाली समय को व्यतीत करने का ढंग और उनका तौर-तरीक़ा पसंद नहीं आता।"

"संघर्षकर्ता" की अवधारणा की बात करते हुए वह अंत में लिखता है, "'संघर्षकर्ता' का चरित्र बच्चों और मां-बाप दोनों में प्रकट हो सकता है। प्रत्येक अपनी सामाजिक स्थिति के समर्थन का प्रदर्शन करता है। इसलिए समस्या इसमें नहीं है। लेकिन इस 'संघर्षशील' चरित्र को उच्च आदर्शवादिता से, कम्युनिस्ट नैतिकता से सांस्कृतिक दृष्टिकोण के संवर्धन और सक्रिय मानवतावाद से ओतप्रोत होना चाहिए। शैक्षिक लालन-पालन की अपनी समस्या में मां-बाप के सामने यही मुख्य कार्यभार है।"

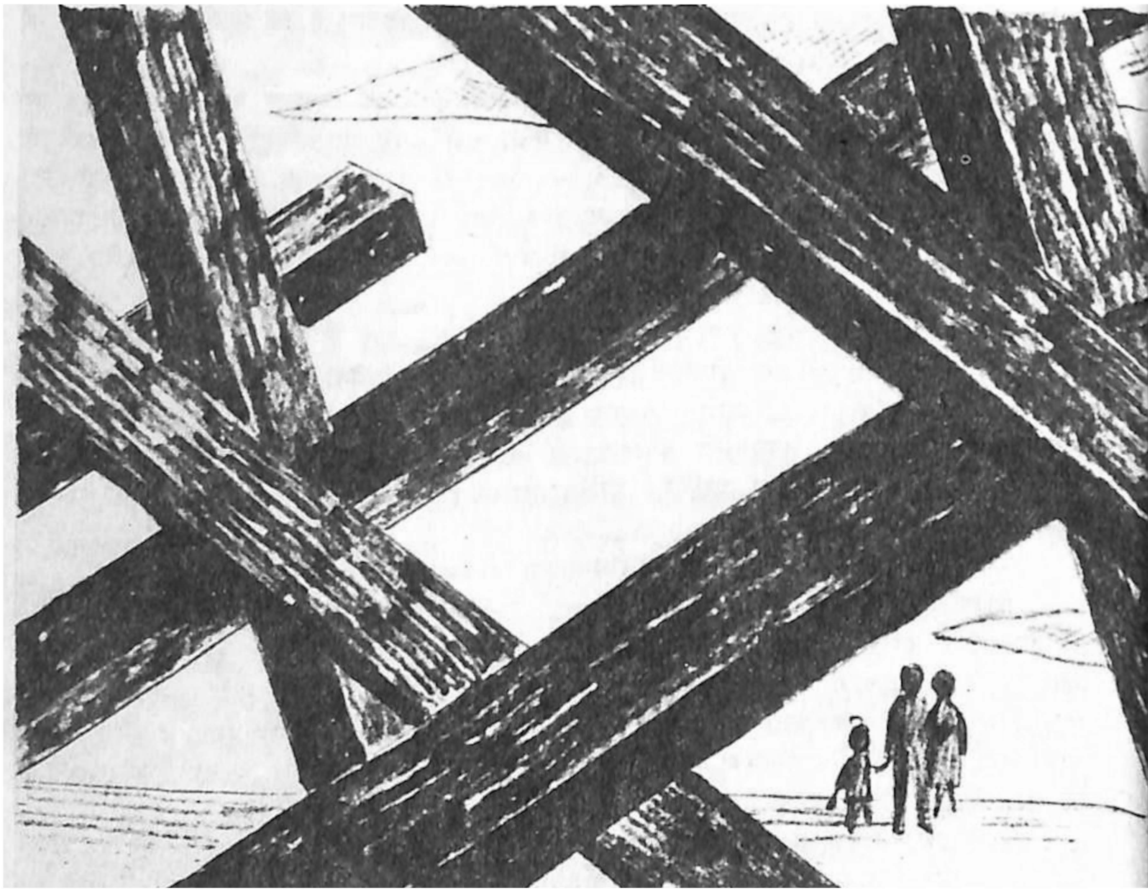
उसी पृष्ठ पर संपादकों ने लेखक लेओनीद झूहोवीत्स्की का अग्रलेख भी छापा था।

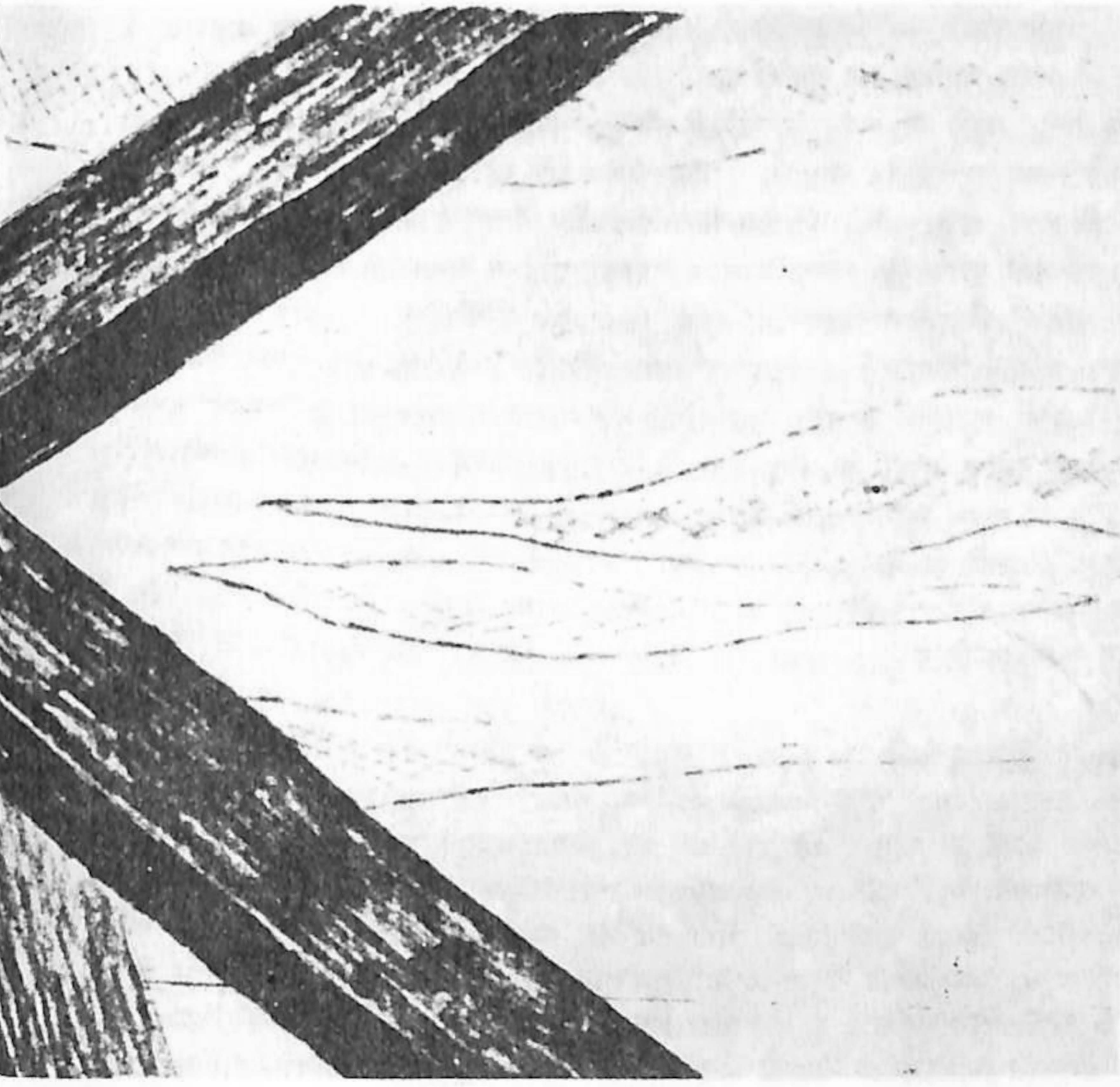
सेरोव को उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा था, "आप 'कमज़ोरी की जो दवा' पेश करते हैं, वह सादगी के कारण ठोस और मोहक लगती है। आप लिखते हैं: 'हमें हर वक़्त और हर जगह युवाओं को बस एक ही अवधारणा की तरफ़ निदेशित करना चाहिए – हमारे सामने संघर्ष है। यह धारणा निर्विवाद्य प्रतीत हो सकती है। लेकिन – जैसा कि आम तौर पर होता है – बात इतनी सीधी नहीं है। लेकिन अभाग्यवश किसी भी विचार को ऐसे सूत्र का बाना पहनाया जा सकता है कि जो बाहर से बिलकुल स्पष्ट लगता है।

"मिसाल के लिए, स० मरेइको कहते हैं, 'सेरोव सही हैं – हमारे सामने ज़िंदगी का संघर्ष है।' यह हमारे समाज से भिन्न नज़रिया रखनेवाले समाज से आनेवाली कुत्ता कुत्ते को खाये की अवधारणा है।"

अंत में झूहोवीत्स्की ने लिखा, "स्पार्ता (सादा और कठोर) लालन-पालन के समर्थन में एक और पाठक का कहना है, 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन होता है।' मुझे याद आता है कि कैशोर्य में स्पार्ता के बारे में पढ़ता हुआ मैं जोश में आ जाता था। बाद में जाकर ही मुझे उस समाज की एकपक्षीयता नज़र आने लगी – रणभूमि में लड़ना। तिस पर भी शक्ति के पुजारी इन लोगों को पराजित क्यों होना पड़ा? उस विख्यात काल की कोई धरोहर हमारे पास नहीं है – न कोई मूर्तियां, न कोई कविता और न ही क़ानून की कोई धारणा ...

"आप कहते हैं, 'साहसी लोगों ने हमारे हाथों में पताका दी है।' मगर उनका साहस स्पार्ता का पेशेवर साहस नहीं था। हमारे पूर्ववर्ती क्रांतिकारी, विद्वान और कवि, बुद्धिमान और भले लोग थे, जो अच्छाई और विवेक, मानव गरिमा की रक्षा करने के लिए लड़ते थे। वे कोरे लड़नेवाले नहीं थे, बल्कि मानवजाति के सुख के लिए संघर्ष करनेवाले थे।





"निस्संदेह, 'संघर्षकर्ताओं' की अवधारणा इतनी अमूर्त है कि आदमी अपने मतलव के मुताविक़ उसे किसी भी तरह सूत्रवद्ध कर सकता है।

"कमज़ोरों के लिए, वूढ़ों के लिए, वच्चों के लिए, अपाहिजों के लिए सुचिंता लोगों के नैतिक स्वास्थ्य की कोटि का एक प्रतीक है। जो कमज़ोर लोग जी रहे हैं, सांस ले रहे हैं, मुसकरा रहे हैं, वे गाइजर गणक की तरह लोगों को यह दिखाते हैं कि आसपास के क्षेत्रों में निर्दयता का स्तर 'मानक' से ऊपर नहीं पहुंचा है। कमज़ोर से कमज़ोर, छोटे से वच्चे को भी अपने से किसी ज़्यादा कमज़ोर की, कुत्ते के पिल्ले या विल्ली के वच्चे की ज़रूरत होती है।"

अंतिम पैराग्राफ़ में वह लिखते हैं, "'हम पाल-पोस किसे रहे हैं?' – आप पूछते हैं। कभी सफलता के साथ, तो कभी ग़लतियों के साथ हम लोगों का लालन-पालन करते हैं! प्यार करने, सृजन करने, दुख झेलने और औरों के प्रति हमदर्दी करने में समर्थ, अर्थात ज़िंदगी को पूरी भरपूरगी के साथ जीने में सक्षम लोग। और वेशक, जीवन की अच्छी और उचित अवस्थाओं के लिए, वौद्धिक-आत्मिक कंगाली के विरुद्ध, 'अतिमानव' की अहंवादी अवधारणा के विरुद्ध संघर्ष करने में सक्षम लोग, मानव के हितों की रक्षा करने में सक्षम लोग।"

और इस तरह वहस जारी है ...

जहां नात्सियों को रोका गया था

शेरेमेत्येवो हवाई अड्डे से मास्को की राह पर उस जगह एक सादा सा स्मारक खड़ा है, जहां लाल सेना ने राजधानी के विरुद्ध जर्मन आक्रमण को रोका था। युद्धकाल की रक्षा पांतों को दर्शाते एक-दूसरे को तिरछे काटते इस्पाती शहतीरों का यह स्मारक दर्शक को स्तंभित कर देता है। मैं मास्को से कार में यहां प्रसिद्ध लेखक ओवीदी गोर्चाकोव के साथ आया था, जिनसे मेरी मुलाक़ात कई साल पहले न्यूयार्क में तव हुई थी, जव वह मोईसेयेव नृत्यमंडली की अमरीकी यात्रा की फ़िल्म पर काम करते हुए आये थे। ओवीदी ने युद्धकाल में पार्तीज़ान (छापामार) दलों के नेता और साहसी सैनिक गुप्तचर के नाते महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

हम स्मारक के ठंडे इस्पात के आगे खड़े थे। "बहुत ज़वरदस्त असर डालता है यह," मैंने कहा।

"हां, यह कई तरह से असर डालता है," उन्होंने जवाव दिया। "याद है, यूरोपीय क्षेत्र में यह पहला मौक़ा था कि जब हिटलर को आगे वढ़ने में रोका गया था। लेकिन चलिये, हम इस मोरचे का एक और स्मारक देखेंगे, ज़ोया का स्मारक।"

'हम अपनी मंज़िल के निकट पहुंचते जा रहे थे और ओवीदी को यादें आ रही थीं। "यह वह जगह है, जहां हिटलर की वारवारोस्सा योजना ठप हुई थी, जिससे यह आशा की जाती थी कि वह रूस को घुटने टेकने के लिए विवश कर देगी। अगर यह योजना सफल हो गयी होती, तो यह वर्लिन के भूरी क़मीज़धारियों की विश्व प्रभुत्व की योजनाओं में एक वड़ा क़दम, हज़ारसाला राइख़ के उनके सपने की पूर्ति होती।

"हम मीन्स्क राजमार्ग पर मास्को से ७४ किलोमीटर दूर हैं। २२ जून को मीन्स्क को फूंका गया। मैं उम ममय दसवीं में था। मैंने फ़ौज में भरती होना चाहा, मगर मैं बहुत छोटा था (मैं तब मत्रह माल का था)। जर्मनी के स्मोलेन्स्क को सर करने के वक़्त तक मैं हज़ारों कोम्सोमोलियों (तरुण कम्युनिस्ट संघ के मदस्यों) के साथ, जिनमें कई मेरे स्कूली साथी भी थे, स्मोलेन्स्क और रोस्तोव के बीच में रक्षात्मक मोरचेबंदियों की खुदाई कर रहा था।"

कार खड़ी हो गयी और हम उतरकर ज़ोया के स्मारक की तरफ़ चल दिये।

"हां, ज़ोया," ओवीदी ने कहा और मुझे लगा कि यह नाम उनके लिए गहरा अर्थ रखता है। "वह तब उन्नीस साल की थी। उसे साहित्य और इतिहास से लगाव था। उसकी डायरियों में कला के बारे में, इतिहास के बारे में, उसके प्रिय ग्रंथों की कई सुंदर उक्तियां हैं। हम युवाओं पर उस समय रोम्मां रोलां और उनके 'जान क्रिस्तोफ़' का, फ़ेइख़्तवांगेर का जादू था। मुझे याद है कि किस तरह अपने सहपाठियों के साथ हम सारी-सारी शाम उनके महान फ़ासिस्तविरोधी उपन्यासों पर गहरी बहसें करते रहते थे। हम आशावादी थे। हम अपने भविष्य के जोश में थे और ज़ोया को भी भविष्य का जोश था। अब जब लड़ाई आ गयी, तो वह अपने सहपाठियों के साथ मास्को की आबादी को खिलाने के लिए आलू खोद रही थी, जहां खुराक की क़िल्लत थी।

"सितंबर में मैं देस्ना नदी पर मोरचेबंदियां बनाने के काम से वापस आया। वहां हम पर मेस्सरश्मीत विमानों ने बम बरसाये थे और हम जनरल गुदेरियान की एक संड़सी-चाल में क़ैद होते-होते बचे थे। मुझे बच भागने और इस प्रक्रिया में किसी तरह अपने बूट खो देने की याद है। मास्को में मुझे पता लगा कि मेरे परिवार को हटाकर पीछे भेज दिया गया है और मेरे पिता मोरचे पर लड़ रहे हैं।

"फ़ौज में मुझे लिया नहीं जा रहा था, इसलिए मैं स्वेच्छा से पार्टीज़ानों में शामिल हो गया। मैं सोचता था कि यह बड़ा रूमानी विचार है। लेकिन मानना होगा कि जब मैं पहली बार जर्मन पांतों के पीछे पैराशूट से उतरा, तो मैंने यही सोचा था कि कभी न लौट पाऊंगा! लेकिन मैं कुछ ऐसा करना चाहता था कि जिस पर मेरे पिता नाज़ कर सकें।

"और ज़ोया भी पार्टीज़ान बनने के लिए, तोड़फोड़ करने के लिए, जर्मन कारों को उड़ाने के लिए, सड़क पर धातु के कील जैसे ऐसे नुकीले टुकड़े रखने के लिए कि जो जर्मन कारों के टायरों को पंचर कर दें, जर्मन पांतों के पीछे चली गयी। नवंबर में जिस रात को वह जर्मन पैदल डिवीज़न की १९७वीं रेजीमेंट द्वारा अधिकृत इस पेत्रीश्चेवो गांव में आयी, उसका मिशन गांव को आग लगाना था। बात यह है कि जर्मन सेना के लिए सुविधाजनक हर ही चीज़ को नष्ट कर देना आवश्यक था। लेकिन उसे पहरेदारों ने पकड़ लिया और कमांडर, फ़्रांस के विजेता – र्यूदेरर के सामने पेश किया। ज़ोया ने प्रश्नों के उत्तर देने से इन्कार कर दिया। उसने कहा कि वह अपनी जनता के लिए जान देते नहीं डरती। उन्होंने उसे मारा-पिटा और यंत्रणाएं दीं। बर्फ़ीली ठंड में उन्होंने उसे अधनंगा कर दिया। आख़िर उन्होंने उसे यहां चौक में फांसी दे दी।

"मुझे याद है कि ज़ोया का बदला लेने के लिए मैं किस तरह उबल रहा था। मैंने उसे

सतानेवालों का पता लगाने के लिए विशेष नोट तैयार किये थे। हमारे सभी नौजवानों को ऐसा ही लग रहा था।

"१३ दिसंबर, १६४१ को जब जर्मनों को मास्को के पहुंचमार्गों से पीछे धकेला गया, तो यह गांव भी मुक्त हुआ। ज़ोया की मौत के हालात का हमें पता चला। और यह निजी प्रतिशोध का मामला बन गया कि १६७वीं रेजीमेंट के लोगों को पाया जाये।"

हम स्मारक के सामने खड़े हुए थे, जो कांसे का बना हुआ है। वीरता का, जीवन का, इस उन्नीसवर्षीय बाला का स्मारक, जो आज हर सोवियत बालक को, दुनिया भर में लोगों को ज्ञात है।

"मैंने कुछ बार मोरचे की पांतों को पार किया," ओवीदी ने बात जारी रखी। "कुछ समय मैं एक पार्टीज़ान दल का कमांडर रहा। मैं उक्रइना, पोलैंड और जर्मनी गया। मैंने फ़ौजी ट्रेनों को उड़ाने में हिस्सा लिया। एक बार मुझे अमरीकी डगलस विमान से मोगील्येव के इलाक़े में पैराशूट से उतारा गया। मैंने जर्मनों के ख़िलाफ़ ग्यारह पार्टीज़ानों के साथ कार्रवाइयां शुरू कीं, लेकिन तीन महीने के भीतर हमारे साथ ६०० लोग हो गये थे।

"मुझे अक्तूबर, १६४२ में अपनी अठारहवीं सालगिरह की याद आती है। हम एक नदी को पार कर रहे थे, जिस पर जमी बर्फ़ बहुत पतली थी और हम बार-बार बदन-जमाऊ पानी में गिर रहे थे। हमारे सिरों के ऊपर जर्मन गोले उड़ रहे थे। मेरा एक मिशन – बिलकुल सही कहें, तो – फ़ौजी नहीं था। यह तब की बात है, जब लंदन-प्रवासी पोलिश गुट राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के मध्यस्थता करने के प्रयासों के बावजूद ख़तरनाक सोवियतविरोधी रुख़ दिखा रहा था। निस्संदेह, वे जानते थे कि विजय के बाद सोवियत संघ वहां पिल्सूद्स्की जैसा दूसरा शत्रुभावी शासन सहन नहीं करेगा। हमारा भविष्य सोवियत संघ के प्रति मित्रभावी शासन ही सुनिश्चित कर सकता था। इसकी हम लंदन-प्रवासी गुट से अपेक्षा नहीं कर सकते थे। लेकिन अधिकृत पोलैंड में कई प्रगतिशील पोलिश लोग छिपे हुए थे। मेरा काम उन्हें वहां से निकालकर लाना था।

"यह एक बड़ा कठिन और जटिल कार्य था। जर्मन अधिकार के ख़िलाफ़ कई भिन्न-भिन्न पोलिश दल संघर्ष कर रहे थे – हमारे मित्र, फ़ासिस्तविरोधी ही नहीं, बल्कि राष्ट्रवादी, पिल्सूद्स्की समर्थक और लुटेरों के गिरोह भी। हमें इन 'पार्टीज़ानों' के बीच जोड़-तोड़ करना था। मुझे याद आता है कि एक बार हमें जंगल की गहराई में पार्टीज़ानों के एक हवाई मैदान पर उतरना था। जब हम उसके ऊपर पहुंचे, तो पाइलट ने देखा कि वह उतरने के लिए बहुत छोटा है। उसने देखा कि नीचे लोग हाथ हिला रहे हैं। उसने इंजन को बंद किया, जहाज़ को बिलकुल नीचे ले गया और चिल्लाया, 'गधो! तुमने मैदान बहुत छोटा बनाया है। हम कल फिर आयेंगे, इसे तब तक बड़ा कर लेना!' और अगले दिन हम वहां उतर गये।

"कई विकट और जटिल स्थितियों का सामना करने के बाद हमने इन पोलों को सीमा के पार पहुंचा ही दिया। हां, इस कारनामे के लिए मुझे अलंकृत किया गया था," उन्होंने विनम्रता के साथ अपनी बात को पूरा किया।

"इस मिशन के बारे में मैंने आपकी पुस्तक 'कारपोरल वुडस्टॉक' में पढ़ा है।

"वड़ी रोमांचक है वह," मैंने कहा। "पढ़ने में रहस्यमय उपन्यासों जैसी लगती है।"

"हां," ओवीदी ने जवाब दिया, "वह अभी – इस साल ही – प्रकाशित हुई थी और अभी से दुर्लभ हो गयी है, जब कि संस्करण एक लाख प्रतियों का था।"

"युद्ध के बाद नागरिक जीवन का फिर आदी बनना मुश्किल था?" मैंने पूछा।

"बहुत, बहुत मुश्किल था। हैमिंगवे ने पहले विश्व युद्ध के बाद की 'भटकी हुई पीढ़ी' की बात कही है। अपने देश के बारे में हम बहुत आशावान हैं और इसलिए हम पर इस जैसा कोई बिल्ला नहीं लगाया जा सकता था। आखिर, हैमिंगवे की पीढ़ी एक निष्प्रयोजन युद्ध में लड़ी थी, जिसने न तो गहन समर्पण की कोई भावना पैदा की और न कर ही सकती थी। हमारी स्थिति बिलकुल उलटी थी। बेशक, हम उस वक़्त एक निराली ही क़िस्म के लोग थे। ऐसे लोग, जिन्होंने युद्ध में इतना कुछ सहा था। और मैं भी तो इस निराली क़िस्म का ही एक आदमी था, जिसमें इसके साथ आनेवाले ख़तरे और जीवट का अहसास था और फ़ासिज़्म के लिए घोर घृणा थी। यह संक्रमण अत्यधिक कठिन था। मैं समझ नहीं पाता था कि क्या करना चाहता हूं। आखिर मैं उच्च सरकारी अधिकारियों के साथ अनुवादक का काम करने लगा। लेकिन इससे मुझे संतोष नहीं हो पाता था। यह ज़िंदगी तो बहुत ही शांत थी। फिर मैंने लिखना शुरू कर दिया।

"एक बार मुझे वियतनाम निमंत्रित किया गया और वहां मेरी उनके कुछ लेखकों से भेंट हुई। मुझे उनमें से एक की याद है, जो पार्टीज़ान रह चुका था। 'आप कितने समय लड़ते रहे?' मैंने पूछा। 'पच्चीस साल,' उसने जवाब दिया। 'मैं फ़्रांसीसियों मे लड़ा हूं। मैं दिएनबिएनफ़ू में था।'"

"मैंने बात-बात में बताया कि मैं ज़ोया के साथ-साथ उसी टुकड़ी में, पश्चिमी मोरचे के हमारे मुख्य आसूचना डिवीज़न में था। उसने मुझे अपने आलिंगन में ले लिया। मैं बेहद संकोच में आ गया।

"'आप पार्टीज़ान हैं और मैं भी पार्टीज़ान हूं,' उसने कहा। 'मैं फ़्रांसीसियों से लड़ा हूं। दिएनबिएनफ़ू में हमारी महान विजय में मैं भी था। मुझे याद है कि हम लोग ज़ोया के बारे में एक गाना गाया करते थे। ज़ोया, जिसने यंत्रणाएं झेलीं और जो एक प्रतीक बन गयी। ऐसे लोग अमर होते हैं। वह दिएनबिएनफ़ू पर धावे के समय साथ थी, वह जनता के सभी संघर्षों में साथ थी, हम उसका गीत गाते थे। वह हमारे साथ एक थी।'" वियतनामी ने कहा।

"और प्रसंगवश, अभी हाल ही में, ज़ोया के एक जन्मोत्सव में उसकी मां ने कहा था, 'मुझे आप लोगों को यह बताते ख़ुशी होती है कि मेरी खगोलज्ञों के एक दल से मुलाक़ात हुई थी, जिन्होंने मुझे बताया कि वे अपने खोजे अगले तारे का नामकरण ज़ोया पर करेंगे।'"

मास्को नदी

मास्को नदी शहर को चीरती, क्रेमलिन की बग़ल से गुज़रती, अलग-अलग इलाक़ों में कई-कई बल खाती हुई जाती है। वसंत से लेकर पतझड़ तक छोटे मालवाही जहाज़ और तेल-टैंकर यहां से निकलते हैं, नहरों के ज़रिये वोल्गा नदी से जोड़ते कुछ भारी मालवाही जहाज़ों और यात्री जहाज़ों का भी आवागमन होता है, तीव्रगामी राकेट (हाइड्रोफ़ोइल पोत) हवा की तोशक पर

पानी पर सरसराते रहते हैं और मंथर दरियाई ट्रामों – खुले अगले डेक, पीछे तिरपाल से ढंकी और वीच में पाइलट कक्षवाली छोटी नौकाओं – का आना-जाना होता रहता है। कुछ दरियाई ट्रामों पर मृदु पेय, बीयर, सैंडविच और मिठाइयां वेचने के किओस्क भी होते हैं। ये नावें नदी के दोनों तटों पर कई जगह ठहरती हैं, क्योंकि यह परिवहन का एक सुविधाजनक – चाहे धीमा – साधन है। लेकिन ज़्यादातर ये शहर की आराम से दो घंटे की सैर के वजरे हैं।

एक दिन दोपहर ढलते ही मेरे मित्र डाक्टर वीक्तोर अर्खांगेल्स्की और मैं क्रेमलिन के पास वोल्शोई कामेन्नी मोस्त (पत्थर के पुल) के तले एक नाव पर सवार हुए। हमें खुले डेक पर एक नीली वेंच पर बैठने की जगह मिल गयी। पाइलट कक्ष में मुझे चालन-चक्के को संभालती एक युवा और ख़ासी सुंदर गहरे भूरे बालोंवाली स्त्री दिखायी दे रही थी। सामनेवाली वेंच पर गोद में छोटी सी वच्ची को लिये काली और चटक हरी-नारंगी धारियोंवाली उज़्वेक पोशाक पहने एक औरत वैठी हुई थी।

छोटे से घाट से रवाना होने के साथ हम वायीं ओर त्रेत्याकोव चित्रशाला की नयी और अभी निर्माणाधीन इमारत के सामने से गुज़रे – पत्थर के तटवंधों की अविराम पांत के पास पेड़ों की हरियाली में निचली मंज़िल पर खिड़कियों की पट्टियों के साथ सफ़ेद संगमर्मर की एक विशाल और सपाट दीवार। इसके आगे गोर्की उद्यान है, जो शहर की आवादी के लिए खेल और विश्राम की जगह है। यहां नाव रुकी और लोग चढ़े-उतरे।

" १९२३ में इस जगह सोवियत संघ की पहली कृषि प्रदर्शनी हुई थी," वीक्तोर ने कहा। "उसमें लकड़ी की कुछ इमारतों में हमारे जनतंत्रों की दस्तकारियों, उद्योग और कृषि को प्रदर्शित किया गया था। तव हमने पहली वार उन लोगों के जीवन को देखा, जो हमारे संघ के अंग थे – तुर्कमेनिया के लोग, उज़्वेकिस्तान के लोग, क़िर्ग़ीज़स्तान के लोग... हमारी ज़मीन की संपदाओं को दिखानेवाले प्रदर्श। मुझे याद है कि प्रारंभिक ट्रैक्टर भी उस समय ज़बरदस्त आकर्षण-केंद्र हुआ करता था, लेकिन यह सब इतने पहले की बात है।"

धीरे-धीरे हम लेनिनस्की गोरी (लेनिन गिरि) से होकर गुज़रते हैं, जिसका नाम कभी यहां फूलते-फलते गांव वोरोब्योवो पर वोरोब्योवी पहाड़ी था।

"वहुत पहले की वात है कि दो क्रांतिकारी – गरीवाल्दी के मित्र हर्त्सेन और ओगारेव यहां वोरोब्योवी पहाड़ी पर मिले थे और उन्होंने अपने को और अपनी ज़िंदगियों को जनता की मुक्ति के लिए समर्पित कर देने की प्रतिज्ञा की थी। यह सब यहां लिखा हुआ है," अपने साथ लायी किताव को खोलते हुए वीक्तोर ने कहा।

"लूज्निकी नाम की जगह हम नाव में नदी के दूसरे किनारे गये। हम दौड़ते हुए वोरोब्योवी पहाड़ी पर एक गिरजे के तले पहुंच गये। बेदम होकर हम खड़े-खड़े पसीना पोंछने लगे। नदी के पार सूरज डूब रहा था। गिरजे के गुंबद सुनहरी आग प्रतिविंवित कर रहे थे। नीचे शहर फैला हुआ था। हलकी बयार ताज़गी दे रही थी। हम वहां एक-दूसरे के सहारे खड़े रहे, फिर अचानक चिपट गये और सारे मास्को के सामने हमने अपना जीवन अपने ध्येय को अर्पित कर देने की प्रतिज्ञा की।"

धीरे-धीरे नाव दोमंज़िला पुल के नीचे से गुज़री, जिसका ऊपरी भाग यातायात के लिए है और निचले, कांच में बंद भाग में लेनिनस्की गोरी मेत्रो स्टेशन है। पुल के नीचे से नाव के गुज़रने के समय ऊपर की तरफ़ देखते हुए मुझे याद आया कि किस तरह मैं स्टेशन के भीतर से, ट्रेन की खिड़कियों से नदी, तैराकों और पेड़ों के बीच घास पर नन्ही-नन्ही आकृतियों को देख सकता था। सरदियों में बर्फ़ ढंकी पहाड़ी सप्ताहांतों पर स्कीयरों की भीड़ से भरी होती थी।

यहां हमारी नाव पानी में झूलते लाल रंग के बोयों (तैरते पीपों) द्वारा सीमांकित जलमार्ग के बीचोंबीच आ गयी।

हम पोक्लोन्नाया गोरा (शब्दशः उपासना गिरि) पहुंच रहे हैं, जो स्मोलेन्स्क की राह में है। यहां से नेपोलियन ने मास्को शहर को पहली बार देखा था, यहां उसने रूसी रईसों के शिष्टमंडल का इंतज़ार किया था, जो उसके ख़याल में उसके राजधानी में विजय-प्रवेश के समय अगवानी करने के लिए आनेवाला था। वह बेकार ही इंतज़ार करता रहा!

जल्दी ही दूर सामने एक ऊंची वक्राकार बनावट की अस्पष्ट सी इमारत दिखाई देने लगी – संसार के समाजवादी देशों का प्रतिनिधित्व करनेवाली आर्थिक सहायता परिषद की इमारत।

वीक्तोर ने कहा, "इसे देखो – जनगण की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता का प्रतीक। कहां गोर्की पार्क में काठ की इमारतों में वह प्रदर्शनी और कहां यह!"

अब उक्रइना होटल की ऊंची इमारत हमारी बायीं तरफ़ थी, जिसके लॉन में उक्रइनी कवि शेवचेंको की मूर्ति है। लेकिन वीक्तोर दूर की ओर इशारा करते हुए कह रहे थे, "यहां फ़िली गांव था, जो नेपोलियन के विरुद्ध रूस की रक्षा में कूतूज़ोव का सदर मुक़ाम था।"

लोगों से भरी हमारी जैसी ही एक और नाव बराबर से निकल गयी। अगले आधे घंटे में हमने नदी के कई घुमावों में से एक और को पार किया। यहां लंबी टांगोंवाले क्रेन बजरों पर से रेत उतार रहे थे। अब पत्थर के तटबंध की जगह लहराती घास के मैदानों ने ले ली थी, पानी के किनारे पेड़ छाया डाल रहे थे।

"कुछ पीना तो नहीं चाहोगे?" वीक्तोर ने पूछा।

हम अपनी बेंच पर से उठे, दो बोतल लेमोनेड ख़रीदा, उतरकर निचले केबिन में गये और पानी की लगभग सतह पर ही खिड़की के सामने बैठ गये। यहां से हमें नदी का निकटतर और अधिक घनिष्ठ दृश्य दिखाई दे रहा था।

ज़रा ही देर में हम एक और – फ़ीलेव्स्की – उद्यान पहुंच गये – पानी के साथ-साथ एक लंबा सा चबूतरा, लेटे, तैरते और गेंद खेलते स्नानार्थियों की रंगबिरंगी भीड़। हम एक लाल रंग के बोये – टिमटिमाती बत्ती के सहारे धातु के जालीदार ढांचे – के बराबर होकर गुज़रे। तीन छोकरे उस पर चढ़ गये थे और जब हमारी नाव उसकी बग़ल से गुज़री, तो लहरों ने बोये को उलटा दिया। छोकरे उस पर से गिर पड़े और हंसते-चिल्लाते हुए वापस तैरकर उस पर चढ़ गये। एक राकेट बग़ल से गुज़रा, जिसका पेटा पानी की सतह से इंचों की ऊंचाई पर हवा में तैर रहा था।

अब हम जलपाश के भूरे सीमेंटी ढांचे के सामने से गुज़रे – यह वोल्गा नदी का रास्ता है। यहां कुछ नावों ने इस लंबी यात्रा के लिए उसमें प्रवेश किया। हमारी नाव बायीं तरफ़ मुड़ गयी और जल्दी ही आखिरी स्टाप पर पहुंच गयी। यहां हम नाव बदल सकते थे और अपनी यात्रा जारी रख सकते थे। लेकिन हमें नदी पर एक घंटे से ज़्यादा हो चुका था। हम उतरे, टिकटों के लिए लकीर में खड़े हुए और नाव पर फिर सवार होकर बिलकुल आगे बेहतर सीटों पर बैठ गये, जहां से बेरोक और व्यापक परिदृश्य दिखाई देता था।

नाव घूम गयी और हमने अपनी वापसी यात्रा शुरू कर दी। सामने, झाड़ियों और पेड़ों के ऊपर हम एक छोटे से गांव की टीन की छतें देख रहे थे, मकान नीले रंगे थे और खिड़कियों के गिर्द सफ़ेद सजावटी नक़्क़ाशी थी। नन्हा सा गांव नयी, ऊंची, नौमंज़िला रिहायशी इमारतों से घिरा हुआ था।

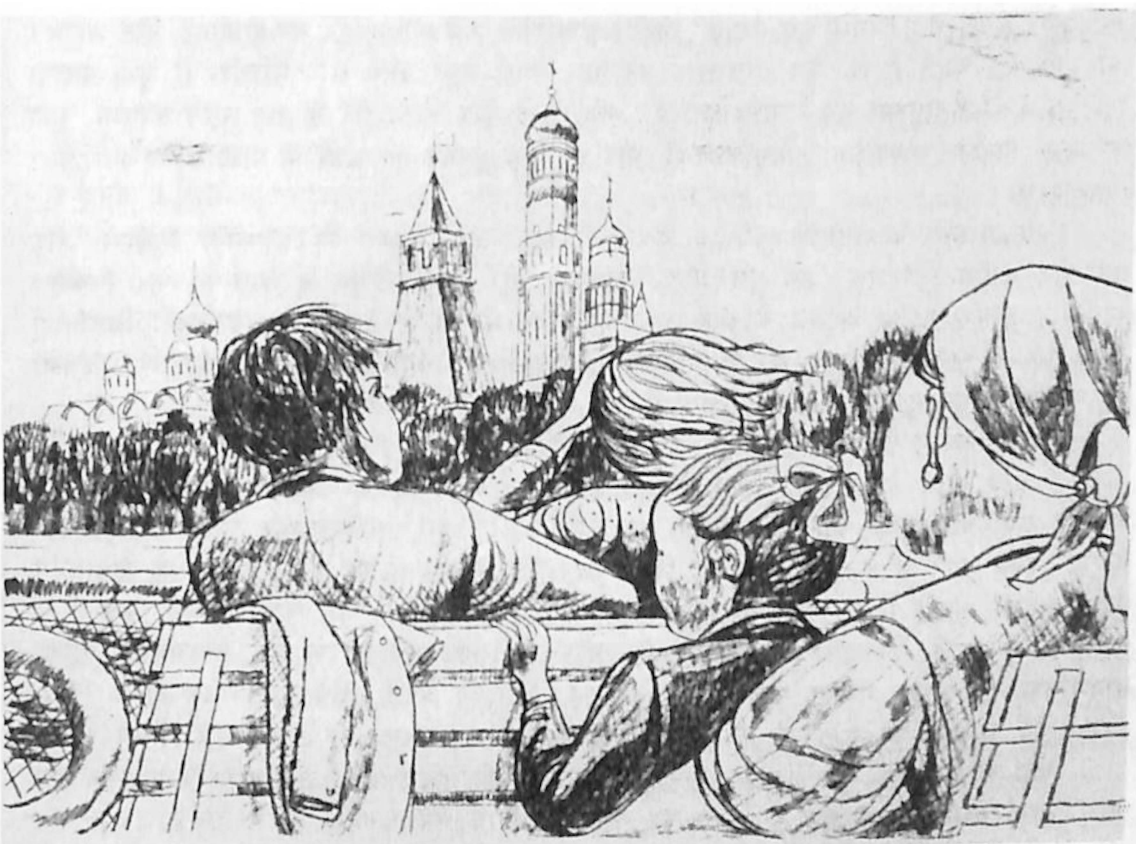
"ऐसा है कि पहले सारी ही नदी पर ऐसे ही गांव बसे हुए थे," वीक्तोर ने कहा। "मेरे ख़याल में यह आखिरी है और तेज़ी से ग़ायब हो रहा है।"

हमारी नाव रास्ते के कई पड़ावों में से एक पर रुकी। एक अधेड़, तगड़ी सी औरत हमारी नाव के खुले डेक से दरवाज़ा खोलने के लिए डेक से लकड़ी का तख़्ता सामने डाल देती है। फिर उसने अपनी तरफ़ फेंके गये रस्से को डेक पर खूंटे से बांध दिया। बच्चों के साथ एक दंपत्ति, छोटे से लड़के के साथ एक वृद्धा और कैमरा तथा हवाई झोले लिये कई अमरीकी टूरिस्ट नाव पर चढ़ते हैं। स्त्री ने तख़्ते को वापस खींच लिया और रस्सा तट पर फेंक दिया।

"यह पेंशनर है," वीक्तोर ने कहा। "ज़्यादातर पेंशनयाफ़्ता लोग काम करना पसंद करते हैं। फिर यह भी है कि इस तरह के काम करने को तैयार नौजवान मिलेंगे भी मुश्किल से ही।"

हम फिर नदी के तेज़ घुमाव के साथ-साथ जा रहे थे। यह १९०५ के विद्रोह का इलाक़ा – क्रास्नोप्रेस्नेन्स्की उद्यान – था। यहां की सड़कों के नाम इस तरह के हैं – 'बरीकाद्नाया' ('बैरिकेड'), 'वोस्स्तानिया' ('विप्लवस्थल')। इस औद्योगिक मज़दूर महल्ले के रहनेवालों ने दिसंबर, १९०५ के विप्लव में बड़ी वीरतापूर्ण भूमिका अदा की थी। इन्हीं कारख़ानों से पहली सीटी ने मास्को का विप्लव करने के लिए आह्वान किया था। कोई एक लाख लोगों ने सड़कों पर निकलकर बैरिकेड खड़े कर दिये थे। यहां, क्रास्नोप्रेस्नेन्स्की उद्यान में मज़दूर विशेषकर हिम्मतवाले थे। वे श्रेष्ठतर ज़ारशाही फ़ौजों के ख़िलाफ़ दस दिन अपने बैरिकेडों पर जमे रहे। बाद में उनमें से बहुतों को बदले की ख़ातिर मौत के घाट उतार दिया गया।

एक ख़ूबसूरत लाल और सफ़ेद इमारत – इंटों की दीवार से घिरी भूतपूर्व गढ़ी, नोवोदेविची मठ – निगाह में आयी। सत्रहवीं सदी के आरम्भ में निर्मित यह इमारत हरे पेड़ों के बीच में स्थित है, जिसकी एक तरफ़ एक खाई आज भी देखी जा सकती है। इसके चारों ओर ईंटों की ऊंची दीवार है, जिसमें बीच-बीच में पुरानी मोरचाबंदी के गोल बुर्ज हैं। मुख्य गिरजा सफ़ेद पत्थर की मेहराबों की शृंखला के रूप में बना हुआ है, जिसके ऊपर बीच में एक बड़े गुंबद के चहुं ओर चार और गुंबद हैं और प्रत्येक पर एक-एक सुंदर सलीब है। पास ही शिखर पर सुनहरे गुंबदवाला एक नानाखंडी घंटागार है। एक तरफ़ मैदान है, जो पहले कुमारी का मैदान कहलाता था। यहां



मेले जुड़ा करते थे, जिनमें खेल-तमाशे, झूले, चक्रदोले, सधे हुए भालू, नट-बाज़ीगर और जादूगर भी होते थे। कहते हैं कि लेव तोलस्तोय को यहां आना बहुत पसंद था। वीक्तोर ने मुझे बताया कि यह रूसी महापुरुषों का समाधिस्थल है। और मुझे याद आया कि मैं यहां पहले भी आ चुका था और चेख़ोव, स्क्रयाबिन, मयाकोव्स्की और स्तानिस्लाव्स्की की क़ब्रों के पास से टहलता हुआ निकला था।

अब मास्को विश्वविद्यालय दिखाई देने लगा था – ऊंचे शिखर पर पंचकोना सितारा और नदी-पार केंद्रीय स्टेडियम। हम पुल और लेनिनस्की गोरी मेत्रो स्टेशन के नीचे से फिर निकले। बायीं तरफ़ फ्रूंज़ेन्स्काया तटबंध के साथ-साथ नये रिहायशी मकान हैं। मैंने सबसे ऊपरी खिड़कियों में से एक को पहचान लिया – मेरे मित्र निकीच का स्टूडियो। नयी इमारतों की कई ऊपरी मंज़िलों को कलाकारों के स्टूडियो बना दिया गया है।

तभी वीक्तोर ने मेरा ध्यान एक और जगह की तरफ़ खींचा।

"ज़रा इधर देखो। वह इमारत देखते हो?" (यह धातु की विशाल नुकीली छत और अलंकृत मोहरेवाली ईंटों की एक बड़ी सी इमारत थी)। "इसे हमारे मशहूर कलाकार वस्नेत्सोव ने एक धनी व्यापारी के लिए डिज़ाइन किया था। दिलचस्प बात यह है कि लड़ाई के ज़माने में यह फ़्रांसीसी फ़ौजी मिशन का मुख्यालय था। याद है, यह उस वक़्त की बात है, जब फ़्रांस नात्सियों के क़ब्ज़े में था। इस इमारत पर नारमंदी-नेमान स्क्वैड्रन के उन बयालीस फ़्रांसीसी वायुसैनिकों की स्मृति में एक फलक लगा हुआ है, जिन्होंने अपने सोवियत सहयोद्धाओं के साथ-साथ – ठेठ मास्को की प्रतिरक्षा से लेकर पूर्वी प्रशा तक – लड़ते हुए अपने प्राण गंवाये थे।"

यहां से क्रेमलिन, उसके सफ़ेद गिरजों, धूप को प्रतिबिंबित करते उसके गुंबदों, शिखर पर लाल सितारोंवाले उसके ईंट के बुर्जों का नज़ारा दिखाई देने लगा। लेकिन हमारे उसके पास पहुंचने के ठीक पहले वीक्तोर ने एक लंबी हरी इमारत की ओर इशारा किया, जो पहले फ़ैशनेबल होटल कोकोरेवो हुआ करती थी।

"चाइकोव्स्की यहां ठहरना पसंद करते थे।" वीक्तोर ने अपनी किताब फिर खोली, "१८८२ में उन्होंने अपनी संरक्षक कुमारी फ़ान मैक को लिखा था, 'कितना अद्‌भुत है! मैं अपनी बालकनी का दरवाज़ा खोलता हूं और बड़े अनुराग और सुख के साथ क्रेमलिन के दृश्य को देखने लगता हूं।'

"और विख्यात रूसी चित्रकार रेपिन ने अपने मित्र स्तासोव को लिखा था, 'मैंने खिड़की के बाहर नज़र डाली। मास्को पर पौ फट रही थी, सिर्फ़ पुराने गिरजों और बुर्जों के गुंबद ही साफ़ दीख रहे थे। यह भव्यता और शांति की अनुभूति है, मानो मास्को किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा हो। हां, सचमुच, मास्को जागरण की प्रतीक्षा कर रहा है।'

"और एक अन्य चित्रकार – वेरेश्चागिन – अपने नेपोलियन के चित्र की सामग्री एकत्र करने के वास्ते यहां क्रेमलिन के दृश्य को अपने स्मृतिपटल पर अंकित करने के लिए ठहरे थे।"

पास ही मास्को के बिजलीघर की ऊंची चिमनियां हैं, जो यहां ज़रा अटपटी लगती हैं। मुझे याद आ गया कि किसी ने बताया था कि नगर-सोवियत इसे क्रेमलिन के इलाक़े से हटाने की

सोच रही है, लेकिन, प्रत्यक्षतः इसमें निहित ख़र्च और नयी जगह चुनने की समस्याएं इसे रोक रही हैं।

वीक्तोर ने कहा, "पुराने दिनों में त्योहारों के मौक़ों पर जब अधिकांश मास्को में धुंधली रोशनियां ही हुआ करती थीं, यह जगह रोशनियों से जगमगाया करती थी और बिजली की बत्तियों से आर्थिक सफलताओं की घोषणा किया करती थी। यह जगह प्रदर्शन का केंद्र हुआ करती थी, जहां, रात के समय, हमारी उपलब्धियों के बढ़ते हुए कीर्तिमानों को देखा जा सकता था।"

हम आहिस्ता-आहिस्ता जलमार्ग में आ गये। नोवोस्पास्स्की पुल पर हमें एक गिरजे का बुर्ज दिखाई दिया, जिसमें संकरे शिगाफ़ थे – यह तातार हमलावारों के ख़िलाफ़ बनायी मोरचाबंदी का हिस्सा था। हमने वापसी यात्रा के लिए याउज़ा नदी के पास, जो यहां मास्को नदी में मिल जाती है, नाव बदली। कुछ ही पीछे आंद्रोनिकोव मठ है, जहां महान रूब्ल्योव ने भित्तिचित्र बनाये थे। फिर हम प्राचीन शिशु पालन-पोषण भवन के सामने से गुज़रे। अब हम नये, विशाल होटल रोस्सीया (रूस) के बराबर थे, जिसे मूल परियोजना के अनुसार तो पास ही स्थित क्रेमलिन से भी बहुत ऊंचा होना था। लेकिन लोगों ने विरोध किया और ऊंचाई को काफ़ी कम करवा दिया। तिस पर भी इसमें अब छः हज़ार लोगों के लिए जगह है। इस सफ़ेद इमारत को आहिस्ता-आहिस्ता पार करते हुए हम ईंट की लाल दीवार से घिरी क्रेमलिन की, गिरजों और महलों की भव्य स्थली पर पहुंच गये।

आख़िर, दो घंटे की यात्रा के बाद हम वहीं आ गये हैं, जहां से हम चले थे – बोल्शोई कामेन्नी मोस्त का घाट। लोगों की भीड़ के साथ हम उतरे, विशाल सुरमई रिहायशी इमारत के साथ-साथ पैदल चल दिये, जिसकी दीवारों पर कई भूतपूर्व सुप्रसिद्ध रहनेवालों के चित्र बने हुए हैं।

"चलो, कहीं बैठकर एक गिलास चाय पी जाये," वीक्तोर ने राय दी। कुछ आगे चलकर हमें एक छोटा सा क़हवाघर मिल गया।

"सैर बहुत बढ़िया थी!" मैंने कहा।

"मुझे ख़ुशी है कि तुमने यह सब देखा और मुझे ख़ुशी है कि हम साथ थे। तुम्हें हमारा इतिहास देखने का, शहर को अनुभव करने का, हमारी नदी को देखने का मौक़ा मिला," वीक्तोर ने कहा।

कारख़ाने में

मास्को में ईंट की ऊंची दीवारों और बचाव के लिए आरपार ऊंचे और संकरे छेदोंदार कंगूरोंवाले प्राचीन दोन्स्कोई मठ से कुछ ही दूरी पर ओर्जोनिकीद्ज़े मशीन-औज़ार निर्माण कारख़ाना है, जो नयी-पुरानी इमारतों का एक बेतरह फैला हुआ समूह है। यहां आदमी और औरतें – मज़दूर, इंजीनियर और कुशल मैकेनिक – आधुनिक कम्प्यूटर नियंत्रित ख़रादें तैयार करते हैं।

"हम अपना उत्पादन दुनिया के कई देशों को निर्यात करते हैं," मेरी एक हाल की यात्रा के दौरान निदेशक ने कहा था।

हम एक विशाल नयी इमारत में घूम रहे थे – एक तरफ़ की दीवार छत तक कांचजड़ी. शेष दीवारें नीलछौंह-भूरे रंग में रंगी हुईं, संयोजन की विभिन्न अवस्थाओं में जटिल मशीनें। ऊपर एक पीला क्रेन वेरोक आगे-पीछे जा रहा था। कांच के चालक-कक्ष में मुझे एक सुंदर युवती – क्रेनचालक – दिखाई दी।

"हमने देखा है कि स्त्रियां इस काम में विशेषकर निपुण हैं। वे एक भारी-भरकम उपस्कर को उठा सकती हैं, दूसरी जगह पहुंचा सकती हैं और वटन पर भी सही उतार सकती हैं," एक मज़दूर ने कहा।

तभी वह लड़की सीढ़ी से नीचे उतर आयी। हमारी मुलाक़ात हुई। उसका नाम तान्या था।

"आपकी क्या उम्र है, तान्या?" मैंने पूछा।

"बीस साल।"

"आपकी शादी हो चुकी है?"

"हां। मेरे पति भी यहीं काम करते हैं। वह पाइप-फ़िटर हैं। मैं रात को पढ़ती हूं। मैं तकनीशियन बनना चाहती हूं।"

"आपके बच्चे भी हैं?"

"अभी तक तो नहीं," वह मुसकरायी।

"अगर बच्चे हों और दोनों मियां-बीवी काम करते हों, तो क्या करते हैं?" मैंने पूछा।

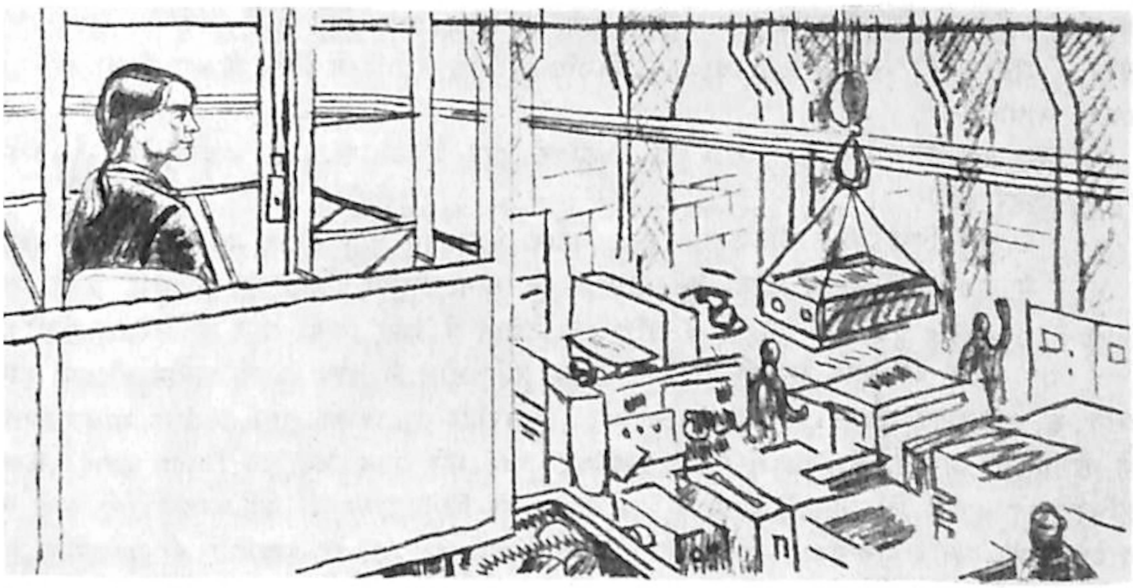
"हमारे कारखाने के साथ शिशुसदन है, जहां तीन महीने से लेकर तीन साल तक के बच्चों की देखभाल की जाती है। बेशक, हम अपने बच्चों का आप पालन-पोषण करना चाहते हैं। हमें इसके लिए एक साल की छुट्टी मिलती है और फिर तीन साल से सात साल तक के बच्चों के लिए बालोद्यान भी तो है।"

"अपने चालक-कक्ष में आप कितनी सुंदर लगती हैं!"

"हम सभी सुंदर हैं," एक दरवाज़े की तरफ़ जाते-जाते तान्या ने कहा।

मैं सुब्बोत्निक (हर साल एक शनिवार, जब मज़दूर अपना श्रमदान करते हैं) में भाग लेने के लिए यहां एक बार पहले भी आ चुका था। सुब्बोत्निक की परंपरा को १२ अप्रैल, १९१९ से क़ायम रखा गया है। उस दिन, सोवियत जनतंत्र की कठिन अवस्था पर विचार करने के बाद मास्को-कज़ान रेलवे डिपो के मज़दूर सुब्बोत्निक के लिए आये थे। उन्होंने उस दिन बिला वेतन काम करके तीन इंजनों की मरम्मत की। लेनिन ने सुब्बोत्निक को एक महान शुरूआत कहा था। पहला अखिल-रूसी सुब्बोत्निक १९२० में हुआ था। लेनिन ने इस "लाल शनिवार" में डेढ़ करोड़ लोगों के साथ हिस्सा लिया था।

१९६९ से सुब्बोत्निक अप्रैल में लेनिन के जन्मदिवस पर होता है। १९७४ के सुब्बोत्निक में १३.५ करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया था। किसी एक सुब्बोत्निक द्वारा एकत्र धन से निर्मित सबसे बड़ी परियोजना मास्को के एक उपनगर में सोवियत आयुर्विज्ञान अकादमी का अर्बुदविज्ञान



अनुसंधान केंद्र है। सुब्बोत्निकों द्वारा अर्जित धन चिकित्सा तथा कृषि केंद्रों, स्कूलों, अस्पतालों, संस्कृति प्रासादों और खेल-कूद सुविधाओं के निर्माण के लिए अतिरिक्त निधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

जब मैंने कारख़ानेवालों को अपनी इच्छा के बारे में बताया, तो उन्होंने खुलकर अपनी खुशी ज़ाहिर की।

"आपको किस चीज़ की ज़रूरत है? आपके लिए हम क्या तैयार करें?" उन्होंने पूछा।

"मैं काम के बीच में, बड़ी नयी इमारत में रहना चहूंगा, जहां मज़दूर मुझे अपने साथ काम करते देखेंगे। मुझे एक बड़े फलक और उसे टिकाने के लिए किसी स्टैंड की ज़रूरत होगी।"

२० अप्रैल की सुबह आदमी-औरतों की एक बड़ी भीड़ के साथ मैं भी मशीन-औज़ार कारख़ाने के फाटक से गुज़रा। बैंड बज रहा था, समारोही वातावरण था। विशाल संयोजनशाला के बीचोंबीच, मशीनों के बीच में मेरा फलक खड़ा था। मैंने अपना रंगों का डिब्बा खोला, अपनी कूंचियों को क़रीने से लगाया, गोद में झुके बच्चे को लिये फ़ाख़्ताओं को चुगाती एक स्त्री का चारकोल से रेखाचित्र बनाया। ज़रा ही देर में मैं नील-धूसर रंगों में आसमान की पृष्ठभूमि बना चुका था। फिर स्त्री की पोशाक का पीला रंग और बच्चे की पोशाक का बैंगनी रंग भी उभर आये। अधिकाधिक लोग खड़े होकर मुझे काम करते देख रहे थे। काला चोग़ा पहने एक युवती ने, जिसके पिंगल केशों को सफ़ेद रूमाल ने जगह पर बांध रखा था, मेरी क़मीज़ पर पिन से कपड़े का लाल बो लगा दिया। कारखाने के फ़ोटोग्राफ़र ने कुछ तसवीरें खींचीं। एक आदमी सिने-कैमरा के साथ भी आ गया। फिर लाउडस्पीकरों ने मध्यांतर का ऐलान किया। कुछ अभिनेता मनोरंजन कराने – अपने सुब्बोत्निक की पूर्ति – के लिए आ गये थे।

जब मैंने दोपहर ढलते अपना चित्र पूरा किया, तो उसे कारख़ाने के क्लब ले जाया गया, "जहां हम आपको यह देखने के लिए निमंत्रित करेंगे कि हम उसे टांगेंगे कैसे," एक मज़दूर ने मुझे बताया। कुछ दिन बाद कारखाने की कार मुझे वहां वापस ले गयी। मुझे क्लब के एक बड़े कमरे में ले जाया गया। वहां, मुख्य दीवार पर, मेरा चित्र – ओर्जोनिकीद्ज़े मशीन-औज़ार कारख़ाने के मज़दूरों को मेरा उपहार – टंगा हुआ था।

अब मैं मज़दूरों से बातचीत करता मशीनों के बीच घूम रहा था।

"कुछ अमरीकी मज़दूर यह नहीं समझ सकते हैं कि आपके यहां हड़तालें नहीं होती हैं। वे सोचते हैं कि आप लोग उत्पीड़ित, नियंत्रित हैं," मैंने ड्रिल-प्रेस पर काम करते एक आदमी से कहा।

"हड़ताल करना तो खुद हमारे ही हितों के ख़िलाफ़ काम होगा। हम उत्पादन-साधनों के मालिक हैं। यह एक बहुत बड़ा फ़र्क़ है। जो मैं पैदा करता हूं, वह मेरा है, मेरे परिवार के लिए, मेरे देश के लिए है। हमारे यहां कोई मेरी मेहनत से मुनाफ़ा नहीं कमाता। मैं अपने देश के लिए दौलत पैदा करता हूं और इससे मुझे लाभ होता है और अगर मैं कभी अति उत्पादन भी कर दूं, तो मेरा देश और अधिक समृद्ध होगा।

"हम हर साल बड़ी कामयाबियां हासिल करते हैं। आज हम जिन मशीनों को बना रहे

हैं, जब वे हमारे काम के ज़्यादातर हिस्से को करने लगेंगी, तो एक दिन हम कम घंटे, कम दिन काम करने लगेंगे। तब हम अपनी सर्जनात्मक शक्ति का अपने विश्राम के उपयोग के लिए विकास करने लगेंगे।"

"यह एक ऐसी समस्या है, जिसने हमारे कई समाजविज्ञानियों को भी उलझा रखा है," मैंने कहा। "ऐसी हालतें उपलब्ध करना और – इससे भी महत्वपूर्ण बात – पैदा करना कि जिनमें अगर कोई आदमी किसी सर्जनात्मक गतिविधि में शामिल होना चाहे, तो वह उसमें हिस्सा ले सके। हम जानते हैं कि यह हर आदमी के लिए एक निजी समस्या है। हर ही आदमी थियेटर या पुस्तकों में दिलचस्पी नहीं रखता है। ऐसी दिलचस्पियों को किस तरह पैदा किया जाये, किस तरह प्रोत्साहित किया जाये, यह हल करने के लिए एक समस्या रहेगी।"

"हमारे यहां ऐसे क्षेत्र हैं, जहां काम विशेषकर कठिन है," उसने अपनी बात जारी रखी, "मिसाल के लिए, कोयला-खनन। लेकिन कोयला-खनिक सबसे अधिक पैसा पानेवाला मज़दूर है। उसे अतिरिक्त सवेतन छुट्टी मिलती है। उसके स्वास्थ्य की लगातार विशेष चिकित्सालयों में जांच होती रहती है। उसे अनेक विशेष सुविधाएं प्राप्त हैं।

"हमारा संविधान काम के अधिकार को प्रत्याभूत करता है। कोई भी आदमी बेरोज़गार नहीं रह सकता। हमारे यहां बेरोज़गारी नहीं है। अगर हम चाहें, तो रोज़गार बदल सकते हैं। समय के साथ हमारे वेतन और उनकी दरें बढ़ती जा रही हैं। हमें कितने ही अवसर प्राप्त हैं। प्रबंधकों को मज़दूर का अनुरोध मिलने पर उसको दो हफ़्ते के भीतर छुट्टी मंजूर करनी होती है।

"हमारा यूनियन मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करता है – उनकी शिक़ायतों को लेता है। लेकिन हम उन मज़दूरों की आलोचना भी करते हैं, जो लापरवाह या सुस्त होते हैं या जो काम पर नशे में आते हैं या पास-पड़ोस में नशे की हालत में देखे जाते हैं। हम उस आदमी की परेशानी के कारण को समझने की कोशिश करते हैं। उसे मज़दूरों की सभा में बुलाया जाता है और अपनी समस्याओं के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अगर वह अपनी हरकतें फिर करता है, तो उसका नाम बुलेटिन बोर्ड पर लगा दिया जाता है। आपने अंदर आते समय एक ऐसा ही बोर्ड देखा है, जिस पर तीन ऐसे लोगों के नाम हैं। मदद करने की हर संभावना अगर ख़त्म हो जाये और वह फिर भी न सुधरे, तो उसे कारख़ाने से बरख़ास्त कर दिया जाता है। लेकिन ऐसा सिर्फ़ तभी होता है कि जब और कोई चारा ही न रहे।"

"उसके साथ फिर क्या होता है?" मैंने पूछा।

"वह अपने इलाक़े में प्रशासन के पास जा सकता है और वहां उसे कोई ऐसा काम दे दिया जायेगा कि जिससे उसे किसी तरह की रोज़ी मिलती रहे। निस्संदेह, इस तरह के लोग अपनी ज़िंदगियों को बरबाद कर लेते हैं। वे कभी तरक़्क़ी नहीं कर सकते। वे बेकार ज़िंदगियां ही बसर करते रहेंगे। लेकिन इस तरह के लोगों को हर तरह की – चिकित्सीय सहित – सहायता दी जायेगी। हम इस तरह के लोगों को अपने समाज के लिए एक दुःखद हानि समझते हैं।

"ज़रा काम के लिए आते लोगों पर निगाह डालिये। सभी अच्छे लिबास में हैं। आप कह नहीं सकते कि उनमें से कौन इंजीनियर है और कौन प्रबंधक। मैं दूसरे देशों में बेरोज़गारी के

बारे में पढ़ता हूं। मुझे मज़दूरों पर, उनकी ज़िंदगियों पर बेहद अफ़सोस होता है। अपने परिवार का पेट भरने के लिए, अपने बच्चों के लिए सौगातें ख़रीदने के लिए पैसे का न होना कितना दुःखद होता होगा!"

कन्वेयर के साथ-साथ जाते हुए मेरी निगाह दीवार पर फैली एक बड़ी पताका पर पड़ती है – "स्थायी शांति के लिए! हम सोवियत संघ की शांतिमय नीति का समर्थन करते हैं!" बुलेटिनें, पताकाएं, चिली की ताज़ा ख़बरें, कंसर्टों की सूचनाएं, श्रेष्ठ मज़दूरों के चित्रों से सजा सम्मान पट्ट। मैं कारख़ाने के पार्टी-नेता के साथ जा रहा था। बातचीत में वह बताता है कि वह लेनिनग्राद के बचाव में लड़ा था।

"जी, हां। मैं सोलह साल की उम्र में ही स्कूल छोड़कर स्वेच्छा से सेना में चला गया था। दो बार घायल हुआ। मुझे पीछे ले जाया गया। अच्छा हुआ। फिर एक दूसरे मोरचे पर लड़ने के लिए चला गया। फिर मैं सख़्त घायल हुआ। मुझे तात्कालिक रक्ताधान की आवश्यकता थी, इसलिए एक लड़की ने स्वेच्छा से अपना रक्त दिया। बाद में मुझे पता लगा कि उसके रिश्तेदार मेरे परिवार के मित्र हैं। हमारा संपर्क टूट गया, लेकिन बाद में हम फिर मिले और हमारी शादी हो गयी।"

वह कुछ मज़दूरों के साथ बात करने के लिए ठहर गया।

जब हम फिर चलने लगते हैं, तो वह बताता है, "हमारे यहां पांच हज़ार लोग काम करते हैं। लेकिन हम पांच सौ और को फ़ौरन काम पर लगा सकते हैं। सोवियत संघ में हमारे आगे एक समस्या है – श्रमशक्ति की कमी। हमारे यहां उत्पादन का अच्छा रेकार्ड है। जैसा कि आप देखते हैं, हम प्रसार कर रहे हैं, नयी इकाइयां बना रहे हैं। हम अपने औज़ारों का विदेशों को निर्यात करते हैं। उनका बहुत नाम है। बेशक, हर ही कारख़ाने को ऐसी सफलता नहीं मिलती है। कुछ अब भी उत्पादन में पिछड़े रहते हैं। लेकिन ऐसे मामलों में विशेषज्ञ समस्या का अध्ययन करने और आवश्यक परिवर्तन करने के लिए वहां जाते हैं।

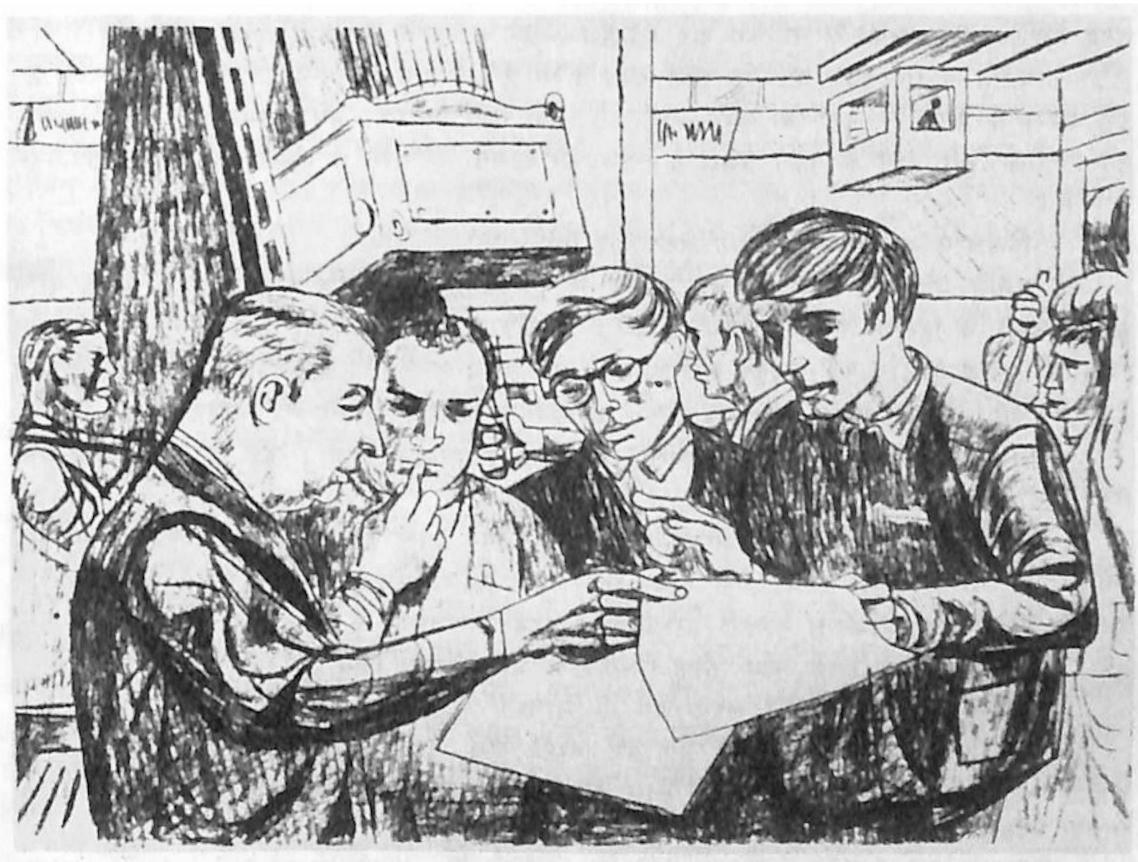
"यह एक दिलचस्प आदमी हैं, जिनसे आपको मिलना चाहिए। यह हमारे कारख़ाने के स्काटलैंड मित्र समाज के सदस्य हैं। हमारे यहां कई भिन्न-भिन्न समाज हैं। यह हाल ही में विदेश गये थे। अभी कुछ दिन पहले इन्होंने मज़दूरों के आगे कवि रॉबर्ट बर्न्स के बारे में व्याख्यान दिया था।"

मैंने अंग्रेज़ी में उसका अभिवादन किया और हमने हाथ मिलाये।

"मैं यह भाषा काफ़ी अच्छी तरह जानता हूं, क्योंकि मैंने इसका अध्ययन किया है। मैं काफ़ी पढ़ता हूं और अपनी छुट्टियों में भी मैं कुछ पढ़ाई करूंगा", उसने जवाब दिया।

"इन गरमियों में आप कहां जा रहे हैं?" मैंने पूछा।

"काला सागर। वहां हमारे यूनियन की एक जगह है। वहां हमारा एक बाल शिविर है, जिसमें हम अपने बच्चों को भेज सकते हैं।" उसने अपने बारे में बताया, "मैं जन मिलीशिया में हूं। आपने अपनी बांहों पर लाल फ़ीते लगाये हमारे लोगों को सड़कों पर देखा होगा। हम व्यवस्था क़ायम रखने की ज़िम्मेदारी में जनता को ज़्यादा भाग देने का प्रयोग कर रहे हैं। इस



तरह हम मिलीशिया की संख्या कम कर रहे हैं। हमारे कारख़ाने में ही ५०० से ऊपर ऐसे मज़दूर हैं, जो महीने में एक दिन या एक शाम गश्त करते हैं। मैं जन फ़िल्म-पुनरीक्षण मंडल में भी हूं। इस मंडल में प्रोफ़ेसर, गृहणियां और मज़दूर हैं। हम नयी फ़िल्मों – हमारी भी और विदेशी भी – को रिलीज़ किये जाने के पहले देखते हैं। हम इन फ़िल्मों के बारे में अपनी राय और सिफ़ारिशें देते हैं।"

"दिलचस्प आदमी हैं," आगे बढ़ते हुए मैंने कहा।

"हमारे यहां ऐसे कई हैं। हमारे कई मज़दूर संस्कृति में रुचि रखते हैं। वे भांति-भांति की हलचलों में हिस्सा लेते हैं। वे यात्रा करते हैं और हो सकता है कि वे इंगलैंड, फ़िनलैंड या मिस्र भी हो आये हों। कई मज़दूर अफ़्रीकी देशों की यात्रा करते हैं। और बेशक, कई समाजवादी देशों की भी। लेकिन आइये, आपको हमारी सांस्कृतिक निदेशक से मिलना चाहिए।"

तमारा वसील्येव्ना ने अपने कार्यालय में मेरा अभिवादन किया। वह काली आंखोंवाली, बड़ी ज़िंदादिल जार्जियाई स्त्री है।

"हमारे यहां एक बढ़िया थियेटर-मंडली है, जिसने हाल ही में अपनी पच्चीसवीं वर्षगांठ मनायी है। मास्को कला थियेटर के साथ हमारा कामकाजी संबंध है। वह हमें सलाह-मशविरा देता है और उसके अभिनेता हमारी प्रस्तुतियों में हमारे मज़दूरों के साथ मंच पर आते हैं और हमारे एक अभिनेता ने उनके साथ उनके थियेटर में भी अभिनय किया था।"

"आश्चर्यजनक है," मैंने अपने मन में सोचा।

"हमारे यहां एक गायन-मंडली है। वह काफ़ी घूम चुकी है और कई जगह अपने कंसर्ट पेश कर चुकी है। हमारे यहां बच्चों के लिए नृत्यकला कक्षाएं तथा बाल-मंडलियां हैं और पियानो-वादन सिखाने की भी व्यवस्था है।

"हमारा एक भूतपूर्व मज़दूर अब पेशेवर गायक है। हमारे गायक कारखाने में मध्याह्न भोजन के अवकाश में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। वाद्य-यंत्र हम देते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि हम सौंदर्यबोधात्मक शिक्षा देते हैं। हमारे यहां बहुत से बच्चे हमारे काम में भाग लेते हैं। हम उस समय को व्यस्त रखते हैं, जो अन्यथा किसी बेकार ढंग में नष्ट होता। हम उनके परिवारवालों से भी मिलते हैं। एक तरह से हम उन्हें भी शिक्षित करते हैं। हमारे यहां एक नृत्य-मंडली है। उसके लिए पोशाकें कारख़ाना मुहैया करता है। हम कारखाने के क्लब में कला प्रदर्शनियां आयोजित करते हैं, कलाकारो को अपने कार्य के बारे में बताने के लिए बुलाते हैं। और निस्संदेह, हम अपने मज़दूरों की कृतियों की भी प्रदर्शनियां करते हैं। सांस्कृतिक अनुभव बेहतर नागरिक बनाता है।"

"जब भी मैं ऐसी हलचल की बात सुनता हूं, तो सचमुच जोश में आ जाता हूं," मैंने कहा। "मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूं, जब संस्कृति के क्षेत्र में व्यावसायिक और शौक़िया कलाकारों में पार्थक्य कम होगा, जब हर कोई गोर्की के इस विश्वास को पूरा कर सकेगा कि अंतर्निहित रूप में हममें से हर किसी में कलाकार बनने की कुछ संभावना होती है। अमरीका में कुछ अधिक उन्नत ट्रेड-यूनियनों के सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करते थे और कुछ के अब भी हैं।

इनमें सबसे प्रमुख अस्पताल तथा औषध मज़दूर यूनियन है। उसके पास खासा बड़ा सांस्कृतिक कार्यक्रम है। मेरी जानकारी में वह अकेला यूनियन है, जिसने अपनी नयी इमारत के नक़्शे में निचली मंज़िल में एक कलादीर्घा को भी शामिल किया था। यहां वह अपने सदस्यों की दिलचस्पी की और यूनियन के शौक़िया कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनियों का आयोजन करता है। इस यूनियन ने मुझे अपनी नयी इमारत के अग्रभाग पर एक बड़ा मोज़ैक (पच्चीकारी चित्र) बनाने के लिए नियुक्त किया था। संयुक्त राज्य अमरीका में हमारे कई नगरों में नगर तथा संघीय शासनों की वित्तीय सहायता से इलाक़ाई सांस्कृतिक गतिविधियां चलायी जाती हैं। वृद्धों में भी कुछ काम किया जा रहा है। लेकिन मेरे लिए यह खेदजनक है कि उसकी यहां की सांस्कृतिक नीति से कोई भी तुलना नहीं की जा सकती।"

संस्कृतिकर्मियों के ट्रेड यूनियन की केंद्रीय परिषद के अध्यक्ष म० पाश्कोव द्वारा लिखित एक लेख का शीर्षक था 'कला और श्रम में साहचर्य'। मैंने यह लेख 'मास्को न्यूज़' में पढ़ा था।

"सोवियत संघ में सिंफ़नी आर्केस्ट्राओं का कारखानों के वर्कशॉपों में कंसर्ट और लोकप्रिय कलाकारों तथा रंगारंग मंडलियों का कृषि टोलियों के आगे, खेतों में, मछियारों या वनकर्मियों के आगे कार्यक्रम पेश करना एक आम बात बन गयी है। हमारे यहां एक हज़ार से अधिक जन-थियेटर और दसियों हज़ार कला स्टूडियो तथा साहित्यिक संघ हैं, जिन सबका व्यावसायिक अभिनेता-अभिनेत्रियां और कला निदेशक, प्रसिद्ध कलाकार और लेखक अपने खाली समय में स्वैच्छिक आधार पर मार्गदर्शन करते हैं। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि कितने ही प्रतिभाशाली लोग कल-कारखानों से साहित्य और कला में प्रवेश करते हैं। शौक़िया मंडलियां और उनके नेता ऐसी प्रतिभा की खोज में सहायता करते हैं, मेहनतकशों की क्षमताओं को प्रकट करते हैं, उनके बौद्धिक क्षितिज को व्यापक करते हैं और उनकी कलात्मक रुचियों को ढालते हैं।

"करोड़ों लोग, सोवियत संघ की आबादी का लगभग दसवां भाग, शौक़िया कलात्मक गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं। उन्हें व्यापकतम भौतिक सहायता दी जाती है। मिसाल के लिए, दोन-तट रोस्तोव नगर का कृषि-यंत्र कारखाना बड़े पैमाने की सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए प्रतिवर्ष २० लाख रूबल विनियुक्त करता है। कला सोवियत नागरिकों की एक आत्मिक आवश्यकता बन गयी है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि दो-तिहाई सोवियत मज़दूर उच्च अथवा माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त हैं।

"कला के क्षेत्र में और औद्योगिक तथा कृषि उद्यमों में काम करनेवालों में सहयोग सिर्फ़ मज़दूरों के लिए ही हितकारी नहीं है। 'कारखाना कर्मचारियों के साथ हमारा संसर्ग हमारी दक्षता को बढ़ाता है और सर्जनात्मक नवओज प्रदान करता है। जब हम यह देखते हैं कि हमारे दर्शक हमारी कला के सम्पर्क में आने पर सुख का अनुभव करते हैं, तो हमें अभिमान होता है।' ये शब्द मास्को नाट्य थियेटर के मुख्य कला-निदेशक अलेक्सेई दुनायेव ने कहे थे।

"सोवियत संघ में ५०० से अधिक व्यावसायिक थियेटर हैं। आपको उनमें से शायद ऐसा एक भी न मिल पाये, जो सहयोग-समझौते द्वारा औद्योगिक उद्यमों या सामूहिक फ़ार्मों के साथ संबद्ध न हो।

"लेखक तथा कलाकार संघ भी इन समभौतों में भाग लेते हैं। उदाहरणार्थ, मास्को लेखक संघ और नगर के पांच प्रमुख औद्योगिक उद्यम – दीनामो (डायनामो) कारखाना, द्वितीय घड़ी कारखाना, विद्युतनिर्वातयंत्र कारखाना, १६०५ की क्रांति कारखाना और त्रियोखगोर्नाया टैक्सटाइल कारखाना – में ऐसा समभौता है। समभौते में नयी कलाकृतियों पर चर्चा, लेखकों के कारखाने के साहित्यिक संघों में भाग लेने आदि का प्रावधान है। औद्योगिक उद्यम जाकर लेखक अपने भावी मुख्य पात्रों के बारे में अधिक जानते हैं, जब कि मज़दूर मज़दूर वर्ग से संबंधित नयी रचनाओं पर चर्चा के समय रोचक और उपयोगी सुभाव देते हैं।"

मैंने सोचा, "यह है वह तरीक़ा, जिससे सोवियत संघ में जनता की संस्कृति का निर्माण किया जा रहा है – व्यावसायिक और शौक़िया कलाकारों के बीच फ़ासला कम हो रहा है। भविष्य में इसकी संभावनाओं के बारे में हम अभी कल्पना ही कर सकते हैं।"

हाल ही में खुले भोजनालय में दोपहर के खाने के बाद मेरा आखिरी स्टाप कारखाने के पास एक नवनिर्मित स्कूल को देखने के लिए था। यह एक प्राविधिक, वृत्तिक स्कूल है। इलेक्ट्रानी प्रोग्राम-चालित मशीन-औज़ारों से सज्जित कमरे। जर्मन या अंग्रेज़ी के अध्ययन के लिए एक बड़ा कमरा। तीनवर्षीय पाठ्यक्रम के अंतिम छः महीने छात्र कारखाने में व्यावहारिक कार्य में लगाते हैं। शिक्षण निःशुल्क है। छात्रों को दिन में तीन बार भोजन, ओवरआल, पाठ्य पुस्तकें और वज़ीफ़े दिये जाते हैं। शिक्षा पूरी करने के बाद उन्हें अपनी निपुणता और कारखाने में अर्जित ज्ञान के आधार पर रोज़गार प्रत्याभूत होता है।

मैं अकसर उस कारखाने के बारे में – शायद सोवियत संघ की ज़बरदस्त तरक़्क़ी में एक अत्यल्प, एक अत्यंत सूक्ष्म कण के रूप में – सोचा करता हूं।

मैं उस मज़दूर के बारे में सोचता हूं, जिसने स्काटिश कवि बर्न्स के कृतित्व पर भाषण दिया था ;

कारखाने के उस इंजीनियर के बारे में, जिसने अपनी नाट्य-मंडली द्वारा प्रस्तुत शेक्सपियर के नाटक में रिचर्ड तृतीय का अभिनय किया था ;

मडलेन की भूमिका में मोल्येर के एक नाटक में मास्को के एक प्रसिद्ध अभिनेता के साथ मंच पर आनेवाली स्टोर-क्लर्क इरीना बेल्यकोवा के बारे में ;

नृत्य की कक्षा में शैशव के आनंद से इतनी मनोहरतापूर्वक थिरकते मुस्कराते सुंदर बच्चों के बारे में ;

अपने जीवन के उस अविस्मरणीय दिन के बारे में, जब मैंने करोड़ों लोगों के साथ सुब्बोत्निक में भाग लिया था ;

मैं बड़ी हार्दिकता के साथ कारखाने के निदेशक और ब्रिटेन-सोवियत मैत्री समाज – जहां मैं बोला था – के अध्यक्ष इंजीनियर चीर्कोव को याद करता हूं ;

मैं खुली दोस्ती के प्रदर्शन को याद करता हूं ;

मैं सांस्कृतिक प्रासाद की निदेशक के साथ उस प्रेरणादायी बातचीत को याद करता हूं, जिसने मुझे बेहद प्रभावित किया था और मेरे इस विश्वास को पुनर्बल दिया था कि



अंतर्निहित सांस्कृतिक संपदा और सर्जनात्मक ओज साधारण लोगों में हर कहीं विद्यमान है;

मैं उस खुलेपन के लिए आभारी हूं, जिससे लोगों ने मेरे साथ अपनी चिंताओं, समस्याओं और कठिनाइयों के बारे में बातें की थीं;

मैं अहाते में उस बुलेटिन बोर्ड को याद करता हूं, जिस पर उन तीन मज़दूरों की तसवीरें लगी हुई थीं, जिन्हें अपनी असामाजिक हरकतों के लिए निंदित और लज्जित किया गया था और एक मज़दूरिन द्वारा किसी भी व्यक्ति – चाहे कोई भी और क्यों – के गंवाने पर व्यक्त किये दुख को याद करता हूं...

कई बार कारख़ाने हो आने के बाद मुझे – ज़रूरी तौर पर हर किसी के साथ नहीं, बल्कि पूरे के पूरे के साथ, उस एक जगह के साथ, जिसे जानने का मुझे मौक़ा मिला था, जहां मुझे अपनाया जाता है और आदर से पेश आया जाता है, लोगों और उनकी उपलब्धियों के साथ, और आनेवाले कल के लिए उनके निर्विवाद्य आशावाद के साथ – लगाव और गहरा दोस्ताना हो गया है।

गोर्की पार्क में मुलाक़ात

मास्को ठंडा हो गया था। गोर्की पार्क, जो कुछ ही हफ़्ते पहले लोगों की भीड़ों से भरा रहता था, अब लगभग निर्जन है। पेड़ों की मेहराबों के तले लंबी वीथिकाओं की ललछौंह पगडंडियां पीले पत्तों से ढंकी हुई हैं। अलबत्ता फूलों का अब भी प्राचुर्य है – जामुनी रंग के फ़्लोक्स, गुलाबी डालिया, चटक लाल कैना लिली (देवकली कुमुदिनी) और बैंगनी हेलिओट्रोप (ऊंटकटारा) की क्यारियां। जहां-तहां लोकस्ट की झाड़ियों से बाड़बंद छोटे-छोटे मैदान हैं, फूलों की क्यारी और फ़ौवारे के चौगिर्द नीली बेंचें हैं और आराम कुरसियों पर बैठने के विशेष स्थल हैं, जहां गठरी बने कुछ बूढ़े लोग पढ़ रहे हैं। मुख्य फ़ौवारे की बायीं तरफ़ डालिया के लंबे पौधों की देखभाल करती दो औरतें मरी हुई कत्थई पत्तियों को नोंच रही हैं। उनमें से एक की बांह पर रखवालिन का लाल पट्टा बंधा हुआ है, दूसरी शायद उसकी मित्र है।

"कितना ख़ूबसूरत है," मैंने कहा।

"है ख़ूबसूरत," दोनों में से एक, ठिंगनीवाली ने कहा, जिसका सुंदर सिर सुरमई शाल में लिपटा हुआ था। "प्रकृति सुंदर है और लोग प्रकृति में सुंदर हो जाते हैं।"

"कितना सच है," मैंने जवाब दिया।

"पार्क में तो सुंदर लगता ही है। लेकिन मुझे तब की याद आती है, जब मैं ऊराल में छुट्टी मना रही थी। आप कभी वहां गये हैं?" उसने मेरी तरफ़ देखा।

"न, कभी नहीं," मैंने जवाब दिया।

"वाह! फूल तो कोई वहां देखे। मैदान के मैदान उनसे भरे पड़े हैं। इतने सुंदर कि हैरत होती है। प्रकृति हमारे कितने ही तनावों को दूर करती है। जब लोग पहाड़ों पर या समुद्र के किनारे आराम करने जाते हैं, तो वे इतने उत्तेजनाहीन, भले और आपस में मैत्रीपूर्ण बन

जाते हैं। शहरों की तरह न कोई धक्कमधक्का, न गरमागरमी और न ही लड़ाई-झगड़ा। लोगों पर प्रकृति की सुंदरता का प्रभाव पड़ता है और अपनी बारी में वे खुद भी सुंदर हो जातें हैं।"

"सरदियों में इन फूलों का क्या होता है?" मैंने पूछा।

"कंदों को तो कुछ ही दिनों में वसंत में लगाने तक बचा रखने के लिए खोद लिया जायेगा। लेकिन फूलों को जब तक संभव हो, रहने देते हैं। हमें उनका ख़त्म होना बहुत बुरा लगता है।"

"क्या आप यहां अकसर आया करते हैं?" दूसरी स्त्री ने पूछा।

"हां। मुझे यह पार्क पसंद है – यहां जो संगीत मैं सुन सकता हूं, वह, यहां के रेस्तरां, प्रदर्शनियां, और पार्क के किनारे नदी, जहां छोटी सफ़ेद दरियाई नावों पर सवार हुआ जा सकता है, बच्चोंवाला हिस्सा, चक्रदोले और दूसरे झूले, झील और उसकी नावें, यहां के लंबे रास्ते और फूलों की सारी क्यारियां। यह विश्राम करने और जीवन का आनंद लेने के लिए बड़ी अच्छी जगह है। बेशक, हमारे यहां अमरीका में भी ख़ूबसूरत पार्क हैं, जैसे न्यूयार्क में केंद्रीय पार्क। लेकिन अब तो दिन में भी वहां जाना ख़तरनाक है। और रात में तो कोई भी वहां नहीं टहलता। वहां लोग लुट जाते हैं और कभी-कभी तो क़त्ल तक कर दिये जाते हैं।"

"उफ़, कैसी भयानक बात है! लोगों के लिए कितनी मुश्किल है!" स्त्री ने कहा। (और मुझे लगा कि वह ईमानदारी से कह रही थी, वह परेशान लग रही थी)। फिर उसे पार्क का ख़याल हो आया। "मुझे यहां अच्छा लगता है। गरमियों में तो मैं यहां अकसर ही आया करती हूं। मैं पेंशनर हूं। मैं इंजीनियर थी, लेकिन अब रिटायर हो गयी हूं। मेरे पास अपने आराम के लिए काफ़ी है। मैं थियेटर जा सकती हूं, मैं किताबें ख़रीदती हूं। गरमियों में मैं महीने भर आराम करने के लिए देहात चली जाती हूं।"

"यह आपकी व्यवस्था की अच्छाइयों में एक है।" मैंने कहा। "हमारे साथ तो यह है कि हमारे देश में बहुत से लोगों को बुढ़ापे के आने से ही डर लगता है। निर्वाह-व्यय के चढ़ने के साथ छोटी-छोटी पेंशनें और सामाजिक-सुरक्षा सुविधाएं लोगों की मामूली से मामूली ज़रूरतों को भी पूरा करने के लिए मुश्किल से ही काफ़ी पड़ती हैं।"

"इस पर विश्वास करना कठिन है," स्त्री बोली। "अमरीका अब भी दुनिया में सबसे धनी देश है। लेकिन यह बताइये," उसने आगे कहा, "क्या यह सच है कि अमरीका में स्लमें – गंदी बस्तियां – हैं?"

"कैसे भोलेपन का सवाल है," मैंने सोचा। "हां, अभाग्यवश हैं। ऐसी स्लमें हैं, जहां बच्चे कूड़े में खेलते हैं," मैंने जवाब दिया। "वे भीड़भरी, गंदी हालतों में रहते हैं। हमारे शहरों में तो कुछ ऐसे भी लोग हैं कि जिन्हें फूलों की तो बात ही क्या, हरी घास और पेड़ भी देखना नसीब नहीं होते। न्यूयार्क में भी रिहायशी हालतें ऐसी हैं कि आप यक़ीन नहीं करेंगी। रात को मांओं को अपने बच्चों की चिंता रहती है। अकसर बड़े-बड़े चूहे इधर-उधर दौड़ते रहते हैं और सोते बच्चों को काट जाते हैं। लेकिन ऐसा सिर्फ़ अमरीका में ही नहीं है – यह इंगलैंड, इटली और फ़्रांस और दूसरी जगहों के लिए भी सच है। बेशक, हमारे यहां जीवन के सभी

क्षेत्रों में और सरकार में भी ऐसे आदमी हैं, जिन्हें इस हालत की चिंता है और जो हमारे देश-वासियों की हालत को सुधारने के लिए काम करते हैं।"

"कैसी भयानक बात है! मैंने इसके बारे में अपने अख़बारों में पढ़ा है, लेकिन कुछ भी हो, इस पर यक़ीन करना मुश्किल है।"

"कैसा अजीब है यह अविश्वास अन्य देशों में लोगों की कठिनाइयों के बारे में," मैंने सोचा। मैंने एकाधिक बार ऐसा सुना है। मुझे पहले की एक यात्रा में मास्को में कुछ दोस्तों से बातचीत की याद हो आयी। मैंने राष्ट्रपति जानसन के तब के एक ताज़ा भाषण का ज़िक्र किया था, जिसमें उन्होंने उन एक-तिहाई अमरीकियों की बात की थी, जिन्हें उचित भोजन भी नहीं मिल पाता है। मेरे दोस्तों ने मेरी तरफ़ अचरज से देखा और मुझसे कहा कि यह एकदम असंभव है। क्या यह, सभी लोगों के लिए अच्छी ज़िंदगी की आकांक्षा – कोई ख़याली पुलाव ही है? क्या यह एक तरह की अबोधता है कि गत युद्ध की ऐसी कठिनाइयों, अभावों और भूख को स्वयं भोग लेने के बाद वे मानो यह विश्वास ही नहीं करना चाहते कि ऐसी कठिनाइयां अब भी कहीं अस्तित्वमान हो सकती हैं? ख़ुद उनकी ज़िंदगियां अब उन कठिनाइयों से मुक्त हो चुकी हैं, जिनका वे पहले अनुभव किया करते थे।

"कैसी दुःखद बात है! कितने ज़्यादा दुख की बात है!" स्त्री ने कहा। "बच्चे! वे हमारी सबसे मूल्यवान निधि हैं। मेरा ख़याल है कि आपने देखा होगा कि यहां हमारे बच्चों की कितनी संभाल और परवाह की जाती है।"

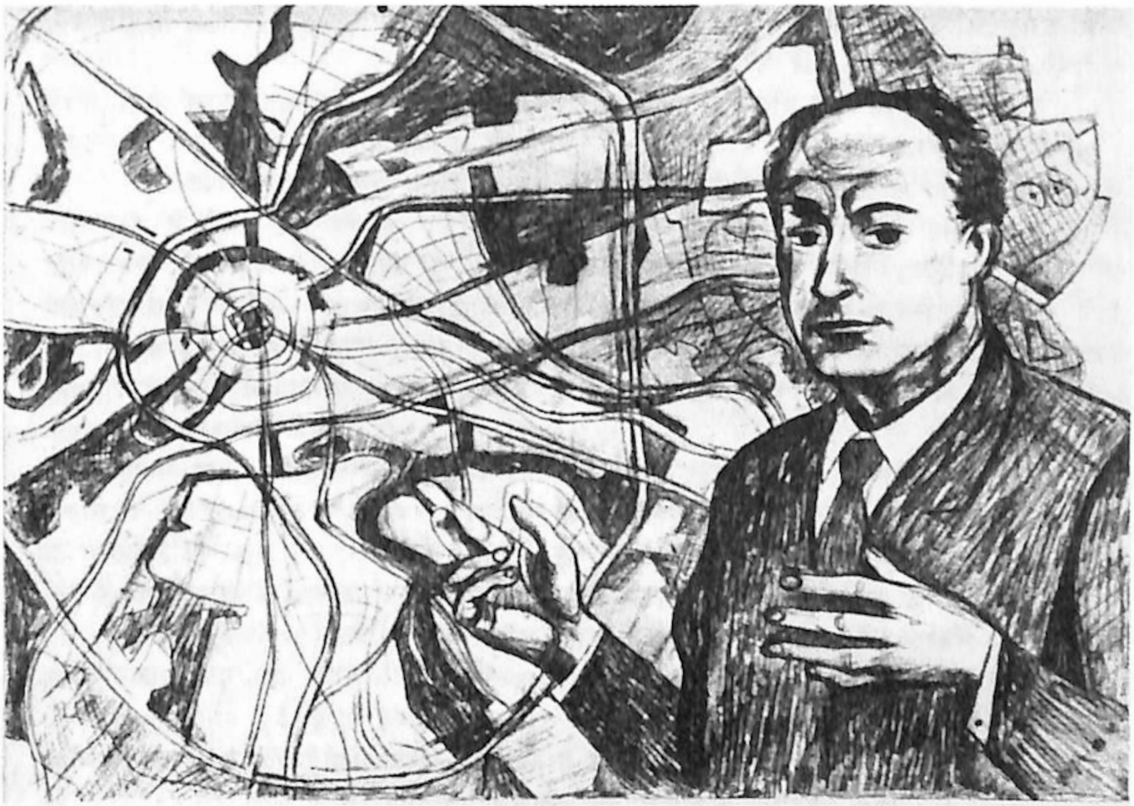
भारी बादलों की आड़ से अचानक निकलकर सूरज ने सारे पार्क को सुखद दीप्ति से आलोकित कर दिया। धीरे-धीरे पार्क में लोग लंबी नीली या लाल लैगिंग्स, गरम छोटे ओवरकोटों और तरह-तरह के टोपों में लिपटे हुए बच्चों के साथ नज़र आने लगे।

बांह पर लाल पट्टा लगाये दूसरी स्त्री हमारी बराबर से मुट्ठी भर मुरझाये फूल लेकर निकली, जिन्हें उसने नीली बेंच पर रखे एक डिब्बे में डाल दिया। इसके बाद उसने पगडंडी पर से गिरी हुई पत्तियों को बुहारना शुरू किया। उधर से टहलते निकलते दो बूढ़े रुके और उन्होंने फूलों पर नज़र डाली। ऊंचे पेड़ों के उस ओर खुले शाशलिक रेस्तरां से धूआं उठ रहा था।

मास्को नगर-विकास योजना

वसंत में एक दिन तीसरे पहर मेत्रो के मयाकोव्स्की स्टेशन पर उतरकर मैंने चौक को पार किया, जिसमें कवि का ऊंचा स्मारक खड़ा हुआ है, और सड़क की दूसरी तरफ़ उस इमारत में गया, जिसमें मास्को नगर के मुख्य वास्तुकार, नगर योजना आयोग तथा कई डिज़ाइन व स्थापत्य विभागों के कार्यालय स्थित हैं।

मास्को के मुख्य वास्तुकार मिख़ाईल पोसोख़िन मेरी अपने कार्यालय में प्रतीक्षा कर रहे थे – दीवारों पर नक़्शे और चार्ट, एक कोने में एक अठारहवीं सदी की मेज़ और कई कुरसियां



और दूसरे में उनकी आधुनिक मेज़। मैंने वैसे एकदम आधुनिक सजावट में इस प्राचीनयुगीन फ़र्नीचर की मौजूदगी के बारे में कुछ कहा।

"ख़ूबसूरत है," वह बोले। "उस ज़माने के लोग बेहतरीन डिज़ाइनर हुआ करते थे।"

मैं 'सोवेत्स्काया कूल्तूरा' (सोवियत संस्कृति) में मास्को नगर-विकास योजना पर उनका लेख पढ़ने के बाद से पोसोखिन से मिलने को बहुत उत्सुक था। उसमें उन्होंने लिखा था :

"हम किस तरह नगर के सभी ऐतिहासिक भागों को बचाकर रख सकते हैं और साथ ही अपने आधुनिक निर्माण में इस सबका सुसंगत संबंध पा सकते हैं? लोगों को कहां और किस तरह आरामदेह मकान दिये जायें? औद्योगिक प्रतिष्ठानों का सर्वोत्तम वितरण कैसे किया जाये? श्रेष्ठतम परिवहन व्यवस्था और लगातार बढ़ती सांस्कृतिक आवश्यकताओं की हम क्योंकर पूर्ति करें? इन सभी समस्याओं को मास्को की आम योजना में हल किया जाना चाहिए।

"नगर योजना की समस्या और प्राविधिक समस्याओं का उल्लेख किये बिना मैं एक मुख्य पहलू की बात करना चाहूंगा – कलाओं के समन्वय के प्रसंग में आम योजना। भविष्य के मास्को के बारे में एक कम्युनिस्ट नगर के आदर्श के रूप में बात करते हुए हम एक ऐसे महानगर के परिवेश, रंगरूप का सर्जन करने की कल्पना करते हैं, जिसमें हमारे समाज के आदर्शों की शक्तिशाली अभिव्यक्ति पायी जायेगी ... अकेला स्थापत्य इस लक्ष्य की सिद्धि नहीं कर सकता। इसमें हमें चित्रकारों और मूर्तिकारों की सहभागिता की ज़रूरत होगी, ताकि हम मास्को को लेनिन के शब्दों में 'कलात्मक ढंग से अभिकल्पित नगर' में परिणत कर सकें।

"संभवत: यह सिद्ध करना आवश्यक नहीं है कि कलाकृतियां, मोज़ैक और स्मारक, भित्तिचित्र और मूर्तियां किस हद तक वास्तुकलात्मक अवधारणाओं को समृद्ध करते हैं।

"क्या हम लाल चौक की मीनिन और पोझार्स्की के स्मारक के बिना, या हमारे बुलवारों की पुश्किन, गोगोल या हमारे नाट्यकार ग्रीबोयेदोव के स्मारकों के बिना कल्पना कर सकते हैं? खेद की बात है कि हमारे नगर के कई चौक किसी भी तरह की कलाकृतियों से सर्वथा रहित हैं और भित्तिचित्र या मोज़ैक तो शायद ही कहीं हैं।

"स्मारक वास्तु को – अपनी हर संभावना के साथ – नगर के रूपरंग और उसके परिवेश की रचना में समान भागीदार बनना चाहिए। कला का यह समन्वय तभी संभव है कि जब सर्जकों – वास्तुकारों और कलाकारों – के संबंधों में समन्वय हो। हम अपनी सभाओं, सम्मेलनों और परिचर्चाओं में इसकी बात करते हैं और पिछले कई वर्षों से हम इस सहयोग के बारे में बातें करते रहे हैं। लेकिन असली कसौटी तो उपलब्धियों की मात्रा है।

"करोड़ों लोगों के लिए मास्को शांति, प्रगति और मानवतावाद का प्रतीक बन गया है। शहर की इमारतों का हर पत्थर पीढ़ियों को अपने देश से प्रेम की, हमारे अतीत की महानता और हमारे भव्य तथा सुंदर वर्तमान में गर्व की भावना से प्रेरित करता है।"

मैंने कहा, "मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं आपके लेख से, विशेषकर कला के समन्वय के बारे में, बहुत प्रभावित हुआ। मैं ज़िंदगी भर इस समस्या के बारे में बात करता रहा हूं।

लेकिन, अफ़सोस की बात है कि हमारे देश में इस समय हमारे वास्तुकारों द्वारा कला का बहुत कम प्रयोग किया जाता है। और आपकी योजना के बारे में पढ़ते हुए और यह जानते हुए कि आपके पास वित्तीय साधन हैं और अपने नेताओं की हमदर्दी है, मैं कहूंगा कि भित्तिचित्रकार के नाते मुझे आपसे ईर्ष्या है।"

"हम तो प्रारंभ ही कर रहे हैं," पोसोखिन ने उत्तर दिया। "आपने हमारे निर्माण की विशालता को देखा है। आप जो कुछ भी मास्को में देखते हैं, उसका हर शहर, हर क़सबे में अनुकरण किया जाता है। इसके अलावा हम कई बड़े नये नगरों का निर्माण कर रहे हैं। जैसा कि आप ख़ुद कल्पना कर सकते हैं, वहां पुराने शहरों की विद्यमान अवस्थाओं की बाधा के बिना हम मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की योजना कर सकते हैं। उसकी आश्रय की, एकांत की, सामुदायिक कार्यों की, शिक्षा की, विश्राम की आवश्यकता की, और उसकी सांस्कृतिक तथा कलापरक आवश्यकताओं की।

"समाजवादी व्यवस्था नगर-योजनाकार को असीम, पूंजीवादी विश्व में ज़मीन और इमारतों के निजी स्वामित्व से निर्बाध, अवसर प्रदान करती है। मास्को में अब भी चौड़े महामार्ग बनाने के लिए पूरी की पूरी सड़कें गिरायी जा चुकी हैं। अपने ऐतिहासिक या कलात्मक मूल्य के लिहाज़ से महत्वहीन पुरानी इमारतों को गिरा दिया गया है। नये-नये पार्क और खेल मैदान बनाये जा रहे हैं। पिछले वर्षों में निरंतर निर्माण होता रहा है, जो मास्को के भूतपूर्व बाहरी इलाक़ों में फैलता जा रहा है। लोगों की रिहायशी हालतों में ज़बरदस्त सुधार आया है – किराये बहुत ही कम हैं – औसत किराया १० रूबल प्रति माह है, जो महीने की तनख़्वाह के बीसवें हिस्से से ज़्यादा नहीं है। गंदी बस्तियां नहीं हैं और बच्चे गलियों में नहीं खेलते। नये भवन समूहों के अपने बड़े-बड़े पार्क और मनोरंजन केंद्र हैं। पंद्रह साल पहले तक भी लोग तहख़ाना फ़्लैटों में रहा करते थे। सबसे पहले इन्हीं लोगों को नये आधुनिक आवास प्रदान किये गये थे। अब तहख़ानों में कोई भी नहीं रहता। हमने इस समस्या को हल कर लिया है। कुछ तहख़ानों को अस्थायी तौर पर लेखा कार्यालयों आदि में बदल दिया गया है, लेकिन अंत में हम इस सबके लिए भी मकान बना देंगे। इस समय हमारा लक्ष्य परिवार के प्रत्येक सदस्य को अलग निजी कमरा प्रदान करना है।"

जब वह यह कह रहे थे, तब मैं रोम, टोकियो और न्यूयार्क की गंदी बस्तियों के बारे में सोच रहा था, जहां ग़रीबों के बड़े-बड़े परिवार छोटे-छोटे क्वार्टरों में ठुंसे अविश्वसनीय गंदगी की हालतों में रहते हैं, जिनके लिए वे अपनी अल्प आयों का बड़ा हिस्सा दे देते हैं। मुझे ला पेर्ला – सान हुआन (प्वेर्टोरिको) के पुराने हिस्से के समुद्र तट का ख़याल आ गया, जहां शहर के निर्धनतम लोग उन मकानों में रहते हैं, जिन्हें उन्होंने खोखों, लोहे के रद्दी टुकड़ों और नगर के डलाव में ढूंढ़ी और चीज़ों से बनाया है, – तीस के दशक की मंदी के ज़माने में अमरीका में बनी बेरोज़गारों की बस्तियों हूवरवीलों की तरह, जिन्हें यह नाम संयुक्त राज्य अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति हूवर पर दिया गया था। फिर मुझे सोवियत संघ के बाहर रहनेवाले लोगों पर पोसोखिन के शब्दों के प्रभाव का ख़याल आया। लोगों को सोवियत जनों को मिलनेवाली

सुचिंता से प्रेरणा मिलेगी। अमीरों की दुनिया पर उनका कम असर होगा, क्योंकि आखिरकार वे अपने पैसे से प्राप्य श्रेष्ठतम आवासों में निवास करते हैं।

पोसोखिन ने बात जारी रखी, "पहले क्रेमलिन नगर का केंद्र हुआ करता था। अब शहर भूतपूर्व वनों के क्षेत्र तक फैल गया है। अपनी योजना में हमने केंद्र के चहुं ओर सात वृत्त क़ायम किये हैं। प्रत्येक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक केंद्रों से युक्त और आबादी की सभी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाला होगा। हम शहर को प्राकृतिक पर्यावरण, स्वच्छ हवा और देहात की हरियाली प्रदान करेंगे।" उन्होंने अपने कक्ष में लटके बड़े नक़्शे की तरफ़ इशारा किया – जंगलों से फ़ीते की शक़्ल में नगर में प्रवेश करती हरी रंगत नक़्शे पर बड़ा सुंदर नमूना बना रही थी।

"सातों में से प्रत्येक क्षेत्र में थियेटर, दूकानें, स्कूल और मनोरंजन क्षेत्र होंगे। लेकिन निस्संदेह, मास्को का वास्तविक केंद्र, हृदय, तो सदा लाल चौक ही रहेगा। इस धारणा ने हमें हमारे स्थापत्य को नगरव्यापी पैमाने पर संगठित करने का अवसर प्रदान कर दिया। हम केंद्र के कम ऊंचे चरित्र को क़ायम रखते हुए बाहरी इलाक़ों में ऊंची-ऊंची इमारतें बनायेंगे। हम केंद्र को, क्रेमलिन को, बोल्शोई थियेटर को नीचा नहीं दिखने देंगे।"

जब मैं वहां से रवाना होने के लिए खड़ा हुआ, तो पोसोखिन ने मुझसे पूछा कि मेरे पास अपने कार्य – स्मारकीय कला – के छायाचित्र तो नहीं हैं।

"हैं," मैंने जवाब दिया। "रंगीन स्लाइडों और सवाक् फ़िल्मों की सूरत में।"

"क्या आप हमें दिखा सकेंगे?" पोसोखिन ने पूछा।

"मुझे बड़ी ख़ुशी होगी," मैंने उत्तर दिया।

पोसोखिन ने अपने कलैंडर की तरफ़ देखा। "मंगल?" उन्होंने पूछा।

अगले मंगल को मैं फिर वहां पहुंच गया। पोसोखिन ने मास्को के नौ मुख्य वास्तुकारों को बुला रखा था, जिनमें से प्रत्येक अस्पतालों, कारखानों, स्कूलों, राज्य फ़ार्मों और नये नगरों की परियोजनाओं पर काम करनेवालों की अपनी शिल्पशाला के कार्य के लिए उत्तरदायी था। मैंने अपनी कृतियां दिखायीं और अमरीकी स्थापत्य तथा स्मारक कलाओं के बारे में बताया। मुझे रूज़वेल्ट काल के संघीय कला कार्यक्रम की और उस वक़्त के भित्तिचित्रकारों की निष्ठता की याद आ गयी। बहुत से प्रश्न उठे और बैठक मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा देर तक चली।

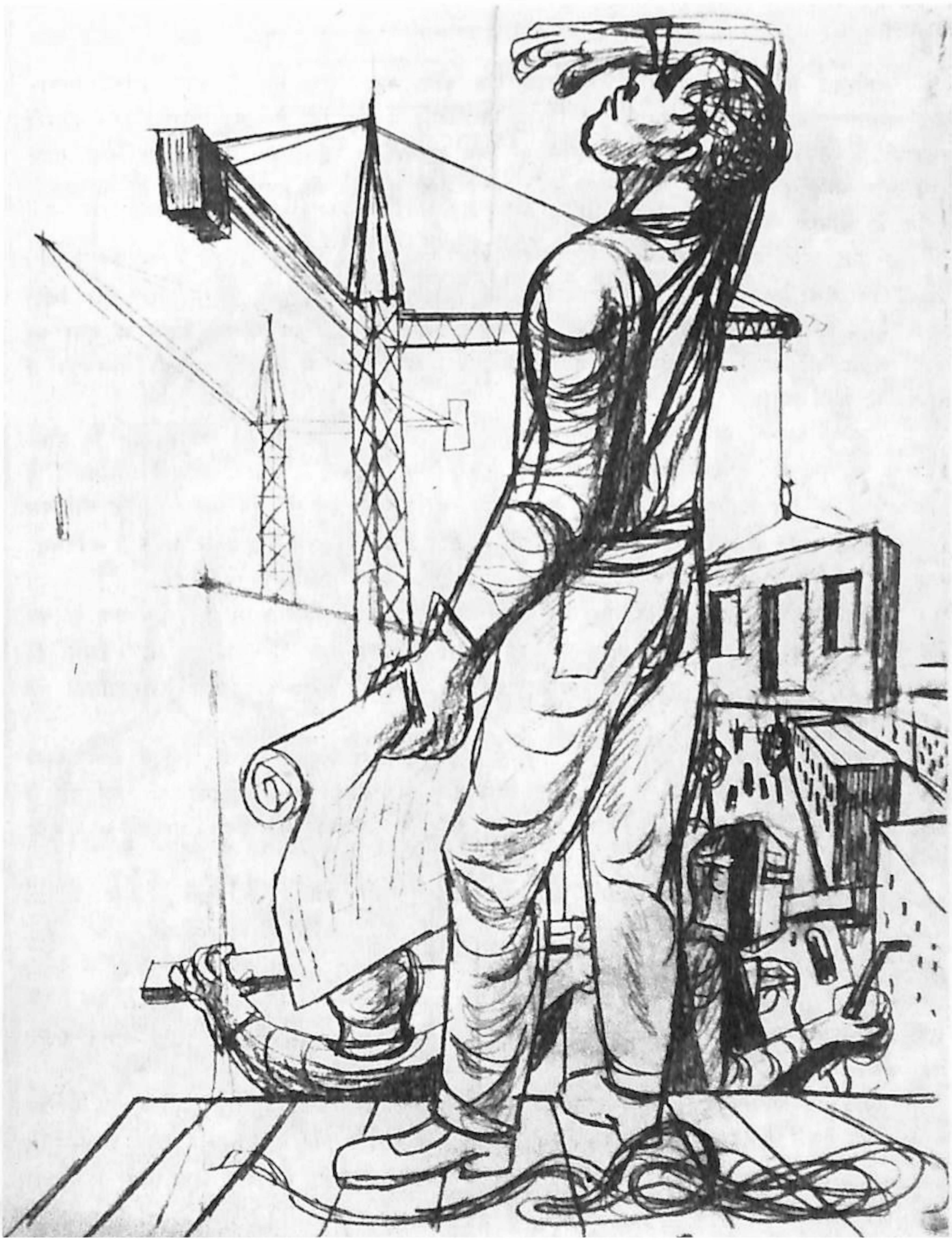
"हमारे लिए कुछ करने के बारे में आपका क्या ख़याल है?" मैं वहां से निकलने की तैयारी कर रहा था कि तभी पोसोखिन ने पूछा।

"सोवियत संघ में एक भित्तिचित्र बनाना मेरी एक कामना थी," मैंने जवाब दिया।

"तो चलिये, ऐसा ही करें," पोसोखिन ने कहा।

सभी लोगों के चले जाने के बाद मैं कुछ मिनट कमरे में आपरेटर के फ़िल्म को फिर लपेटने के इंतज़ार में रुका रहा। मैं बाहर आया, तो वास्तुकारों में से एक, बोरिस थोर मेरी प्रतीक्षा में खड़े थे।

"मैं आपके साथ एक भित्तिचित्र-परियोजना पर विचार करना चाहता हूं," उन्होंने कहा।



सोवियत संघ में अध्ययन करना मात्र एक वृत्ति नहीं, एक धुन है और उसकी विराट और लगातार बढ़ती आबादी का तिहाई हिस्सा विद्यालयों में पढ़ रहा है। हर विद्यार्थी उन हज़ारों दरवाज़ों में से किसी न किसी को खोलने के लिए लालायित रहता है, जो व्यापक तथा गहन ज्ञान और संस्कृति की ओर, निश्चिंत, समृद्ध और सुखी दुनिया की तरफ़ ले जाते हैं। वे जानते हैं कि वे भविष्य के नियंता और निर्माता हैं।

तान्या एक विशेष अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ानेवाली युवती है – विशेष अंग्रेज़ी स्कूल का मतलब यह है कि ऐसा स्कूल, जिसमें अंग्रेज़ी भाषा और ब्रिटिश तथा अमरीकी संस्कृति पर ज़ोर दिया जाता है (इस तरह के और स्कूल भी हैं, जैसे, जर्मन या फ़्रेंच)। मैं इस स्कूल में गया था और तान्या की कक्षा में विद्यार्थियों के सामने बोला था। बाद में हमारी आपसी बातचीत में तान्या ने मुझे बताया:

"हमारे बच्चे अंग्रेज़ी आठ साल की उम्र में पढ़ना शुरू करते हैं। चौदह-पंद्रह के होते-होते वे क्रोनिन के 'सिटैडेल', सैलिंजर के 'कैचर इन दि राई', पीटर एब्राम्स, हैमिंगवे के 'दि ओल्ड मैन एंड दि सी' और उनकी कहानियों, ओस्कर वाइल्ड के 'दि पिक्चर आफ़ डोरियन ग्रे' को पढ़ने लगते हैं। वे इन्हें अपने घर पढ़ते हैं और फिर हम उन पर बहस करते हैं – विषय-वस्तु, लेखक की स्थिति और उसकी शैली।

"वे सामरसैट माम के 'दि मून एंड सिक्स पेंस' को बहुत पसंद करते हैं। जहां तक स्ट्रिकलैंड के चरित्र का सवाल है, तो कुछ का ख़याल था कि वह एक जीनियस था और उसने जो कुछ भी किया, उसे क्षमा कर दिया जाना चाहिए। औरों ने कहा कि उसमें उत्तरदायित्व की भावना नहीं थी।

"कुछ पाठ अंग्रेज़ी में ही पढ़ाये जाते हैं। हमारे सभी स्कूलों में अंतर्राष्ट्रीय मैत्री क्लब हैं। विशेष भाषा विद्यालयों में तो यह विशेषकर महत्वपूर्ण है। सरदियों की छुट्टियों में और गरमियों में हमारे कुछ बच्चे किशोर विदेशी पर्यटकों के लिए गाइड का काम करते हैं।

"हमारे बच्चे बहुत जानकारी रखते हैं। कुछ संगीत में रुचि रखते हैं – वे संगीतकारों को जानते हैं, कंसर्टों में और थियेटर जाते हैं। औरों की दिलचस्पी कला, साहित्य और विज्ञान में है। जब हम 'दि मून एंड सिक्स पेंस' पढ़ रहे थे, तो मैंने उनसे चित्रकला पर कुछ सामग्री लाने के लिए कहा था। उन्होंने एक रिपोर्ट तैयार की, जो मेरी समझ में गहरी समझ प्रकट करती थी। हम फ़्रायड को भी पढ़ते हैं और उनके दर्शन पर चर्चा करते हैं।"

एक दिन मैं अंग्रेज़ी स्कूल में बच्चों की कला प्रदर्शनी और 'पिग्मेलियन' की उनकी नाट्य-प्रस्तुति को देखने के लिए गया। मुझे कहना होगा कि मैं उस लड़की के अभिनय से बहुत प्रभावित हुआ, जिसने लीज़ा डूलिटिल की भूमिका अदा की थी। उसका कॉकनी (लंदनिया) लहजा



एकदम निर्दोष था। और वालिका के लिहाज़ से उसने उस चरित्र की उजड्डता और कामुकता को वड़ी अच्छी तरह व्यक्त किया था।

उक्रइना में मैंने एक किशोर छात्र से वातें की थीं, जिसने मुझसे कहा :

"हमारे सभी स्कूलों में रूसी और उक्रइनी भाषाएं एक दूसरे के समकक्ष हैं। विश्वविद्यालय में आप दोनों में से किसी भी भाषा में परीक्षाएं दे सकते हैं। हमारे यहां एक अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संगठन है। वह वहुत व्यापक है।

"मैं सोचता हूं कि मुझे कोम्सोमोल (युवा कम्युनिस्ट संघ) में शामिल होना चाहिए। इससे आदमी को वुनियाद मिल जाती है। हम अपनी बैठकों में अपने को परेशान करनेवाली सभी बातों की खुलकर चर्चा करते हैं। आख़िर, हर ही चीज़ तो आदर्श नहीं है। इसे हमें स्वीकार करना चाहिए। हमारे कोम्सोमोल में उत्तरदायित्व की ज़बरदस्त भावना है। लेकिन स्वाभाविक तौर पर ऐसे लोग भी होते हैं, जो हर चीज़ का फ़ायदा तो उठाना चाहते हैं, लेकिन वदले में कुछ नहीं देते। हम इसे दुरुस्त करने की कोशिश करते हैं।"

"दूसरे देशों में ज़िंदगी के वारे में आप क्या सोचते हैं?" मैंने पूछा।

"हम विदेशों से अच्छी वातें ही लेना चाहते हैं। आपके युवाओं के लिए लंबे वाल पसंद की बात या विरोध-प्रदर्शन का एक स्वरूप हैं। मैं सहमत हूं। लेकिन हमारी वात लीजिये – हमें किसके ख़िलाफ़ विरोध प्रदर्शित करना है? और न हम लड़की को मिनी स्कर्ट पहने देखकर ही यह सोच लेते हैं कि वह वुरी है। लेकिन शुरू-शुरू में बूढ़े लोग घवरा जाते थे। लेकिन अव इसे कमोवेश स्वीकार कर लिया गया है। अगर लड़की का डील-डौल अच्छा हो, टांगें अच्छी हों, तो यह ख़ासा आकर्षक लगता है। लेकिन फिर भी, युवा लोग कभी-कभी विदेशों की आंख भींचकर नक़ल करते हैं।

"हम वहुत व्यस्त रहते हैं। मैं सुवह छः वजे उठता हूं और आठ बजते-वजते कक्षा में आ जाता हूं, वापसी शायद कहीं चार वजे ही होती है। शाम को मैं पढ़ता हूं। लेकिन फिर भी मैं और किताबें पढ़ने और थियेटर जाने का वक़्त निकाल लेता हूं। और रविवारों को मैं आम तौर पर ख़ाली रहता हूं और तव अपने दोस्तों के साथ आराम और मनोरंजन करता हूं।"

टेलीविज़न कार्यक्रमों का काफ़ी भाग (शैक्षिक कार्यक्रमों के अलावा) शिक्षा की समस्याओं पर चर्चाओं और रिपोर्टों को दिया जाता है। कुछ कार्यक्रम तो एकदम अप्रत्याशित होते हैं। मुझे एक कार्यक्रम की याद आती है, जिसने ख़ासे कटु यथार्थ को खुलकर लेने की अपनी उद्यतता से मुझे प्रभावित किया था।

कार्यक्रम का प्रारंभ स्कूल की एक कक्षा में होता है – अध्यापिका छात्रों से कह रही है :

"हम हमेशा अपनी माताओं के बारे में ही सोचते और बातें करते हैं, लेकिन अपने पिताओं के बारे में शायद ही कभी बात करते हैं। आज मैं आपको अपने पिताओं के बारे में लिखने का काम दे रही हूं।"

कैमरा चेहरों पर दौड़ने लगा। एक बच्चा आत्मविश्वास के साथ तुरंत लिखने लगा। दूसरा हिचकिचाहट में था। फिर कैमरा एक लड़की पर – वह बारह साल की रही होगी – टिक गया।

वह अपने बायें हाथ पर सिर को टेके सामने देखती बैठी थी। अध्यापिका लड़की के पास आयी और उस पर झुककर उसने उसके कंधों को अपनी बांहो में ले लिया। अचानक लड़की ने अध्यापिका की तरफ़ मुंह किया और सुबकियां लेते हुए अपने सिर को उसके बदन में घुसा दिया।

इसके बाद कैमरा ने ख़ाली कक्षा दिखायी और उसके बाद दरवाज़े पर जाकर टिक गया, जिसमें होकर कुछ लोग अंदर आ रहे थे।

"मैंने आप लोगों को यहां इसलिए बुलाया है कि आप अपने बेटे-बेटियों द्वारा आपके बारे में व्यक्त की गयी कुछ रायों को सुन सकें," अध्यापिका ने कहा। "शायद कुछ आपको चौंका देंगी। कुछ बहुत अच्छी हैं। कुछ रायें सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन को प्रकट करती हैं, तो कुछ ऐसा नहीं करतीं।"

पिता लोग अपने बच्चों की जगहों पर बैठ गये।

"यह एक राय है," अध्यापिका ने कहा, और वह पढ़ने लगी:

"पिताजी और मैं मित्र हैं। हम आपस में बहुत बातचीत करते हैं। वह मुझे घुमाने के लिए साथ ले जाते हैं।"

बारीक़ी से कटे बालोंवाला एक हट्टा-कट्टा लंबा आदमी अपने आप ही मुसकरा दिया।

"मैं अपने पिता को नहीं जानता। वह ज़्यादातर घर के बाहर ही रहते हैं," एक दूसरा निबंध इस तरह शुरू हुआ।

"मेरे पिता नहीं हैं। वह मेरी मां के नये पति हैं। वह मेरी या मेरे भाई की तरफ़ ज़्यादा ध्यान नहीं देते। यह अपने ही घर में अजनबियों की तरह रहने जैसा है।"

फिर भी अधिकतर निबंध स्नेह की सुखमय अभिव्यक्ति देनेवाले थे।

"मुझे अपने पिता से प्यार है। वह बहुत मज़ेदार हैं। वह जवान और ताक़तवर हैं। गरमियों में हम साथ-साथ गेंद खेलते और तैरते हैं। हम घटनाओं और विचारों के बारे में बातचीत करते हैं।"

बच्चों के इन निबंधों में उठायी गयी इन विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसी बातों का सामना करने में इस तरह के खुलेपन को मैंने कई बार देखा है। सरकार टेलीविज़न के जो उपयोग करती है, यह उनमें से एक है – वर्धमान समाज में विभिन्न समस्याओं को सीधे लोगों तक ले जाना। यह सनसनीख़ेज़ ढंग से कभी नहीं किया जाता, जैसा कि पश्चिम में अकसर किया जाता है और न ही यह कोई नकारात्मक रिपोर्ताज होता है। इसके विपरीत, यह बिलकुल निश्चित ढंग से यह बताता है कि सामाजिक समस्याएं समूचे तौर पर पूरे समाज की ज़िम्मेदारी हैं।

मैं मास्को विश्वविद्यालय के विराट प्रांगण में गया और एक प्रोफ़ेसर से मैंने बात की।

"हमारे बच्चों को शिशुशाला से लेकर विश्वविद्यालय तक हर अवसर और हर सहायता प्रदान की जाती है। और याद रखिये, शिक्षा पूरी करनेवालों को अपनी पसंद के क्षेत्र में काम प्रत्याभूत होता है," उन्होंने मुझे बताया। "अन्य सभी प्रकारों की शिक्षा की ही भांति उच्च शिक्षा भी निःशुल्क है और उसके साथ वित्तीय सहायता के रूप में वज़ीफ़ा भी दिया जाता है। लेकिन हमारे विश्वविद्यालयों में प्रवेश अत्यधिक प्रतियोगितापूर्ण है। परीक्षाएं बहुत सख़्त होती

हैं। सबसे प्रतिभाशाली और सबसे योग्य छात्रों को ही अपनी दिलचस्पी के विषय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है, ताकि वे हमारे समाज को अपना योगदान कर सकें।"

बच्चों और युवाओं को देखकर, उनसे बातें करके मुझे ऐसा लगा है कि वे एक ऐसे जीवन में प्रवेश कर रहे हैं, जो प्रत्येक को प्रचुर परितोष का अवसर प्रदान करता है – आर्थिक समस्याओं से, जो समाजवादी अर्थव्यवस्था के बाहर के युवाओं के लिए कभी-कभी अलंघ्य कठिनाइयां पैदा कर देती हैं, रहित जीवन, और यह कि उनका भविष्य सुखमय होगा।

फ़ोलोव से भेंट

फ़ोलोव से मेरी मुलाक़ात तब हुई, जब एक दिन तीसरे पहर के शुरू में वह मेरे घर आये थे। मैं इस भेंट की कुछ आशंका के साथ प्रतीक्षा कर रहा था, क्योंकि यह किसी भी तरह कोई सामान्य मुलाक़ात नहीं थी।

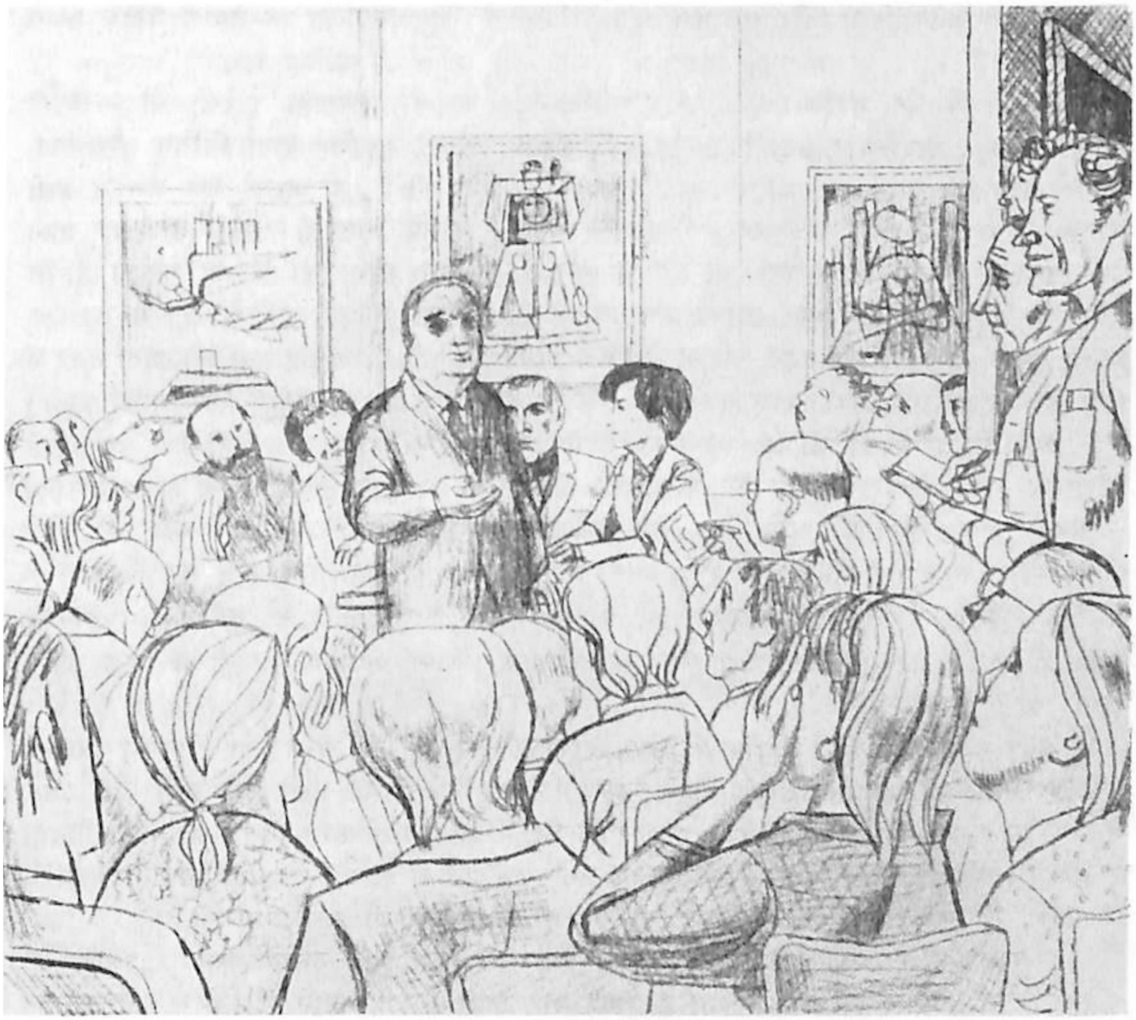
एक बार 'लितेरातूरनाया गज़ेता' (साहित्यिक समाचारपत्र) ने एक नवयुवक सज़ा भोग रहे एक इक़बाली चोर – के लिखे पत्र का उनका उत्तर प्रकाशित किया था। इस नौजवान – वलेरी ने डींग मारते हुए चोरों की नैतिकता का समर्थन किया था और ऐलान किया था कि रिहा होने के साथ वह फिर अपने "पेशे" में लग जायेगा।

स्वयं फ़ोलोव के पीछे, जो अब पोलीटेक्निकल स्कूल में अध्यापक हैं और "कठिन" किशोरों के प्रशिक्षण के काम में लगे हुए हैं, पंद्रह साल का अपराधी जीवन है। अपने उत्तर में उन्होंने अपनी ज़िंदगी का, अपने को अपराध की दुनिया में ले जानेवाली प्रक्रिया का, और बाद में, उस संघर्ष का, जो अंततः उन्हें उपयोगी जीवन की ओर लौटाकर लाया, सिंहावलोकन किया था।

"मेरी फ़ोलोव से भेंट करने की बहुत इच्छा है," मैंने अपने दोस्तों से कहा था। और अब इस आगमन की प्रतीक्षा करते हुए मैं कुछ चिंतित हो रहा था। अपनी बातचीत को कैसे शुरू किया जाये? अभद्र कैसे न नज़र आया जाये? इंतज़ार में बैठे-बैठे मैंने वलेरी के पत्र को फिर पढ़ा, जिसमें अख़बार की एक डाकेज़नी का "इकतरफ़ा हाल" लिखने और चोरों के एक गिरोह के साथ मुठभेड़ में मिलीशिया के शौर्य की सराहना करने की आलोचना की गयी थी।

यह कोई पहला मौक़ा नहीं था कि जब मेरा अब भी विद्यमान समस्याओं में से एक – अपराध की समस्या – पर बहस से साबिक़ा पड़ा था। मैंने कई टेलीविज़न कार्यक्रम देखे थे, जो मुझे सड़कों में, अपराधकर्ताओं के घरों में, अदालतों में सुनवाई में ले गये थे। मैंने किशोर अपराधियों को, गुंडों को, शराबियों को, परिवार छोड़कर भाग जाने के मामलों को देखा था। और अनिवार्यतः निष्कर्ष यही निकला था कि यह एक सामूहिक ज़िम्मेदारी है, सभी के सरोकार की बात है।

अख़बारों में अपराध की सनसनीख़ेज़ रिपोर्टिंग, जैसी पश्चिमी प्रेस में मिलती है, यहां नहीं थी, लेकिन आदमी ऐसी घटनाओं को देखता और उनके बारे में पढ़ता है कि जो सोवियत



नागरिकों को अपने निजी और सामूहिक उत्तरदायित्व के लिए उद्वेलित करनेवाले नैतिक प्रश्नों को उठाती हैं।

मास्को में उन सरदियों में हमने एक फ़िल्म, 'कलीना क्रास्नाया', देखी थी, जिसकी कहानी ने बहुत वादविवाद खड़ा किया था। यह फ़िल्म वसीली शुकशिन द्वारा लिखित और निदेशित है, जिन्होंने इसमें अपराधी की मुख्य भूमिका भी अदा की है, जो पहली बार जेल में अभी रिहाई पानेवालों के लिए एक तरह की विदाई सभा में सामने आता है। इसके बाद वह अपने लिए खुली स्वतंत्रता का चालाकी से उपयोग करता है, उस औरत का फ़ायदा उठाता है कि जिसने उसकी रिहाई के वक़्त उसकी ज़मानत दी थी। अपने भूतपूर्व साथियों से पैसे का एक हिस्सा पाकर और उसे ख़र्च करने का और कोई तरीक़ा न होने के कारण वह एक निकटवर्ती नगर में शाम को शराबख़ोरी का इंतज़ाम करता है। लेकिन इससे अब उसका संतोष होता नहीं लगता।

बाद में अपनी मां की बात सुनकर (जिसे उसकी मौजूदगी का पता नहीं है), जो उसी औरत से बातचीत कर रही थी कि जो उसकी दोस्त बनी थी, वह टूट जाता है और पश्चात्ताप के अपने पहले लक्षण प्रकट करता है। धीरे-धीरे वह "दूसरी" ज़िंदगी की खोज करता है, जिसे वह स्वीकार करनेवाला ही है कि तभी अपने पुराने गिरोह के नेता द्वारा क़त्ल कर दिया जाता है। हम इस फ़िल्म से ख़ासे प्रभावित हुए थे और हमने काफ़ी बहस भी सुनी थी। "कहानी-लेखक ने आदमी को तभी क्यों मारा कि जब वह एक शरीफ़, उपयोगी ज़िंदगी में प्रवेश करनेवाला था?"

घंटी बजी और मैंने फ़ोलोव के लिए दरवाज़ा खोला। मैंने उनके व्यक्तित्व की प्रखरता और सशक्तता को अनुभव किया – मानो कमरे में कोई बिजली की धारा दौड़ गयी हो। उनसे भेंट की मुझे जो भी आशंकाएं रही हों, वे आपस में बातें करते-करते, हाल ही में अर्मीनिया में बनाये अपने रेखाचित्र दिखाते-दिखाते और उन्हें उस पुस्तक के बारे में बताते-बताते तिरोहित हो गयीं, जिसमें मैं उनकी जीवनगाथा को भी शामिल करने की सोच रहा था।

"मुझे मालूम है कि आपने अख़बारों में मेरा लेख पढ़ा है," उन्होंने कहा। "इसलिए मैं आपको अपने बारे में जो बता सकता हूं, वह आप पहले से ही जानते हैं। यह तो बेकार का दुहराव ही रहेगा।"

"हरगिज़ नहीं," मैंने जवाब दिया। "पढ़ना और आदमी से बातें करना एकदम भिन्न है। मैं आपसे मिलना चाहता था। बात यह है कि मुझे शायद आपके पुनर्वासन और पुनर्शिक्षण कार्य का अत्यल्प ही सही, अनुभव है। किसी समय मैं अपचारी बालकों के साथ काम किया करता था। ये सभी अदालती मामले थे और वे किसी न किसी अपराध के लिए दंडप्राप्त थे। और किसी समय, बहुत पहले, मैंने एक जेलख़ाने – न्यूयार्क में रीकर द्वीप सुधार कारागार – के प्रतीक्षाकक्ष में एक भित्तिचित्र बनाया था।"

"यह तो बहुत दिलचस्प है," उन्होंने इस तरह उत्तर दिया, मानो कुछ और सुनना चाहते हों। लेकिन मैंने उनसे कहा कि हो सकता है कि मेरे अनुभवों के बारे में हम किसी और वक़्त बातें कर लेंगे। पर आज तो मैं उन्हीं की बातें सुनना चाहता था।

"आदमी अपराध की दुनिया में कई रास्तों से प्रवेश करता है। मैं तो बिलकुल संयोग से ही आ गया," इधर फ़ोलोव ने कहना शुरू किया कि लीला चाय भी ले आयीं। "लेकिन आप देखेंगे कि किस तरह अविचारित प्रारंभ आदमी की सारी ज़िंदगी को निर्धारित कर सकता है। निस्संदेह, मेरे अपसमायोजन का कुछ तो आधार अवश्य था। मेरा पिता एक क्रूर, गंवार, अशिक्षित और शराबी आदमी था। बड़े होते हुए मैंने अपनी मां की दुर्दशा को देखा। मैंने गालियों और मार को अनुभव किया। मैंने अपने पिता की तरफ़ से प्यार या कोमलता को कभी नहीं जाना। आखिर इस सबको और बरदाश्त करने में असमर्थ हो मेरी मां ने हमारे गांव और मेरे पिता को छोड़ दिया और मुझे अपने साथ मास्को ले गयीं।

"लेकिन यहां भी हम जिस इलाक़े में रहते थे, वहां हम बुरे तत्वों, असभ्यता और गाली-गलौज से घिरे हुए थे। तभी लड़ाई और भुखमरी आ गयी। मेरी मां मोरचे पर शहर की तरफ़ जर्मनों का बढ़ाव रोकने के लिए लोगों के साथ प्रतिरक्षात्मक खाइयां खोद रही थीं। एक दिन जब मैं अपनी रोटी के लिए लाइन में खड़ा हुआ था, तो मैंने पाया कि मेरा और मां का राशन कार्ड खो गया है। शायद उन्हें किसीने चुरा लिया था। मुझे वहां निपट बेहाली और हताशा में खड़े होने की याद है। हमारे राशन कार्डों का खोना हमें भूखों मरने की सज़ा देने जैसा था! तभी पड़ोस का एक लड़का आया, जिसे मैं जानता था। सारा क़िस्सा सुनकर उसने मेरी मदद करने का वादा किया। हमारे पड़ोस में वह गिरहकट के नाते सरनाम था। अगले ही दिन उसने मुझें दो राशन कार्ड लाकर दे दिये!

"स्वाभाविक बात है कि इस भले काम के लिए मैंने कृतज्ञता का अनुभव किया और जब उस लड़के ने बदले में मेरे कमरे को कभी-कभी अपने दोस्तों की बैठक के अड्डे के तौर पर इस्तेमाल करना चाहा, तो मैं खुशी से तैयार हो गया। अगर मैं कुछ बड़ा हुआ होता और कुछ अधिक अनुभवी हुआ होता, तो शायद मैं कोई और रास्ता अपनाता, शायद मदद के लिए अधिकारियों के पास जाता। लेकिन मैं तो उस समय सिर्फ़ ग्यारह साल का ही था।

"जब मेरी मां न होतीं, तो छोकरों के छोटे-छोटे गिरोह मेरे कमरे में इकट्ठा हुआ करते। और इसीके साथ-साथ मेरी ज़िंदगी में भी बड़ा भारी परिवर्तन आया। अचानक मुझे दोस्त मिल गये, जो मेरी रक्षा करते थे। अब कोई मेरा अपमान करने की हिम्मत नहीं करता था। और अपने तईं मैंने, जो अभी हाल तक इतना दुखी और अकेला था, इस नयी ज़िंदगी को कृतज्ञतापूर्वक अपनाया। जल्दी ही, जब उन्हें लगा कि मुझ पर 'भरोसा' किया जा सकता है और मैं तैयार हूं, तो वे मुझे एक डाके पर साथ ले गये। मेरे लिए तो यह ऐसा था कि जैसे मुझे सरदारों की श्रेणी में शामिल कर लिया गया है। मैं भी अब बहादुरों में एक था। लूट के माल का बंटवारा हुआ और अचानक मेरे पास पैसा आ गया। इतना पैसा कि मैं नहीं जानता था कि उसका क्या करूं।

"धीरे-धीरे मेरा रुतबा बढ़ने लगा और इसे खास तौर पर मैंने तब अनुभव किया कि जब गिरोह के एक प्रमुख सदस्य ने मुझसे कहा, 'तुम मुझे अपना भाई कह सकते हो।' यह कोई

कोरा दिखावा न था। इसका मतलब था कि किसी ऐसी जगह कि जहां चोरों का अकसर आना-जाना हुआ करता था, मैं यह कह सकता था, 'फलां आदमी मेरा भाई है।'

"और इस तरह मेरे लिए दरवाज़े खुल गये। जल्दी ही मुझे गिरोह की बैठकों में भी शामिल किया जाने लगा, चाहे अभी बोलने या मत देने के अधिकार के बिना ही। लेकिन मैं देखता और सुनता था। शनैः शनैः उनके सोचने का तरीक़ा, उनके विचार ज़िंदगी के प्रति मेरे अपने दृष्टिकोण का अंग बन गये। अब, बारह साल की उम्र में, मुझे अपने पर गर्व था। मैं सिगरेट और शराब पीता था, ताश खेलता था – ये सभी मर्दानगी के लक्षण थे। और ज़िंदगी के इस नये ढर्रे को ग्रहण करते समय ही मेरी एक और तमन्ना भी थी – पार्टीज़ान, फ़ौजी भेदिया बनने की, क्योंकि यह युद्ध का समय था।

"एक और छोकरे के साथ मैं इस आशा से ट्रेन पर सवार हो गया कि हमें कोई पार्टीज़ान दस्ता मिल जायेगा। लेकिन इसके बजाय हुआ यह कि हमें किशोरों की तरह पकड़कर रोक लिया गया। मैं अब पूरा चोर बनने को मास्को और अपने गिरोह में वापस आ गया। और इसीके साथ-साथ सुधार स्कूलों, क़ैद और भागने का सिलसिला भी शुरू हो गया।"

"कैसे अफ़सोस की बात है," मैंने टीका की। "अगर पार्टीज़ान बनने की आपकी कोशिश सफल हो गयी होती, तो उसने आपकी ज़िंदगी को बदल दिया होता।"

"हां," वह बोले, "मैंने भी अकसर इसके बारे में सोचा है," कुछ रुककर उन्होंने कहा, "देखिये न, संयोग किस तरह आदमी की ज़िंदगी को बना या बदल सकते हैं। "अब मुझे पूर्ण आत्मविश्वास था। यह कभी मेरे दिमाग़ में नहीं आया कि मैं लोगों को नुक़सान पहुंचा रहा हूं या अनैतिक जीवन जी रहा हूं। बल्कि बात उलटी थी। मुझे अपने पर और अपने कारनामों पर गर्व था। मैं अपनी बैठकों में बोलने लगा और मैंने देखा कि मेरी बात को सुना जाता है।

"मैं जेलों में रहता, भागता, चोरी करता, फिर पकड़ा जाता और वापस जेल पहुंच जाता। हमारे लिए तो यह ज़िंदगी का सामान्य ढर्रा ही था। हमारे लिए फ़रारियां और मुक़दमे सम्मान पदक थे। आदमी जिस संगत में रहता है, उसके मूल्यों को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। क्या अच्छा और भला है और क्या अनैतिक और बुरा है। हर विवेकसंगत कार्य को वही मूल्य निर्धारित करते हैं, जिनके लिए आदमी की ज़िंदगी उसे तैयार करती है।

"और मेरे तईं हर चीज़ सीधी और साफ़ थी। सिर्फ़ चोर ही आदर और लिहाज़ के पात्र थे। अपनी जहालत पर मुझे घमंड था। मुझे किताबों या 'बाहरी' विचारों में कोई मूल्य नज़र न आता था। अब सोचता हूं कि आदमी जितना ज़्यादा जाहिल और अपढ़ होता है, उसे अपने पर उतना ही ज़्यादा विश्वास होता है। 'बाहरी' विचार उसके लिए पराये होते हैं। फिर वह निर्दय भी होता है। मेरा जिन लोगों से साथ था, उनका यही आम ढर्रा था।

"जहां तक मेरी बात है, अपराधी संसार में अपनी लंबी ज़िन्दगी में मैंने कभी किसीकी हत्या नहीं की थी। लेकिन मैंने काफ़ी ख़ून-ख़राबा देखा था और इसे मैं अनिवार्य समझता था।

"जेल में एक बार एक चोर ने मुझसे कहा था, 'हमारे जलसों में तो तुम बेशक बहुत बढ़िया भाषण देते हो। पर यह बताओ कि क्या कभी तुम्हें संशय भी होता है?'

"'और वह क्या?' मैंने पूछा।

"'तुम्हें यह नज़र नहीं आता कि हमारे आसपास क्या हो रहा है?'

"'और क्या होता है?' मैंने पूछा।

"'यह कि एक और तरह की ज़िंदगी भी होती है।'

"वह उम्र में बड़ा, पका हुआ अपराधी था और यह उसकी पहली ही जेलयात्रा नहीं थी। उसके स्वर में मुझे अपने लिए किसी नयी ही चीज़ की भनक मिली। शायद बेकार गये इन सारे वर्षों के लिए खेद। मैं कई घंटे चैन नहीं ले पाया, बारक में इधर-उधर चक्कर लगाता अपने से पूछता रहा कि उसके सवालों का जवाब देते क्यों नहीं बन पा रहा है। मुझे क्या हो गया था? 'दूसरी' ज़िंदगी की बात करते हुए उसकी आवाज़ में जो व्यथा थी, उसका मुझे अहसास था। हमारी ज़िंदगियों में हर चीज़ साफ़, सही, असंदिग्ध होती है। और मुझे लग रहा था कि वह जिसकी बात कर रहा है, वह कोई और चीज़ है। वह क्या चीज़ थी?

"मेरे नज़रिये में यह पहली छोटी सी दरार थी। और यह यकायक ही नहीं हो गया था। मेरी भी कुछ यादें थीं – मां के साथ अपनी ज़िंदगी, पार्टीज़ान बनने की मेरी तमन्ना। बेशक; अपराध के विरुद्ध संघर्ष के सरकारी कार्यक्रम का भी कुछ प्रभाव रहा होगा – यह एक व्यापक कार्यक्रम था, जिसके अंतर्गत अपराधी संसार संगठनात्मक और आत्मिक – दोनों रूपों में धीरे-धीरे ध्वस्त हो रहा था।

"फिर एक और बात हुई। जेल में एक बार मैं वार्डन को पीट बैठा। इसके लिए मेरी सज़ा में और साल जोड़े जा सकते थे, लेकिन इसके बजाय वार्डन ने कहा, 'इसे अकेला बंद कर दो और इसके पास कुछ किताबें रख दो। इसे सोचने दो।' ख़ैर, मैं तो बहादुर था। अपने एकाकी कारावास के पहले कुछ दिन मैं गाता-नाचता रहा। पर यह बहुत दिन नहीं चल सकता था। आख़िर मैंने एक किताब उठायी और उसे पढ़ना शुरू किया। यह पहली किताब थी, जो मैंने कभी पढ़ी थी और तब मेरी उम्र चौबीस साल थी! वह विक्तर ह्यूगो की किताब थी। मैं बेहद प्रभावित हुआ। इसके बाद मैंने जैक लंडन की लिखी एक कुत्ते की कहानी पढ़ी – बदनसीबी की दर्दनाक ज़िंदगी। उसने मुझ पर ज़बरदस्त छाप डाली।

"और भी किताबें थीं, जो मेरे आत्मविश्वास को कमज़ोर करने लगीं – ख़ासकर एक पार्टीज़ान की ज़िंदगी की, उसके निस्स्वार्थ मानवतावाद की कहानी। मैं पढ़ता गया और मेरी पुरानी दुनिया नये परिदृश्यों, नये क्षितिजों, नये मूल्यों, नये मानव-संबंधों की तुलना में, जिनके होने का मुझे भान भी न था, सिकुड़ने लगी। और उसके सामने हमारी चोरों की दुनिया गंदी और निर्मम लगने लगी।

"धीरे-धीरे मुझे अपनी ज़िंदगी की एक नयी तसवीर नज़र आने लगी। उस समय चलाये जा रहे अपराधी संसार के उन्मूलन के कार्यक्रम, अपराधियों के पुनःशिक्षण और उपयोगी नागरिकों की तरह पुनर्वासन के कार्यक्रम के दबाव के आगे अपराध-लोक अपने जीवन-संग्राम में फंस गया था।

"और फिर एक घिनौना आंतरिक संघर्ष शुरू हो गया—अपराधी आपस में लड़ने लगे। बाप-बेटे भी विरोधी गिरोहों में, एक दूसरे के जानी दुश्मन, हो सकते थे। निर्दयता की कोई सीमा न थी। मैंने तीस आदमियों को रस्सियों से बंधे एक आदमी पर कूदते देखा!"

वह चुप हो गये और मैं देख सकता था कि यह एक व्यथादायी याद थी। उनके अतीत में यह यात्रा इतनी सजीव थी कि फ़ोलोव के पास बैठा मैं एक प्रत्यक्षदर्शी बन गया था।

उन्होंने आगे कहा, "फिर जेल पहुंचने पर मैं बेहद बेचैन था। अब मुझमें इतना आत्म-विश्वास न था। मेरे सारे पुराने विश्वास डगमगा रहे थे। मैं पागल हुआ जा रहा था, क्योंकि ऐसा कोई न था कि जिससे मैं खुल सकूं, अपनी नयी समझ की बात कर सकूं। और पूरी तरह से यहां अपनी पुरानी ज़िंदगी से किनारा करना ग़द्दारी जैसा होता। मैंने तय किया कि कुछ नहीं कहूंगा, लेकिन रिहा होने के साथ अपने अतीत से पूरी तरह से किनाराकशी कर लूंगा।

"आपको मालूम होगा कि क्रांति के पहले मास्को में ऐसे ठिकाने—रैन-बसेरे—थे कि जिनमें पुलिस भी घुसने की हिम्मत नहीं करती थी। वहां चोर बाज़ारों का बोलबाला था, चकले चलते थे। क़त्ल तो आम बात थी। अब भी हमारे बीच बहुत से पिछड़े हुए लोग हैं, लेकिन आज हम एक नये समाज के निर्माण की प्रक्रिया में लगे हुए हैं। सुदूर अतीत से हमारे साथ जो बहुत सी समस्याएं अभी तक चली आ रही हैं, यह उनसे निपटने की सबसे अच्छी संभव स्थिति है और रहेगी।

"अब हमारे यहां आज वैसा अतिसंगठित, स्तरबद्ध, नवनिर्माणाधीन समाज के विरुद्ध एक ठोस संगठन के रूप में कार्यरत अपराध-लोक नहीं है। किसी वक़्त चोरों के लिए मातृभूमि वह कोई भी जगह हुआ करती थी, जहां चोरी करना संभव होता था। और अब भी साथ-साथ काम करते दो-दो, तीन-तीन चोरों के छोटे-छोटे गिरोह मौजूद हैं। निस्संदेह, देर-अबेर वे पकड़ लिये जाते हैं और हमारे समाज ने उनके लिए अब से २५-३० साल पहले की बनिस्बत काम करना कहीं ज़्यादा मुश्किल बना दिया है। अब उस तरह की दुनिया का कोई वजूद नहीं है, लेकिन उसकी गूंज मुझे अब भी सुनायी दे जाती है।

"आख़िर जब मैंने अतीत से पूरी तरह से किनाराकशी कर ली, तो मुझ पर विश्वास किया गया। मुझे सहायता और सहारा दिया गया। विगत को भुला दिया गया और मैंने किसी भी तरह के भेदभाव को अनुभव नहीं किया। लोगों ने बड़ी सहृदयता के साथ एक सर्वथा नयी और अनजानी ज़िंदगी में संक्रमण करने में मेरी सहायता की। यह कोई आसान नहीं था। यह बहुत मुश्किल और अकसर तक़लीफ़देह हुआ करता था, क्योंकि मुझे अपने साथ जीना था, अपने अतीत के साथ मेल करना था। और तब मैंने यह समझा कि जीवन के मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन तो सिर्फ़ शुरूआत ही है, क्योंकि ज़िंदगी वहीं खड़ी नहीं रहती है। वह मेरे सामने ऐसी समस्याएं पेश करती आगे बढ़ती रहती है, जो समाधान का तक़ाज़ा करती हैं—परिवार में, बच्चों के बारे में, काम में, उन नौजवानों में, जिन्हें मैं अब पुनर्शिक्षित कर रहा हूं। इस सब में किसी भी समय ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है कि जो नैतिक चयन की अपेक्षा करती है।" कुछ रुककर उन्होंने कहा, "यह ऐसा ही है, जैसे खुद ज़िंदगी ही एक के बाद एक करके निरंतर आनेवाले चयनों की शृंखला है।

"मैं अभी युवा ही था। मैंने शादी की। हमारे बच्चे हैं। मुझे अच्छे काम पर लगाया गया। लेकिन मैं फिर भी बेचैन था। मैं उन लोगों के प्रति निरपेक्ष नहीं रह सकता था कि जो वलेरी की ही भांति मेरे भूतपूर्व पथ पर चलना शुरू कर रहे हैं। मैंने कानून का अध्ययन करने का, गुमराह किशोरों के साथ अपनी ज़िंदगी बिताने का, उनके विचारों को चुनौती देने का, उन्हें ज़िंदगी के 'दूसरे' तरीक़े को अपनाने के लिए तैयार करने का निश्चय किया।"

आख़िर वह जाने के लिए खड़े हो गये। मैंने उन्हें मेरे यहां आने के लिए, अपनी बतायी सारी बातों के लिए धन्यवाद दिया। फ़ोलोव के जाने के बाद मैं हमारी बातचीत से कुछ विचलित हुआ, उनकी मानवता से, उनकी मौजूदगी से अत्यधिक प्रभावित हुआ, अपने जीवन के सबसे कठिन भाग के बारे में बतलाने की उनकी उद्यतता के लिए कृतज्ञता का अनुभव करता हुआ और इसके लिए ख़ुश होता हुआ कि उनसे मैं मिला, बहुत देर तक बैठा रहा।

कला प्रदर्शनी

कलाकार सोवियत समाज का सम्मानित सदस्य है। अपने कार्य के अंतर्य – लोगों के जीवन का चित्रण, सार्थक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की खोज और नये समाज के निर्माण में संसक्ति – की बदौलत वह जनसाधारण की रुचि और आदर का पात्र बन गया है। कलाकार संघ के ढांचे के माध्यम से वह कई तरह से जनता से संबंध रखता है। उदाहरण के लिए, वह कार्यस्थलियों पर, नये बांधों और नगरों की निर्माणस्थलियों पर और फ़सल के समय सामूहिक फ़ार्मों पर जाता है। इस तरह कलाकार अपनी छापों और अनुभूतियों को अपनी स्केचबुक में या मिट्टी के छोटे प्रारूपों में अंकित कर लेता है। बाद में अपने स्टूडियो में वह इन "नोटों" को अपनी पसंद के कला-रूप — लेखाचित्रण (ग्राफ़िक्स), चित्रकला या मूर्तिकला — में विकसित कर लेता है। कलाकार अकसर मौक़े पर लोगों से विचार-विमर्श करने के लिए अपनी प्रदर्शनी लेकर जाता है और इस तरह लोगों को सृजनात्मक कृति के प्रत्यक्ष संपर्क में लाकर रहस्यमयता को भंग करता है और समझने की कुंजी प्रदान करता है, आनंद लेने की क्षमता को उन्मुक्त करता है। भाग लेने के इच्छुक कलाकार किसी दी हुई विषयवस्तु – श्रम, जयंती समारोह, आदि-आदि – पर किसी बड़ी अखिल संघीय प्रदर्शनी में हिस्सा लेते हैं। एक महत्वपूर्ण वार्षिक प्रसंग राष्ट्रीय पुरस्कारों का प्रदान किया जाना है, जब कि उसीके साथ-साथ प्रत्येक जनतंत्र स्वयं अपने कलाकारों का सम्मान भी करता है।

संभवतः बाहरवाले सोवियत संघ की अति यथार्थवादी, वीररसपूर्ण चित्रकला तथा मूर्ति-कला से ही सबसे अधिक परिचित हैं। बरसों से पश्चिमी दुनिया के आलोचक यह दावा करते आये हैं कि सोवियत संघ में "व्यक्तिगत स्वतंत्रता" का अभाव है, "कलाकार को एक सरकारी ढांचे में बांध दिया जाता है"। इसे अपनी आंखों देखने के लिए मैं अपना कैमरा लेकर रंगीन पारदर्शियों पर ललित कलाओं में आनेवाली विभिन्नताओं का रेकार्ड इकट्ठा करने निकल पड़ा।

मैंने सलासपील्स में अत्यधिक प्रभावित करनेवाले और सशक्त स्मारक को अंकित किया है,

जो संभवतः हमारे युग की महानतम मूर्तिकलात्मक उपलब्धियों में एक है। मुझे यथार्थवादी कलाकारों का कार्य नवजीवन के निर्माण के विभिन्न चरणों में मनुष्य के गहन अभिव्यक्तिकरण को खोजता लगा है। मैंने अनातोली निकीच के स्टूडियो में सुंदर, अतिसमंजित स्थिर वस्तु-चित्रों, ज़ोर्गे के प्रस्तावित स्मारक, जो व्लादीमिर त्सीगल की कृति है, प्रसिद्ध सोवियत पुस्तक-चित्रकार गोर्यायेव, जिन्हें हाल ही में दोस्तोयेव्स्की और गोगोल की कृतियों के चित्रों के लिए सम्मानित किया गया है, के रेखाचित्रों और तूलिकाचित्रों का छायांकन किया है। तुर्कमानिया में, अर्मीनिया में, लेनिनग्राद में और मास्को में मैंने ऐसा बहुत कुछ देखा है, जो मुझे पसंद आया है।

लाटविया, लिथुआनिया और एस्तोनिया के कलाकारों की कृतियों की एक बड़ी प्रदर्शनी में (सोवियत कलाकार संघ तथा संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित) मैंने एक कलाकार को "पॉप" विधा में काम करते देखा है, तो दूसरे को जैक्सन पोलक (अमरीकी अग्रगामी चित्रकार, जो कनवास पर कूंचियों के बजाय डिब्बों से सीधे रंगों की धारें दौड़ाया करते थे) की भौंडी नक़ल करते पाया है। सोवियत कलाकारों की ऐसी कृतियों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

न्यूयार्क और सान-फ़्रांसिस्को में युद्धोत्तर काल में जो प्रवृत्तियां उभरीं, वे बहुत कुछ उस वातावरण का प्रतिबिंब थीं, जिसमें कलाकार ने अपने आपको पाया था। यह चौथे दशक के मंदी के ज़माने में कला में आये उस सामाजिक युग से सर्वथा भिन्न वातावरण था, जब कलाकार के लिए रचना की मुख्य अंतर्वस्तु उसकी सामाजिक चेतना, संबद्धता और अमरीकी जनता से सामीप्य को प्रतिलक्षित करना थी (जो काफ़ी हद तक अमरीकी संघीय सरकार के कला कार्यक्रम के कारण संभव हो पाया था)।

१९४५ के बाद अमरीका में वातावरण पूरी तरह से बदलकर शीतयुद्ध का, मैक्कार्थी युग का वातावरण हो गया और सरकार के संरक्षण से वंचित होकर अमरीकी चित्रकार को बूर्जुआ वर्ग में नया संरक्षक खोजना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि सारा ध्यान रूप पर ही संकेंद्रित हो गया। कुछ हद तक यह राइनहार्ड्ट और रोथ्को जैसे महान कलाकारों ने किया, जिनकी उपलब्धियां काफ़ी बड़ी थीं। लेकिन मानवताविरोध और भय से पोषित इन प्रवृत्तियों को एक अन्य संस्कृति में, मानवतावाद की धारणा पर आधारित सोवियत संस्कृति में प्रत्यारोपित करना मेरी राय में ग़लत है और इसके नतीजे से सिर्फ़ भौंडी नक़लें ही पैदा होंगी। मुझे जिस चीज़ की तलाश थी, वह थी मानवतावाद की अभिव्यक्ति।

और अंतरंग अभिव्यक्तियां – कलाकार का स्वप्नजगत और अपना विश्व? ये भी हैं ही। इसका पता मुझे एक दिन तिश्लेर के चित्रों की प्रदर्शनी में चला।

हमारे मकान से कुछ ही दूर कलाकार संघ की एक इमारत है, जिसमें निचली मंज़िल पर एक ग्राफ़िक (लेखाचित्रण) शिल्पशाला (जहां मैंने अपने तुर्कमानी रेखाचित्रों के तीन लिथोग्राफ़ तैयार किये थे), चार मंज़िलों पर कलाकारों के स्टूडियो और एक बड़ा प्रदर्शनीकक्ष है। यहां एक दिन तीसरे पहर मैं एक कलाकार के कृतित्व के एक तरह के मूल्यांकन में शामिल हुआ था। यह एक आम घटना है, जो प्रदर्शनी के बीच में किसी समय, जब वह कुछ समय चल चुकी होती है, जिससे लोगों को उसे देखने का अवसर मिल जाये, होती है।


10

एक रविवार को यह वड़ा प्रदर्शनीकक्ष पूरी तरह से भरा हुआ था। उसमें कई लोग खड़े हुए थे और उसके एक सिरे पर तिश्लेर और कलाकार संघ के कई लोग और कुछ निमंत्रित वक्ता वैठे हुए थे। मैं प्रदर्शनी को कई वार देख चुका था, क्योंकि मैं तिश्लेर की कृतियों को पसंद करता हूं। वह एक अनुपम कलाकार हैं, जो स्वप्नजगत के अपने ही विश्व को चित्रित करते हैं – फूलों, शमाओं और दूसरी चीज़ों के अनोखे परिवेशों में घिरे और रंग-वैविध्य और विषय के साथ अनुराग से चित्रित स्त्रियों के चित्र। उनकी 'युद्ध और फ़ासिज़्म' चित्रमाला एक ऐसे विषय की अनुपम और निजी अभिव्यक्ति है, जिसे कितने ही कलाकार चित्रित कर चुके हैं।

मुझे सबसे दिलचस्प शायद वाह्य अंतरिक्ष के अनुसंधान के बारे में कुछ चित्र लगे। मैंने एक नन्ही-सी दर्शक – कोई दसेक साल की एक वालिका – से बात की।

उसने कहा, "इन जटिल मशीनों और अंतरिक्षयात्रियों की इन वोझिल, अमानवीय पोशाकों को पहने लोगों को देखकर तो मैं कभी-कभी डर जाती हूं। लेकिन यहां तिश्लेर अंतरिक्ष अनुसंधान को कितनी अच्छी तरह चित्रित करते हैं! यह परियों की कहानियों जैसा लगता है। इससे मुझे डर नहीं लगता। इसे देखकर मुझे खुशी होती है।"

उस दिन अध्यक्षता माशा चेगोदायेवा कर रही थीं, जिन्होंने बैठक का उद्घाटन किया। मैं उनके पिता, प्रसिद्ध कला-इतिहासज्ञ अंद्रेई चेगोदायेव के साथ वैठा था, जिन्होंने कुछ ही समय पूर्व अमरीकी कला पर एक सर्वांगीण और सुवोध पुस्तक प्रकाशित की थी।

"यह तो तिश्लेर के अभिनंदन जैसा है," उन्होंने कहा। "आज जैसे खूबसूरत दिन लोग आम तौर पर पार्कों में घूमने जाना चाहते हैं, लेकिन उसके वजाय वे यहां आये हैं।"

पहले वक्ता, एक कला-समीक्षक व० कामेन्स्की ने कहा, "तिश्लेर एक आश्चर्यजनक, लेकिन विलकुल सीधे-सादे आदमी हैं। उनको देखता हूं, तो मुझे एक विलकुल साधारण आदमी नज़र आता है, लेकिन वह अपने अंदर इतनी ज़बरदस्त दृष्टि, इतना जटिल वैपुल्य लिये हुए हैं। उनकी कला में परंपरा से संभवतः कम ही संबंध है, लेकिन फिर भी वहुत अनुशासन है। वह अपने ही निराले तरीक़े से आकार और अवकाश स्थापित करते हैं। उनकी अतिरंजना कभी-कभी व्यंग्य से सिक्त होती है। उनके कृतित्व में एक तरह की उन्मुक्तता है, जो उनके शिल्प के अनुशासन और दृष्टि की परिपक्वता से और भी सुदृढ़ हो गयी है। वह रंगों के कवि हैं।"

एक और वक्ता ने मंच पर आकर तिश्लेर की शोस्ताकोविच से तुलना की।

इसके बाद चेगोदायेव के बोलने की वारी आयी।

"मेरे लिए तिश्लेर के कृतित्व का महत्व आदमी के नाते उनके भाव, उनकी आत्मशक्ति के गुण में है। कुछ लोग ऐसे कलाकार से डरते हैं, जो स्वप्नजगत को – अपने निजी विश्व को – चित्रित करता है। मेरा ख़याल है कि परीकथा भी वैसा ही यथार्थ हो सकती है, जैसे जीवन का कोई प्रेक्षण, क्योंकि परीकथा जीवन के अवलोकन से ही उदित होती है। सच्ची, महान और काव्यमयी परीकथा सदा लाक्षणिक रूपों में व्यक्त गहन मानवीय भावनाओं और विचारों से सरावोर होती है। स्वप्न के, कल्पना के संप्रेषण में यथार्थ का भाव होना चाहिए और यह हमें तिश्लेर के चित्रों में मिलता है।"

"बहुत सुंदर बोले आप, अंद्रेई द्मीत्रियेविच," चेगोदायेव लौटकर अपनी कुरसी पर बैठे, तो मैंने कहा। "काश कि विदेशों में लोगों को इस बैठक का पता लगा होता, उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यापकता दिखानेवाले ये भाषण पढ़ने को मिले होते – यह एक ऐसी चीज़ है कि जिसके बारे में हमारे कला-समीक्षकों का विश्वास है कि वह यहां है ही नहीं।"

... कार्यक्रम का औपचारिक हिस्सा समाप्ति पर था। लोग मंच पर आ रहे थे और सभी का मूल्यांकन सराहनात्मक ही था।

"मुझे तो निराशा हुई है," मैंने चेगोदायेव से कहा। "एक भी ऐसा कट्टरपंथी वक्ता मंच पर नहीं आया है कि जो तिश्लेर के कृतित्व की आलोचना करता।"

"अरे, दर्शकों में कुछ थे, लेकिन बैठक के उत्साहपूर्ण वातावरण ने उनकी ज़बानों को बिलकुल बंद कर दिया। कई साल पहले वे तिश्लेर की कला पर हमले किया करते थे – जानते हैं न, जब वे शोस्तकोविच और प्रोकोफ़्येव की भी आलोचना करते थे। उन्होंने तो मुझ पर भी हमले किये थे। लेकिन यह सब बीती बात है। यह आप खुद देख रहे हैं। और यह न भूलिये कि इस प्रदर्शनी का आयोजन कलाकार संघ और संस्कृति मंत्रालय – दोनों – ने किया है। संघ ने तो दस चित्र ख़रीद भी लिये हैं। इन्हें विदेशों में सभी प्रदर्शनियों में और हमारे देश में भी दिखाया जायेगा। तिश्लेर एक बहुत महत्वपूर्ण कलाकार हैं और लोग इस बात को जानते हैं।"

हम प्रदर्शनी से बाहर निकले, पेड़ों से घिरे बाग़ को पार किया और जब द्मीत्री उल्यानोव सड़क के मोड़ पर मुड़े, तो मैं बोला, "अंद्रेई द्मीत्रियेविच, आपने इस संघर्षमय और रोमांचक इतिहास के काफ़ी दौर को अपनी आंखों देखा है। प्रारंभिक दिनों में क्या हालत थी?"

"१९१७ के बाद हमारी कला कई दौरों से गुज़री है," चेगोदायेव ने कहा। "कुछ कलाकार मानते थे कि विधा में क्रांति होनी चाहिए और इस तरह कला को क्रांतिकारी चेतना का प्रतिबिंबन करना चाहिए। कुछ कलाकार फ़्यूचरिज़्म – गति-निरूपणवाद – की ओर उन्मुख हुए, तो कुछ मालेविच तथा अन्यों की पूर्ववर्ती अवस्तुनिष्ठ दिशा में चलते रहे। लेकिन यह विधा निस्संदेह कुछ ही लोगों के पास पहुंच पाती थी, जब कि सोवियत सरकार के लिए सबसे महत्वपूर्ण कला को जनसाधारण के जीवन का अंग बनाना था।

"एक 'प्रोलेतकूल्त' (सर्वहारा संस्कृति) आंदोलन भी था, जिसे बुद्धिजीवियों ने जन्म दिया था। यह किसानों या मज़दूरों में नहीं पैदा हुआ था। इसके पीछे यह विचार था कि नयी संस्कृति को अतीत से स्वतंत्र – कुछ सर्वथा नयी ही चीज़ – होना चाहिए और सारे अतीत को तिलांजलि दे दी जानी चाहिए। उन्हें आशा थी कि इससे मज़दूर वर्ग से नयी प्रतिभाएं जैसे स्वतः ही सामने आने लगेंगी। यह एक रोमानी भ्रांति थी। हमारे महान कवि मयाकोव्स्की ने इस आंदोलन की खिल्ली उड़ायी थी। यह ऐसा समय था कि जब अतीत की सारी संपदाएं महलों से, निजी मकानों से और निजी पुस्तकालयों से निकलकर जनता की संपत्ति बन रही थीं।

"इस आंदोलन के अपने कवि, लेखक और कलाकार थे। किंतु इसने कोई उल्लेखनीय नतीजा नहीं पैदा किया। जब लेनिन ने यह बताया कि अतीत की समस्त संस्कृति एक ऐसी धरोहर है कि जिसे अस्वीकारा नहीं जाना चाहिए, तो आखिर इसे भंग कर दिया गया।

"प्रारंभिक काल में नये समाज की प्रसव वेदना को, अपने युग की अभिव्यक्ति की निष्कपट खोज को प्रतिबिंबित करनेवाले कई नये आंदोलन पैदा हुए और ख़त्म हो गये।

"सोवियत कला में सभी अल्पकालिक विच्युतियों के बावजूद यह स्पष्ट है कि तीसरे दशक से उसके विकास की यथार्थवादी दिशा को ही गहनतः निरूपित और स्थापित किया गया है। यह अतीत की कला के सभी श्रेष्ठतम तत्वों पर आधारित है। तीसरे दशक में भी हमारे यहां कई महान और श्रेष्ठ कलाकार थे, जैसे फ़ावोर्स्की, दैनेका, पेत्रोव-वोद्‌किन, सारियान, सेर्गेई गेरासिमोव, मूख़िना और कोंचालोव्स्की। जीवन पर केंद्रित महान यथार्थवादी कला की यह मुख्य दिशा सोवियत कला के इतिहास के दशकों में आज तक चलती चली आयी है और हर पीढ़ी में उसने महान कलाकार पैदा किये हैं, जैसे श्मारिनोव, सोइफ़ेर्तिस, निकिच और पोप्कोव।

"इस काल के सबसे उल्लेखनीय कलाकार युवा दैनेका थे। १६२५ में उन्होंने अपना चित्र 'पेत्रोग्राद की रक्षा' प्रदर्शित किया। समयुगीन विषय पर यह पहला महत्वपूर्ण चित्र था – विशाल और असाधारण। समयुगीन लोगों, नगरों, खेलकूद, नये औद्योगिक भूदृश्यों के उनके चित्र समयुगीनता के बोध से ओतप्रोत थे – सिर्फ़ विषयवस्तु ही नहीं, बल्कि रूपविधान के लिहाज़ से भी – प्रखर और चयनात्मक।

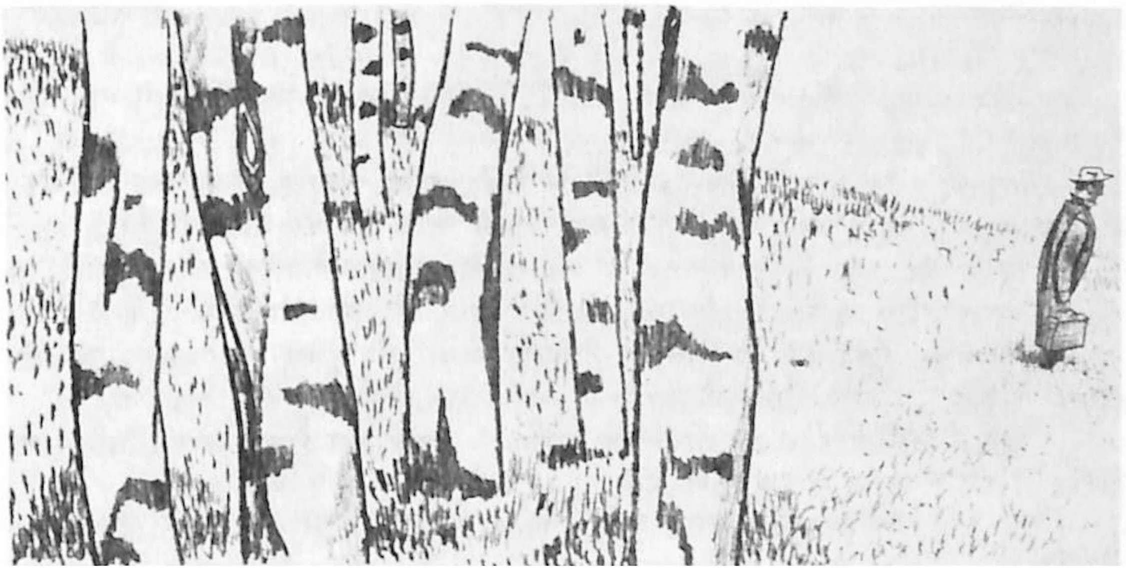
"युद्धकाल की परिधि में सभी कलाकार आ गये थे। कलाकारों के लिए महत्व की चीज़ सिर्फ़ एक थी – संघर्ष को, जनता के शौर्य को और अडिगता को तुरंत प्रतिबिंबित करने और उसे जनता के पास ले जाने की आकांक्षा। युद्ध के बाद कुछ समय तक कुछेक कलाकार समाजवादी यथार्थवाद की संकीर्ण व्याख्या पर चलते रहे। अब, जैसा कि आप ख़ुद देख चुके हैं, वह ज़माना बीत गया है। जो लोग उस समय अलोकप्रिय थे, जिनकी संकीर्ण दृष्टिकोणवाले आलोचना किया करते थे, वे – सारियान, दैनेका, कोंचालोव्स्की, पेत्रोव-वोद्‌किन – आज सबसे महत्वपूर्ण कलाकार माने जाते हैं।"

चेगोदायेव के घर के प्रवेश द्वार के पास हम कुछ देर युवा भूर्जवृक्षों के तले बेंच पर बैठे रहे।

"पुरानी पीढ़ी ख़त्म हो रही है," वह कहते रहे, "बेशक, तिश्लेर, श्मारिनोव, निकीच, पीमेनोव अभी हैं और बीचवाली पीढ़ी में ताईर सलाख़ोव तथा अन्य कलाकार भी हैं।

"फ़ावोर्स्की, लेबेदेव और कुप्रियानोव से लेकर सोवियत ग्राफ़िक-चित्रकार सचमुच महत्वपूर्ण हैं। ग्राफ़िक-चित्रण में एक सुस्थिर और सतत धारा बनी रही है, जिसने दूबीन्स्की, सोइफ़ेर्तिस, बासोव और गोर्यायेव जैसे अद्वितीय कलाकार पैदा किये हैं।

"इस वक़्त हमें नयी, युवा पीढ़ी की बात करनी चाहिए। मुझे इसमें तीसरे दशक के उत्साह की याद दिलानेवाले ज़बरदस्त उत्थान का अहसास होता है। जो बात महत्वपूर्ण है, वह है कलाओं में व्यापक वैभिन्न्यता – हर किसी को अपने विचार की, अपनी अभिव्यक्ति शैली की तलाश है।" कुछ ठहरकर वह बोले, "यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारी जनता की कला में बहुत गहरी दिलचस्पी है और कलाकार जनता से अलग नहीं है – वह उसका अंग है।"



चिकित्सा

"सोवियत संघ में चिकित्सा व्यवस्था कैसी है?" दोस्त मुझसे पूछते। "वह तो समाजीकृत है, है न?"

"बात यह है कि सोवियत संघ में आदमी की निजी ज़िंदगी के सिवा हर ही चीज़ समाजीकृत है," मैं कहता। "मुझे उनके तरीक़ों और कार्यक्रम की निजी तौर पर जानकारी है।"

शरद में एक बार लीला बीमार पड़ गयीं। सभी सोवियत नागरिकों की ही भांति हम भी एक पोलीक्लिनिक के मातहत थे (पोलीक्लिनिक आम तौर पर आदमी के रहने के इलाक़े में ही होता है)। सुबह मैंने पोलीक्लिनिक टेलीफ़ोन किया, तो मुझसे हमारे नाम, पते और बीमारी के संकेतों के बारे में पूछा गया।

"दिन में किसी वक़्त डाक्टर आकर देख जायेगा," उन्होंने कहा (अगर मामला अत्यावश्यक होता, तो फ़ौरन एंबुलेंस भेज दी गयी होती)।

थैला लिये एक आकर्षक, युवा, ज़रा भारी से बदन की स्त्री आयी और उसने लीला को देखा।

"आपको ठंड लग गयी है और न्यूमोनिया हो सकता है। हमें आपको अस्पताल ले जाना होगा।"

क़ुदरती तौर पर, लीला ने विरोध किया।

"इलाज हम आपका घर पर भी कर सकते हैं। डाक्टर आकर आपको रोज़ देख जाया करेगा, इंजेक्शन लगा दिया करेगा और ध्यान रखेगा। लेकिन अस्पताली इलाज बेहतर और ज़्यादा निरापद रहता है।"

अनिच्छापूर्वक लीला अस्पताल जाने के लिए राज़ी हो गयीं।

"हम आपको ले जाने के लिए गाड़ी भेज देंगे," डाक्टर ने लीला को यह बताते-बताते कि साथ में क्या-क्या ले जाना चाहिए, कहा। जल्दी ही नर्स के साथ पोलीक्लिनिक की कार आ गयी और हम उसमें अस्पताल चले गये।

लीला अस्पताल में पांच हफ़्ते रहीं और बारी-बारी से हर विभाग ने उनकी जांच की। उनकी बढ़िया देखभाल की गयी, उनकी तरफ़ ख़ूब ध्यान दिया गया और उनकी कई बढ़िया, तो कुछ ऐसे लोगों से भी मुलाक़ात हुई, जो बिलकुल ही लकीर के फ़क़ीर थे। जब उन्हें अस्पताल से छोड़ा गया, तो बिलकुल सोवियत नागरिकों की तरह ही न फ़ीस का सवाल उठा, न बिल का। जो दवा लेने की हिदायत दी गयी, उसकी क़ीमत कुछ ही सेंट थी।

और मुझे एक रोचक अनुभव तब हुआ कि जब घर पर दावत के लिए ह्विस्की, वरमूथ और वोद्का का मूल्यवान बंडल लाता हुआ बर्फ़ पर फिसलकर गिर गया, जिससे बोतलों के साथ-साथ मेरा सिर भी फूट गया। मुझे एक बूढ़ी नानी और एक छोटी सी लड़की द्वारा उठने में सहायता दिये जाने की याद है। जब उन्होंने मुझे अपने पैरों पर खड़ा किया, तब तक मैं अपने पर पूरी तरह से क़ाबू कर चुका था। बस, मेरे थैले ही, जो अब भी मेरे हाथों में थे,

झुनझुनाहट की आवाज़ पैदा कर रहे थे। मेरा दिल बैठ गया! सौभाग्य से ये प्लास्टिक के थैले थे और मैं अपने घर से आधे ब्लाक की ही दूरी पर था। घर आकर मैंने थैलों में भरे द्रव को हर संभव बरतन में भर लिया। इस तरह इस मिश्रण से एक नये ही प्रकार का – रेफ़्रेझिये तर्ज़ का – पेय तैयार हो गया। उसी शाम को मेरे मित्र वीक्तोर हमारे घर आ गये।

"यह कोई खिलवाड़ की बात नहीं है! फ़ौरन डाक्टर को बुलाओ! यह दिमाग़ को चोट पहुंचने का भी मामला हो सकता है," उन्होंने कहा।

"भाड़ मं जाये!" मैंने अपने नये काकटेल की चुस्की लेते हुए कहा।

अगली सुबह ही पोलीक्लिनिक का फ़ोन आ गया (ज़ाहिरा तौर पर वीक्तोर ने वहां टेलीफ़ोन कर दिया था)।

"हम आपको देखने के लिए न्यूरोलाजिस्ट (तंत्रिकाविशेषज्ञ) को भेज रहे हैं," पोली-क्लिनिकवालों ने कहा। एक खुशमिज़ाज नौजवान डाक्टर मुझे देखने आ गया।

"आपको अस्पताल भेज देना बेहतर रहेगा," मुझे देखने के बाद उसने कहा।

"जी, माफ़ कीजियेगा," मैंने कुछ पहले सुने एक क़िस्से के बारे में सोचते हुए कहा। (शायद एक अंग्रेज़ किसी सम्मेलन में भाग लेने आया हुआ था। एक दिन उसने अपने दुभाषिये को बताया कि उसका गला दुख रहा है। एक डाक्टर आया, उसने उसे देखा और उसे अस्पताल ले गया – और इसके बावजूद कि जल्दी ही उसे अपनी तबीयत ठीक लगने लगी, वह तरह-तरह के परीक्षणों से गुज़रता दो हफ़्ते अस्पताल में ही पड़ा रहा। उसने वहां से निकल भागने की भी योजना बनायी, पर कुछ हुआ नहीं। बेचारे को वहीं पड़े रहना पड़ा)।

"ठीक है," मेरा डाक्टर बोला, "लेकिन आपको एक्स-रे के लिए आना होगा, जिससे मुझे यह तसल्ली हो सके कि कोई खतरा नहीं है।"

इसके लिए मैं तैयार हो गया और अगली सुबह एक्स-रे के लिए पोलीक्लिनिक पहुंच गया। बाद में उसके नतीजों को देखकर डाक्टर ने कहा कि सौभाग्य से बात बहुत गंभीर नहीं है।

"घर पर ही रहिये और जितना ज़्यादा हो सके, उतना आराम कीजिये। अगले दस दिन एक नर्स आपके यहां आती रहेगी।"

हर सुबह मुझे एक इंजेक्शन दिया जाता, ताप और रक्तचाप नापा जाता।

"आप इतने अड़ियल क्यों हैं?" एक नर्स ने पूछा। "अस्पताल में आपकी अच्छी देखभाल की जायेगी।"

मैंने उसे उस अंग्रेज़ के बारे में नहीं बताया!

एक दिन जब वीक्तोर हमारे यहां आये हुए थे, मैंने उनसे चिकित्साजगत में अपने प्रारंभिक दिनों के बारे में बताने को कहा।

"तीस के, बल्कि प्रारंभिक बीस के दशक को देखते हुए कहना होगा कि डाक्टर, खासकर वे, जो सुदूर गांवों में काम करते थे, बड़े निष्ठावान और निस्स्वार्थ लोग थे। वे आम लोगों के निकट थे और उन अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी बड़े-बड़े इलाक़ों में अकेले भरसक सभी कुछ करते थे।

"जब मैंने डाक्टरी शिक्षा पूरी की, तो मेरे सामने डाक्टरी स्कूल में ही रहकर अनुसंधान कार्य करने का सुझाव आया। लेकिन मैं कहीं ऐसी जगह जाना चाहता था कि जहां मेरी ज़रूरत हो। मैं बाइकाल – साइबेरिया में बुर्यात-मंगोल स्वायत्त जनतंत्र – चला गया। पांच घरों की यह छोटी-सी बस्ती निकटतम स्टेशन से ७० मील दूर थी। यह अस्पताल एक बड़े इलाक़े के लिए था और उसमें ३५ रोगी शैयाएं थीं। मेरी सहायता के लिए अस्पताल में एक पुरुष नर्स और एक दाई थी।

"पहली ही रात एक इमरजैंसी केस – नितंब प्रसव (ब्रीच डिलीवरी) – आ गया। ख़ुश-क़िस्मती से मैं अपनी किताबें साथ लाया था। मैं शल्यकर्म कर चुका था, पर यह मामला मेरे लिए नया था। इधर मेरे सहायक तैयारियां कर रहे थे, और उधर मैं अपने कमरे में बैठा अपनी किताबों को पलट रहा था। लेकिन आपरेशन सफल रहा – कम से कम मैंने मां को तो बचा ही लिया।

"यह भूतपूर्व शाही हुक़ूमत से विरासत में प्राप्त सबसे उपेक्षित और उत्पीड़ित इलाक़ों में से एक था। रतिज रोगों और तपेदिक़ का अत्यधिक प्रकोप था। लोगों को अपने बच्चों को ज़िंदा रखने की सख़्त चिंता थी। पति अपनी गर्भवती पत्नी को लेकर प्रसव के कई हफ़्ते पहले ही आ जाता था। वे किसी पास के गांव में ठहरकर इंतज़ार करते रहते थे।

"कुछ समय बाद पीतवेशी बौद्ध भिक्षु डाक्टरी सहायता के लिए आने लगे। मुझे एक बार की याद है कि जब एक सख़्त घायल बच्चा लाया गया था, जिसे ख़ून देना ज़रूरी था और उसका कोई और स्रोत न होने के कारण मैंने रक्ताधान के लिए अपना ही ख़ून दे दिया था।

"दो साल तो मुझे एक दिन का भी अवकाश नहीं मिला। सतत समस्याएं पैदा होती रहती थीं। सौभाग्यवश प्रदेश के केंद्रीय प्रशासन की मेरी योजनाओं से सहानुभूति थी और मेरे लिए अपने अस्पताल का प्रसार करना, नया साज़सामान ख़रीदना और एक बिजली जैनरेटर लेना संभव हो गया।

"क्रांति के बाद सोवियत सरकार ने निरोधक चिकित्सा कार्यक्रम शुरू किया। इसका मतलब था सारी आबादी के स्वास्थ्य की सतत और निःशुल्क देखभाल। स्त्रियों की देखभाल के विशेष कार्यक्रम विकसित किये गये। शिशुसदनों, छोटे बच्चों की देखभाल, स्कूली भोजन, सुसंतुलित आहार, आदि-आदि की तरफ़ ध्यान दिया गया। काम की हालतों की लगातार जांच की जाती थी।

"आज हर सोवियत नागरिक की पर्याप्त देखभाल होती है। तुमने बताया था, और मैंने पढ़ा है कि किस तरह पश्चिम में डाक्टर के पास जाना भी लोगों की सामर्थ्य के बाहर है। हमारे यहां तो ऐसा होने का सवाल ही नहीं उठता। बेशक, हमारे यहां अभी भी पुराने ढंग के अल्पसज्जित अस्पताल हैं, कर्मियों की कमी है, लेकिन हम सतत सुधार के लिए कृतसंकल्प हैं। हम नये अस्पतालों, नये पोलीक्लिनिकों और नये डाक्टरी स्कूलों का लगातार निर्माण कर रहे हैं। एंटन, हम जल्दी ही, बहुत जल्दी अपने लक्ष्य पर पहुंच जायेंगे और तब सारी दुनिया ईर्ष्या के साथ हमारी तरफ़ देखेगी।"

वीक्तोर ने यह सब इतने आत्मविश्वास के साथ, गर्व की भावना और एक तरह की प्रत्याशा के साथ कहा कि उनके उत्साह को मैंने भी अनुभव किया और खुद भी उत्साहित हो गया। और मैं जानता हूं कि इस सब के पीछे अनेक कार्यक्रम और एक विराट योजना हैं।

हाल ही में एक अमरीकी चिकित्सक, डाक्टर हैरी एप्सटाइन ने सोवियत संघ की यात्रा की थी और सोवियत स्वास्थ्यव्यवस्था का अध्ययन किया था। उन्होंने लिखा है:

"सामूहिक फ़ार्मों के अपने पोलीक्लिनिक, प्राथमिक उपचार केंद्र और अस्पताल हैं, जिनका वे स्वयं निर्माण करते और ख़र्चा उठाते हैं। लेकिन वे शहरी चिकित्सीय और अनुसंधान संस्थाओं के साथ घनिष्ठ सहयोग में काम करते हैं और जब भी ज़रूरी हो, उनका उपयोग करते हैं।

"सभी बड़े कल-कारखानों में अपने चिकित्सा विभाग अथवा चिकित्सा केंद्र हैं। उनमें डाक्टर, नर्स तथा अन्य चिकित्साकर्मी काम करते हैं, जिनकी सेवाएं मात्र काम करते समय हुई चोटों या बीमारियों की देखभाल तक ही सीमित नहीं हैं। वे कारखानों में स्वास्थ्य तथा स्वच्छता संबंधी अवस्थाओं की नियमित जांच करते हैं, कर्मचारियों की कार्य तथा निवास संबंधी अवस्थाओं का अध्ययन करते हैं और, अगर ज़रूरी हो, तो मज़दूरों के लिए विशेष आहार और अतिरिक्त विश्राम की सलाह देते हैं।

"सोवियत स्वास्थ्य सेवाओं में एक और महत्वपूर्ण कड़ी सैनेटोरियम, स्वास्थ्यस्थल और विश्रामगृह हैं, जिनका मुख्य कार्य सोवियत जनता के स्वास्थ्य को सुधारना और सुरक्षित रखना है।

"ज़ारशाही रूस में ये सभी प्राइवेट थे और सिर्फ़ अभिजातों, बड़े ज़मींदारों, धनी व्यापारियों और ऊंचे फ़ौजी अफ़सरों की ही सेवा करते थे। क्रांति के बाद सभी स्वास्थ्यस्थलों को राज्य ने अपने हाथों में ले लिया। २१ दिसंबर, १९२१ के दिन लेनिन ने एक आज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये, जिसका नाम था, 'क्रीमिया के मेहनतकश जनता के उपचारार्थ उपयोग के बारे में'। तब से सभी पुराने स्वास्थ्यस्थलों का प्रसार किया गया है और क्रीमिया, काकेशियाई तथा उराल पर्वतों, साइबेरिया, सुदूर पूर्व और मध्य एशिया में हज़ारों नयों का निर्माण किया गया है।

"नये सैनेटोरियमों के अलावा उपनगरीय सैनेटोरियम भी हैं। ये उन रोगियों के लिए स्वास्थ्य लाभ केंद्रों का काम करते हैं, जो अस्पतालों से बीमारी या आपरेशनों के बाद निकलते हैं और जिन्हें उल्लाघ देखभाल की आवश्यकता होती है। इस तरह की संस्थाओं की एक अच्छी मिसाल मास्को के उपांत में स्थित पेरेदेल्किनो सैनेटोरियम है। यह सैनेटोरियम उन रोगियों की उल्लाघ देखभाल करता है, जो हृदय शल्यचिकित्सा से गुज़र चुके हैं अथवा किसी हृद्-वाहिका रोग से पीड़ित हैं।

"खनिकों की विशेष देखभाल की जाती है। वे अन्य मज़दूरों से दस साल पहले (पचास साल की उम्र में) पेंशन पा सकते हैं। सोवियत खदानें सुयंत्रीकृत हैं और उनमें प्रकाश तथा वातायन की बड़ी श्रेष्ठ व्यवस्था है। खनिक कोई ३६ घंटा प्रति सप्ताह काम करते हैं। अधिकांश खदानों में ज़मीन के नीचे ही गरम भोजन प्रदान करने की व्यवस्था है और चाय तथा कॉफ़ी हर समय प्राप्य हैं। खनिकों को हर साल पूर्ण चिकित्सीय परीक्षा करवानी पड़ती है और उनके

स्वास्थ्य की खदानों से संबद्ध पोलीक्लिनिकों के विशेष वार्डों में देखभाल और लगातार जांच की जाती है। उन्हें अपने ट्रेड-यूनियनों के ज़रिये निःशुल्क अथवा ७०% रिआयत पर छुट्टियां मिलती हैं। ऐसी जगहों पर काम करनेवालों को साल में ४० दिन का अवकाश मिलता है, जहां सांस के साथ स्फटिक धूल के जाने से उत्पन्न सिलिकोसिस रोग – सिकतामयता – होने की संभावना रहती है। खनिक संघ के अपने विश्रामगृह, बाल शिविर, अस्पताल और पोलीक्लिनिक हैं।

"मेरा ख़याल है कि मैं बिना किसी हिचक के यह कह सकता हूं कि सोवियत जनता के स्वास्थ्य की देखभाल अच्छे हाथों में है।"

सोल्झेनित्सिन तथा अन्य "भिन्नमतावलंबी"

एक शाम को एक दोस्त आ गये, जो एक प्रकाशन गृह के संपादक हैं। मुझे उनके आने से खुशी हुई। मैं अभी कुछ ही पहले लीला के साथ काकेशिया की सैर करके लौटा था, जहां हमने एक महीना कलाकार संघ के अतिथिगृह में गुज़ारा था। वहां मेरी एक कलाकार से भेंट हुई थी, जिसने मुझे बेहद व्याकुल किया था।

"मैं आपको उसके बारे में बताना चाहता हूं," मैंने अपने मित्र से कहा। "वह ऐसा आदमी था कि जिसे आप बिलकुल नज़रअंदाज़ भी नहीं कर सकते। देखने में ख़ासा आकर्षक, लेकिन बेहद अधीर, उत्तेजनशील, आत्मकेंद्रित और रुखा। बातचीत में वह बिलकुल आत्मपरक था और हम कभी कोई ऐसी तर्कसंगत बात न कर पाये कि जो किसी निष्कर्ष की ओर ले जाती। बात बिलकुल उलटी ही थी। उससे बातें करके मैं उदासी और कुंठा का अनुभव करता। कोई निरपेक्ष बात कह देना उसकी आदत थी और फिर वह उसे कई बार दुहराता, मानो पुनरावृत्ति में निर्विवाद्य प्रमाण की झनक होती है।

"उसने कहा, 'हमें अभिव्यक्ति की ज़रा भी स्वतंत्रता नहीं है। हमें आदेशों का पालन करना होता है। किसी भी सृजनात्मक कृतित्व के प्रकाश में आने की कोई भी संभावना नहीं होती।'"

"'मेरे ख़याल में आपको यह मानना होगा कि अनातोली निकीच एक सर्जनात्मक कलाकार हैं। हाल ही में मास्को में उनकी एक बड़ी प्रदर्शनी हुई थी। और निस्संदेह, तिश्लेर के चित्र भी तो,' मैंने कहा, लेकिन उसे उसने अनसुना कर दिया।

"'सोल्झेनित्सिन की हालत को ही देख लीजिये,'" उसने आगे कहा।

"'मैं इस बात को समझ सकता हूं कि क्यों उसकी कृतियां यहां के सांस्कृतिक प्रतिरूप से मेल नहीं खातीं,' मैंने कहा।'मुझे उसका पहला उपन्यास 'इवान देनिसोविच की ज़िंदगी में एक दिन' अच्छा लगा था। मेरा ख़याल है कि उसका कुछ आपेक्षिक महत्व था। लेकिन सोल्झेनित्सिन ने तो इसी विषयवस्तु को उसकी पूरी बीभत्सता के साथ जारी रखा। और अपनी नयी पुस्तक के साथ तो वह और भी अधिक प्रकट समाजविरोधी बन गया। मैंने उसका 'केंसर वार्ड'

पढ़ा है। यह एक अवसादकारी पुस्तक है। वह उस युग को लेता है, जिसे सोवियत जनता ने झेला है, उसका सामना किया है, उसे सही किया है और अब उससे आज़ाद हो चुकी है। लेकिन सोल्झेनित्सिन का पेशा तो यंत्रणा और मुसीबत है।'"

"'मुझे तो इसमें मीन-मेख निकालने की कोई बात नहीं दिखाई देती,' कलाकार ने कहा।

"'मुझे दिखाई देती है। गोर्की ने भी 'तलछट' में लोगों के दुखमय जीवन को पेश किया है। लेकिन उसमें आदमी जिन अभावों को देखता है, उनसे वह दूषित नहीं होता। मेरा ख़याल है कि यही उत्तरदायित्व और यही अवसर है – लेखक जो भी पक्ष दिखाना चाहे, दिखा सकता है, मगर आशा के साथ। सोल्झेनित्सिन के पास यह नहीं है। वह यंत्रणा में, बीभत्सता में आनंद लेता है।'

"'यह तो ज़िंदगी का अंग है,'" कलाकार बोला।

"'ज़िंदगी एक चीज़ है,' मैंने जवाब दिया, 'लेकिन यह दूसरी कि कलाकार उसके साथ कैसे पेश आता है। अब सोल्झेनित्सिन अपनी तर्कसंगत परिणति पर पहुंच गया है – व्लासोव (लाल सेना का जनरल, जो सोवियत संघ से लड़ने हिटलर की तरफ़ चला गया था) का गुण-गान।'*

"'ज़रा एज़रा पाउंड को भी तो याद कीजिये,' कलाकार ने कहा। 'आपके कुछ अमरीकी लेखकों ने उसकी हिमायत की थी।'

"मैंने कहा, 'एज़रा पाउंड युद्धकाल में इटली में रहता था और उसने इतालवी फ़ासिस्टों के लिए काम किया। वह अमरीकी फ़ौजों को ब्राडकास्ट करके 'फ़ासिज़्म की महानताओं' के बारे में बताता था। वह घोर यहूदीविरोधी था। जब उसे अमरीकी सेनाओं ने क़ैद किया, तो कुछ उदारों को यह लगा कि कवि के नाते उसकी मान्य महानता को देखते हुए उसे सभी क़सूरों की माफ़ी दे दी जानी चाहिए। उसे संयुक्त राज्य अमरीका लाया गया, अदालत में पेश किया गया और अगले दस साल उसने एक मानसिक अस्पताल में गुज़ारे।'

"कलाकार ने विषय को बदल दिया। 'मैं समझ गया हूं कि आपको सारे सरकारी कलाकारों के स्टूडियों में ले जाया जायेगा और वही दिखाया जायेगा जो वे चाहते हैं कि आप देखें।'

"'ग़लत। जिन्हें आप 'वे' कहना चाहते हैं, वे मुझे कहीं नहीं 'ले' गये हैं। मैं जहां जाना चाहता हूं, वहां जाता हूं और जो देखना चाहता हूं, वह देखता हूं। मैंने आपके तथाकथित "भिन्नमतावलंबी" कलाकारों को देखा है – उनका अधिकांश कृतित्व उसकी नक़ल है, जो अमरीका में किया जा रहा है। और, जैसा कि आप जानते हैं, यह तो यहां तीसरे दशक में भी किया जा रहा था। जी नहीं, इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। यहां सोवियत संघ में मैं जिस चीज़ को

---

* उसके बाद तो सोल्झेनित्सिन ने और ज़्यादा सोवियतविरोधी रुख अपना लिया है। उसके सिर्फ़ सोवियत सामाजिक व्यवस्था ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय तनावशैथिल्य के भी विरोध ने उसका पहले समर्थन करनेवालों में से भी बहुतों को उससे नाता तोड़ने के लिए विवश कर दिया है। – सं०

देखना चाहता हूं, वह रूप में निमग्नता नहीं है, चाहे वह कितनी ही दिलचस्प क्यों न हो, वल्कि इसकी बजाय आपके समाज के मानवतावाद को प्रतिबिंबित करनेवाली अंतर्वस्तु का वैपुल्य है। मैंने तिश्लेर की कृतियां देखी हैं और इन्हें अनुपम और उत्तेजक पाता हूं।'

"'इस आदमी के साथ मौत की छाया चल रही है,' लीला ने कहा। 'देख लेना, किसी दिन यह अपने गले में फांसी लगा लेगा।'

"वह उत्पीड़ित और उपेक्षित लगता था, मानो किसी 'महाप्रतिभाशाली' को सृजन की संभावना से वंचित किया जा रहा हो। वह अपनी कला के ख़िलाफ़ विभेद की शिक़ायत करता था," मैंने आगे कहा, "और वाद में मैंने कई लोगों से उसके वारे में पूछा।"

मेरे मित्र बोले, "अरे वह तो बड़ा दिक़ करनेवाला आदमी है! हमारे कलाकार संघ की बैठकों में वह चीख़ता है, चिल्लाता है। यह बड़ी मुश्किल बात है। विभेद? जी नहीं। उसकी कृतियां हमारी राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में शामिल की जाती हैं और विदेश भी भेजी जाती हैं। वह ख़ूब मज़े में रहता है।

"तथाकथित "भिन्नमतावलंबी" एक नगण्य संख्या हैं, जो बेइंतिहा शोर मचाते हैं, ऐसा शोर कि जिसे विदेशों में हमारे आलोचक और दुश्मन बढ़ाकर एक सचमुच के तूफ़ान में परिणत कर देते हैं। इन लोगों का हम पर कोई असर नहीं है। हम तो उनकी मौजूदगी को भी नहीं महसूस करते। उनका दृष्टिकोण, उनका काम हमारे लिए बेगाना है। "भिन्नमतावलंबी" कल-कारख़ानों या फ़ार्मों से नहीं आते। जी नहीं। वे संकीर्ण बौद्धिक क्षेत्रों में पैदा होते हैं, जहां अहम् की प्रशस्ति की ज़्यादा गुंजाइश है। वे निजी अवसरवाद से, पश्चिम के रुग्ण संवेदनवाद से प्रभावित होते हैं। यही तथ्य एक समस्या है कि हमारे समाज में ऐसा होता है।"

मेरे मित्र ने आगे कहा, "आपके कलाकार जैसे लोग अकर्मण्य शोर मचानेवाले होते हैं। लेकिन उचित प्रोत्साहन मिलने पर ऐसा ही आदमी सक्रिय "भिन्नमतावलंबी" हो सकता है। विदेश में ऊंचे पुरस्कारों की प्रत्याशा इस आदमी को सोवियत संघ से जाने के लिए उद्वेलित कर सकती है। और एक बार यह क़दम उठा नहीं कि अपने सोवियतविरोधी मेज़बानों के समर्थन को स्वीकार करते हुए उसे अपने "भिन्नमतावलंबन" के, अपनी मातृभूमि की आलोचना और उस पर हमलों के रास्ते पर और आगे जाना पड़ता है, उससे भी आगे कि जिसके लिए वह तैयार रहा होगा। सोवियतविरोध की तेज़ी वढ़ती ही जाती है।

"सबसे पहले उस आधार, उस मूल को समझना महत्वपूर्ण है, जिस पर हमारी सांस्कृतिक अवधारणा निर्मित है। वह इस आधार पर निर्मित है कि कोई भी कला समाज से मुक्त न हो सकती है और न कभी रही है। और प्रत्येक काल को वह वर्ग निर्धारित करता है कि जिसके हाथ में सत्ता होती है। कभी-कभी यह शुभचिंता के लबादे के नीचे, अवगुंठित, चालाक बूर्जुआ नियंत्रण के नीचे सामने आती है। उपरोक्त सिद्धांत की मान्यता में कला के बारे में सोवियत संघ का नज़रिया खुला है। पहले कभी भी संस्कृति को इतनी प्रत्यक्षता के साथ जनता के जीवन में, सारी ही जनता के जीवन में नहीं लाया गया है। जनता के आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर में सामान्य उत्थान के साथ-साथ कलात्मक सृजन की कोटि में यह लगातार उन्नत होती जा रही है।



"निस्संदेह, हमारे यहां कुछ ऐसे संकीर्णमना लोग हैं कि जो अपने कट्टरपंथी नज़रिये का उपयोग कर सकते हैं, जिसके फलस्वरूप किसी सर्जनात्मक कृतित्व में अवरोध पैदा हो सकता है। लेकिन अब यह कदाचित ही होता है और हमारी सरकार इसका ध्यान रखती है कि ऐसा न होने पाये। ऐसा होता था। हो सकता था कि कोई उच्च अधिकारी कह दे, 'मुझे यह फ़िल्म पसंद नहीं' और इसका मतलब उसका अंत हो सकता था। लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, थियेटर को ही ले लीजिये। आप हर कल्पनीय प्रकार के प्रस्तुतीकरण और निदेशन को देख सकते हैं। मैं तो यह तक कहूंगा कि हमारे यहां अधिकांश प्रयोगीकरण होता है। बेशक, हम नकारात्मक, अमानवोचित नाटक नहीं पेश करते। नैतिकता और मानवतावाद के हमारे अपने मानदंड हैं।

"भिन्नमतावलंबियों" की स्थिति समाज के प्रति उनके शत्रुभाव से उत्पन्न होती है। यह ऐसे लोगों का स्वभाव ही है। इन लोगों के लिए विचारधारा का निरूपण सामाजिक अवस्थाएं नहीं करती हैं। इसके विपरीत उनकी विचारधारा उनकी अनोखी मानसिक दशा से निरूपित होती है। समाज से अलग होकर, उसके छिद्रान्वेषी बनकर वे अपनी तादात्म्य की समझ को खो देते हैं। कुछ लोग बहुत दूर चले जाते हैं – लेखक सोल्झेनित्सिन की ही तरह, जिसने समाजवाद और सोवियत सरकार से अपनी घृणा के कारण अंत में अपनी मातृभूमि के शत्रु जनरल व्लासोव को ही अपना नायक स्वीकार कर लिया। आखिर क्या आम अमरीकी को यह नज़र नहीं आता कि सोल्झेनित्सिन का नायक व्लासोव उसका भी शत्रु है? या क्या इसे नज़रअंदाज़ कर देना ही सुविधाजनक है?

"भिन्नमतावलंबी" यहूदी तो और भी ज़्यादा जटिल समस्या हैं। यह समस्या यहूदी अंध-राष्ट्रवाद से, या 'निर्दिष्ट जन' (यहूदी जाति) की अवधारणा से, या नौकरीपेशा लोगों अथवा दूकानदारों की हैसियत से पूंजीवादी दुनिया में ज़िंदगी की प्रत्याशित पसंद के साथ जुड़ी हुई है। कई सोवियत यहूदी उत्प्रवास कर गये हैं। बहुत से आजकल आस्ट्रिया में मुश्किलों में रह रहे हैं और सोवियत संघ लौट आने की आज्ञा मांग रहे हैं।"

मैंने कहा, "निस्संदेह, कुछ मामलों में ऐसे आदमी की कल्पना की जा सकती है कि जो अपने रहने की जगह को बदलना चाहेगा। मैं यह सोच सकता हूं कि इटली किस तरह किसी चित्रकार को आकृष्ट कर सकता है। लेकिन ऐसा आदमी सार्वजनिक दिखावे का भागीदार नहीं बनेगा। फिर एक बात और भी है। मेरी कुछ ऐसे लोगों से मुलाक़ात हुई है कि जो मेरे लिए एक उलझन हैं। ऐसा आदमी आम तौर पर कोई वैज्ञानिक, या किसी और विशेषीकृत पेशे में काम करनेवाला होता है, जो अपने आसपास की ज़िंदगी से पूरी तरह से कटा हुआ होता है। वह विशिष्ट समस्याओं में निमग्न रहता है, सामाजिक समस्याओं के प्रति अपने रवैये में वह एकदम भोला, बिलकुल बच्चे सा लगता है।

"अपने देश में मैंने यह सुना है, 'धीरे-धीरे, सोवियत संघ पूंजीवादी व्यवस्था की तरफ़ जा रहा है और अमरीका समाजवाद की तरफ़ चला जायेगा।' लेकिन सच पूछिये, तो मैंने इस तरह के मूर्खतापूर्ण और अवैज्ञानिक विचारों को यहां सुनने की आशा नहीं की थी।"

मैंने आगे कहा, "इसमें कोई शक़ नहीं कि विदेशों में सोवियत कलाकारों का पूंजीवाद के जिन मोहक लक्षणों से पाला पड़ता है, वे कोई कम नहीं हैं। मैंने एक साहित्यकार को, जिसे पश्चिम में पूंजीवादियों ने बहुत महत्व दिया था, अहंकार और स्वार्थ के कुछ खेदजनक चिन्ह प्रदर्शित करते देखा है।"

"हां, यह सही है," मेरे मित्र ने कहा। "लेकिन विदेशों में लोग इसमें एक गंभीर ग़लती कर रहे हैं कि वे अपने यहां आनेवाले इन थोड़े से लोगों का सही मूल्यांकन नहीं करते। ज़रा मोइसेयेव और 'बेर्योज़्का' नृत्य-मंडलियों, मास्को कला थियेटर, बोल्शोई थियेटर के – कुछ ही नाम लें, तो – हमारे उन हज़ारों नर्तकों, संगीतज्ञों और अभिनेताओं के बारे में भी तो सोचिये, जो कंसर्ट यात्राओं पर वहां जा चुके हैं और एक बार से कहीं ज़्यादा बार। वे क्यों नहीं पलायन करते? इसलिए कि उन्हें अपने देश लौटते ख़ुशी होती है।

"और ज़रा बूर्जुआ प्रेस की नैतिकता की तरफ़ तो देखिये! कुछ साल हुए, एक आदमी अपनी बीवी और दो छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर पलायन कर गया। पूंजीवादी प्रेस ने उसकी इस अनैतिक कार्य के लिए आलोचना नहीं की। उन्होंने अपने बच्चों को इस तरह छोड़ जाने को तो नज़रअंदाज़ कर दिया और उसकी वीरों की तरह प्रशंसा की! इस तरह के वातावरण में कमज़ोर लोग (और हमारे यहां कमज़ोर लोग भी हैं) ही पनपते हैं। इससे विदेशों में लोग यह ग़लत सोचने लगते हैं कि ये थोड़े से "भिन्नमतावलंबी" लोगों की बड़ी संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे उन्हें रोशनी में नहीं देखना चाहते। लेकिन आख़िर, समय के गुज़रने के साथ-साथ उनकी जनता की भ्रांति भी भंग हो जाती है। अगर पश्चिम में कुछ लोग इन लोगों का उपयोग करके हमारे ख़िलाफ़ कोई बड़ा आंदोलन खड़ा करना चाहते हैं, तो यह उन्हीं का सरदर्द है। हम बहुतेरे तूफ़ानों को झेल चुके हैं और अगर और तूफ़ान आते हैं, तो उन्हें भी झेल लेंगे!"

बच्चे

बच्चों को चाहा और प्यार किया जाता है। वे दृढ़ पारिवारिक सूत्रों के अंग हैं। वे लोगों और सरकार की सर्वप्रथम सुचिंता की चीज़ हैं। शिक्षा और खेलकूद में, विश्राम और मनोरंजन में वे अधिकतम ध्यान और देखभाल के पात्र हैं।

बच्चों के पालन-पोषण के इस विषय पर मुझे सोवियत शिक्षाविद त० पोलोज़ोवा के शब्द बहुत पसंद हैं। वह लिखती हैं:

"कल का आदमी कैसा होगा? बच्चों में चरित्र के कौनसे रुझान, कौनसे बौद्धिक और आत्मिक गुण विकसित होंगे? ये ऐसे सवाल हैं कि जिन्हें शायद हमारे देश में हर कोई अपने से पूछ रहा है। अत्यंत विविध पेशों और उम्रों के लोग नयी पीढ़ी को शिक्षित करने के सर्वोत्तम तरीक़ों के बारे में बहसों में हिस्सा लेते हैं। इस बहस की अग्रभूमि में जो प्रश्न हैं, उनमें एक बच्चों की सौंदर्यपरक शिक्षा और उन्हें जीवन के लिए तैयार करने में उसकी भूमिका का भी है। व्यक्तित्व के अज्ञातपूर्व सीमाओं तक सर्वतोमुखी विकास और मुकुलन का मूल हमारे समाज की प्रगति के

विशिष्ट लक्षणों में है, जो समाज के प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा करता है कि उसे अपने विचारों और कार्यों में, अपने शौक़ों में, अपनी आत्मिक आवश्यकताओं में – सभी में उत्कृष्ट होना चाहिए।"

एक बार शुरू गरमियों में, जब शहर के स्कूल ग्रीष्मावकाश के लिए बंद हो चुके थे, बस के लिए इंतज़ार करते समय मेरी नज़र एक नोटिस पर पड़ी – "मास्को के बच्चों को पायनियर शिविरों में पहुंचाने की मौजूदा ज़रूरतों के कारण, जिसके लिए नगर-परिवहन की बसों को लगा दिया गया है, बसें कुछ ज़्यादा अंतर से आया करेंगी।" और अगली ही सुबह मैंने बसों के काफ़िले देखे – हर बस झंडियों और पताकाओं से सजी हुई थी, हर बस बच्चों से भरी हुई थी।

दोस्तों की राय थी कि मुझे काले सागर के तट पर स्थित अंतर्राष्ट्रीय बाल शिविर आर्तेक को जाकर देखना चाहिए। लेकिन चूंकि मेरे सोवियत संघ से जाने का समय निकट आ रहा था, इसलिए मैंने किसी पास के शिविर को ही देखने का इरादा किया। मैंने मशीन-निर्माण कारख़ाने में अपने दोस्त चिर्कोव को फ़ोन किया।

"जी हां। क्यों नहीं! ख़ुशी से हमारे शिविर को देखिये। हमारा बाल शिविर आधुनिकतम तो किसी भी लिहाज़ से नहीं है," उन्होंने कहा, "और असल बात तो यह है कि हम वहां कुछ नया निर्माण शुरू ही करनेवाले हैं। लेकिन आप बच्चों को देख सकेंगे और एक दिन शहर के बाहर गुज़ार सकेंगे। आप हमारे सम्मानित अतिथि होंगे। हम बुधवार को आपको आपके घर से ले लेंगे।"

"ठीक है," मैंने जवाब दिया।

बुधवार को सुबह ही चिर्कोव एक कार और ड्राइवर को लेकर कारख़ाने के निदेशक और उनकी बेटी के साथ नीचे पहुंच गये। हम लेनिनस्की प्रोस्पेक्त से वोलोकोलाम्स्कोये राजमार्ग पर होते हुए शहर के बाहर आ गये। हलका पहाड़ी भूदृश्य, पेड़ों से घिरा रास्ता, ऊपर असीम आकाश और जंगल। मास्को से कोई ८० किलोमीटर दूर हम टैंकरोधी मोरचाबंदी की सीमेंट की शंक्वाकार आकृतियों और एक हरे टैंक से बने स्मारक के आगे से गुज़रे। तोप की नली उस तरफ़ इशारा कर रही थी, जहां मास्को की तरफ़ बढ़ते जर्मनों को रोका गया था। सीमेंट की सतह पर ये शब्द खुदे हुए थे – "सोलहवीं लाल सेना के वीरों ने इस जगह १९४१ के पतझड़ के दिनों में शत्रु को रोका था और ६ दिसंबर को अपना प्रत्याक्रमण शुरू किया था।"

हम मास्को के भिन्न-भिन्न उद्यमों के कई बाल शिविरों के सामने से गुज़रे। आख़िर हम अपने गंतव्य पर पहुंच गये। हमारी कार के शिविर में प्रवेश करने के लिए दो लड़कों ने ऊंचे अलंकृत फाटक को खोल दिया। शिविर के निदेशक के आकर मिलने के बाद हमें परेड मैदान ले जाया गया, जहां बहुत से लड़के-लड़कियां थे। हम बीच में बने छोटे से मंच पर चढ़ गये। एक लड़की ने मुझे बच्चों के इकट्ठा किये फूलों से बना गुलदस्ता भेंट किया। एक और लड़की ने मंच पर आकर मेरे गले में पायनियरों का लाल स्कार्फ़ बांध दिया। इस तरह उन्होंने मुझे अपनी क़तारों में ले लिया। मैंने कुछ मिनट बच्चों से बातें कीं।

मैंने कहा, "बच्चे सभी जगह लगभग एक से ही होते हैं। मेरा ख़याल है कि तुम लोगों और हमारे अमरीकी बच्चों में समानता है। तुम्हारी ही तरह हमारे बच्चे भी स्कूल जाते हैं,

पढ़ते हैं, रेकार्ड सुनते हैं, खेलते हैं और खेलकूद को पसंद करते हैं। लेकिन इस सबके साथ एक विशेष गुण – एक विशेष संस्कृति का प्रतिबिंब – रहता है। यह अंतर, मनुष्य की संस्कृति की विविधता ही वह चीज़ है कि जो हमारी संपदा, हमारे गर्व का स्रोत है। एक-दूसरे के साथ आकर, एक-दूसरे को जानकर बच्चे अंतरों का आदर करना सीखते हैं।

"हमारे यहां भी बाल शिविर हैं। मेरा उनमें से कई के साथ घनिष्ठ संबंध है। मुझे बच्चों के साथ काम करना प्रिय है। उनकी तरफ़ देखते हुए मुझे कभी-कभी नये चित्रों के लिए विचार सूझते हैं। लेकिन ज़्यादातर मैं ऐसा सिर्फ़ बच्चों की संगत का मज़ा लेने और तुम्हारे उत्साह, तुम्हारे ओज और हमारे साथ तुम्हारी बेसब्री तक को महसूस करने के लिए करता हूं। कलाकार के नाते मैंने न्यूयार्क के गोट हिल (बकरी टीला) नाम के एक छोटे से निजी बाल शिविर में काम किया था। मैं वहां हफ़्ते में एक बार उनकी एक भित्तिचित्र में मदद करने के लिए जाता था, जिसे वे शिविर की इमारत की बाहरी दीवार पर बना रहे थे। यह रंगों से भरा एक अद्‌भुत चित्र था, और कई बच्चों की सामूहिक कृति थी। मेरे ख़याल में इस अनुभव की एक महत्वपूर्ण सीख, एक सामूहिक प्रयास में संबद्ध होने और भाग लेने की अपनी योग्यता में उनका एक-दूसरे के लिए आदर का भाव था।

"इसके बाद मैंने विल्टविक स्कूल में काम किया। यह एक बहुत ही अजीब जगह थी, क्योंकि वहां सभी बच्चे किसी असामाजिक कार्य के लिए गिरफ़्तार किये जाने के बाद न्यूयार्क नगर के बाल न्यायालय के ज़रिये ही भेजे जाते थे। यह स्कूल एक सुधार विद्यालय, बिना दीवारों-वाला सुधार बंदीगृह था। यह बहुत कुछ उस मर्मस्पर्शी पुरानी सोवियत फ़िल्म 'जय जीवन' की कहानी में जैसा है, वैसा ही था। मेरे ख़याल में न्यूयार्क की गंदी बस्तियों में रहनेवाले एक भी बच्चे ने फूलों के मैदान, या पेड़ों पर घोंसलों में रहते पक्षियों, या मेंढ़कों, या ख़रगोशों, या तितलियों को कभी भी नहीं देखा था। लेकिन यहां, देहात में स्थित इस जगह वे यह सब अपनी ज़िंदगियों में पहली बार देखते थे और वे अपनी नयी खोजों के कोमल, काव्यमय चित्र बनाते थे। कुछ सबसे सरकश लड़के सबसे कोमल चित्र बनाते थे।

"मेरे विश्वास में अमरीका में सुंदरतम शिविरों में एक न्यूयार्क प्रदेश के ऊपरी भाग में रॉस्कोए में स्थित लिंकन कृषि कार्य शिविर है। यह एक कार्य शिविर है, क्योंकि यहां सभी बच्चे हर दिन का कुछ भाग किसी उपयोगी कार्य में लगाते हैं – चाहे वह नयी इमारतों का निर्माण हो, या शिविर के जानवरों की देखभाल, या आसपास की बस्तियों के लोगों की सहायता की कोई परियोजना। हमारी बेटी, ब्रिजिट, एक नयी शयनशाला के निर्माण में लगी टोली में थी। जब मैं वहां एक दिन गया, तो वह ऊपर छत पर बैठी कुछ लड़कों के साथ-साथ काम करती हुई तख़्तों में कीलें ठोक रही थी।

"इस शिविर में रहने का ख़र्च बहुत से अमरीकी परिवारों के बूते के बाहर की बात है, लेकिन उसके निदेशक बच्चों के एक दल को वहां निःशुल्क ज़रूर रखते हैं। इसमें ज़्यादातर दक्षिण के काले बच्चे होते हैं और इस तरह वह कुछ ज़्यादा सुख-सुविधा में पले गोरे बच्चों को अपने काले साथियों के संपर्क में लाते हैं।

"हमारे यहां कई ऐसे शिविर हैं, जिन्हें सामाजिक संस्थाएं और धर्मार्थ तथा विभिन्न अन्य संस्थाएं चलाती हैं। हमारे यहां बहुत से ऐसे लोग हैं, जिन्हें ग़रीबों के बच्चों की हालत की चिंता है, जो मजबूरन शहर की भीड़भरी सड़कों और गलियों में खेलते हैं।

"सोवियत संघ में और सभी बाल शिविरों की ही भांति इस शिविर को भी तुम हर किसीको उपलभ्य बिलकुल सामान्य चीज़ ही मानते हो। न्यूयार्क, पेरिस या लंदन के लिए यह किसी भी तरह कोई सामान्य सुविधा नहीं है।

"अब मैं तुम्हारा शिविर देखना चाहूंगा। मैं तुम्हारे बीच इस दिन का बहुत दिनों से इंतज़ार कर रहा हूं।"

एक किशोरी को मेरा गाइड बना दिया गया। उसके साथ मैंने अपने स्केचिंग पैड पर नोट लेते हुए शिविर का "दौरा" शुरू किया। एक लंबे रास्ते के अंत में मैंने एक सेब के पेड़ की शाखों में बैठी चार लड़कियों को गाते देखा।

"यह बारिश के बारे में गाना है," उनमें से एक ने कहा।

"मुझे कुछ और बताओ," मैंने कहा, "मुझे अपने बारे में कुछ बताओ।"

एक लड़की मुसकराई और फिर बोली, "हमारे लिए सभी कुछ किया जाता है। हमारी कोई समस्याएं नहीं हैं। हम चिंताओं के बिना रहते हैं। हम यहां बहुत सुखी हैं–यहां रहना मज़ेदार है, दिलचस्प है। हम यहां दोस्तियां करते हैं और हमें स्थायी मित्र भी मिलते हैं।"

"मुझे थियेटर पसंद है," एक और लड़की ने कहा। "हमने 'कारमेन स्वीट' देखा था। यह प्लीसेत्स्काया का नया बैले है, जिसका नृत्य-संयोजन एक क्यूबावासी ने किया है। यह बहुत ही दिलचस्प और आधुनिक था।"

मैं शिविर की सैर करता रहा। एक शयनशाला में मैंने देखा कि एक लंबी सी दीवार पर गत युद्ध के पायनियर वीरों की तसवीरें लगी हुई हैं।

मेरी गाइड ने बताया, "जानते हैं न, हमारे शिविर का यह इलाक़ा वहां है, जहां तक मास्को की तरफ़ बढ़ते हुए जर्मन घुस आये थे। यहां के खेत. यहां के जंगल इतिहास से परिपूर्ण हैं। बच्चे पास-पड़ोस में ऐसे बूढ़ों का पता लगाते हैं, जिन्हें उन कठिन दिनों की याद है और उनसे बातें करते हुए इतिहास यथार्थ बन जाता है।"

बाद में मैंने शिविर के निदेशक से बातें कीं।

"अपने कार्यक्रमों में हम अपने बच्चों का कला से नाता जोड़ते हैं," उन्होंने कहा। "हम अपने यहां बच्चों से मिलने और उनसे बातें करने के लिए कलाकारों और सृजनशील लोगों को बुलाते हैं। हम माता-पिता के आने को बढ़ावा नहीं देते। हम बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। मुझे एक बार की घटना याद है, जब हम बच्चों से भरी एक बस लेकर मास्को गये थे। अड्डे पर बस को अपने बच्चों के इंतज़ार में खड़े परेशान माता-पिताओं और नाना-नानियों, दादा-दादियों ने घेर लिया। लेकिन बच्चे बस से नहीं उतर रहे थे। इसके बजाय उन्होंने विदाई का गीत गाते हुए एक-दूसरे को बांहों में बांधकर एक दीर्घवृत्त बना लिया। 'आप हमारे बच्चों को



वाहर क्यों नहीं आने दे रहे हैं?' मां-वाप में से किसीने घवराकर पूछा। मैंने कहा, 'हम उन्हें नहीं रोक रहे हैं, लेकिन वे खुद ही एक दूसरे से अलग होना नहीं चाह रहे हैं।'

"हमारे शिविर के (कई और शिविरों की ही तरह) अंतर्राष्ट्रीय मैत्री समझौते हैं और हमारे मामले में यह चेकोस्लोवाकिया के साथ है। वहां के कई वच्चे हाल ही में हमारे साथ एक महीना गुज़ारने के लिए आये थे। असलियत तो यह है कि आपकी उनसे मुलाक़ात वस टल ही गयी। वे आपके पहुंचने के कुछ ही मिनट पहले एक दिन मास्को में विताने के लिए गये हैं। और वदले में हमारे वच्चों का एक दल एक चेकोस्लोवाक शिविर में एक महीना विता रहा है।"

शाम के खाने और शिविर के वैंड के रिहर्सल और स्नेहपूर्ण विदाइयों के वाद हम मास्को वापस आ गये।

आर्तेक शिविर, जो एक अंतर्राष्ट्रीय वाल शिविर है, १९२५ में स्थापित किया गया था। कुछ खेमों के साथ विलकुल मामूली तरह से शुरू करने के वाद यह क्षेत्र और आकार में अपने वर्तमान स्तर पर आ गया है, जहां हर साल संसार के सभी भागों से ४,५०० वच्चे आकर रहते हैं। पिछले कुछ वर्षों से अमरीकी-सोवियत मैत्री समाज की राष्ट्रीय परिषद हर गरमियों में अमरीकी लड़के-लड़कियों के एक दल को इस अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में एक महीना विताने के लिए भेजने की व्यवस्था करती है। १९७४ की गरमियों में चौदह अमरीकी वच्चे आर्तेक आये थे। यह अमरीका के वैविध्य का प्रतिनिधित्व करनेवाला एक मिला-जुला दल था – तीन काले, एक मेक्सिकन-अमरीकी, एक देशज अमरीकी इंडियन और एक-एक पोलिश, इतालवी और फ़िलिपीनो पृष्ठभूमि का। आठ लड़कियां और छः लड़के थे। उनकी उम्र १३ से १६ साल तक थी।

इस दल की एक सदस्य, पंद्रहवर्षीय वैथ व्रैडेन ने वताया, "आर्तेक के भीतर कई शिविर हैं। हम वन शिविर में थे। ऐसे और भी कई शिविर हैं – झील शिविर, नदी शिविर, समुद्र शिविर, पर्वत शिविर... ये तो कुछ ही हैं। वड़े शिविर छोटे-छोटे दलों में वंटे हुए हैं। हमारी टुकड़ी में सात भिन्न-भिन्न देशों के (और मेरे ख़याल में कुल मिलाकर आठ) लोग थे। टोगो, इसराएल, वांगलादेश, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, सोवियत संघ और हम। अमरीकी लड़कियां एक कमरे में पांच सोवियत लड़कियों के साथ थीं और लड़के नौ सोवियत लड़कों के साथ थे।

"कभी-कभी हमें दुभाषिये मिल जाते थे, लेकिन ज़्यादातर हमें या तो गानों या इशारों की वोली के सहारे वात करनी पड़ती थी। लेकिन अधिकांश सोवियत वच्चे कम से कम चार साल अंग्रेज़ी पढ़ चुके थे और उनमें से कुछ तो हमारे दुभाषियों से भी वेहतर थे और वे कभी-कभी हमारे दुभाषिये वन जाते थे। सोवियत वच्चों से वात करना तो आसान था, लेकिन अगर हम और देशों के कुछ लोगों के साथ वात करने की कोशिश करते, तो यह ज़रा मुश्किल हो जाता था। फिर भी वहुत से देशों में अंग्रेज़ी पढ़ायी जाती है – जैसे टोगो, इसराएल, मिस्र तथा कई और। वहां प्रतियोगिताएं भी होती हैं, जैसे गाना, नाचना, कला, लेखन और खेलकूद।

"एक और दिलचस्प चीज़ राष्ट्रीय दिवस थे और किसी देश के राष्ट्रीय दिवस पर उसके शिविरवाले अपने देश की चीज़ों से किसी कमरे में प्रदर्शनी करते थे। हर प्रतिनिधिमंडल के लोग

आकर एक-दूसरे की प्रदर्शनी को देखते थे। तीसरे पहर वह देश नाचों और गानों का कार्यक्रम पेश करता था और उसके बारे में भाषणों का इंतज़ाम करता था।

"एक प्रतियोगिता में शांति पर निबंध लिखना था। संयुक्त राज्य अमरीका से हम तीन – टैरी टमासे, रेन्नी मैक और मैंने निबंध लिखे और हम तीनों ने प्रथम पुरस्कार जीते।

"एक और बात जो हम लोग करते थे, वह थी और देशों के साथ भेंटें। हमने जिन देशों से मुलाक़ातें कीं, उसमें से कुछ थे मिस्र, पोलैंड, चिली और फ़िलिस्तीन। इन भेंटों में हम अपने देशों के बारे में बातें करते। फ़िलिस्तीनवालों के साथ भेंट सबसे दिलचस्प भेंटों में एक थी और बहुत उदास करनेवाली भी थी, क्योंकि ज़्यादातर बच्चे शरणार्थी शिविरों के थे। वहां जो हो रहा है, वह बहुत बुरा है। उन्होंने कहा कि वे महसूस करते हैं कि वहां झगड़ा अमरीकी लोग नहीं, अमरीकी सरकार पैदा कर रही है। हमने उन्हें यह समझने के लिए धन्यवाद दिया और बाद में पतों और पोस्टकार्डों का विनिमय किया। कुछ लोग रो रहे थे।

"एक और दिलचस्प भेंट चिली के साथ थी। वहां जब से फ़ौजी गुट ने सत्ता हथियायी है, तब से बहुत से लोग मारे जा चुके हैं, या जेलों में ठूंस दिये गये हैं, या देश से चले जाने के लिए विवश हुए हैं। हमने चिलीवालों से कहा कि हम चिली में जो हो रहा है, उसके बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ को लिखे पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे।

"एक चीज़, जो हमने सीखी, यह थी कि अन्य देशों के साथ शांति रह सकती है और लोग आपस में मेल से रह सकते हैं, लेकिन इसमें कुछ समय लगेगा। वहां सभी का शांति में विश्वास था।"

और एक अन्य चौदहवर्षीय बच्चे ने कहा, "मैंने आर्तेक में अपने अनुभव से बहुत कुछ सीखा है। मैंने दूसरी संस्कृतियों और प्रथाओं के बारे में जाना और यह जाना कि मैं जितना सोचता था, लोग उससे भी ज़्यादा सुंदर (हर तरीक़े से) होते हैं। मुझे नयी चीज़ों की आज़माइश करने के लिए बढ़ावा दिया गया, क्योंकि वहां लोग आदमी की हंसी उड़ाना नहीं, मदद करना चाहते थे। मेरा और शिविरवालों के आगे गाने-बजाने का डर धीरे-धीरे कम होता गया (वे मेरी हंसी उड़ाने के लिए नहीं आते थे, वे सुनने के लिए और मुझे गिटार बजाते और गीत गाते देखने के लिए आते थे)। इस यात्रा ने मेरी आत्मविश्वासी बनने में और दूसरों की सहायता करने में हिम्मत बढ़ायी। इसने मेरी यह समझने में मदद की है कि हमें विश्व शांति और मैत्री और तनाव-शैथिलन के लिए और भी कड़ा संघर्ष करना चाहिए। हमें संसार भर के लोगों को एक करने के लिए काम करना चाहिए।

"यह बताना मुश्किल है कि यह कितना अद्भुत था। मेरे लिए इसका बहुत गहरा अर्थ था और मैं इसे नहीं भूलूंगा। वहां मैं जितने भी लोगों से मिला और मैंने जो भी बातें सीखीं, उनकी याद सदा मेरे दिल में बनी रहेगी।"

आर्तेक शिविरवासियों ने जो पत्र अमरीकी समाचारपत्र 'लूइसविल टाइम्स' को भेजा था, वह बहुत दिलचस्प है। "आपने अपने १७ अगस्त के अंक में मेरीलैंड के एक लड़के के बारे में कहानी छापी थी, जो आजकल मास्को में रहता है और जो इन गरमियों में सोवियत संघ में

एक शिविर में गया था। हम भी उसी शिविर में गये थे, लेकिन हमारे अनुभव भिन्न थे। हम आपको उसके बारे में बताना चाहेंगे।' (वे आर्तेक के जीवन के बारे में उस लड़के से सहमत नहीं थे।)

"लगता है कि मेरीलैंड का लड़का यही सोचता था कि वह अजनबियों और दुश्मनों के बीच है। हमने महसूस किया कि हम दोस्तों में हैं और हमने कई ऐसी दोस्तियां कीं कि जो उम्र भर बनी रहेंगी।

"हमारा अमरीकी दल सोवियत और इसराएली प्रतिनिधिमंडलों के साथ था और हम चूंकि उनके साथ एक ही इमारत में रहते थे, इसलिए हम उनके साथ कई सरगरमियों में हिस्सा लेते थे। हमने टोगो, बांगलादेश, आस्ट्रिया, यूगोस्लाविया और चेकोस्लोवाकिया के बच्चों से भी जान-पहचान की।

"लगता है कि मेरीलैंड का लड़का शिविर की मुख्य बात को नहीं समझता था। यह थी हमारे देशों को एकसाथ लाना और विश्व में शांति रखना। हमने पाया कि अलग-अलग देशों के लोग चाहे अलग-अलग भाषाएं भी बोलते हैं, फिर भी वे बहुत-कुछ एक से ही होते हैं। लड़के वही चीज़ें पसंद करते हैं और लड़कियां भी वही बातें पसंद करती हैं। कभी-कभी हमें बुरा भी लगता था, मगर हमने देखा कि हम इस पर पार पा सकते हैं। सच तो यह है कि हमारी तक़रार आपस में ही होती थी, न कि सोवियत बच्चों या और देशों के बच्चों के साथ। हमने यह सिद्ध किया कि विभिन्न संस्कृतियों के लोग मेल से रह सकते हैं और लड़ाई होना बिलकुल भी ज़रूरी नहीं है।"

मुझे खेद है कि मैं आर्तेक नहीं जा पाया। उन बच्चों का शारीरिक सौंदर्य ही – धूप में, खुले में सभी जातियों और सभी संस्कृतियों के बच्चे – देखने में बहुत सुंदर लगता होगा। लेकिन मेरे पास बहुत सी यादें हैं – मुझे गुलबहार के पौधों से भरे मैदान में घेरा बनाकर बैठे एक-दूसरे के लिए गुलदस्ते तैयार करते बच्चों की याद है। और पास ही, भूर्ज के पेड़ पर झुकी दो लड़कियां वही युगों पुराना खेल खेल रही हैं – "वह मुझे प्यार करता है, वह मुझे प्यार नहीं करता।"

शांति

कोई ही महीना गुज़रता होगा कि जब मास्को में, या सोवियत संघ के किसी और भाग में कोई बड़ा अंतर्राष्ट्रीय जमाव न होता हो। मुझे एक बार अंतर्राष्ट्रीय कुक्कुट-पालन कांग्रेस के प्रतिनिधियों को देखने की याद है, मैंने चिकित्सीय कांग्रेसों में भाग लेनेवाले लोगों को देखा है, मैंने सिनेकर्मियों और लेखकों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और भांति-भांति की शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, समाजवैज्ञानिक, और भूवैज्ञानिक बैठकों के बारे में पढ़ा है। और अब, पिछले एक साल से, सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण, सबसे उल्लेखनीय बैठक की तैयारियां चल रही हैं।

२५ अक्तूबर, १९७३ को क्रेमलिन के एक सिरे पर त्रोइत्स्की द्वार के पास संगमर्मर और कांच की बनी नयी इमारत – कांग्रेस प्रासाद – में शांतिकामी शक्तियों की विश्व कांग्रेस शुरू हुई



है। पिछले कई दिनों से हमारी दुनिया के पांचों महाद्वीपों से लोग होटल रोस्सीया में आ रहे हैं – १४३ देशों के ३,००० प्रतिनिधि। वे कांग्रेस की कार्रवाइयों में महज़ दिलचस्पी लेनेवाले व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि ट्रेड-यूनियनों और व्यावसायिक तथा सांस्कृतिक समूहों की नुमायंदगी करनेवाले निर्वाचित प्रतिनिधि, सरकारों और धार्मिक संगठनों के सदस्य हैं। वे मानवजाति की एक विराट संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और कांग्रेस के बाद स्वदेश जाकर उसके बारे में बतायेंगे और इस तरह कांग्रेस के कार्य को ज़बरदस्त पैमाने पर व्यापकता प्रदान करेंगे।

विश्व शांति परिषद की पहल पर महीनों तैयारियां चलीं, राष्ट्रीय समितियां क़ायम की गयीं, कांग्रेस के आयोजन के बारे में कई अंतर्राष्ट्रीय बैठकें हुईं (गत जुलाई में यहां हुई बैठक सहित), आयोग नियुक्त किये गये और इसके बाद बहस के आधार के रूप में आख़िरी सम्मेलन के आगे पेश किये जाने के लिए सुझावों का मसविदा तैयार करने के वास्ते बैठकें हुईं।

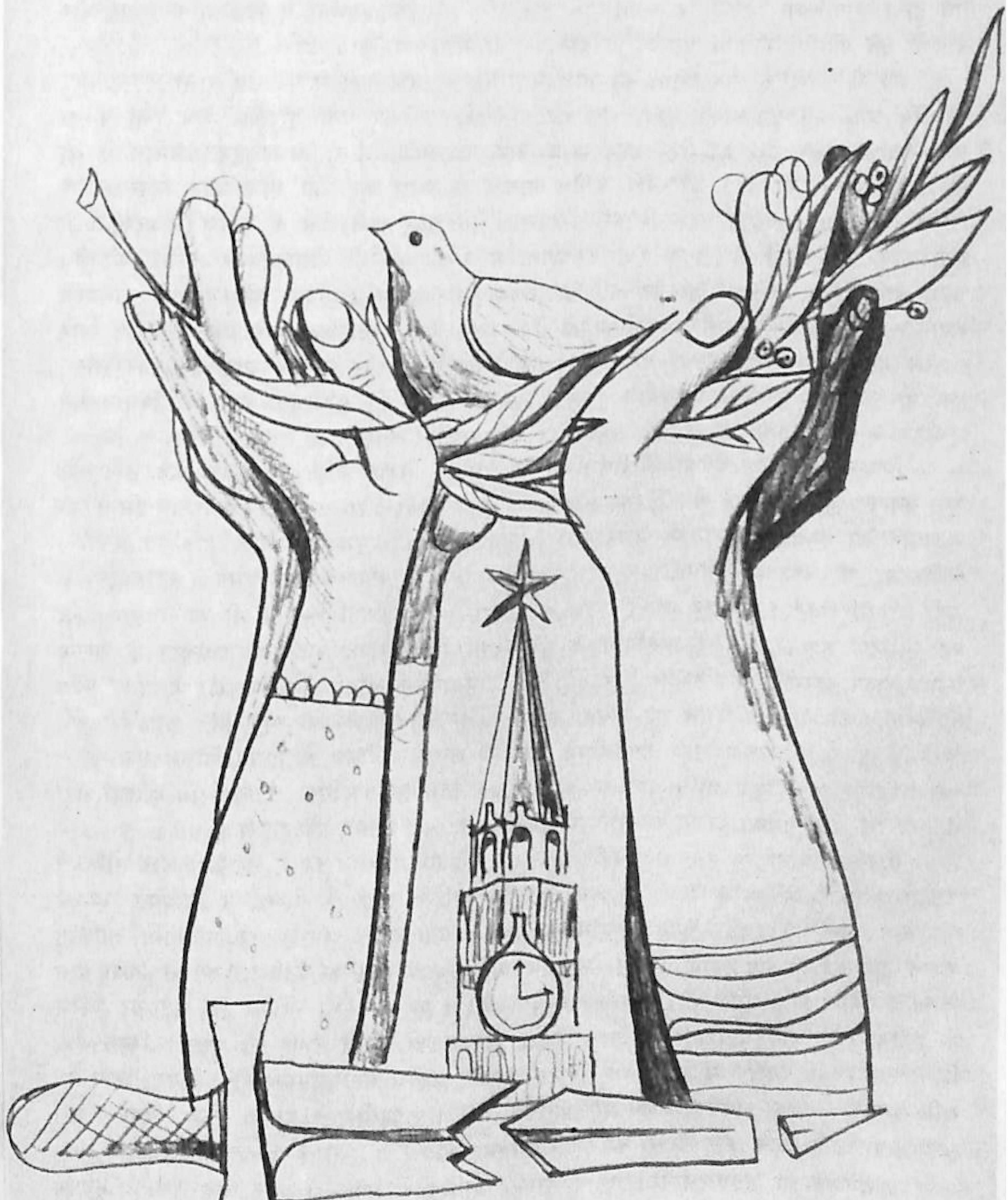
इसके पहले, १० सितंबर से शुरू होनेवाले हफ़्ते में, मैंने सांस्कृतिक सहयोग विषयक अंतर्राष्ट्रीय तैयारी आयोग के काम में भाग लिया था, जो अक्तूबर की बैठक में काम करनेवाले चौदह आयोगों में एक था। हमारी – अर्जेंटाइना, जर्मन जनवादी जनतंत्र, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, सोवियत संघ, स्वीडन और संयुक्त राज्य अमरीका के शिक्षकों और बौद्धिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की बैठक तीन दिन चली। हमारी लंबी बहस के दौरान भावी कांग्रेस में आयोग की बड़ी बैठक में प्रारंभ बिंदु की तरह पेश की जानेवाली दस्तावेज़ तैयार की गयी।

मुझे याद है कि किस तरह आयोग की बैठक के दूसरे (या पहले?) दिन उसमें भाग लेने के लिए जाते समय मैं मास्को की सड़कों में खड़े अनेकों स्टैंडों में से एक पर चिपके 'प्राव्दा' को पढ़ने के लिए रुक गया था और मैंने चिली में सत्ता के फ़ौज द्वारा हथियाये जाने की ख़बर को दहशत और सदमे के साथ पढ़ा था। राष्ट्रपति प्रासाद पर बमबारी हो रही थी, सेना सल्वादोर अलेंदे की विधिसंगत सरकार को नष्ट करने के लिए देश को अपने नियंत्रण में ले रही थी!

मैं बैठक में पहुंचने और घटनाओं के बारे में ज़्यादा जानने के लिए बेचैन था, और जब मैं उस बैठक में शामिल होनेवालों में एक, 'अंतर्राष्ट्रीय साहित्य' की एक संपादक तान्या कुद्रावत्सेवा से मिला, तो मैंने उनसे कहा कि मुझे कुछ करना होगा, "मैं अपनी सहानुभूति प्रकट करने के लिए चिली के दूतावास जाने की सोच रहा हूं।"

"एंटन," तान्या ने जवाब दिया, "बेहतर होगा कि आप इसके बारे में कुछ सोच लें। हम नहीं जानते कि दूतावासवालों की स्थिति क्या है। इस समय हम यह नहीं जानते कि उनमें से अब भी कौन अलेंदे के प्रति निष्ठावान हैं।" तान्या का कहना निस्संदेह सही था और मैं ही अपने क्रोध के कारण कुछ अतिभावुक हो गया था।

अगले दिन मैंने अपने मित्र, व्यंग्यात्मक पत्रिका 'क्रोकोदील' (मगर) के कला-संपादक अंद्रेई क्रीलोव को फ़ोन किया और कहा, "मुझे चिली की हिमायत में एक रेखाचित्र का विचार सूझ रहा है।" मेरा ख़याल है कि अंद्रेई को मेरा यह सुझाव अच्छा लगा। मैंने अपना चित्र उसी रात को पूरा कर लिया और वह कुछ समय बाद पत्रिका में प्रकाशित हो गया। उसे 'प्राव्दा' और जर्मन जनवादी जनतंत्र के अख़बारों में भी पुनर्मुद्रित किया गया। इसे सोवियत कलाकार



संघ द्वारा आयोजित "चिली के समर्थन में कलाकार" शीर्षक प्रदर्शनी में दिखाया गया था और बाद में उसे प्रदर्शनी के साथ अंतर्राष्ट्रीय दौरे पर भी भेजा गया था।

अब मैं लीला के साथ लोगों की भीड़ में पत्थर की बटियाओं से पटे उस रास्ते पर होकर, जो अब जहां अलेक्सांद्रोव्स्की उद्यान है, वहां भूतपूर्व खाई पर बना त्रोइत्स्की पुल हुआ करता था, कूताफ़्या बुर्ज से गुज़र रहा था। इसके बाद त्रोइत्स्की बुर्ज से होकर हम क्रेमलिन में आ गये। यहां लोगों की भीड़ धीरे-धीरे कांग्रेस प्रासाद में प्रवेश कर रही थी। उनमें हिंदुस्तान के रहनेवाले, रेशमी साड़ियां पहने स्त्रियां और आज की सुबह ठंडी होने के कारण ओवरकोटों में गठरी बने और सिरों को चटक रंगों के कपड़ों में ढंके रंगबिरंगी पोशाकोंवाले अफ़्रीकी भी थे। उनमें अफ़्रीकी तट के गहरे आबनूसी रंग के आदमी और पुराने हाथीदांत की रंगत की खालवाले जापानी, गोरे अमरीकी और यूरोपीय भी थे। उनमें लंबे, बड़े जबड़ोंवाले स्केंडीनेवियाई और बादाम जैसी आंखोंवाली स्त्रियां थीं – अलग-अलग संस्कृतियों और आर्थिक व्यवस्थाओंवाले लोग, एक ही सामान्य ऐक्यबद्ध करनेवाले विचार – विश्व शांति को प्रत्याभूत करने के विचार – से एकसाथ आनेवाले लोगों का समांग, समविचार और समरूप जमाव।

विख्यात कलाकार दैनेका के भित्तिचित्र से अलंकृत विराट लॉबी के भीतर लोग छोटे-छोटे झुंड बनाकर बातें कर रहे थे, स्त्रियां और पुरुष दूसरे लोगों और अन्य देशों के पुराने मित्रों को पहचानने की भावाभिव्यंजना में इधर-उधर आ-जा रहे थे। मुझे भी अपने परिचित लोगों – अर्जेंटाइना के वरेला, श्रीमती ब्लूम, 'ओगोन्योक' के संपादक सोफ़ोनोव, स्टॉकहोम से आये पेर एरिकसन (मैं उन्हें पांचवें दशक के उत्तरार्ध में सान-फ़्रांसिस्को में भी जानता था, जब वह स्वीडिश जहाज़ी संघ के प्रतिनिधि थे और आखिर कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के कारण संयुक्त राज्य अमरीका से निकाल दिये गये थे), न्यूयार्क के स्टैनले फ़ॉकनर और सोवियत कवि तीखोनोव – को फिर से देखने का सुखद अनुभव हुआ। इनके अलावा यहां और लोग भी थे, जिन्हें मैं सूरत से जानता था – अपने-अपने देशों में शांति आंदोलन के नेता। लेकिन एक पुराने और घनिष्ठ मित्र, विश्व शांति आंदोलन के प्रारंभिक निर्माताओं में एक, हालैंड राबर्ट्स वहां नहीं थे, जो इस वक़्त संयुक्त राज्य अमरीका के पश्चिमी तट पर बीमार पड़े हुए थे।

धीरे-धीरे प्रतिनिधि हाल में घुसकर अक्षरवार बैठे गये, जिससे हमारे अमरीकी और सोवियत संघ के प्रतिनिधियों को बालकनी में जगह मिली। दाहिनी तरफ़ के बाक्सों में सोवियत संघ के कई नेता आकर बैठ गये – ब्रेज्नेव, ग्रोमीको तथा अन्य। उनके आगमन पर प्रतिनिधि तालियां बजाते हुए खड़े हो गये। मैंने मन में कहा कि यह तो इस बात को निश्चित रूप से दिखा देता है कि सोवियत संघ शांति को बहुत महत्व देता है। (यह तो ऐसा ही था कि जैसे ग्रेट ब्रिटेन के प्रधान मंत्री और महारानी ने विश्व शांति परिषद की पहली बैठक का स्वागत किया हो, जिसे १९४९ में इंगलैंड में होना था, लेकिन इसके बजाय प्रतिनिधियों को, जिनमें पिकासो, जूलियो-क्यूरी, पाल रॉबसन और शोस्तकोविच भी थे, इंगलैंड से वापस धकेल दिया गया। आखिर पोलैंड ने बैठक और ठहरने की जगह उपलब्ध की।)

अधिवेशन का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय तैयारी आयोग के उपाध्यक्ष और आयरलैंड के भूतपूर्व

मंत्री सीन मैकब्राइड ने किया। लंबे, छरहरे और देखने में ही कमज़ोर, क्योंकि वह अब जवान नहीं हैं, उन्होंने इस सम्मेलन को शांतिकामी शक्तियों के ग़ैर-सरकारी संगठनों का अब तक कभी भी होनेवाला सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण सम्मेलन बताया और उन बहुत सी समस्याओं की बात की, जिन पर कांग्रेस के चौदह आयोगों में विचार और बहस-मुबाहसा किया जाना था। उन्होंने सोवियत संघ और उसकी जनता को इस सबको संभव बनाने में अपनी सहायता के लिए धन्यवाद दिया।

कांग्रेस के महत्व का सूचक यह था कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कुर्ट वाल्डहाइम ने अपना संदेश पढ़कर सुनाने के लिए अपने निजी प्रतिनिधि, अब्दुलरहीम अबी फ़राह को भेजा था :

"शांतिकामी शक्तियों की विश्व कांग्रेस में भाग लेनेवाले शांति और समस्त मानवजाति के कल्याण के संवर्धन को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगठनों की व्यापक रूपछटा का प्रतिनिधित्व करते हैं। कांग्रेस में अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा के संवर्धन, निश्शस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद, वर्ण-पार्थक्य और नसली विभेद के उन्मूलन तथा पर्यावरण सुरक्षा सहित अनेक महत्वपूर्ण सामयिक समस्याओं पर विचार किया जायेगा।

"संसार की हाल की घटनाएं इस विचार-विमर्श को विशेष तात्कालिकता प्रदान कर देती हैं। तनाव-शिथिलन की उत्साहवर्धक प्रक्रिया को सभी देशों की सरकारों और जनता के संयुक्त प्रयासों से आगे ले जाया जाना चाहिए, ताकि वर्तमान विवादों का अंत किया जा सके और सारी मानवजाति के सामने मौजूद गंभीर और तात्कालिक समस्याओं के हल ढूंढ़ने के प्रयत्न किये जा सकें।"

उनके बाद अफ़्रीकी एकता संगठन के उप-महासचिव श्री पीटर ओनू ने भाषण दिया।

तीसरे वक्ता संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के महानिदेशक रीने महेऊ के विशेष प्रतिनिधि श्री पियेर लेबार थे, जिन्होंने उनका संदेश पढ़ा, जिसमें उन्होंने कहा था कि एक ऐसे समय, जब कि खुली दुश्मनियों ने एक बार फिर सारी दुनिया को झंकझोर दिया है, सभी सदाशयी लोगों के लिए यह पहले से किसी भी समय की अपेक्षा अधिक आवश्यक है कि वे संसार भर में उस नाजुक और सतत संकटग्रस्त संतुलन को बनाये रखने या पुनर्स्थापित करने के लिए मिलकर काम करें, जो अंतर्राष्ट्रीय शांति का निर्माण करता है। "इसलिए मैं बड़ी सहानुभूति की भावना के साथ शांतिकामी शक्तियों की विश्व कांग्रेस में भाग लेनेवालों को अपने अभिनंदन और उसकी सफलता के लिए अपनी निष्कपट शुभकामनाएं भेज रहा हूं," रीने महेऊ ने ज़ोर देकर कहा।

इसके बाद विश्व शांति परिषद के महासचिव रमेश चंद्र आये, जिन्हें कांग्रेस के स्थायी अध्यक्ष की तरह काम करने के लिए चुना गया था।

मैं चंद्र को, इस सुंदर और सौम्य व्यक्ति को, विश्व शांति परिषद में उनके साथ काम करते-करते कई साल से जानता हूं और उनकी इस विशेषता से बहुत प्रभावित हुआ हूं कि अपनी विश्वमान्य स्थिति के बावजूद वह सहज और साधारण, हर किसीके प्रति शिष्ट और एकाग्र रहे हैं।

वह छरहरे बदन के हैं, उनके वाल काले हैं, उनकी आंखें कोमल और सौम्य हैं। उनकी मुसकान वड़ी सहजता और सशक्तता से हर किसी तक पहुंच जाती है। उनके हाथ उनकी आवाज़ जैसे ही भावपूर्ण हैं और हर मुद्दे पर भावाभिव्यंजनापूर्वक ज़ोर डालते हैं। वक्ता के नाते उन्हें भाषण देते देखना वड़ा सुखद है। वह अपने श्रोताओं में लीन हो जाते हैं और लोग इस व्यक्ति को प्रकट सम्मान के साथ सुनते हैं, जो विश्व शांति आंदोलन का कई वर्षों से नेतृत्व करता आ रहा है। मेरा ख़याल है कि कोई भी सदाशयी आदमी उनकी मौजूदगी में अप्रभावित नहीं रह सकता, और मुझे तो यह भी लगता है कि विरोधी भी उनकी निष्कपटता और अभिभूत करनेवाले विश्वास से प्रभावित हुए विना नहीं रहेगा।

उन्होंने कहना शुरू किया :

"इस कांग्रेस को संसार के जनगण की पहली महासभा कहना उचित ही होगा।

"जव हमने इस कांग्रेस की तैयारियां शुरू की थीं, तव हमने कहा था कि इस नये प्रकार की, अभूतपूर्व क़िस्म की कांग्रेस के अर्थ को चार शब्द सवसे अच्छी तरह से व्यक्त कर सकते हैं। और मैं इन चारों शब्दों को दुहराने जा रहा हूं :

"पहला शब्द है एकसाथ। हमने इस कांग्रेस के लिए एकसाथ, अलग-अलग संगठनों के और अलग-अलग राजनीतिक मत रखनेवाले हम सभीने मिलकर तैयारी की है।

"दूसरा शब्द, जो इस कांग्रेस का चरित्र-चित्रण करता है, जो इस कांग्रेस की तैयारियों का एक लक्षण रहा है, वह है प्रकट-खुला। यह कांग्रेस कोई ऐसे लोगों की बंद कांग्रेस नहीं है कि जो एक ही तरह से सोचते हैं, वल्कि यह उन सभी के लिए खुली कांग्रेस है, जो इस कांग्रेस के लक्ष्यों का समर्थन करते हैं, जो एकसाथ काम करना चाहते हैं, जो एकता और सहयोग के आकांक्षी हैं, जो अपने-अपने अलग-अलग दुर्गों में एक-दूसरे के ख़िलाफ़ चिल्लाते हुए नहीं खड़े रहना चाहते। यह कांग्रेस मनुष्य के श्रेष्ठतम हेतुओं के लिए काम करनेवालों की अव तक कभी भी हुई सवसे वड़ी, सवसे व्यापक, सवके लिए खुली सभा है।

"और वह तीसरा शब्द, जो इस कांग्रेस – जनगण की इस महासभा – का वर्णन करता है, वह है संवाद। हम एक-दूसरे से बात करने की, जो लोग हमसे सहमत नहीं हैं, जो हमसे भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं, उनसे विचार-विनिमय करने की कोशिश करते हैं। यह एक महासंवाद कांग्रेस है और प्रत्येक देश में सारा तैयारी का काम एक तरह से इस संवाद से, विचारों के इस विनिमय से, इस खुले और निष्कपट बहस-मुबाहसे से परिपूर्ण रहा है।

"और चौथा शब्द है काम। यह भी एक सीधा-सादा शब्द है, जो बहुत बड़ा अर्थ रखता है। हमारा संवाद, हमारा विचार-विनिमय, हमारा एकसाथ आना मात्र संवाद की ख़ातिर नहीं है, वरन शांति और स्वतंत्रता के लिए, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए, मानव-अधिकारों और सामाजिक प्रगति के लिए, उन सभी अच्छी चीज़ों के लिए कि जिनकी हर कहीं स्त्री और पुरुष गहरी आकांक्षा करते हैं, नये कामों, कार्रवाइयों के लिए है।"

इसके बाद उन्होंने वियतनाम के जनगण की महान विजयों की, अरव जनगण और उनके प्रदेशों पर क़ब्ज़े की, संसार भर के लोगों द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन करने की आवश्यकता

की, फ़िलिस्तीन की जनता को शांति और न्याय दिलवाने के प्रयासों की चर्चा की। चिली के बारे में वह बड़े भावावेग के साथ बोले।

"आज हम चिली के बारे में, एक बर्बर, निर्मम फ़ासिस्ट बलात राज्य-परिवर्तन के शिकार, ख़ून और क़त्ल, यंत्रणा और हत्याकांड के शिकार के बारे में, एक ऐसे देश के बारे में सोचते हैं कि जो आज यंत्रणा शिविरों का देश है। हमारे दिल आज चिली के साथ हैं। हमारे दिल चिली के प्रतिरोध आंदोलन के साथ हैं।"

"यह कांग्रेस यह ऐलान करे – चिली ज़िंदा है और फ़ासिस्ट फ़ौजी गुट जीतेगा नहीं!"

"हम आज सल्वादोर अलेंदे और पाब्लो नेरूदा के बारे में सोचते हैं, जिन्हें हम जानते थे और जिनसे हम हाथ मिला चुके हैं और जिनकी आंखों में हम देख चुके हैं। राष्ट्रपति सल्वादोर अलेंदे की पताका हर उस अवाम का अलम है कि जो नये जीवन का निर्माण करना चाहता है, जो अपने प्राकृतिक साधनों को अपने हाथों में लेना चाहता है, ताकि उसके बच्चे अब और भूखे न रहने पायें।

"और हम पाब्लो नेरूदा, कवि और अपनी धरती के बेटे के बारे में सोचते हैं, जो अपने देश से प्यार करते थे, जैसे आप अपने देश से और मैं अपने से प्यार करता हूं और जिन्होंने हमें ऐसे शब्द दिये कि जो हमारी आंखों को आंसुओं से और दिलों को आशा से सराबोर कर देते हैं।"

फिर उन्होंने यूरोपीय सुरक्षा सम्मेलन के महत्व की चर्चा की:

"हम आज संसार के सभी लोगों के बारे में, यूरोप के लोगों के बारे में सोचते हैं, जो सुरक्षा और सहयोग की प्रणाली का निर्माण करने के लिए, इस विराट महाद्वीप के विरोधी सैन्य गुटों में विभाजन को ख़त्म करने के लिए काम कर रहे हैं।

"हम प्राप्त की गयी सफलताओं का, यूरोपीय सुरक्षा सम्मेलन के समारंभ का गर्व के साथ स्मरण करते हैं, यह यूरोप और सारी ही दुनिया के लोगों की शांति के लिए एक महान विजय है, ऐसी विजय है कि जिसके लिए यूरोप के लोगों ने गहरा योगदान किया है।

"शीतयुद्ध के सूरमा जान लें कि लोग शीतयुद्ध को वापस न आने देंगे। हम यूरोप में सुरक्षा और सहयोग की भावना को आगे ले जाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और हम सुरक्षा की भावना और सिद्धांतों को अन्य महाद्वीपों पर भी ले जाना चाहते हैं।"

संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा:

"हम संयुक्त राज्य अमरीका के लोगों के बारे में सोचते हैं, जो इस धरती के अन्य सभी लोगों की ही भांति एक नयी दुनिया के लिए संघर्ष कर रहे हैं। मैं संसार भर के लोगों के साथ-साथ प्रयाण करते नये अमरीका को, असली अमरीका को सलाम करता हूं।

"मैं, सबसे ऊपर, इस महान देश के, जिसमें हम मिल रहे हैं, लोगों के बारे में, सोवियत संघ के लोगों के बारे में सोचता हूं। यह देश कितना सुंदर है, शांति के लिए कितना संकल्पवान है! सोवियत संघ के करोड़ों लोगों ने हमारी कांग्रेस की तैयारी में भाग लिया है, और यह हमारे लिए कोई अचरज की बात नहीं है। इसलिए कि सोवियत राज्य जिस दिन अस्तित्व में आया है, उसी दिन से उसने शांति को अपने कार्यक्रम में पहले स्थान पर रखा है। वर्तमान नये

वातावरण के निर्माण में सोवियत संघ के शांति तथा अंतर्राष्ट्रीय तनाव-शिथिलन के लिए, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों की सफलता के लिए, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत समस्त जनगण की विजय के लिए अथक प्रयासों ने प्रमुख योगदान किये हैं।"

उन्होंने प्रतिनिधियों की तरफ़ से सोवियत संघ, उसकी सरकार और उसकी कम्युनिस्त पार्टी को कांग्रेस को संभव बनाने के निमित्त उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया। अपने भाषण को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा, "इस कांग्रेस ने हमारे लिए कितना भव्य परिप्रेक्ष्य उद्घाटित किया है – शांति का निर्माण, एक नयी दुनिया का निर्माण!"

इस तरह चंद्र ने अपने ही निराले ढंग से कांग्रेस के कार्य के लिए एक काव्यात्मक, रचनात्मक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की।

अगली सुवह लॉबी में कई भाषाओं में वातचीत की गूंज थी, आते हुए लोग एक-दूसरे का अभिवादन करते हुए धीरे-धीरे हाल में घुसकर अपनी जगहें ले रहे थे। जव अध्यक्ष ने वैठक की कार्रवाई शुरू की, तो उन्होंने श्रीमती हार्तेन्से अलेंदे का परिचय कराया। वह वोलने के लिए खड़ी हुईं, तो खड़े हुए प्रतिनिधि देर तक तालियां वजाकर उनका स्वागत करते रहे।

इन सुदर्शन, प्रभावशाली व्यक्तित्व, शान और मर्यादावाली महिला ने, जिन्होंने अभी कुछ ही सप्ताह पहले अपने पति, चिली के राष्ट्रपति को गंवाया था, विलक्षण धैर्य के साथ वोलते हुए ख़ूनी वग़ावत के पहले की घटनाओं के वारे में, जनता को हुए लाभों, वहां व्याप्त मानवतावाद, युवाओं की भूमिका, उनके उत्साह और राष्ट्र के पुनर्जन्म की भावना के वारे में वताया। इसके वाद उन्होंने अंतर्ध्वंस, मध्यम और संभ्रांत वर्गों की स्त्रियों के सरकारविरोधी प्रदर्शनों, सी० आई० ए० और ऐनाकोंडा तथा आई० टी० टी० जैसी अंतर्राष्ट्रीय इजारेदारियों की व्यवस्थाभंजक भूमिका और सेना की ग़द्दारी के वारे में वताया। उन्होंने हमें याद दिलायी कि राष्ट्रपति अलेंदे स्वयं इस अधिवेशन में उपस्थित होने की सोच रहे थे।

उनका भाषण और उनकी मौजूदगी साहस और मानव-गरिमा के विलक्षण उदाहरण थे, जिन्होंने श्रोताओं को अत्यंत प्रभावित किया। उनके भाषण को सुनते हुए मैंने अरव राष्ट्रों, स्पेन, ग्वाटेमाला और वियतनाम के लोगों को देखा, जो स्वयं आपत्तियों और क्लेशों को अनुभव कर चुके हैं और जो उनकी वात को समझ रहे थे।

जव श्रीमती अलेंदे वोल चुकीं, तो लोग एक वार फिर खड़े हो गये, वे उनके प्रति एक व्यक्ति के नाते और चिली के जनगण के प्रतीक के नाते अपना सम्मान प्रकट करने के लिए खड़े हो गये। और इसके वाद, मानो लोग जितने भावावेग को झेल सकते थे, उसकी वस नहीं हुई थी, निस्तब्ध हाल में हमें चिली के हुतात्मा राष्ट्रपति की आवाज़ सुनायी दी, घिरे हुए राष्ट्रपति प्रासाद से अपनी जनता को संवोधित अंतिम शब्द, जिन्हें टेप कर लिया गया था और अभी हाल ही में देश से लाया गया था। यह प्रतिज्ञापन की आवाज़ थी, जो जनता को उपलब्धियों को याद रखने और डटकर खड़े रहने को ललकार रही थी। उनके शब्दों की पृष्ठभूमि में चीख़ों और गोलियों का शोर था।

जव यह व्राडकास्ट ख़त्म हुआ, तो मेरा ख़याल है कि हर किसीने यही अनुभव किया कि हमने इतिहास के एक अंश को जीया है और यह कि हमने एक ऐसे व्यक्ति की आवाज़ को सुना

है कि जो इस इतिहास में सबसे बड़ी ऊंचाइयों पर पहुंच गया था और जिसने सम्मान का स्थान भी प्राप्त कर लिया था। हमने अपने पति के अंतिम शब्दों को सुनतीं श्रीमती अलेंदे को देखा। और मैं, अपनी कल्पना में, १९५४ में ग्वाटेमाला में, प्रतिक्रांति के छः सप्ताह पहले पहुंच गया। चिली की ही भांति उस युवासुलभ आशावाद से, जो जनता में अपने इतिहास के सर्जनात्मक दौर में आ जाता है, नयी ज़िंदगी के निर्माण में संलग्न देश। मुझे वहां मिले शानदार लोगों की, कासा डी कुल्टूरा ग्वाटेमाल्टेकान (ग्वाटेमाली संस्कृति सदन) की और अपनी उस किताब की कि जो तैयार ही नहीं हो पायी, याद हो आयी। मुझे सल्वादोर अलेंदे की स्मृति में खड़े-खड़े इन सभी की याद आ गयी। कितने ही लोगों की आंखों में आंसू थे, कितने ही खुलकर रो रहे थे, एक ऐसी गहरी ख़ामोशी थी कि जिसे कोई भंग करना चाहता नहीं लगता था।

तभी हाथों में फूल लिये बच्चों की एक टोली ने सहसा हाल में प्रवेश करके इस विषादमय वातावरण को छिन्न कर दिया और उनके पीछे-पीछे सोवियत संघ की सभी जातियों के प्रतीक रंगबिरंगे जातीय वस्त्र पहने नौजवान आये।

उसी अपराह्न को लेओनीद ब्रेज्नेव मंच पर आ गये। मज़बूत काठी, माथे को चीरती भारी काली भौंहें, प्रभावोत्पादक नाक-नक़्श, सामर्थ्य के प्रतीक।

"प्रिय मित्रो, प्यारे मेहमानो," उन्होंने अपना भाषण शुरू किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस करने के लिए मास्को का चयन विश्व शांति के लिए सोवियत प्रयासों को तेज़ करने में सहायक होगा। उन्होंने अपने राजनीतिक तथा सामाजिक और आर्थिक कार्यभारों में कांग्रेस के व्यापक वैविध्य का, संसार के सभी देशों द्वारा परस्पर लाभदायी आर्थिक सहयोग की हिमायत करनेवाले कुछ पश्चिमी व्यापारियों की उपस्थिति का उल्लेख किया।

"कांग्रेस में भाग लेनेवालों में संसार के सभी देशों द्वारा परस्पर लाभदायी आर्थिक सहयोग के समर्थक समूहों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पूंजीवादी देशों के व्यापारी भी हैं। यह उस व्यापक बुनियाद का एक नया प्रमाण है, जिस पर शांतिकामी शक्तियों का यह महान आंदोलन आधारित है।

"मैं एक नये, और हमारी राय में, शुभ संकेत का ख़ास तौर पर उल्लेख करना चाहूंगा, अर्थात शांतिकामी शक्तियों की कांग्रेस में संयुक्त राष्ट्र संघ के और उसकी समितियों तथा विशिष्ट अभिकरणों के भी प्रतिनिधियों की उपस्थिति। हमारा विश्वास है कि यह एक स्वाभाविक परिणति है, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य लक्ष्य और कार्यभार, जैसे कि उसके घोषणापत्र में उल्लिखित है, इस कांग्रेस के लक्ष्यों और आकांक्षाओं के एकरूप हैं – हर संभव तरीक़े से विश्व शांति और राज्यों तथा राष्ट्रों में सहयोग का संवर्धन करना।"

उन्होंने मनुष्य की तब तक युद्ध को रोक सकने की असमर्थता का ज़िक्र किया कि जब तक व्यापक शांति आंदोलन, जनवादी आंदोलन और वर्धमान राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में वर्तमान आमूल परिवर्तन नहीं आ जाते। सारी दुनिया के लिए शांति रूसी क्रांति के मुख्य नारों में एक था। सोवियत संघ ने पिछले युद्ध में फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ संघर्ष में दो करोड़ लोगों के प्राणों का बलिदान किया था। वह तभी से विश्व शांति सुनिश्चित करने के लिए अथक संघर्ष करता आ रहा है।

"आज से ५६ साल पहले, प्रथम विश्व युद्ध के चरम के समय इस देश के मेहनतकशों ने

जिन मुख्य नारों के तहत क्रांति संपन्न की थी, 'जनगण के लिए शांति' उनमें एक था। वस्तुत: शांति संबंधी आज्ञप्ति ही, जिसे लेनिन ने लिखा था, संसार के सर्वप्रथम समाजवादी राज्य का सबसे पहला विधायी कृत्य था।

"विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांत को अधिकाधिक व्यापक मान्यता मिलती जा रही है।"

उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ के बीच संबंधों में हाल में आये सुधारों की ओर ध्यान खींचा, "लेकिन युद्धों और संगीन अंतर्राष्ट्रीय संकटों का किसी भी प्रकार अंत नहीं हो गया है।

"यह हमारा गहन विश्वास है कि शीतयुद्ध से तनाव-शिथिलन की ओर, फ़ौजी आमने-सामने की स्थिति से अधिक ठोस सुरक्षा और शांतिपूर्ण सहयोग की ओर वर्तमान परिवर्तन ही वर्तमानकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मुख्य प्रवृत्ति है।

"यह क्योंकर संभव हो पाया है?"

उन्होंने आगे कहा, "इसका मुख्य कारक विश्व शक्तियों के अन्योन्यसंबंधों में सार्विक परिवर्तन – समाजवादी तथा लोक-जनवादी देशों द्वारा निबाही जानेवाली भूमिका है।" उन्होंने क्यूबा में क्रांति और शांति के बारे में उसकी स्थिति की चर्चा की। उन्होंने इसराएली-अरब विवाद को एक प्रमुख ख़तरे का क्षेत्र बताया और संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की सकारात्मक भूमिका की बात की। उन्होंने यूरोपीय सम्मेलन के और फिर एशिया में शांति की सुरक्षा के महत्व की चर्चा की। उन्होंने कहा:

"यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि विश्व परिस्थिति में वर्तमान परिवर्तन मुख्यत: सार्वजनिक शक्तियों की सरगरमियों का, जनसाधारण की अज्ञातपूर्व सरगरमी का परिणाम हैं, जो निरंकुश शासन और आक्रमण के लिए घोर असहिष्णुता और शांति के लिए अनम्य इच्छा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

"यह बुल्गारिया में हाल ही में हुई विश्व ट्रेड-यूनियन कांग्रेस से भी प्रकट होता है, जिसने बीस करोड़ से ज़्यादा संगठित कारख़ाना तथा दफ़्तरी कर्मचारियों और बुद्धिजीवियों की शांति के लिए इच्छा को असंदिग्ध रूप में व्यक्त किया।

"आम तौर पर कहा जाता है कि सामूहिक प्रयासों द्वारा एशिया में सुरक्षा क़ायम करने और सुनिश्चित करने का विचार चीन के विरुद्ध लक्षित है और यह सिर्फ़ चीन को 'घेरने' और 'अलग करने' के कपटपूर्ण लक्ष्य का ही अनुगमन करता है। लेकिन ये दावे या तो रुग्ण संदेह की उपज हैं या तथ्यों का सामना करने की अनिच्छा का फल हैं।"

इसके बाद उन्होंने सोवियत संघ के चीन और उसके साथ-साथ अल्बानिया के प्रति, जो कांग्रेस में अनुपस्थित थे, रवैये की बात की और कहा:

"जहां तक सोवियत संघ का सवाल है, वह एशियाई सुरक्षा को मज़बूत करने की ओर लक्षित उपायों को कार्यान्वित करने में चीनी लोक गणतंत्र की सहभागिता का स्वागत करेगा।"

उन्होंने चिली के बारे में चीन की नीति की निंदा की:

"वे अपने को क्रांतिकारी कहते हैं, लेकिन चिलीआई प्रतिक्रांतिकारियों के फ़ासिस्ट फ़ौजी गुट के एक प्रतिनिधि के हाथ के साथ मैत्रीपूर्वक हाथ मिलाते हैं, उस हाथ के साथ, जो क्रांति के हज़ारों वीरों के, मज़दूर वर्ग के, चिली की मेहनतकश जनता के बेटे-बेटियों के ख़ून से सना हुआ है।"

उन्होंने नाटो देशों के सैन्य बजट में २-३ अरब की हर साल वृद्धि की चर्चा की और कहा कि पूंजीवादी राज्यों की फ़ौजी तैयारियां समाजवादी देशों को प्रतिरक्षा के लिए नागरिक निर्माण से मोड़कर आवश्यक धन विनियुक्त करने के लिए विवश करती हैं, जिस कार्य के लिए "हम अपने सारे प्रयासों को लगाना चाहेंगे।" उन्होंने सोवियत संघ के संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थायी सदस्यों के फ़ौजी बजट में १० प्रतिशत की कमी करने के प्रस्ताव का उल्लेख किया। उन्होंने चिली की दुखांत घटनाओं की चर्चा की:

"मुझे इस कांग्रेस के मंच पर से चिलीआई जनवादियों और देशभक्तों के साथ हमारी पूर्ण एकजुटता व्यक्त करने की और हमारे इस दृढ़ विश्वास को प्रकट करने की आज्ञा दीजिये कि जिस न्याय्य हेतु के लिए उन्होंने संघर्ष किया है और अब इतनी मुश्किल हालतों में कर रहे हैं, – स्वतंत्रता, जनवाद और सामाजिक प्रगति का हेतु – वह अविजेय और अविनाशी है!

"मैं आपको याद दिला दूं कि क्रांतिकारियों में महानतम क्रांतिकारी लेनिन कहा करते थे कि क्रांतियां आदेश से या समझौते से नहीं की जाती हैं। और हम इसमें यह और जोड़ सकते हैं कि न ही क्रांति, वर्ग संघर्ष या मुक्ति आंदोलनों को आदेश से या समझौतों से मिटाया जा सकता है। सामाजिक जीवन के पुनरुत्थान की प्रक्रिया को पलटना संसार में किसी भी शक्ति के लिए संभव नहीं है।"

इसके बाद उन्होंने "कुछेक शक्तियों द्वारा" समाजवादी देशों में मानव अधिकारों की रक्षा की नक़ाब की आड़ में मनोवैज्ञानिक युद्ध चलाने के नये आंदोलन की चर्चा की:

"प्यारे दोस्तो, हम खरी बात ही कहेंगे। आज़ादी और जनवाद और मानव अधिकारों की सारी बात के साथ यह कर्णभेदी प्रचार सिर्फ़ एक ही काम आता है और वह है समाजवादी देशों के भीतरी मामलों में दख़लंदाज़ी करने के प्रयत्नों को छिपाना, इस नीति के साम्राज्यवादी उद्देश्यों को छिपाना। वे लोग 'उदारीकरण' की बात करते हैं, लेकिन उनका जो अभिप्राय है, वह है समाजवाद की वास्तविक सिद्धियों का उन्मूलन और समाजवादी देशों के जनगण के सामाजिक-राजनीतिक अधिकारों का अपरदन।

"हमारे पास मानव अधिकारों पर किसी भी गंभीर बहस से कतराने का कोई कारण नहीं। हमारी क्रांति ने, इस देश में समाजवाद की विजय ने मेहनतकश के, उसकी जाति चाहे कुछ भी क्यों न हो, करोड़ों मेहनतकशों के अधिकारों को इस तरह सिर्फ़ उद्घोषित ही नहीं किया है, बल्कि यथार्थ में सुनिश्चित भी किया है कि जिस तरह पूंजीवाद संसार के किसी भी देश में नहीं कर पाया है।

"बूर्जुआ दृष्टिकोण से काम, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, निःशुल्क चिकित्सीय सहायता, विश्राम और अवकाश, आदि अधिकारों जैसे मानव अधिकार गौण या अमान्य तक हो सकते हैं।

सिर्फ़ एक ही आंकड़ा ले लीजिये – ग़ैर-समाजवादी देशों में इस समय कोई दस करोड़ बेरोज़गार हैं। कितने ही पूंजीवादी राज्य जातीय अल्पसंख्यकों और विदेशी मज़दूरों के अधिकारों का, और समान कार्य के लिए समान वेतन के स्त्रियों के अधिकार का उल्लंघन करते हैं। शायद यही कारण है कि कई पश्चिमी शक्तियों ने मनुष्य के सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकारों को स्थापित करनेवाले अंतर्राष्ट्रीय अभिसमयों को अभी तक मान्यता नहीं प्रदान की है।

"हमारे देश में जो विस्मयजनक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन आये हैं, वे जनसाधारण की दूरगामी और सचेत राजनीतिक सरगरमी का, और जिस व्यवस्था का उन्होंने स्वयं निर्माण किया है, उसकी रक्षा करने के उनके संकल्प का भी परिणाम हैं।"

और फिर उन्होंने सोवियत नौतिकता की बात की:

"और वे स्वतंत्रताएं कैसी हैं, जिनकी हम पर हमले करनेवाले बातें करते हैं?

"मिसाल के लिए, हमारे यहां एक क़ानून है, जो किसी भी रूप में युद्ध-प्रचार का निषेध करता है। नसली या जातीय वैमनस्य और घृणा के विचारों का, और किसी भी क़ौम की जातीय गरिमा को गिरानेवाले विचारों का निषेध करने के क़ानून हैं। अनैतिक आचरण को दवाने के, समाज का नैतिक पतन करने के खिलाफ़ क़ानून हैं। हमसे क्या शायद यह अपेक्षा की जाती है कि विचारों और सूचना के निर्बाध विनिमय के नाम पर हम इन क़ानूनों को त्याग दें? या क्या हमें इसके लिए राज़ी करवाया जायेगा कि यह तनाव-शिथिलन और घनिष्ठतर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के हेतु का साधन करेगा?"

शांति को सुनिश्चित करने की ठोस समस्याओं की तरफ़ आते हुए उन्होंने कहा:

"लेकिन शांति मात्र सुरक्षा का ही प्रश्न नहीं है। यह आधुनिक सभ्यता की सबसे कठिन समस्याओं को हल करने की सबसे महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षा भी है। और इसमें तो मानवजाति का भविष्य ही सन्निहित है – जी हां, सारी ही दुनिया का भविष्य, जिसे अब आज की समस्याओं को सुलझाते समय नज़रअंदाज़ करना संभव नहीं है, चाहे वे कितनी ही जटिल और कठिन क्यों न हों। आप लोगों को, जो संसार की जनता का उसके सारे ही वैविध्य में प्रतिनिधित्व करते हैं, इसे अच्छी तरह अनुभव करना चाहिए।

"यहां उन कुछ ही समस्याओं का उल्लेख काफ़ी होगा, जो बहुतों को चिंतित करने लगी हैं – ऊर्जा की पूर्ति, पर्यावरण संरक्षण, सर्वव्यापी भूख और ख़तरनाक बीमारियों जैसे अभिशापों का ख़ात्मा और विश्व महासागरों के प्राकृतिक साधनों का विकास।

"इन समस्याओं का हल सरकारों, आर्थिक तथा वैज्ञानिक हलक़ों के प्रतिनिधियों, और निस्संदेह, अत्यंत विविध राजनीतिक, व्यावसायिक तथा सांस्कृतिक संगठनों के बीच सर्वांगीण, निष्कपट और प्रभावी सहयोग की अपेक्षा करता है। जनगण को एक-दूसरे को जानना चाहिए और इसलिए उनके बहुत से प्रतिनिधियों के बीच सजीव और नानारूप विनिमय होना चाहिए।

"शांति सुनिश्चित करने का मतलब है सशस्त्र विवादों को शांतिपूर्ण उपायों से हल करना – यूरोप और एशिया में सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का निर्माण करना – नाभिकीय तथा अन्य शस्त्रास्त्रों



की होड़ को ख़त्म करना, सैन्य टकराव के भौतिक आधार में कमी, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक सहयोग का पूर्ण समानता के आधार पर विकास ...

"प्रिय मित्रो, दुनिया भर में करोड़ों लोग शांतिकामी शक्तियों की विश्व कांग्रेस से वहुत अपेक्षाएं कर रहे हैं। वे व्यापक जनसाधारण को व्यग्र करनेवाले ज्वलंत प्रश्नों के उत्तरों की और विश्वव्यापी जन-आंदोलन के लिए, जिसका लक्ष्य बीसवीं सदी की एक सवसे महत्वपूर्ण समस्या – स्थायी शांति सुनिश्चित करने की समस्या – को हल करने में सहायता देना है, मार्गदर्शक सिद्धांतों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह एक ज़वरदस्त ज़िम्मेदारी है, और जिस तरह मैं इसे देखता हूं, यह एक बड़ी और प्रेरणादायक चुनौती भी है।"

लेकिन उन्होंने यह चेतावनी दी कि शांति के पथ पर उपलब्धियों को काम के वेहतर रूपों, नये तरीक़ों की आवश्यकता के साथ सावधानीपूर्वक विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने सोवियत जनता, उसकी सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थन का वादा करते हुए अपना भाषण ख़त्म किया :

"आप सोवियत जनगण पर निर्भर कर सकते हैं, जो सदा – अपनी महान क्रांति के वाद के प्रारंभिक वर्षों में, समाजवाद के निर्माण के वर्षों में, फ़ासिज़्म के विरुद्ध युद्ध में, युद्धोत्तर दशकों में, और वर्तमान काल में – मानवजाति के हितों के संघर्ष की पहली क़तार में खड़े रहे हैं और अव भी खड़े हुए हैं।

"अंत में मैं कांग्रेस के संगठनकर्ताओं को, और प्रिय मित्रो, आप सभी को मुझे इस उच्च आसन से वोलने का अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा।

"इस कांग्रेस के सम्मानित सहभागियो, मैं अंत में, आपको फलदायी संयुक्त कार्य में, जो, मुझे विश्वास है, सभी महाद्वीपों के लोगों के दिलों में तात्कालिक अनुक्रिया उत्पन्न करेगा, हर सफलता की कामना करने की अनुमति चाहता हूं।"

उनके भाषण के वीच वारंवार करतल-ध्वनि हुई। अव, जव उन्होंने अपना भाषण ख़त्म किया, तो लोग खड़े हो गये और देर तक तालियां वजाते रहे।

अगले तीन दिन चौदहों आयोगों की वैठकों में काम चलता रहा। ये आयोग थे – शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, हिंदचीन, मध्य-पूर्व, यूरोपीय सुरक्षा और सहयोग, एशिया में शांति तथा सुरक्षा, निःशस्त्रीकरण, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन (उपनिवेशवाद तथा नसलवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष), विकास तथा आर्थिक स्वतंत्रता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्राविधिक सहयोग, सामाजिक प्रगति और मानव अधिकार, अंतःसरकारी और ग़ैर-सरकारी संगठनों में सहयोग और चिली। मैं सांस्कृतिक सहयोग आयोग में था।

हमारे आयोग में काफ़ी लोग थे – ५७ देशों से ४५० से अधिक। भाग लेनेवाले लेखक, कलाकार, वास्तुकार, नगर-योजनाकार, सिनेकर्मी, शिक्षक, जन-संचारकर्मी और टेलीविज़न तथा रेडियो के प्रतिनिधि, संगीतकार थे, उसमें प्रदर्शनात्मक और सर्जनात्मक – दोनों – कलाओं का प्रतिनिधित्व था। इस तरह कार्रवाई यकायक एक से दूसरे विषय पर पहुंच जाती – पश्चिम के किशोरों पर टेलीविज़न कार्यक्रमों के पाशवीकारी प्रभाव से चिंतित वक्ता के वाद सांस्कृतिक

विकास के लिए सरकारों द्वारा ज़्यादा ज़िम्मेदारी ग्रहण करने के बारे में बहस शुरू हो जाती, कोई कलाकार मानवतावाद की बात करता, तो शिक्षक पाठ्यपुस्तकों की कोटि की चर्चा चला देता।

नवविकासमान देशों के लोग अपनी देशज संस्कृति की जन-संचार साधनों की इजारेदारी से रक्षा की आवश्यकता की बात करते। रेडियोवाले सत्यनिष्ठा की, टेलीविज़न में काम की समस्याओं की और सत्यतापूर्ण रिपोर्टिंग पर ज़ोर देने की ज़रूरत पर विचार करते। नसलवाद और अंधराष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष का सवाल बार-बार उठाया गया।

एक के बाद दूसरे वक्ता के मंच पर आने के साथ-साथ प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिनिधित दो भिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं का अंतर अधिकाधिक प्रत्यक्ष होता गया। नसलवाद और अंधराष्ट्रवाद का प्रश्न, जो कुछ देशों के सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में काफ़ी परिव्याप्त था, समाजवादी देशों में सर्वथा अविद्यमान था। अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों, सम्मेलनों या प्रदर्शनियों के संगठन से संबंधित लगभग अलंघ्य समस्याएं सोवियत संघ के लिए मामूली बातें थीं, तो स्त्रियों के लिए काम में समान अवसरों की प्रत्याभूति "स्वतंत्र विश्व" में अनुपस्थित थी।

मैं कार्रवाइयों की मानव-हितैषिता और अत्यंत स्पष्टता से व्यक्त घनिष्ठतर संपर्क की, उन मुख्य क्षेत्रों में संयुक्त कार्य की आकांक्षा से बहुत प्रभावित हुआ, जहां एक ही पेशे के लोगों में सहयोग, शांति को सुनिश्चित करने की, संस्कृति को जनता के जीवन में लाने की, लोगों को ओछेपन और ससार के अनेक भागों में बढ़ते कुटिल प्रभावों से मुक्त करने की आवश्यकता की फलदायी और शक्तिशाली अभिव्यक्ति बन सकता है।

जहां हमारा आयोग भाग लेनेवालों के वक्तव्यों को दर्ज कर रहा था, वहां कांग्रेस के तेरह अन्य आयोगों में बहस चल रही थी। मनुष्य के जीवन, उसके सांस्कृतिक तथा आर्थिक कल्याण से संबद्ध एक भी क्षेत्र को छोड़ा नहीं गया। जहां कांग्रेस मूलतः शांति की समस्या की ओर लक्षित थी, वहां मानवजाति के सम्मुख प्रस्तुत हर समस्या को भी कार्यसूची पर रखा गया था।

यह देखते हुए कि वर्तमान विश्व दो भिन्न आर्थिक व्यवस्थाओं में विभाजित है, महत्व की बात सामान्य दिलचस्पी के मामलों में अंतरों को पाटना था। इस बात को सामने लाना था कि शीतयुद्ध ने वर्षों वास्तविक सांस्कृतिक मूल्यों के विनिमय में बाधा डाली थी और सहअस्तित्व की अवधारणा के स्वीकरण से प्राप्त स्थायी शांति की अवस्था एक रचनात्मक और गतिशील काल का समारंभ कर सकती है, जिसमें संस्कृतिकर्मी जनगण के सांस्कृतिक हितों में अधिकतम योगदान कर सकेगा। हथियारों की होड़ का अंत इतनी वित्तीय संपदा और मानव प्रतिभा को उत्पादक दौर की तरफ़ मोड़ देगा कि उसकी संभाव्यता ही मनुष्य की कल्पना को चकित कर देती है।

एक के बाद दूसरे वक्ता ने इसका आह्वान किया कि संस्कृतिकर्मी इस सामाजिक दायित्व को स्वीकार करें, मिलकर ऐसे विश्व वातावरण का निर्माण करे कि जो संसार की आबादी की समृद्धतम सांस्कृतिक उन्नति के लिए फलदायी ज़मीन उपलब्ध कर सके।

अंतिम पूर्णाधिवेशन से पहलेवाले दिन मैं तीसरे पहर समिति कक्ष में बैठा कल की बैठक में पेश की जानेवाली हमारी दस्तावेज़ तैयार कर रहा था। इसमें घंटों लग गये। क्लांतिकर अनुवाद – कभी-कभी एक अकेला वाक्य भी, जो अपनी मूल भाषा में सुंदर लगता था, किसी अन्य

भाषा में अनूदित होने पर अपना पूरा-पूरा अभिप्राय नहीं दे पाता था। आख़िर यह काम एक अपेक्षाकृत छोटे संपादक मंडल द्वारा ख़त्म करने के लिए छोड़ दिया गया। मुझे पहले ही बता दिया गया था कि अंतिम अधिवेशन में रिपोर्ट मुझे पेश करनी होगी। दस्तावेज़ का अंतिम अंग्रेज़ी अनुवाद कोई आधी रात को मेरे फ़्लैट पर पहुंचाया गया। मैंने उसे पढ़ा, कुछ वैयाकरणिक संशोधन किये और अगले दिन की प्रतीक्षा में एकदम निढाल होकर सोने के लिए चला गया।

मैं काफ़ी देर नहीं सो पाया। कांग्रेस के आख़िरी कुछ दिन मेरी याद पर छाये हुए थे। मेरे लिए हमारे ग्रह की भलाई की सुचिंता में एकसाथ इकट्ठा हुए अच्छे लोगों के साथ होना एक स्मरणीय अनुभव था। अपनी याद में मैं १९४९ में अमरीकी लोगों द्वारा संगठित महान विश्व शांति तथा सांस्कृतिक सम्मेलन में, न्यूयार्क के जिस होटल में वह उकसावे, हमलों और सड़कों पर कम्युनिस्टविरोधी प्रदर्शनों की फ़िज़ा में हुआ था, उसके नाम पर विख्यात वाल्डोर्फ़-अस्तोरिया सम्मेलन में पहुंच गया। लेकिन वह सम्मेलन इस कांग्रेस जैसा ही था, जिसमें दुनिया के कई हिस्सों से लोग आये थे – शोस्तकोविच और एरेनबुर्ग सोवियत प्रतिनिधिमंडल में, महान अमरीकी खगोलज्ञ डा० हार्लो शेप्ले, जो उसके अध्यक्ष थे। मुझे सम्मेलन द्वारा उन्मुक्त आशा की भावना, भविष्य की योजनाओं और शीतयुद्ध की फ़िज़ा की याद आ गयी, जिसने अंत में हमारे काम को ख़त्म कर दिया था। लेकिन यह बहुत पहले की बात थी। अब, मैंने मन में कहा, यहां संयुक्त राज्य अमरीका के १८५ प्रतिनिधि हैं।

अगली सुबह मैं मंच पर बैठा हुआ था, मेरे सामने चेहरों का समुद्र था। चौदह रिपोर्टें पढ़ी जानी थीं, हर वक्ता को प्रस्तुती के लिए दस मिनट दिये गये थे। मैंने कई लोगों को सुना। फिर आखिर मेरी बारी आ गयी। मैं अपनी उत्तेजना को छिपा नहीं पा रहा था। सीढ़ियों से उतरकर, वक्ता मंच पर आकर, जहां इतने सारे अच्छे लोग इतना कुछ कह चुके थे, मैंने अपने भाषण को डेस्क पर रख दिया, माइक्रोफ़ोन की तरफ़ मुंह किया और अपनी रिपोर्ट को पढ़ना शुरू कर दिया।*

"सांस्कृतिक आयोग के पूर्णाधिवेशन ने अपने विचार-विमर्श की अंतिम रिपोर्ट को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया, जो मुख्य रूप में इस प्रकार है:

"उत्तरदायी संस्कृतिकर्मी सदा से प्रगति की ओर रहे हैं। इतिहास भर में संकट की घड़ियों में कलाओं, विज्ञानों और शिक्षा क्षेत्रों के स्त्री-पुरुष मिलकर विचारों का विनिमय करते थे और कार्रवाई के कार्यक्रम निरूपित करते थे।

"हम अब एक ऐसे समय मिल रहे हैं, जब शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति की सफलता संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्रों में, विश्व शांति के सुदृढ़ीकरण और जनगण की स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता के न्याय्य हेतु के सरक्षण की ख़ातिर राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ाने और पुष्ट करने के लिए मनुष्य को पहले किसी भी समय की अपेक्षा बेहतर अवसर दे रही है।

---

*यहां लेखक सारी ही रिपोर्ट नहीं उद्धृत कर रहे हैं, वरन उसके मुख्य मुद्दों का सार ही दे रहे हैं। **– सं०**

"रिपोर्ट पारस्परिक ग़लतफ़हमी को ख़त्म करने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों के प्रतिनिधियों के रचनात्मक संवाद की आवश्यकता पर विचार करती और उसे स्वीकार करती है। वह शीतयुद्ध के प्रभावों और आवर्तनों पर विचार करती है, जो संस्कृतियों में सामान्य विनिमय और सहयोग में बाधा डालते हैं। हल टकराव में नहीं, वाद-विवाद में, सांस्कृतिक अभि-व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक युद्ध को भड़काने के लिए उपयोग रोकने में है। यह स्वीकार करना चाहिए कि विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं का अस्तित्व प्रत्येक की विशिष्टताओं की तरफ़ ध्यान देना अपरिहार्य बना देता है। उसे सांस्कृतिक सहयोग में अलंघ्य बाधा बनने से रोकना चाहिए।

"नवउपनिवेशवाद और नसलवाद से अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता और अपनी संस्कृति की रक्षा करनेवाले जनगण को सर्वतोमुखी समर्थन देने के लिए प्रभावी क़दम उठाये जाने चाहिए।

"हम सांस्कृतिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में पुरुषों के समकक्ष स्तर पर स्त्रियों के अधिकारों के संरक्षण को प्रत्याभूत करने की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।

"हम सभी देशों की सरकारों से उन सरकारों का अनुकरण करने का अनुरोध करते हैं, जो संस्कृतिकर्मियों और विशेषकर प्रतिभाशाली युवजन के लिए अपने जनगण की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के और अपनी संस्कृतियों के सक्रिय पुनरान्वेषण के पूर्णतम अवसर प्रत्याभूत करती हैं।

"आयोग ने जन-संपर्क साधनों के क्षेत्र में लोगों पर टेलीविज़न ब्राडकास्टों के प्रभाव को स्वीकार किया है। उसने जनसाधारण की शिक्षा के, थियेटर, साहित्य, कला और विज्ञान में कार्यक्रमों के अंतर्राष्ट्रीय विनिमय के और विश्व संस्कृति के प्रसारण के साधन के रूप में उसकी संभाव्यता को माना है, पर साथ ही उसने जन-संपर्क साधनों के दुरुपयोग के विरुद्ध सचेत रहने की आवश्यकता को भी माना है, जो इजारेदार देशों के हाथों में जनगण के बीच विश्वास और समझ के वातावरण के विरुद्ध जाते हैं और उनका जान-बूझकर संदेह, निर्दयता, हिंसा तथा आक्रमण के विचारों को और फ़ासिज़्म के, जो दुनिया के कुछ देशों में अब भी विद्यमान है. जहां प्रगतिशील संस्कृतिकर्मियों को उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है, सड़े हुए फलों को फैलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

"प्रस्ताव व्यवस्थाभंजक रेडियो स्टेशनों की हलचलों की निंदा करने का आह्वान करता है, जो जनगण में अविश्वास और शत्रुता पैदा करते हैं और जिन सरकारों के प्रदेश पर इन स्टेशनों को काम करने की इजाज़त है, उनसे उन्हें बंद करने की माग करता है।

"हमें शांति के हेतु के लिए सबसे उल्लेखनीय योगदान करनेवाले पत्रकारों, संवाददाताओं और रेडियो तथा टेलीविज़नकर्मियों के लिए यूनेस्को तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के अभिकरणों के ज़रिये अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार संस्थापित करने के तरीक़े निकालने चाहिए। साथ ही उन लोगों की अंतर्राष्ट्रीय भर्त्सना के तरीक़े भी विकसित किये जाने चाहिए, जो संचार साधनों का और कलाओं में जन-संपर्क साधनों का अन्य देशों के जनगण के विरुद्ध शत्रुता को प्रोत्साहन देने के लिए और युद्ध की नैतिक तैयारियों में उपयोग करते हैं।

"हमारे आयोग की रिपोर्ट इस बात की आवश्यकता स्वीकार करती है कि हर किसी को

कम क़ीमतों पर उपलभ्य कथा साहित्य, विज्ञान और बाल साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियों के प्रकाशन और पुस्तकों तथा अनुवादों के अंतर्राष्ट्रीय विनिमय के लिए विश्वव्यापी और राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ;

"पेशेवर ट्रेड-यूनियनों तथा छात्र संगठनों का निरक्षरता उन्मूलन में सक्रिय भाग लेने के लिए आह्वान किया जाना चाहिए और निरक्षरता तथा संस्कृतिविरोधी प्रवृत्तियों की समस्याओं पर विचार करने और उचित क़दमों का सुझाव देने और उठाने के लिए शिक्षकों और प्रबोधकों के सम्मेलन किये जाने चाहिए ;

"विभिन्न संगठनों के साथ मिलकर किशोरों और बालकों को नसलवाद और सैन्यवाद के अमानवीयकारी प्रचार से बचाने के उपाय निकाले जाने चाहिए ;

"अनुभवी शिक्षकों तथा छात्रों और स्थायी शिक्षण कार्यक्रमों के व्यापक विश्व विनिमय का समर्थन और संवर्धन किया जाना चाहिए और संसार की शिक्षा संस्थाओं में व्यापक संपर्क विकसित करना चाहिए ;

"स्कूली पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रमों में मानवतावादविरोध, प्रतिशोधवाद, अंधराष्ट्रवाद, सैन्यवाद और नवउपनिवेशवाद के विचारों के प्रवेश के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए और विभिन्न देशों के जीवन तथा संस्कृति के बारे में जान-बूझकर ग़लत सूचना देने का उन्मूलन करना चाहिए ;

"नवविकासमान देशों के वर्धमान सांस्कृतिक पुनरुत्थान के बारे में और उन्हें विदेशों से आनेवाली इजारेदार संस्कृति के अतिक्रमण से बचाने की आवश्यकता के बारे में सम्मेलन संगठित किये जाने चाहिए।

"हम आत्मनिर्णय के लिए संघर्षरत अल्पसंख्यकों में उद्भूत सांस्कृतिक गतिविधियों के हाल के उत्थान को स्वीकार करते हैं – उन लोगों में, जो पहले किसी देश के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक मूल्यों द्वारा उत्पीड़ित थे।

"हम उन आंदोलनों को प्रोत्साहन देने और उनके बारे में सूचना प्रसारित करने की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं, जो किसी जन-संस्कृति के विकास में – जो मानवद्वेषी व्यवस्था की संस्कृति का प्रतीप होती है – जनता के व्यापक सांस्कृतिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

"हमारे आयोग में अधिकतम उपयोगिता के साधनों, प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक विनिमयों के आयोजनों के लिए प्रयत्नशील कलाकार, लेखक और संगीतकार की भूमिका पर काफ़ी वाद-विवाद हुआ। अपने को उपलब्ध कार्य का लाभ उठाने और कलाकारों को जनगण के व्यापकतम आंदोलन में खींचने, उन्हें प्रोत्साहित करने में शांति आंदोलन की असफलता का कुछ आभास पाया गया।

"विचार-विमर्श में भाग लेनेवाले सांस्कृतिक सहयोग के अवसरों का श्रेष्ठमम उपयोग करने के उपायों और साधनों पर विचार करने के लिए विश्व सम्मेलन की तैयारी के बारे में विभिन्न देशों के संस्कृतिकर्मियों के साथ सलाह-मशवरा करना उपयुक्त समझते हैं।

"हमारे सुझावों के कार्यान्वयन में विश्व संस्कृति की मानवतावादी परंपराओं के विकास के लिए संघर्ष में और विश्व शांति, सुरक्षा तथा जनगण में सहयोग के नाम पर संस्कृति, शिक्षा

और जन-संचार साधनों के क्षेत्रों में काम करनेवालों के और अधिक समेकन से सहायता मिलेगी।"

३१ अक्तूबर को विश्व शांति कांग्रेस की सोवियत समिति के अध्यक्ष म० व० ज़िम्यानिन ने पूर्णाधिवेशन के अंत में समापन भाषण दिया और उनके बाद रमेश चंद्र बोले। उन्होंने इस विश्व सम्मेलन की अंतिम घड़ियों को अपने सामान्य काव्यात्मक ढंग से एक अनोखा ही भावात्मक गुण प्रदान कर दिया। उन्होंने उन बच्चों का उल्लेख किया, जो संसार के कितने ही भागों में मौत के मुंह में जा रहे हैं।

"हम देश-देश के बच्चों को नहीं भूलते, जिन्हें हमने चित्रों में या अपनी आंखों देखा है। हम मीकांग नदी की धारा में बहते उन मरे हुए बच्चों को नहीं भूलते, जिनके दिल गोलियों से छिदे हुए थे। हम मिस्र में बहर अल बक्र के स्कूली विद्यार्थियों को नहीं भूलते, जिनको भी उन्हीं कारखानों की बनायी गोलियों ने भूना था कि जिन्होंने मीकांग में बहते बच्चों के दिलों को भेदा था। हम हमारी इस दुनिया के कितने ही हिस्सों में भूख से मरे बच्चों को नहीं भूलेंगे।

"दुनिया की नदियां इसलिए नहीं अस्तित्व में आयी हैं कि मरे हुए बच्चों की लाशों को बहाकर ले जायें। यह वह काम नहीं है कि जिसके लिए नदियों को संसार के किसी भी हिस्से में बहना चाहिए। और यही वजह है कि हमारी कांग्रेस सभी लोगों से तक़ाज़ा करती है कि वे मिलकर इन नदियों का चरित्र बदलने के लिए, उन नदियों का कि जो मौत की वाहक थीं, और इन नदियों को ज़िंदगी की और दुनिया में सभी बच्चों के लिए ख़ुशी की नदियों में बदलने के लिए अपने हाथ लगायें, ताकि ये बच्चे हमारी धरती पर, दुनिया भर में, दुनिया की सभी नदियों के तटों पर नाचें, गायें, हंसें और मज़े ले सकें।"

उन्होंने कहा, "हमारी कांग्रेस अतीत की कोई पुनरावृत्ति नहीं है। यह एक नयी ही चीज़ है, ऐसी चीज़ कि जो पहले कभी नहीं हुई है।"

कांग्रेस की नम्यता की बात करते हुए उन्होंने कहा :

"इस कांग्रेस की मुख्य विशेषता क्या है? हम में चाहे कैसे ही राजनीतिक भेद क्यों न हों, हमारी कांग्रेस ने यह सजीव रूप में दिखा दिया है कि हम एकसाथ काम कर सकते हैं। उसने हम में से हर किसी को यह भी दिखा दिया है कि अगर हम विश्व जनमत को वह प्रबल अपराजेय शक्ति बनाना चाहते हैं कि जो उसे बनना चाहिए, तो मानवजाति के भविष्य की ख़ातिर हमें मिलकर काम करना होगा।

"बेशक, हम अलग-अलग तरीक़े से, अपने अलग-अलग नज़रियों, अपने अलग ढंगों और दृष्टिकोणों से काम करेंगे। लेकिन इसमें कोई अंतर्विरोध नहीं है। मानवजाति के संघर्षों के व्यापकतम क्षेत्रों को अपनी परिधि में लेनेवाली समस्याओं की पूरी शृंखला पर हम मिलकर काम कर सकते हैं और हमें करना चाहिए।

"हमारी कांग्रेस एक ऐसी कांग्रेस है कि जो सामान्य लक्ष्य के लिए मिलकर काम करने के इच्छुक अत्यधिक विविध संगठनों को संयुक्त करती है।

"हमने इस कांग्रेस में ज़बरदस्त कार्य की सिद्धि की है। कभी-कभी, जब आदमी पेड़ तो देखता है, पर वन नहीं देख पाता, तो वह सोच सकता है कि हम अपने को दुहराते हैं, हमारी

दस्तावेज़ें विगत की गूंजें ही हैं। लेकिन ग़लती न कीजिये – यह सच नहीं है। हमारी कांग्रेस अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है, यह एक नयी ही चीज़ है, ऐसी चीज़ कि जो पहले कभी नहीं हुई है।

"हमने कार्य का एक कार्यक्रम तैयार किया है। आप में से बहुत से, या कुछ कह सकते हैं, 'कार्यक्रम लिखने से भी ज़्यादा आसान और क्या हो सकता है – लेकिन इसे पूरा कौन करेगा ?' मेरा विश्वास है कि उन सभी दस्तावेज़ों में, जिन्हें हमने आयोगों में स्वीकार किया है, कार्य के कार्यक्रम का स्वीकार किया जाना एक विशेष उपलब्धि है। हमें इस कार्यक्रम को पूरा करना चाहिए और हम इसे पूरा करेंगे।

"और काग़ज़ का एक वर्क़ और है, जिस पर भविष्य की, अनुवर्ती कार्य की और हमारे कार्य के सातत्य की बात कही गयी है। निस्संदेह, यह काग़ज़ का बस एक वर्क़ ही है। लेकिन हमने उसके लेख को बहुत सावधानी के साथ तैयार किया है, ताकि कोई हमें ग़लत न समझ सके। हम कोई किसी भी तरह का 'अधिसंगठन' नहीं बना रहे हैं, जिसका मतलब औरों पर अपनी इच्छा थोपना होता है।"

उन्होंने कहा, "प्रत्येक आयोग में कार्य का एक कार्यक्रम तैयार हुआ है और सहयोग पर ज़ोर दिया गया है। समस्याओं की एक अपार शृंखला ऐसी है, जिस पर हम हज़ारों संगठनों का प्रतिनिधित्व करनेवाले लाखों लोगों को शामिल कर सकते हैं। इस कांग्रेस ने हमें एकता की नयी भावना प्रदान की है। हम जिन संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनको अपनी रिपोर्ट में हम कितनी ही बातें कह सकते हैं, मगर सबसे बढ़कर उसमें यह बात है कि इस कांग्रेस ने हमें अपने आंदोलन की अपराजेयता में नया विश्वास प्रदान किया है।

"इस कांग्रेस के बाद हम पर दुहरी ज़िम्मेदारी आ जायेगी। हम इस तथ्य से अधिकाधिक अवगत होते जा रहे हैं कि जनमत की शक्ति बढ़ गयी है। हमें अभी और भी जीतें हासिल करनी हैं और जनमत इन जीतों के हासिल करने में अधिकाधिक महत्वपूर्ण, बल्कि निर्णायक भूमिका अदा करेगा। कांग्रेस के कार्य के हर क्षण में यही अनुभूति व्याप्त रही है। शांति और स्वतंत्रता के लिए कार्यरत सरकारों के नेताओं ने हमें अपने संदेश भेजे हैं, जिनमें वही कहा गया है, जो मैं इस समय कह रहा हूं – यह कि जनमत अधिकाधिक बड़ी भूमिका निबाह रहा है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि अभी भी ऐसी सरकारें हैं कि जो जनमत की उपेक्षा करती हैं और अपनी जनता के अधिकारों को पैरों तले रौंदती हैं। हर कोई जान ले कि कोई भी सरकार, सबसे शक्ति-शाली सरकार भी, अब जनमत की शक्ति की और उपेक्षा नहीं कर सकती।"

और इसके बाद शक्ति और आशावाद से परिपूर्ण, कांग्रेस की भावना को प्रतिबिंबित करनेवाला, और मैं सोचता हूं कि स्वदेश लौटते लोगों के निश्चय को दर्शाता हुआ अंतिम अंश आया :

"संसार के जनगण की यह महासभा जंगखोरों को आगाह करती है कि सावधान हो जाओ ! हमारी कांग्रेस आज ख़त्म नहीं हो जायेगी। वह ज़िंदा रहेगी। इस धरती पर नये जीवन के निर्माण के लिए हमारा काम चलता रहेगा। जनगण में शांति की रक्षा करने की और उसका निर्माण करने की शक्ति है।"

लोग खड़े हो गये, देर तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही, मानो लोग हाल से निकल-ना, एक-दूसरे से अलग होना नहीं चाहते थे।

अगले कुछ दिन प्रतिनिधि कांग्रेस के कार्य और सुझावों के बारे में अपने संगठनों को रिपोर्ट देने के लिए अपने-अपने देश रवाना होते रहे।

बाद में कांग्रेस के परिणामों पर सोवियत समाज के सभी स्तरों पर – विश्वविद्यालयों और कल-कारखानों में, अस्पतालों में स्टाफ़ की बैठकों में और सुदूर राजकीय तथा सामूहिक फ़ार्मों में – रिपोर्टें पेश की गयीं और बहसें हुई। सोवियत शांति समिति की सोवियत संघ के शहरों और क़सबों में बहुत सी शाखाएं हैं और वे इसका ध्यान रखती हैं कि लोगों को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के भविष्य को प्रभावित करनेवाली सभी घटनाओं से सूचित किया जाये।

सोवियत शांति समिति की शांति निधि लोगों से चंदे और वैयक्तिक तथा सामूहिक दान इकट्ठा करती है, जिससे समिति संसार के अन्य देशों के साथ व्यापक संबंध रख सकती है। इस संगठन द्वारा प्रकाशित बुलेटिन में मैंने अकसर अपनी बचत के एक हिस्से को भेजनेवाले किसी पेंशनर के मर्मस्पर्शी पत्र को, या लोगों के एक सप्ताह के वेतन को देने और उद्यमों द्वारा बड़े चंदे भेजे जाने के बारे में पढ़ा है। कुछ प्रमुखतम धर्माधिकारी, अभिनेता, लेखक और वैज्ञानिक शांति कार्य में सक्रिय हैं। सच तो यह है कि रूसी ओर्थोडोक्स (सनातनी) चर्च ने कांग्रेस के लिए तीस लाख रूबल चंदे में दिये थे।

शांति निधि विश्व आपदाओं में सक्रिय सहायता करती है। १९७० के भूकंप के बाद पेरू को धन, चिकित्सीय सामान और खाना भेजा गया था। प्रसिद्ध सोवियत कवि रोबेर्त रोझ्देस्त्वेन्स्की लिखते हैं :

"रूसी भाषा में 'मीर' शब्द के दो अर्थ हैं – 'शांति' और 'दुनिया'। यह अत्यंत सारगर्भित है। यह हमारी मनोस्थिति को प्रतिबिंबित करता है – यह तथ्य कि हम अन्य लोगों की नियति के प्रति उदासीन नहीं रह सकते ... आज संसार की जो हालत है, उसके लिए हम में से हर कोई उत्तरदायी है। यह उत्तरदायित्व की यही भावना है कि जो हमारी शांति निधि के समर्थकों का मार्गदर्शन करती है। उनका आदर्श-वाक्य है – 'निष्क्रिय परोपकार नहीं, बल्कि सक्रिय सार्वजनिक चेतना'।"

कई सप्ताह चलनेवाली बहस के बारे में पढ़ते हुए मैंने अनुभव किया कि सोवियत जन विश्व शांति को सुनिश्चित करने की समस्याओं के प्रति कितने सचेत हैं और उनमें किस सीमा तक भाग लेते हैं।

२. रूसी संघ – लेनिनग्राद

'लेर्मोंतोव'

१९७३ के जून महीने में लीला और मैं नये सोवियत पोत 'लेर्मोंतोव' पर, उसकी प्रथम यात्रा में सवार होकर एक साल के लिए सोवियत संघ जा रहे थे। इस यात्री-सेवा की शुरूआत एक ऐतिहासिक घटना थी, जो श्री ब्रेज्नेव और राष्ट्रपति निक्सन में मास्को में हुई भेंटों का एक परिणाम था।

न्यूयार्क की एक गरम और उमसभरी सुबह हमारी बेटी ब्रिजिट और उसके पति ने हमें कार में हडसन नदी के घाट पर पहुंचाया, जहां एक हंसमुख काले गोदी मज़दूर ने हमारी गाड़ी से सामान उतारना शुरू किया।

"सोवियत जहाज़ पर काम करना कैसा लग रहा है?" मैंने पूछा, क्योंकि मैं जानता था कि पहले, उच्चस्तरीय मास्को समझौतों के पहले, अपने प्रतिक्रियावादी नेताओं के आदेश से न्यूयार्क गोदी कर्मचारी संघ ने सोवियत माल को हाथ लगाने पर रोक लगा रखी थी।

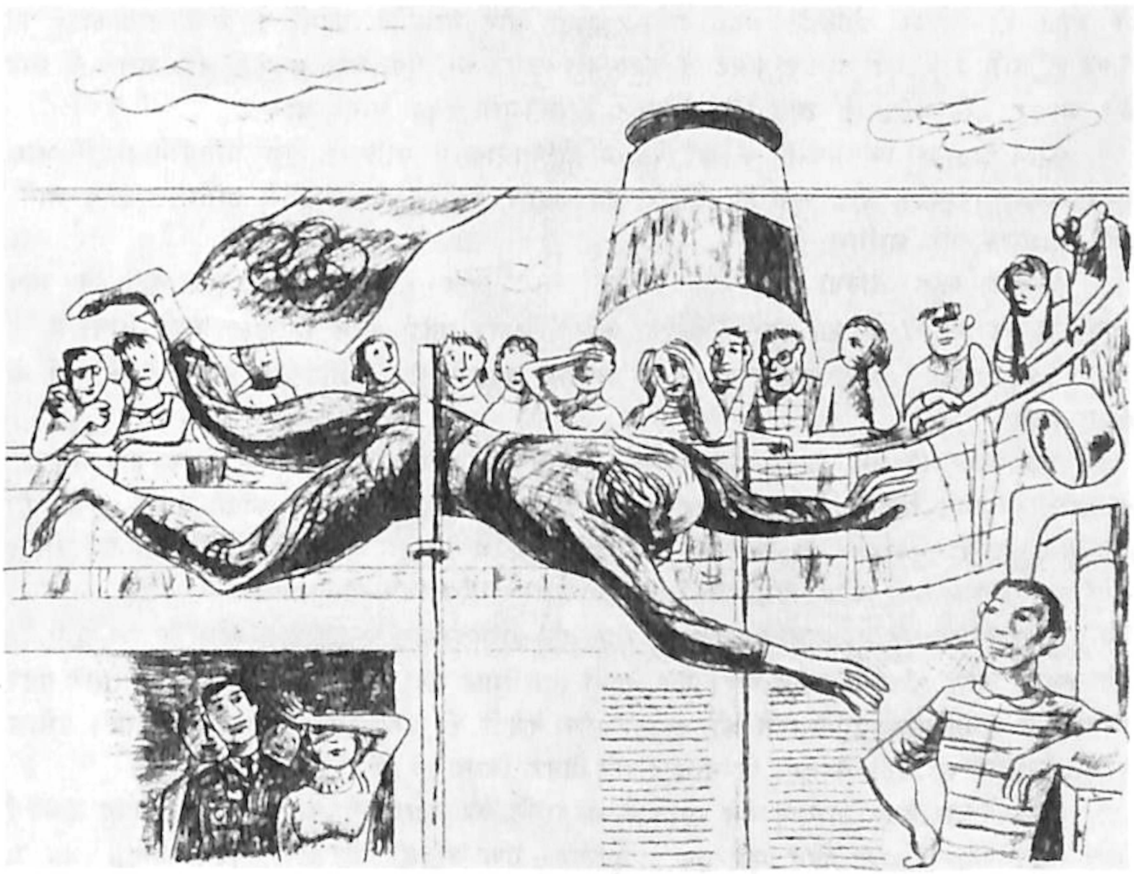
वह मुसकरा दिया। "वह बकवास थी," उसने कहा। "अब हमारे पास अतिरिक्त काम है। वक़्त आ गया है कि संघ के नेता होश में आयें। उनका सोवियतविरोधी रवैया हमारे हितों के ख़िलाफ़ काम करता था, और अब, बढ़ती बेरोज़गारी में, हम सोवियत जहाज़ों को अपने बंदरगाह में देखकर ख़ुश ही होते हैं।"

सुबह साढ़े ग्यारह बजे, अपने बैंड की धुनों के साथ 'लेर्मोंतोव' हडसन स्ट्रीट घाट से आहिस्ता से निकलकर धूसर धुंध में विश्व व्यापार केंद्र की दोनों मीनारों के आगे से होता हुआ, स्वाधीनता की मूर्ति के सामने से गुज़रता हुआ खुले समुद्र में आ गया।

'लेर्मोंतोव' एक ही श्रेणी का जहाज़ है (दाम में अंतर निजी केबिन की स्थिति और उसमें ठहरे यात्रियों की संख्या से निर्धारित होता है)। भोजनालय में सिर्फ़ एक ही मेन्यू होता है, खाना बहुत ही बढ़िया होता है, और अगर कोई बात है, तो सिर्फ़ यही कि किसी भी और जहाज़ की तरह, बहुत ज़्यादा ही होता है।

जहाज़ पर कई सोवियत रिपोर्टर भी थे – टेलीविज़न समीक्षक येव्गेनी सिनीत्सिन, युवा कैमरामैन यूरी प्रोकोफ़्येव और तास के छायाकार अलेक्सेई कोतंकोव। वे इस यात्रा का वृत्तचित्र बना रहे थे और एक दिन हमारे केबिन में आकर उन्होंने हमें और मेरी कुछ कलाकृतियों को, जिन्हें मैं साथ ले जा रहा था, फ़िल्माया था।

एक शाम को जहाज़ के कर्मीदल ने संगीत कक्ष में अपना संगीत कार्यक्रम – रूसी यादें – पेश किया। जहाज़ी अस्पताल की नर्स ने अपनी सशक्त सुमूर्च्छनित आवाज़ में कुछ गीत सुनाये। कर्मीदल ने कई लोकनृत्य पेश किये, जिनमें एक नर्तक लाजवाब था। हमने उसे मल्लाह नाच में प्रमुख भूमिका में फिर देखा। इसके बाद पुरुषों और स्त्रियों की वाद्यमंडली ने प्राचीन वाद्ययंत्रों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके बाद नृत्यमंडली ने फिर आकर उक्रइनी नाच दिखाये (इन लोकनृत्यों में कुछ लोग तो मोइसेयेव मंडली के सदस्यों जैसा ही सुंदर नाचते हैं। सच तो यह है



कि वहुत सी पेशेवर सोवियत मंडलियां कारखानों और सामूहिक फ़ार्मों के श्रेष्ठ कलाकारों को लेकर ही बनी हैं)। यात्री इस कंसर्ट से बहुत खुश हुए। यह एक नया अनुभव था। कंसर्ट के बाद मैंने जाकर उस नर्तक से बात की, जिसका नाच मुझे पसंद आया था।

उसने बताया कि मंडली के कई सदस्य लेनिनग्राद में बाल्टिक बेड़ा प्रतियोगिता में भाग लेकर अनेक पुरस्कार जीत चुके हैं, जिनमें अब जहाज़ पर इन कार्यक्रमों में इस्तेमाल किये जाने-वाले वाद्ययंत्र भी शामिल हैं।

"आप बहुत बढ़िया नर्तक हैं," मैंने उससे कहा। "इसमें कोई शक़ नहीं कि आप किसी पेशेवर मंडली में जा सकते हैं। क्या आपने पेशेवर नर्तक बनने की बात कभी सोची है?"

"जी नहीं," वह मुसकराया। "मैं पेशेवर जहाज़ी हूं।" और यह उसने इतने गर्व के साथ कहा।

एक शाम को मैंने जहाज़ के कर्मीदल, कप्तान ओगानोव और उनके स्टाफ़ के कुछ अफ़सरों के आगे व्याख्यान दिया और अपनी कुछ कृतियों की पारदर्शियां दिखलायीं। काफ़ी सवाल पूछे गये। एक युवा मल्लाह चाहता था कि मैं यह बतलाऊं कि मैं मज़दूर आंदोलन में कैसे आया, शांति आंदोलन में मुझे क्या चीज़ लायी और मैं सोवियत संघ का मित्र कैसे बना।

"मेरे सिर पर पुलिसवाले का डंडा पड़ा और सोचता हूं कि उसीसे मैं होश में आ गया," मैंने जवाब दिया और सभी हंस पड़े। मैंने अपनी बात साफ़ की, "१९२७ में एक दिन तीसरे पहर न्यूयार्क में घूमते-घूमते मैंने अपने को साक्को और वेंज़ेट्टी की प्राणरक्षा के जलूस में पाया। पुलिस ने इस जमाव को बड़ी बेरहमी के साथ तितर-बितर किया था।"

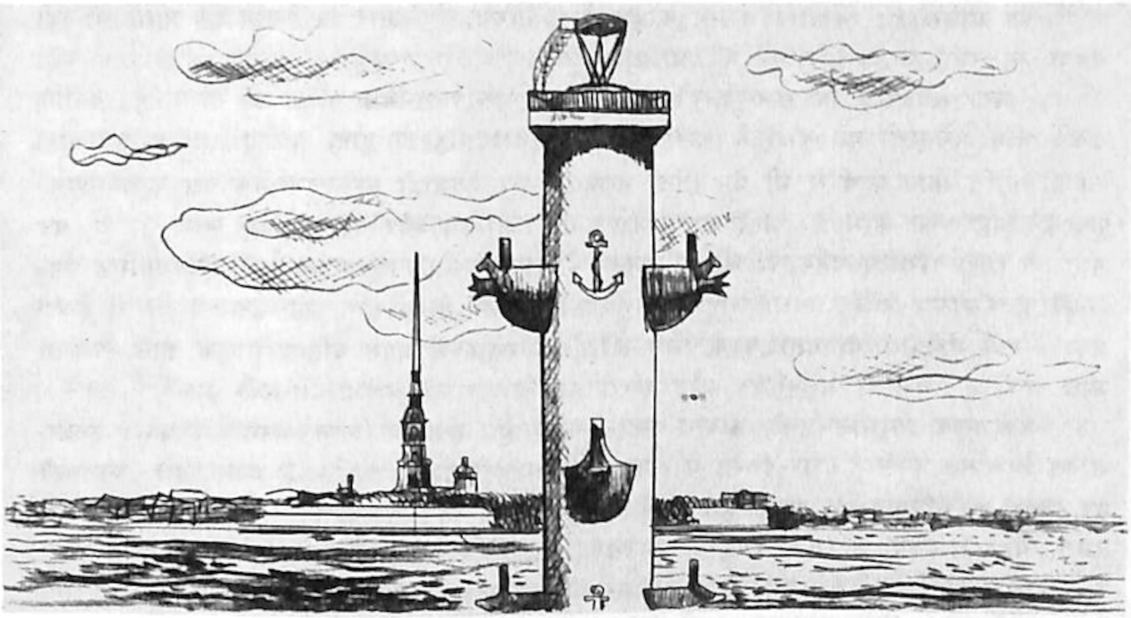
हमारी इस बैठक के बाद मैंने कर्मीदल को शांति की विषयवस्तु पर बना अपना एक उत्कीर्ण चित्र भेंट किया। अगले दिन मुझे एक प्रत्युपहार – एक जहाज़ी की कृति – दिया गया। अब मैं कोई पर्यटक नहीं रह गया था – मुझे जहाज़ियों ने अपना लिया था और यह बहुत अच्छा लग रहा था।

एक दिन मैं खेल प्रतियोगिता देख रहा था। मुझे बताया गया कि सर्वोत्तम खिलाड़ी विभिन्न बंदरगाहों में होनेवाली प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। विजेता अपनी क्षमता के अनुसार खेलकूद में हर संभव ऊंचाई पर पहुंच सकता है। प्रतियोगिता के अंत में कप्तान ओगानोव ने विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान किये।

मुझे मास्को की एक पहली यात्रा के दौरान सोवियत खेलकूद समिति के उपाध्यक्ष व्लादीमिर कोवाल के साथ हुई अपनी बातचीत की याद आ गयी।

उन्होंने कहा था, "खेलकूद समझ और मैत्री हासिल करने के लिए जनगण के साथ और जनगण के बीच संपर्क का एक श्रेष्ठ साधन है। हम अपने खिलाड़ियों को शांति और सद्भावना के दूत समझते हैं।

"ऑपेरा या बैले की बात ले लीजिये – उनमें वे ही लोग जाते हैं, जिनकी इनमें से किसी न किसी कला में विशेष दिलचस्पी होती है। लेकिन खेल के मैदान में, फ़ुटबाल मैच में डाक्टर, मज़दूर, कलाकार और किसान – सभी आते होंगे। यह हमारे सारे ही लोगों के व्यापकतम एकी-



करण का साधन है। किशोरी ओल्गा कोर्बूत के अवतरण को संसार के कितने ही भागों में बड़ी संख्या में सभी तरह के लोगों ने देखा था।

"मेरा ख़याल है कि खेलकूद को एक तरह से एक कला-विधा माना जा सकता है, क्योंकि उनमें भाग लेनेवालों को न सिर्फ़ अपने नैपुण्य के शिखर पर ही होना चाहिए, बल्कि कलाकारों की ही भांति अपने कार्य से भी प्रेम होना चाहिए। और खिलाड़ी का रचनात्मक पक्ष बहुत महत्व-पूर्ण है। यह सख़्त काम है – घंटों का प्रशिक्षण और अभ्यास और मेहनत। यह सख़्त तो है, पर जीत से यह परितोष देनेवाला भी हो सकता है। हमारे यहां कई बढ़िया और विश्वप्रसिद्ध खि-लाड़ी हैं – ओल्गा कोर्बूत और ल्यूद्मीला तुरीश्चेवा, जो सत्रह साल की उम्र में ही दो स्वर्ण पदक – एक यूरोपीय चैंपियनशिप के लिए और एक स्कूल में अपने बढ़िया शैक्षिक कार्य के लिए जीत चुकी है, वसीली अलेक्सेयेव और वलेरी बोर्ज़ोव भी बड़े बढ़िया खिलाड़ी हैं।

"खेलकूद अनुशासन की भावना प्रदान करते हैं, सफलता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा-शक्ति विकसित करते हैं। हर किसी में समान प्रतिभा नहीं होती। कोई-कोई अपने ज़िले, कारख़ाने या स्कूल के चैंपियन बन सकते हैं। इससे आत्मविश्वास की, संतोष की भावना पैदा होती है। हमारे यहां खेलकूद का एक राष्ट्रीय संगठन (ग-त-ओ – श्रम तथा प्रतिरक्षा के लिए तैयार) है, जिसमें बच्चों से लेकर वृद्धों तक डेढ़ करोड़ से ज़्यादा लोग हैं। इसका सदस्य बनने के लिए व्यक्ति को अपने विशिष्ट आयु-वर्ग के लिए अभीष्ट परीक्षा में उत्तीर्ण होना होता है।

"मेरे ख़याल में पेशेवर और ग़ैर-पेशेवर खिलाड़ियों में बहुत फ़र्क़ होता है। कुछ पेशेवर खेल नैपुण्यतापूर्ण करतबों के प्रदर्शन के साथ सरकस जैसे होते हैं और दर्शक मंच के पीछे की उन तरकीबों को नहीं देख पाते, जो कभी-कभी परिणामों को प्रभावित करती हैं।

"हमारे यहां सोवियत संघ में पेशेवर खेल नहीं हैं – मतलब, लोगों को प्रतियोगिता करने के लिए पैसा नहीं दिया जाता और वे उससे अपनी रोज़ी नहीं कमाते। मोइसेयेव तथा अन्य मंड-लियों की ही भांति वे भी ग़ैर-पेशेवर समूहों – कारख़ानों और फ़ार्मों – से अपने लोग लेते हैं। इस तरह हमारे खिलाड़ी जनसाधारण की क़तारों से प्रमुख राष्ट्रीय खेलकूद समाजों में आते हैं। हमारे कोई आधे बढ़िया खिलाड़ी उच्चशिक्षा प्राप्त हैं। उनमें से कुछ कारख़ानों से संबद्ध हैं। सभी मामलों में प्रतियोगिता की अवधि के लिए उन्हें छुट्टी मिलती है। वे अपना वेतन पाते रहते हैं। खेल संगठन दौरे पर जानेवाले खिलाड़ियों का सारा सफ़र ख़र्च और गुज़ारे के दूसरे ख़र्च मुहैया करता है।"

समुद्र पार करने के ज़्यादातर दिन धूपदार थे और मैं डेक पर बैठे पढ़ने का मज़ा लेता या यात्रा की तैयारी के पिछले तूफ़ानी हफ़्तों के बाद बस आराम ही करता रहा।

जहाज़ पर एक लेखक भी सवार था, जो इस यात्रा के बारे में दैनिक 'न्यूयार्क टाइम्स' के लिए वृत्तांत तैयार कर रहा था। मैं जानने को उत्सुक था कि इस युवक को यह सफ़र कैसा लग रहा है। बाद में मैंने उसके वृत्तांत को पढ़ा, जिसमें ऐसी विलक्षणताएं भी थीं:

"क्या हमें 'बग' किया गया?" (मतलब: क्या हम पर जासूसी की गयी?) "अपने कमरे की सरसरी छानबीन मुझे टेलीफ़ोन तक ले गयी। टेलीविज़न पर जेम्स मैक्कार्ड की तरह

जब मैंने उसके चोंगे को खोला, तो मैंने देखा कि उसमें से कुछ टुकड़े निकलकर बाहर गिर गये। मैंने उन्हें दराज़ में रख दिया, अब बेकार चोंगे को वापस रख दिया और छानबीन बंद कर दी। किसी भी सूरत में, कमरे में रूम सर्विस का बटन होने की वजह से मुझे टेलीफ़ोन की ज़रूरत भी क्या थी!"

जहाज़ कुछ घंटे ली हाव्र में ठहरा, अगले दिन टिल्सबरी में और २२ जून को ब्रेमेरहावेन में ठहरा।

२४ जून की सुबह हम लेनिनग्राद में घाट पर पहुंच गये। वहां हमारे मित्र – कला इतिहासज्ञ तान्या यूर्येवा और ग्राफ़िक कलाकार वेत्रोगोन्स्की – गुलदस्ते हिलाते उपस्थित थे। अपना सामान लेने के बाद हम कार में बैठकर पिछली सदी के अंत में नवकला शैली में निर्मित होटल अस्तोरिया चले गये, जो सेंट पीटर्सबर्ग के अभिजातों का भूतपूर्व मिलनस्थल था। इसी जगह को हिटलर ने अपने "विजय भोज" के लिए चुना था।

"निमंत्रणपत्र तो छप भी चुके थे," तान्या ने कहा, "सिर्फ़ नात्सियों को उन्हें भेजने का मौक़ा ही नहीं मिल पाया।"

मध्याह्न भोजन के बाद लीला तो सामान खोलने के लिए ऊपर चली गयीं और तान्या के साथ मैं अपनी चिरप्रतीक्षित सैर के लिए निकल पड़ा।

अस्तोरिया इसाकियेव्स्काया चौक में प्रसिद्ध गिरजे के पास ही स्थित है। सामने ही एक छोटा सा फूलोंभरा पार्क है, जहां सम्राट निकोलस प्रथम की अश्वारोही प्रतिमा है। उसके घोड़े का पिछला हिस्सा लेनिनग्राद सोवियत की तरफ़ है, जो पहले मारिईन्स्की प्रासाद हुआ करता था।

गिरजे के सामने से निकलते हुए मैंने पोर्टिको के स्तंभों में गुदने के से दाग़ देखे। कहीं-कहीं क्षत जगहों में पत्थर के नये टुकड़े कुशलतापूर्वक लगा दिये गये थे। "यह नाक़ाबंदी की यादगार है," तान्या ने बताया। "नात्सियों की रोज़ की गोलाबारी की।"

हमने दिसंबरी उद्यान में होते हुए ऐडमिरल्टी प्रोस्पेक्त (नौकाधिकरण महामार्ग) को पार किया। इसी जगह १४ दिसंबर, १८२५ को सम्राट के विरुद्ध अभिजात कुलों के अफ़सरों ने विद्रोह किया था।

हम नेवा की ओर मुख किये अश्वारोही पीटर की प्रतिमा की बराबर से गुज़रकर नदी को पार करके दूसरे तट पर वसील्येव्स्की द्वीप पर आ जाते हैं, जहां नदी तट के साथ-साथ कई सुंदर पुरानी इमारतें हैं – नृविज्ञान संग्रहालय, १७२२ में निर्मित विज्ञान अकादमी, नवाब मेंशी-कोव का भूतपूर्व महल, ललित कला अकादमी।

हमने प्राचीन यूनानी मूर्तियों की प्रतिकृतियों से भरी ड्योढ़ी में प्रवेश किया, तो तान्या बोली, "रैक्टर आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

"आप छात्रों की अंतिम परीक्षाएं तो नहीं देखना चाहेंगे?" दूसरी मंज़िल के गलियारों में चलते-चलते ऊंचे सफ़ेद दरवाज़े की तरफ़ जाते हुए रैक्टर ने पूछा।

फ़र्श तक लंबी खिड़कियोंवाले एक बड़े अलंकृत कमरे के बीच में एक लंबी मेज़ के आसपास कुछ लोग बैठे हुए थे। वेरेइस्की अध्यक्षता कर रहे थे और वेत्रोगोन्स्की मेज़ के सामने अर्धवृत्त बनाकर बैठे हुए छात्रों में से एक के कार्य के बारे में बता रहे थे।

मैंने प्रवेश किया, तो वेरेइस्की अचरज दिखाते हुए मेरी अभ्यर्थना में खड़े हो गये।

"अहा, आप! बड़ी अच्छी मुलाक़ात हुई!" उन्होंने अंग्रेज़ी में कहा। "आइये, हमारे साथ बैठये, न!"

कार्रवाई कुछ देर के लिए स्थगित कर दी गयी और वेरेइस्की ने मुझे सबसे परिचित कराया और अनुरोध किया कि मैं कुछ शब्द कहूं। अपने आगमन के पहले ही दिन इस अवसर पर उपस्थित होना – यह मेरे लिए एक अप्रत्याशित आश्चर्य था।

वेरेइस्की से मेरी मुलाक़ात न्यूयार्क में तब हुई थी, जब वह टाइम्स-लाइफ़ बिल्डिंग में होनेवाली सोवियत ग्राफ़िक कला प्रदर्शनी के साथ आये थे। एक दिन तीसरे पहर हम मेरे विक्रेता, ए० सी० ए० गैलरी के निदेशक के साथ मध्याह्न भोजन करते हुए सोवियत चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन करने की संभावनाओं पर विचार कर रहे थे। मुझे अब याद आता है कि किस तरह अचानक ओरेस्त मेरी तरफ़ मुख़ातिब हुए थे और बोले थे, "एंटन, लगता है कि कुछ असाधारण बात हो गयी है। ज़रा बार के कोने में जमा होते इन लोगों की तरफ़ तो देखो।"

मैं मुड़ा, तो मैंने देखा कि एक छोटे से रेडियो के आसपास कई लोग इकट्ठा हैं और कई अन्य जल्दी-जल्दी अपनी सीटों से उठकर उस भीड़ की तरफ़ आ रहे हैं। "मैं जाकर देखता हूं," मैंने उठते हुए कहा। तब मैंने राष्ट्रपति कैनेडी को गोली मारे जाने की पहली ख़बर सुनी। रिपोर्ट भावविह्वल, असंयमित थी, आदमी की आवाज़ की तीखी उत्तेजना दुख की भावना से भरी हुई थी। लगभग तभी मैंने एक पादरी की आवाज़ सुनी, राष्ट्रपति की मृत्यु की पहली पुष्टि।

हमने अपनी शराब को बिन पिये ही छोड़ दिया। वेरेइस्की लपककर संयुक्त राष्ट्र संघीय सोवियत मिशन चले गये। हम रेस्तारां के दरवाज़े की तरफ़ जा रहे थे कि तभी हमने एक औरत को देखा, जो चलते-चलते रोती जा रही थी। वेरेइस्की ने अपनी अमरीकी यात्रा की जो चित्रमाला बनायी थी, उसका यह एक स्मरणीय चित्र था।

मैं जान गया था कि मैं एक नाजुक मौक़े पर यहां आया हूं। यहां, इस कमरे में, इन युवा कलाकारों की क़िस्मतों का फ़ैसला किया जा रहा था।

"हम नयी प्रतिभा की क़दर करते हैं," मैंने कहा। "हमें युवा लोगों की हर अच्छी कृति को देखकर ख़ुशी होती है। आपको अपनी पसंद के सृजन-क्षेत्र में अपने को विकसित करने की असीम संभावनाएं प्राप्त हैं। मैं आप सबकी सफलता की कामना करता हूं। मैं आपके भले की कामना करता हूं।"

हम उस इमारत के बाहर आये, तो तान्या और मैं नदी के बहुत से पुलों में से एक पर मुड़ गये। "क्या यह वही पुल है, जहां आइज़ेन्स्टाइन ने 'अक्तूबर' का वह प्रसिद्ध दृश्य फ़िल्माया था, जिसमें पुल के धीरे-धीरे खुलकर ऊपर उठते समय उस पर से मरा हुआ घोड़ा नीचे फिसलते दिखाई देता है?" मैंने तान्या से पूछा।

"नहीं," उसने जवाब दिया। "वह पुल उधर ऊपर है।"

हम अपनी अकादमी की यात्रा की बात कर रहे थे। "जब मैं वहां पढ़ती थी, तो अपने मित्रों से कहा करती थी कि कलाकार बनने के लिए आदमी को ज़िंदगी को जानना चाहिए।

आदमी के पास गहरी, सार्थक अनुभूति होनी चाहिए, ताकि वह उदासी को, या शायद दुख को भी अनुभव कर सके। मिसाल के लिए, वान गोग को, या कैथी कोलवित्स को ही ले लीजिये," तान्या ने कहा।

"सही है," मैंने जवाब दिया। "लेकिन कोलवित्स एक असाधारण परिवेश से आयी थी। उसका पति बर्लिन के एक मज़दूर इलाक़े में डाक्टर था। निर्धनता से घिरी वह लोगों के दैनिक संघर्ष को देखती थी, उसे समझती थी, उसे चित्रित करती थी – दैनंदिन जीवन, भूखे बच्चे, ग़रीबी। आपके यहां परिस्थिति बिलकुल ही भिन्न है। आपके देश ने ग़रीबी का, भूख का ख़ात्मा कर दिया है। आपके यहां ग़रीबों के पिचके हुए गालोंवाले बच्चे या भिखारी नहीं हैं। आपके यहां कोई शोषक वर्ग नहीं है, जिसका जार्ज ग्रोत्स ने इतना सजीव चित्रण किया था। मेरे ख़याल में, कलाकार के लिए वहां जीवन के नकारात्मक पहलुओं को दिखाना आसान है, जहां वैचित्र्य, संघर्ष, भावनात्मक टकराव होता है। इसके विपरीत, सकारात्मक होना, सदा सकारात्मक रहना, जैसे कि यहां के कलाकार करते हैं, ज़्यादा मुश्किल है। आप कैसे कह सकते हैं कि जीवन बिना किसी विपर्यास के सुंदर होता है?"

तान्या जवान और ज़िंदादिल है। उसमें बस में कर लेनेवाली सहजता और सौम्यता है। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी हैं और तिरछी भौंहें उसके माथे पर फैली हुई हैं। उसके होंठ भरे हुए और मोहक हैं और गाल दो लाल सेबों जैसे हैं। उसकी तरफ़ देखते हुए मुझे बर्लाख की मूर्तियों के चेहरे दिखाई देते हैं। वह एक योग्य कला-इतिहासज्ञ है और उसका विशेष विषय अमरीकी ग्राफ़िक चित्रकला है। मैंने उसके बारे में पहले-पहल राकवैल कैंट से सुना था, "आपको लेनिनग्राद में तान्या यूर्येवा से ज़रूर मिलना चाहिए," उन्होंने मुझसे कहा था।

अकादमी में उसका शोध प्रबंध अमरीकी चौथे दशक के जान रीड क्लबों का इतिहास था, एक ऐसा इतिहास कि जिसने हमारे अमरीकी कला-इतिहासज्ञों को जागृत करना शुरू कर दिया है। उसने बताया, "मैंने आर्ट यंग और बॉब माइनर के बारे में पहले-पहल राकवैल कैंट से जाना था। मैं उनसे तब मिली थी, जब वह लेनिनग्राद आये थे। मुझे वह एक कलाकार और एक आदमी के नाते अच्छे लगे। उस समय मैं अकादमी में पढ़ रही थी। एक बार जब मैं पुस्तकालय गयी, तो मैंने जॉन रीड क्लब का सूचीपत्र देखा। मैंने उसे देखा, तो इन कलाकारों के बारे में ज़्यादा जानने की इच्छा हुई। मैंने जाकर 'न्यू मासेज़' के अंकों को देखा। उनमें मुझे अन्य कलाकारों – ग्रोपर, फ़्रेड एलिस, गैलर्ट, फ़िल बार्ड और आपकी कृतियां मिलीं।"

उसने आगे कहा, "मैंने अमरीकी राजनीतिक कला की शक्तिशाली परंपरा को अनुभव किया। वह सचमुच विशिष्ट, अपने वैविध्य और नज़रियों में कल्पनाप्रवण और गहरी राजनीतिक समझ दर्शानेवाली है। अब मैं अकादमी में अमरीकी कला के इतिहास में अठारहवीं सदी से शुरू होनेवाले दौर के बारे में – कैप्ले, बेंजामिन वैस्ट, टामस ईकिन्स तथा अन्य कलाकारों के बारे में – पढ़ाती हूं।"

इस तमाम वक़्त में हम धीरे-धीरे चलते हुए आख़िर फिर होटल और गिरजे के बीचवाले छोटे से पार्क में पहुंच गये थे। "आइये, ज़रा बैठ लें," मैंने सुझाव दिया। मुझे गिरजे में घुसने

के लिए प्रतीक्षारत दर्शकों की लंबी लकीर दिखाई दे रही थी। "सचमुच, यह बड़ा सुंदर है," मैंने कहा।

"हां, है," उसने जवाब दिया। "इसे संसार की श्रेष्ठतम वास्तुकृतियों में एक माना जाता है। और कलाओं के समन्वय के बारे में मौजूदा बहस के संदर्भ में तो यह बहुत रोचक, उसकी मिसाल भी है। मूर्तिकला, भित्तिचित्रण और चित्रकला वास्तुकला का अभिन्न अंग है। यह सचमुच बहुत सुदर है। जानते हैं, इसे भूदासों ने बनाया था। वे बड़ी-बड़ी देर तक, साल के उस भाग में दिन की रोशनी में जब तक संभव होता था, – कभी-कभी तो सोलह-सोलह घंटे – काम करते थे। कहा जाता है कि इसके निर्माण में दस हज़ार से ज़्यादा आदमियों की जानें गयी हैं।"

"लेकिन इसकी सुंदरता को देखते वक़्त इसकी बात सोचना मुश्किल है," मैंने कहा।

हम खिले हुए फूलों के पास बेंच पर बैठे थे। सफ़ेद क़मीज़ें और लाल टाइयां बांधे पायनियरों का एक जत्था सामने से गुज़र गया। कुछ देर बाद जाने का समय हो गया।

"मैं कुछ दिन में प्रकाशकों से मिलने मास्को आऊंगी, तब भेंट होगी," तान्या ने कहा। मैंने उसे टैक्सी में बिठाया और फिर अस्तोरिया में चला गया।

वीर नगरी

कलाकार संघ की लेनिनग्राद शाखा के विदेश विभाग की सचिव नीना सीरिख ने कहा, "लेनिनग्राद प्रवास के दौरान आपको अनीकूशिन का बनाया नया स्मारक ज़रूर देखना चाहिए। मुझे यक़ीन है कि अगर उन्हें पता हो कि आप यहां हैं, तो वह आपसे ज़रूर मिलना चाहेंगे। मैं उन्हें फ़ोन कर दूंगी।"

अगले ही दिन हमें आने का निमंत्रण मिल गया।

टैक्सी एक बड़ी चौकोर इमारत के बाहर जाकर खड़ी हो गयी। हम अंदर गये, तो मैंने अब तक मैं जितने भी स्टूडियो में गया हूं, उनमें संभवतः सबसे बड़े को देखा।

"नगर सोवियत ने इसे मेरे लिए बनाया है, जिससे हम इस परियोजना को तैयार कर सकें," हमसे मिलते हुए अनीकूशिन ने कहा। कमरे के एक कोने में एक बड़ा पीला क्रेन खड़ा हुआ था, कई सहायक एक मूर्ति की बड़ी प्रतिकृति बना रहे थे, कमरे में सभी तरफ़ लकड़ी के मंचों पर प्लास्टिक से ढंकी मिट्टी की कई बड़ी आकृतियां खड़ी हुई थीं।

"यह ऐसा दिखाई देगा," अनीकूशिन ने एक प्लास्टर प्रतिरूप की तरफ़ इशारा किया – लेनिनग्राद के नाक़ाबंद निवासियों की स्मृति में एक बड़ा स्मारक-समूह। विशाल विस्तार के बीचों-बीच एक ऊंचे मंच पर दो आकृतियां – लेनिनग्राद के रक्षक। उनकी दोनों तरफ़ – पार्टीज़ानों के दस्ते, मज़दूर पलटनें, गोलाबारूद कारखानों में काम करते लोग, कारखानों में काम करती औरतें, घायलों की सेवा-शुश्रूषा करती नर्सें। इन सबके बीच में एक छोटे से बच्चे की – चार-पांच साल के लड़के की – आकृति।

"मैंने इसकी एक प्रतीक के रूप में कल्पना की है – फिर से जन्मा नगर और लोग। इस



आकृति को मैंने कुछ महीने पहले अपने बेटे को देखकर बनाया था। लेकिन, जानते हैं क्या, वह इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि इस काम को जितनी जल्दी पूरा कर लूं, उतना ही अच्छा है!"

"मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं," मैंने उनसे कहा। "मैं बेहद प्रभावित हुआ हूं और मुझे खुशी है कि इसमें नाटकीय शौर्यता नहीं है। लेकिन बेशक, आपके कृतित्व में वह कभी थी भी नहीं।" फ़िर मैंने उनसे पूछा, "और चेख़ोव? चेख़ोव का क्या हुआ? मुझे आपके उस छोटे माडल की याद है, जिसे मैंने पहली बार आपके स्टूडियो में आने पर देखा था – अब यह अच्छे-ख़ासे कुछ साल पहले की बात हो गयी है।"

अनीकूशिन मुसकरा दिये। "आइये, आप देख लेंगे।"

हमने साथवाले कमरे में प्रवेश किया – यह भी स्टूडियो ही था, पर छोटा। यहां उनका चेख़ोव था। पूरा बदन, लंबा और पतला, पत्थर के एक ब्लाक पर टिका हुआ, दाहिने हाथ की उंगलियां सतह को छूती सी हुईं। ध्यानस्थ, विचारमग्न, एक ऐसे आदमी की आकृति कि जो इतनी अंतर्दृष्टि, इतनी संवेदना के साथ लिखा करता था। यह सचमुच वही चेख़ोव थे, जिन्हें मैं जानता और प्यार करता था। मैंने मूर्ति को सभी तरफ़ से देखा – माडलिंग में सशक्तता से उभरा हुआ कोट देह को अभिव्यंजना प्रदान कर रहा था। "शायद ज़रा ज़्यादा ही," अनीकूशिन ने कहा, "बहुत सख़्त।"

"नहीं!" मैं चिल्ला उठा, "इसे हाथ न लगाइये। यह इतनी सजीव है।" अनीकूशिन ने अपनी विचारमग्न आंखों से देखा। "शायद आप ठीक कहते हैं," उन्होंने कहा। "मैं फिर सोचूंगा।"

हम वहां से जल्दी ही लौट आना चाहते थे, क्योंकि हम जानते थे कि वह क़रीब आती समय-सीमाओं के भीतर काम कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने कहा, "जी नहीं, आपको हमारे साथ खाना खाना होगा। हम आपका इंतज़ार कर रहे थे।"

बैठक में हम उनकी सुंदर पत्नी से मिले, जो स्वयं एक प्रसिद्ध मूर्तिकार हैं। मेज़ पर खाना लग भी चुका था। अनीकूशिन ने अर्मीनियाई कोन्याक की बोतल खोली। वह शाम बहुत अच्छी तरह गुज़री।

जब हम जाने लगे, तो वह अपने स्टूडियो में ग़ायब हो गये और चेख़ोव की एक छोटी सी प्रतिमा लेकर लौटे। "यह आपके लिए है," उन्होंने कहा।

एक और अविस्मरणीय दिन लेनिनग्राद शांति समिति के कार्यालय में बीता, जो एक भूतपूर्व महल में स्थित है।

भवन के बड़े सभागृह में, जो कभी बॉल-नृत्य कक्ष हुआ करता था, हमने लेनिनग्राद की रक्षा के बारे में एक वृत्तचित्र देखा – मुसीबतों, भूख और मौत और जनता के शौर्य की दस्तावेज़। नात्सी फ़ौजों के घेरे में वे बमबारी के सतत ख़तरे में रहते थे। लेकिन उन हालतों में भी वे घेरे के ९०० दिन रहते रहे, काम करते रहे, बीमारों की देखभाल करते रहे, स्कूलों में पढ़ाते रहे, थियेटरों में अभिनय करते रहे...

आखिर लाल सेना ने प्रत्याक्रमण करके घेरे को तोड़ दिया और नात्सी फ़ौजों को खदेड़ दिया, जो अपने जनरल स्टाफ़ द्वारा प्रत्याभूत और अपनी पिछली सफलताओं से आश्वस्त हो तेज़, तूफ़ानी जीत हासिल करने के लिए आयी थीं।

जब अतीत की छायाओं ने परदे पर दौड़ना बंद कर दिया और बत्तियां जल गयीं, तो मैं इस अहसास से अपने को ध्वस्त अनुभव करने लगा कि मैं इस समय यहां बैठा हुआ हूं, और वे लोग, वे भूख, ठंड और मौत के पंजों में जकड़े लोग भी यहीं मौजूद थे! सिर्फ़ वक़्त के दौर ने हमें जुदा कर रखा था। उनकी मुसीबतों की तुलना में अपना आराम मुझे अटपटा लगने लगा। अपने भावातिरेक के मारे मैं बेबस हो गया। जब मैं खड़ा हुआ, तो मैंने मन में सोचा कि चलो, कोई बात नहीं – आखिर कोई मैं ही तो पहला आदमी नहीं हूं कि जिसे कमरे से निकलते वक़्त रोते हुए देखा गया हो।

और इस गहरे और मार्मिक अनुभव को जारी रहना था, क्योंकि कुछ ही बाद मेरी उसी इमारत के एक और हिस्से में, एक छोटे कमरे में दो लेखिकाओं – येलेना वेल्तोमोवा और मारिया रोलनिकाइते, थियेटर निदेशक वेरा तोलस्ताया और पार्टीज़ान नेता वसीली सिलाचेव से मुलाक़ात हुई, जो इन दिनों और वर्षों को देख और झेल चुके थे।

"फ़िल्म में मैंने युद्ध के शुरू होने के दिन, २२ जून को, 'रोमियो और जुलियट' दिखाये जाने के बारे में एक पोस्टर देखा था," मैंने कहा।

"हां, और थियेटर इसे नाक़ाबंदी के पूरे दौर में दिखाता रहा था," थियेटर निदेशक ने जवाब दिया।

जैसे-जैसे बातचीत चलती गयी, मैं नोट लेता गया। मैं हर अलग वक्ता का उल्लेख नहीं करूंगा, पर बातचीत को ऐसे ही देता रहूंगा, मानो उसमें हम सभी मौजूद हैं।

"मुझे याद है कि मैंने यह बताने का कोई तरीक़ा निकालने की कोशिश की थी कि उन दिनों कैसा था, और किसीने कहा था, 'यह हीरोशिमा के ६०० दिनों जैसा है'।"

"हमारी बच्ची ने बहुत-बहुत लंबे समय तक बोलना शुरू नहीं किया। और जब वह बोली, तो उसका पहला शब्द था – बम।"

"पहली सरदियों में बिजली की कमी थी। ट्रामें बंद हो गयीं, परिवहन बंद हो गया, सड़कें बिन हटायी बर्फ़ की पहाड़ियां बन गयीं। लेकिन चलना सिर्फ़ ज़रूरी ही नहीं था, वह महत्वपूर्ण भी था। मैं कुछ क़दम चलती, रुक जाती और सोचती कि अब और न चल पाऊंगी, और फिर देखती कि बीस क़दम और चल सकती हूं।"

"रेडियो संचार का मुख्य साधन बन गया था। वह जनता के मनोबल और साहस को बनाये रखने का एक साधन था। मुझे याद है कि एक बार मैंने एक कविता लिखी थी – 'नागरिको, अपने कॉलर नीचे करो!' और उसे रेडियो पर पढ़ा था। बात यह थी कि हर कोई अपने चेहरे को अपने ओवरकोट में गड़ाये चला करता था, और वसंत आ रहा था। इसलिए असल

में हमने कहा था – 'लेनिनग्राद के नागरिको, अपने सिर उठाओ!' और उसी वसंत में हमने नाक़ावन्दी को तोड़ भी दिया!"

"एक ठंडे, अनगरमाये स्टूडियो में एक कलाकार मुक्ति दिवस पर शहर की समारोही सजावट के लिए स्केच बना रहा था।"

"जब शोस्तकोविच ने अपनी सातवीं सिंफ़नी पूरी की, तो हमने चाहा कि उसका यहां वादन किया जाये। याकोव बुदाश्किन वाद्यवृंद मंगठित करने में लग गये (हमारे फ़िलहार्मोनिक् आर्केस्ट्रा को शहर से हटाकर भेज दिया गया था)। उन्हें शहर में ही कई संगीतज्ञ मिल गये और कुछ उन्होंने शहर की रक्षा कर रही सेना में ढूंढ़ लिये। वे लोग जमानेवाली ठंड में अभ्यास करते थे और ९ अगस्त, १९४३ के दिन शोस्तकोविच की सातवीं सिंफ़नी हमारे घिरे हुए शहर में सुनी गयी। मुझे याद है कि संगीत की धुनों के साथ-साथ तोपों की गोलावारी की आवाज़ आ रही थी, लेकिन हम उसे इस तरह बैठे सुनते रहे, मानो वह हमारी ही ज़िंदगियों के बारे में, जनता के साहस, जनता की शक्ति के बारे में हो। मैं नहीं जानती कि क्या संगीत के इतिहास में कभी कोई ऐसा भी क्षण रहा होगा, जिसका हमने तब अनुभव किया था।"

"एक लड़की का पिता मोर्चेबंदी की अग्रिम पांतों में था। उसकी बेटी बर्फ़ में, कभी-कभी तो गोलाबारी के दौरान, रेंगकर उसके पास जाया करती थी, महज़ इसलिए कि पिता के साथ हो और पिता रोटी के अपने दैनिक राशन का कुछ भाग उसको दे सके।"

"लेनिनग्राद संगीत-कामेडी थियेटर नाक़ाबंदी के पूरे दौर में काम करता रहा। कभी-कभी थियेटर जाता कोई-कोई अभिनेता भूख से सड़क पर ही गिरकर मर जाता था या जर्मन बम से मारा जाता था। मगर थियेटर अपना काम करता रहा..."

"मुझे जर्मन पांतों के पीछे एक पार्टीज़ान इकाई संगठित करने का आदेश दिया गया था। हम सिर्फ़ नात्सी फ़ौजों से लड़ते और उन्हें त्रस्त ही नहीं करते थे, बल्कि लेनिनग्राद के आसपास के गांवों से शहर के लिए खाद्य-सामग्री भी इकट्ठा करते थे। पार्टीज़ान जनता के समर्थन के बिना ज़िंदा नहीं रह सकते थे। और यह समर्थन हमें प्राप्त था। हमने गाड़ियों का काफ़िला तैयार किया, हमारे भेदियों ने जर्मन पांतों में एक कमज़ोर स्थल का – यह दलदलों में था – पता लगाया। हमने कुछ जर्मन सैनिकों को मारा और खाद्य-सामग्री शहर में पहुंचा दी। मेरे दस्ते में एक

पादरी भी था। मुझे याद आता है कि एक बार हमने सुना कि कोई गांव जर्मनों द्वारा जला दिया जानेवाला है। पादरी वहां देवचित्रों और पताकाओं के साथ एक धार्मिक जलूस संगठित करने के लिए चला गया। धार्मिक जलूस ने बस्ती को घेर लिया। नात्सी चकरा गये, उनकी समझ में नहीं आया कि इस स्थिति का कैसे सामना करें और इसलिए वे वहां से वापस चले गये। इस तरह हमने गांव को बचा लिया।"

"जर्मन यहूदियों और जिप्सियों – बंजारों – को नष्ट करने पर तुले हुए थे। बंजारों को इसलिए कि अपनी ख़ानाबदोश ज़िंदगी की वजह से उन्हें बोल्शेविक प्रचार का वाहक और प्रसारक समझा जाता था। हमने सुना कि बंजारों के एक गिरोह को पकड़ लिया गया है और जब हम वधस्थल पर पहुंचे, तो हमने वहां मिट्टी के एक ताज़ा ढेर को हिलते देखा। हमारे पास बेलचे नहीं थे, इसलिए हमने अपने नंगे हाथों से एक युवा लड़की और कोई दस साल के लड़के को ज़िंदा खोद निकाला! लड़की तो कुछ बाद में मर गयी, पर लड़का – कोस्त्या – हर वक़्त लड़ाइयों और झड़पों के दौरान हमारे साथ रहा। वह जानता था कि हम जिन जर्मनों को मारते हैं, उनके काग़ज़ों को इकट्ठा करके अपने सदर मुक़ाम भेज देते हैं, जिससे वे यह जान सकें कि मोरचे पर कौनसी जर्मन टुकड़ियां हैं। जैसे ही वह किसी जर्मन को गिरते देखता, वह काग़ज़ लेने के लिए रेंगता हुआ उसकी लाश पर पहुंच जाता। एक दिन वह मर गया – बर्फ़ में होकर रेंगते समय वह शत्रु द्वारा मारा गया।" – उस आदमी ने अपने हाथ को इस तरह उठा दिया कि मानो वह इस याद को रोकना चाह रहा हो, और फिर धीरे-धीरे उठकर वह हमसे दूर – कमरे के उस कोने में चला गया और हमारी तरफ़ अपनी पीठ करके खड़ा हो गया। "बात यह है कि इतने साल बाद भी यह याद इतनी गहरी तक़लीफ़ दे सकती है," किसीने कहा। "वह बड़े मज़बूत, बड़ी इच्छा-शक्तिवाले आदमी हैं। वह निडर हैं, लेकिन फिर भी वह कभी-कभी रो सकते हैं। हम सभी रो सकते हैं।"

"मुझे यह लगता था कि अगर मेरी जगह कोई और ज़िंदा बच रहा होता, तो शायद वह मेरी बनिस्बत कहीं ज़्यादा करता..."

"जब मेरे पति मरे, तो मैं जान गयी कि मुझे दो लोगों के लिए जीना होगा। मैं अपने बेटे को पालती, अपने पति की तरफ़ से पालती, उनके हिस्से का काम करती। बहुत से लोगों के मनों में यही विचार था।"

"मेरे बेटे को छुटपन में शहर की खिड़कियों पर टेप के क्रॉस लगे देखने की याद थी। बाद में जब उसने शहर का पुनर्निर्माण होते देखा, तो वह पूछता कि नये मकानों की खिड़कियों पर क्रॉस क्यों नहीं हैं..."

"उन दिनों के बारे में आज भी बात करना मुश्किल है। कभी-कभी मुझे वे दिन इतने पास लगते हैं, इतने पास कि लगभग महसूस किया जा सकता है, लेकिन फिर भी उनके बारे में बात करना महत्वपूर्ण है ..."

"जब नदी जम गयी और उसमें जहाज़ों का चलना बंद हो गया, तो जहाज़ी मोरचे पर चले गये और कुछ पार्टीज़ानों के साथ हो लिये। जर्मन इन स्याहपोश जहाज़ियों से डरते थे। वे उन्हें काली मौत कहते थे ..."

"जर्मन सोचते थे कि सार्विक दहशत फैल जायेगी। ऐसा कभी हुआ नहीं। जर्मन सोचते थे कि जब वसंत आयेगा, तो बर्फ़ में जमी पड़ी अनदफ़नायी लाशों से महामारियां फैल जायेंगी। लेकिन नगर ने अपने नागरिकों को संगठित कर लिया था और हमने अपने मृतकों को दफ़ना दिया।"

"लेनिनग्रादवालों के लिए अधभूखे काम करना मुश्किल था। लेकिन तिस पर भी काम, सामूहिक प्रयास हमें शक्ति देता था, हम में से प्रत्येक को सहारा देता था। और लोग काम करते थे – कारख़ानों में मोरचे के लिए गोलाबारूद बनाते थे, मरम्मतशालाओं में और अस्पतालों में काम करते थे, स्कूलों में बाक़ायदा पूरी पढ़ाई होती थी। और लेनिनग्राद की स्त्रियां – वे तो, हमारी आदर्श, हमारी वीरांगनाएं थीं!".

अपने एक मित्र, एक अवकाशप्राप्त अभिनेता से मैंने यह वृतांत सुना:

"लड़ाई के कई साल बाद तक भी लोगों के अप्रत्याशित पुनर्मिलन होते रहे, बिछड़े दोस्त और संबंधी मिलते रहे। घेरे के प्रारंभिक दिनों में, जब मैं मोरचे पर था, तो एक दिन मेरी पत्नी औरतों की एक टोली के साथ मोरचे पर खाइयां खोदने के लिए गयीं। वे ट्रेन पर सवार होकर शहर से कुछ दूर गयीं, उतरीं और आगे चलीं कि अचानक उन्हें सामने कुछ दूर मोटर साइकिलों पर सवार शत्रु सैनिकों का एक दल आता दिखाई दिया। सभी ट्रेन की तरफ़ वापस भागीं। मेरी पत्नी भी अपने आख़िरी दम से भाग रही थीं कि ठोकर खाकर गोले से बने गढ़े में पड़ी एक औरत पर गिर पड़ीं। वह वहीं रुक गयीं। उस स्त्री ने कहा, 'जाओ-जाओ, भागो! अपने को बचाओ! मैं नहीं जा सकती – मुझसे नहीं हिला जा रहा है।'

"मेरी पत्नी ने झुककर उसे पकड़ा और कीचड़ से खींच लिया। 'उठो, उठो!' उन्होंने बदहवासी में कहा। और फिर किसी तरह, किसी नयी ताक़त से वह उस स्त्री को कुछ घसीटतीं तो कुछ उठाये-उठाये ट्रेन तक पहुंच गयीं, जिसने चलना भी शुरू कर दिया था। लोगों ने झुककर उन दोनों को किसी तरह ऊपर खींच लिया, जहां वे दोनों बेहोश हो गयीं।

"बहुत समय गुज़र गया। एक दिन हमारे सौरस्नात नवनिर्मित नगर में सड़क पर बस के इंतज़ार में खड़े-खड़े उनका एक स्त्री पर ध्यान गया, जिसका चेहरा परिचित सा लग रहा था।



उस स्त्री ने भी मेरी पत्नी की तरफ़ देखा। अचानक उसका चेहरा खिल उठा। वह लपकी हुई मेरी पत्नी के पास आयी। 'मुझे जानती हो? मुझे पहचानती हो? तुम वही हो, जिसने मुझे गोले के गढ़े से खींचकर निकाला था, मुझे ज़बरदस्ती चलाया था। तुमने मेरी जान बचायी थी।"

"एक बार जब मैं मोरचे पर से छुट्टी पर शहर आया – मेरे ख़याल में तीन दिन के लिए, – तो आख़िरी दिन को एक ऐसी दूकान के सामने से गुज़रते हुए, जो लोगों की लायी सभी तरह की चीज़ों – निजी सामान, किताबें, ज़ेवर – को बेचा करती थी, मेरी निगाह सुंदर सुनहरे फ़्रेम में अठारहवीं सदी के एक बढ़िया चित्र पर पड़ी। यह साम्राज्ञी कैथरीन का चित्र था। मैं जीवन भर चित्र इकट्ठा करता रहा हूं और मैं जानता था कि यह बहुत अच्छा चित्र है। वह मुझे पसंद आ गया और मेरी उसे लेने की बहुत लालसा हुई। बेशक मैं जाकर पैसे से चोरबाज़ार से कुछ रोटी भी ख़रीद सकता था। लेकिन उस समय वह चित्र मेरे लिए कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण था। मैंने सेल्समैन से कहा, 'इस चित्र को लपेटकर मुझे दे दीजियेगा?' 'हमारे पास लपेटने के लिए कुछ नहीं है,' उसने जवाब दिया। और मैं इस सोच में पड़ गया कि अपनी फ़ौजी वरदी में मैं घिरे हुए लेनिनग्राद की सड़कों पर रूस की साम्राज्ञी के चित्र को लिये घूमता कैसा लगूंगा? मैंने उसे नहीं ख़रीदा, लेकिन उसके बारे में अकसर सोचता रहा हूं।"

यह सब पहले की बात है और आज नगर के भूतपूर्व विध्वंस के निशान भी देख पाना लगभग असंभव है। सिर्फ़ कुछेक इमारतों पर ही उन दिनों लगा एक बोर्ड बाक़ी है – "नागरिको, गोलाबारी के समय सड़क की दूसरी तरफ़ चला कीजिये।"

नगर ने ऐतिहासिक महत्व की नष्ट इमारतों का पुनर्निर्माण कर दिया था, उनका पूर्ण जीर्णोद्धार कर दिया था। अब सिर्फ़ पुराने छायाचित्रों और संग्रहालयों के प्रदर्शों से ही आदमी उन दिनों के शौर्य का कोई अंदाज़ लगा सकता है।

बाद में, अस्तोरिया की ड्योढ़ी में खड़े-खड़े मुझे इस शहर की एक पहलेवाली यात्रा की याद आ गयी। उस समय होटल के सामने दो आदमी पटरी में बिजली के बरमे से गढ़ा खोद रहे थे। यह बिलकुल अपने देश जैसा ही लग रहा था। न्यूयार्क में हर समय कोई न कोई सड़कों को खोदता रहता है। मैं अपना कैमरा लेकर वहां गया।

"न, न," बरमानेवाले ने हाथ से इशारा करते हुए मना किया, "हमारी तसवीर मत खींचिये। जाइये, जाकर शहर की तसवीरें खींचिये। लेनिनग्राद बड़ा ख़ूबसूरत शहर है और यहां देखने को बहुत है। आप सड़क में गढ़े की तसवीर ही क्यों खींचना चाहते हैं?"

"तुम ठीक नहीं कह रहे हो," अपने बेलचे को रखते हुए उसके साथी ने कहा। "यह सज्जन पर्यटक हैं और हमें इन्हें टोकना नहीं चाहिए।"



और इस तरह वे बहस करने लगे और मैंने तसवीर खींच ली। फिर मैंने उनसे कहा कि मैं इस तसवीर का ग़लत तरह से इस्तेमाल नहीं करूंगा। हमने हाथ मिलाये और मैं इस खूबसूरत शहर की सड़कों पर घूमने के लिए निकल गया।

ग्राफ़िक शिल्पशाला से हर्मिताज

लेनिनग्राद एक कला-समृद्ध नगर है। भव्य हर्मिताज, रूसी संग्रहालय के चित्र और देव-चित्र, बाग़ों और सड़कों की मूर्तियां, सुंदर वास्तु के पुराने महल और उनके भीतर नानारूप पार्कीट (लकड़ी के) फ़र्श और नक़्क़ाशीदार दीवारें, सजावटी बाड़ें, फाटक और जंगले, नहरें, फ़ौव्वारे और पुल – ये सब इसे दुनिया के सबसे खूबसूरत शहरों में एक बना देते हैं।

पुरातन में मुझे नेवा के अनीच्कोव पुल की कांस्य अश्वारोही प्रतिमाएं विशेषकर प्रिय हैं, जो क्लोद्त की कृति हैं और लालित्य, शक्ति और काव्यमय सौंदर्य का सुखद समन्वय हैं।

मुझे लेत्नी (ग्रीष्म) उद्यान में इतनी बड़ी संख्या में सफ़ेद संगमर्मर की मूर्तियां, राजसी कैथरीन और अपनी नीतिकथाओं के पात्रों से घिरी क्रिलोव की मूर्ति बहुत प्रिय हैं। मुझे भूतपूर्व प्रासादों के सामने छोटी टांगोंवाले शेरों पर बच्चों को चढ़ते देखना बहुत अच्छा लगता है।

अपने घोड़े पर दौड़ता पीटर महान मोना लीसा के चित्र जितना ही जग-जाना है, लेकिन परिचय के बावजूद मुझे इस स्मारक के तले गोलाकार पगडंडी पर चलते हुए सम्राट को बारी-बारी से ऐडमिरल्टी (नौकाधिकरण) की पुरानी इमारतों, नेवा और वास्तुकार रोस्सी द्वारा डिज़ाइन की गयी भूतपूर्व सीनेट और सीनोद की इमारतों और धूप में चमकते संत ईसाक के गिरजे के गुंबद के साथ बाग़ों के पेड़ों की हरियाली की पृष्ठभूमि में देखते नया ही मज़ा आता है।

नूतन में मुझे अपनी काव्यमयी मुद्रा में भव्य अनीकूशिन के पुश्किन और फ़िनलैंड स्टेशन के सामने बीस के दशक के निर्मितिवादी मंच पर ओजस्वी लेनिन की मूर्तियों में आनंद आता है।

पुराना पेत्रोग्राद कवियों और लेखकों का, बैले नर्तकियों और संगीतकारों का, चित्रकारों और मूर्तिकारों का घर था। और आज भी लेनिनग्राद में अनेक श्रेष्ठ कलाकार काम कर रहे हैं। उनका अपना कलाकार संघ और एक बड़ी विशेष ही प्रायोगिक ग्राफ़िक शिल्पशाला है।

शिल्पशाला पहली बार जाने पर मेरी अनातोली कपलान और येर्मोलायेव से भेंट हुई थी। कपलान ने साथ जाकर मुझे प्रेसें और पत्थर दिखाये थे और श्रेष्ठ मुद्रकों से मिलाया था।

"यहां काम करने का इच्छुक कोई भी कलाकार अपना नाम सूची में दर्ज करा देता है, जिससे जब कोई मुद्रक खाली होता है, तो कलाकार पत्थर पर (जिससे प्रिंट बनाया जाता है) अपने रेखाचित्र तैयार करने के लिए आ जाता है। रंगीन लियोग्राफ़ीय चित्रों के लिए कई पत्थरों का उपयोग किया जाता है और कलाकार को एक रंग पर दूसरे रंग के मुद्रण के क्रम की बड़ी सावधानी के साथ योजना बनानी होती है।

"प्रायोगिक प्रिंट दस के संस्करण में बनाये जाते हैं और वे कलाकार की प्रदर्शित करने के लिए, और चाहे, तो बेचने के लिए संपत्ति बन जाते हैं। इसके बाद वह अपना प्रिंट कलाकार

संघ के आदेशदायी निकाय को दे सकता है और अगर निकाय को लगे कि प्रिंट की काफ़ी मांग होगी, तो ५०० के संस्करण का आदेश दिया जाता है (यह प्रिंट हाथ से पत्थरों पर छापा जाता है, कलाकार द्वारा हस्ताक्षरित होता है और सजीव कला को जनता के पास लाने के लिए विशेष कला अतेल्ये में नाममात्र मूल्य पर बेचा जाता है)।"

मुझे कृतित्व का काफ़ी वैविध्य दिखाया गया – किसी कारखाने या फ़ार्म के प्रमुख व्यक्तियों के आदेश-निर्मित चित्र, स्थिर वस्तु चित्र, भूदृश्यचित्र, आकृति-रचनाएं। इनमें से कुछ कृतियां पुराने ढंग की थीं, लेकिन अधिकांश बहुत निजी क़िस्म की, सजीव और कल्पनाप्रवण थीं – हर कलाकार अपने ही ढंग से काम करता है।

येर्मोलायेव ठोस रंग की सपाट सतहों से मनोहर रूप पैदा करते हैं। उनके चित्रों का मुख्य विषय है फ़सल की कटाई और देहाती लोग। वेत्रोगोन्स्की कारखानों और निर्माणस्थलियों के दृश्य बनाते हैं। कुर्दोव की विशेषता भूदृश्यों और घुड़सवारों का सूक्ष्म चित्रण है। कपलान, जो सबसे प्रयोगधर्मी और कल्पनाशील कलाकारों में हैं, यहूदी लेखक शलोम अलेइकेम की कहानियों के आधार पर चित्र बना रहे हैं – उनकी रंगीन लिथोचित्रमाला का एक बड़ा संग्रह ५०० के संस्करण में प्रकाशित हो चुका है।

शिल्पशाला से मैं हर्मिताज देखने के लिए गया।

यहां नेवा के साथ-साथ और शिशिर प्रासाद से जुड़ी एक विशाल हरी और सफ़ेद इमारत खड़ी है, जिसके भीतर एक विश्वविख्यात संकलन है। इसके नाम के उद्गम के बारे में लिखते हुए लेविन्सन-लेसिंग ने कहा था, "इस संग्रहालय को अपना नाम १७६५ में शिशिर प्रासाद के निकट ही कैथरीन के दरबारियों की एक अंतरंग मंडली के लिए शिष्टाचार के कड़े नियमों की परिधि के बाहर अनौपचारिक दिलबहलाव के लिए बनाये गये एक भवन से मिला है।"

यहां, हर्मिताज में, साम्राज्ञी कैथरीन ने अपने विराट संकलन को इकट्ठा करना शुरू किया। पीटर महान अपनी हालैंड यात्रा के दौरान पहले ही कुछ चित्र ला चुका था। अब कैथरीन ऐसे संकलन का निर्माण कर रही थी कि जो किसी से भी उन्नीस न हो। उसके रूसी और यूरोपीय दूतों ने ड्रेसडन, पेरिस, एम्सटरडम, वेनिस और लंदन के अभिजातों और व्यापारियों से पूरे के पूरे के संग्रह ख़रीद लिये। कुछ अलग-अलग चित्र भी ख़रीदे गये। १७६० के आसपास शुरू होकर चौथाई सदी की अल्प अवधि में मौलिक संकलन बन चुका था।

यह वह ज़माना था कि जब यूरोप के राजा अपनी प्रतिष्ठा की वृद्धि करने के लिए महान कलाकृतियां ख़रीदा करते थे। और कैथरीन ने भी इस रुझान का अनुकरण किया और अपने राज दरबार के लिए विशिष्ट व्यक्तियों को जमा करने के साथ-साथ उसने चित्रों को भी इकट्ठा किया।

निकोलस प्रथम के शासनकाल में कुछ चित्रों के ख़रीदे जाने के अलावा कैथरीन के बादवाले शासकों ने इस संकलन में कोई ख़ास अभिवृद्धि नहीं की। निकोलस प्रथम के समय में हर्मिताज को प्रतिष्ठित दर्शनार्थियों – ऊंची सामाजिक हैसियत रखनेवालों – के लिए खोल दिया गया, जिन्हें इसके लिए औपचारिक पोशाक में आना होता था। उन्नीसवीं सदी के आख़िरी हिस्से में जाकर ही हर्मिताज के दरवाज़े आम जनता के लिए खोले गये।

और सचमुच उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभ तक, जब दो रूसी व्यापारियों – मोरोज़ोव और श्चूकिन – ने पेरिस के नये चित्रकारों की खोज की, कैथरीन के समय जैसी कोई अनोखी बात नहीं हुई। ये दोनों व्यापारी प्रारंभिक प्रवर्तक थे और वे पिकासो, मतीस, वान गोग और गोगें के कृतित्व के सबसे पहले संग्रहकर्ताओं में थे। श्चूकिन ने उन्मुक्त उत्साह से पिकासो के नील काल, गुलाबी काल और घनचित्रण (क्यूबिस्ट) काल के चित्रों को इकट्ठा किया। उसने मतीस को विख्यात 'नर्तक' बनाने के लिए कहा। उसने मतीस की कई अन्य कृतियों और वान गोग तथा अन्य कलाकारों की कृतियों को ख़रीदा।

साम्राज्ञी कैथरीन के लिए कला-संग्रहण प्रतिष्ठा का काम था। उसके द्वारा ख़रीद का मतलब निर्विवाद्य मान्यता और सम्मान और ऊंची क़ीमत था। लेकिन मैं नहीं सोचता कि श्चूकिन को इस तरह का कोई भी ख़याल था। वह महज़ चित्रकला से अपने लगाव के कारण ख़रीदता था और जिन कृतियों को वह मास्को में अपने महल में दीवारों पर सजाता था, उनसे उसके धनी मेहमानों को विरक्ति ही हुआ करती होगी। श्चूकिन अद्भुत सहजबोध और परिष्कृत ज्ञान संपन्न सुसंस्कृत व्यक्ति था।

जिस तरह फ़्रांसीसी क्रांति के बाद संकलनों के राष्ट्रीयकरण के कारण लूव्र की श्रीवृद्धि हुई है, उसी तरह अक्तूबर क्रांति के बाद हर्मिताज के संकलन में भी महत्वपूर्ण योग हुआ, जब कई निजी संकलन वहीं स्थानांतरित कर दिये गये। इनमें श्चूकिन और मोरोज़ोव के संकलन भी थे, जिन्हें हर्मिताज और मास्को के पुश्किन ललित कला संग्रहालय के बीच विभक्त कर दिया गया।

स्वाभाविकतया हर किसी की अपनी पसंद होती है। हर्मिताज में प्रवेश करके मैं महान एल ग्रेको को – उसके संत पीटर और संत पाल के चित्र को – देखता हूं। मैं लेओनार्दो की माणिक्यवत मदोना लित्ता और मदोना बेनुआ को देखता हूं। मैं तित्सिआन और जर्मन चित्रकारों को देखता हूं। मैं काफ़ी देर रेंब्रांद्त के चित्रों के कमरे में और फिर ऊपरी मंज़िल पर वान गोग, गोगें और पिकासो के नील तथा गुलाबी काल के चित्रों के साथ रुका रहता हूं। निस्संदेह वहां असंख्य और निधियां भी हैं और मैं फिर कभी आकर उन्हें भी देखता हूं।

लेकिन मुझे "शानदार सैर" के लिए दलों में ठेलकर लाये और इस विराट संकलन को देखने के लिए अल्पकालिक चक्कर में लाये पर्यटकों पर सचमुच तरस आता है! मेरे लिए तो यह पचास व्यंजनोंवाली दावत में बैठने जैसा है। लेकिन कम से कम हर कोई यह तो कह ही सकेगा कि उसने हर्मिताज को "देख" लिया है और यह एक अविस्मरणीय अनुभव है।

३. उऋइना

दुलहिन

उक्रइना में पवन मृदुल, क्षितिज व्यापक और धरती उपजाऊ और सुंदर है। यह बढ़िया फ़सलों और फ़सल उपजानेवालों की भूमि है, जिनके पुरखे हज़ार साल पहले भी इसी ज़मीन को काश्त करते थे। यह गहरी जड़ोंवाली लोक-कला की भूमि है।

एक दिन मैंने एक दुलहिन को उसकी प्रादेशिक पोशाक में देखा। पुराने ज़माने के विलक्षण किसान, जो पश्चिमी पर्यटकों को इतने प्रिय हैं, अब कहीं नज़र नहीं आते। कारख़ानों और खेतों में स्त्री और पुरुष अलग-अलग हाथ के बुने कपड़े की बजाय और सभी जगहों के लोगों की तरह ही बड़े पैमाने पर निर्मित कामकाजी वस्त्र ही पहनते हैं। लेकिन कुछ त्योहारों और उत्सवों के मौक़ों पर सड़कों पर रंगबिरंगी पोशाकों की बहार आ जाती है। लोगों को अपनी विरासत पर नाज़ है। उन्हें वे पुरानी क़शीदे के काम की पोशाकें और सुंदर हथकते कपड़े पसंद हैं, जो उनके परिवारों में पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। और शौक़ के लिए वे आज भी कढ़ाई करते हैं और कपड़े बुनते हैं।

दुलहिन और उसके इष्ट मित्र शादी के लिए जा रहे थे।

यहां, कीयेव में, मेरी एक और उक्रइनी स्त्री से – बहुत पहले की दुलहिन से – मुलाक़ात हुई। तब कात्या अठारह साल की थी। उसे और सेर्योझा को आपस में बहुत प्यार था और क्योंकि वसंत में वह अपनी स्कूल की शिक्षा पूरी कर चुकी थी और सेर्योझा को पास के ही ट्रैक्टर स्टेशन पर मिस्तरी की हैसियत से काम भी मिल चुका था, इसलिए जून के अंत में उनकी शादी भी होनेवाली थी। उसके कढ़े हुए ब्लाउज़ और वस्त्र बड़े चूल्हे के पासवाले लकड़ी के सन्दूक़ में रखे हुए थे। तैयारियां हो ही रही थीं कि तभी ख़बर आयी – जर्मनों ने सीमांत को पार कर दिया है। मर्दों की लामबंदी हो गयी और सेर्योझा मोरचे पर चला गया।

लेकिन अब, पतझड़ में, जब कि फ़सल पक चुकी थी, जर्मन उक्रइना में गहरे धंस आये हुए थे। उनके गांव के पास ही लाल सेना की एक बड़ी टुकड़ी घेरे में थी और जल्दी ही जर्मन सब कहीं ही दिखाई देनेवाले थे।

उसने बताया, "हमारे गांव के पासवाले क़सबे में कुछ पार्टीज़ानों ने हंगरियाइयों पर गोली चलायी – उनकी फ़ौजें जर्मनों की तरफ़ से लड़ रही थीं। अगले ही दिन फ़ौजें और कुमुक के साथ वापस आ गयीं। एक छोर से शुरू करके उन्होंने बक़ायदा हर घर में लोगों को जान से मारना शुरू कर दिया। इसे मैंने ख़ुद अपनी आंखों देखा है। मुझे डर से दीवानी बनी एक लहूलुहान बुढ़िया की याद आती है – उसके सफ़ेद बाल ख़ून से सने उसके चेहरे पर चिपके हुए थे और वह दौड़ती हुई चिल्लाती जा रही थी, 'बचाओ, अपने को बचाओ, लोगो!' वह तब तक चिल्लाती चली गयी कि एक जर्मन ने उसके पेट में अपनी संगीन भोंक दी। वह ज़मीन को नोंचती हुई गिर पड़ी।

"बाद में पार्टीज़ानों ने एक और हमला करके कुछ नात्सियों को मार डाला और तब,



वदले में, हमारे ही गांववालों को घेरकर पासवाली पहाड़ी पर ले जाया गया, जहां से हम अपने जलते हुए मकानों को देख सकते थे – काला धूआं ऊपर वादलों तक जा रहा था।"

उसके पिता मोरचे पर थे। वह अपनी मां और दो वहनों के साथ रह रही थी, जिनमें से एक तो सिर्फ़ साल भर की ही थी।

उसने आगे कहा, "यहां, जलते हुए गांव के सामने ही ग्रामवासियों में से नौजवानों को अलग किया गया और धकेलते हुए कुछ दूर स्थित स्टेशन पर ले जाया गया। भूखे और वेतरह अकेले हम लोगों को मालगाड़ी के डिब्वों में इस तरह ठूंस दिया गया कि खड़े होने को भी जगह मुश्किल से थी। और इसी तरह हमें जर्मनी के ठेठ वीच में एक ववेरियाई शहर ले जाया गया। वहां हमें काम की वरदियां दी गयीं, जिन पर एक वड़ा विल्ला टंका हुआ था। हम वहां चीनी कारखाने में सूरज छिपने तक काम किया करते। मुझे वहां लटके एक वड़े नोटिस की याद आती है – 'जो कोई भी चीनी चुराने या खाने की कोशिश करेगा, उसे फ़ौरन गोली से उड़ा दिया जायेगा।'

"हमारे पहरेदार पोलैंड के निकटवर्ती सीमांत प्रदेशों के रहनेवाले उक्रइनी राष्ट्रवादी थे। वे नात्सियों के दोस्त थे और उनके विश्वस्त थे। वे अहाते के वाहर सुविधा की ज़िंदगी जीते थे। उनमें से कुछ का तो हमारे साथ जो वर्ताव था, वह नात्सियों से भी वदतर था। वे मास्को और लेनिनग्राद के पतन के वारे में झूठी खबरें फैलाया करते थे। लेकिन हम उन पर यक़ीन नहीं करते थे। हम तो उसी दिन के लिए जी रहे थे कि जव हम अपने देश लौटेंगे, अपने घरवालों से मिलेंगे, फिर अपने खेतों में काम करेंगे और गरमियों की शामों को नाचा और गाया करेंगे।

"हमारी वारक में एक युवा स्कूल अध्यापिका भी थी। एक रात को उसने कील से अपने हाथ की नस को काट दिया। (हमने सुवह उसे मृत पाया)। उसने अपने व्लाउज़ पर एक परचा नत्थी कर दिया था। उसमें उसने लिखा था कि उसे अपनी ज़िंदगी ख़त्म करनी पड़ रही है, क्योंकि जर्मनों के लिए ज़िंदा रहकर और काम करके वह अपने श्रम से उनकी सहायता कर रही थी। यह कोई हताशाजनित आत्महत्या नहीं थी – यह दुश्मन के खिलाफ़ आक्रामक कार्रवाई थी। 'अपनी मौत से मैं हमारी अंतिम विजय में योग दे रही हूं!'

"मुझे शिविर में तव की उत्तेजना की याद आती है कि जब हम ऊपर अमरीकी हवाई जहाज़ों के दलों को देखने और उनके शोर को सुनने लगे थे। 'अपने वम गिराओ! ग़लीज़ जर्मनों को ख़त्म करो!' – हम मन में उनसे कहा करते। आख़िर, १९४५ में अमरीकी फ़ौजों ने हमें आज़ाद कर दिया और अब हम स्वदेश लौटने के दिन गिनने लगे। कुछ अमरीकी हमारे लोगों से वातें करते थे, उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका में वढ़िया ज़िंदगी के वारे में वताते थे और उनसे वापस न लौटने का आग्रह करते थे। और कुछ लोग रुक भी गये – कुछ जर्मनी में ही, पर ज़्यादातर वे कनाडा और संयुक्त राज्य अमरीका ही गये। लेकिन वे पिछड़े हुए, प्रतिक्रियावादी लोग थे। जो लोग जर्मनों की तरफ़ से जनरल व्लासोव और दूसरे फ़ासिस्ट गिरोहों के साथ लाल सेना के खिलाफ़ लड़े थे, उन्हें एक समझौते के मुताबिक़ अमरीकी फ़ौजों ने लाल सेना के सुपुर्द कर दिया। लेकिन कुछ अमरीकी अफ़सर ऐसे थे, जिन्होंने कुछ उक्रइनी राष्ट्रवादियों को आगाह कर दिया था और वे सीधे जर्मन देहातों में जाकर ग़ायब हो गये।

"मैं अपने नष्ट हुए गांव लौट आयी। मुझे अपनी मां और बड़ी बहन मिल गयीं। गोदवाली बहन मर गयी थी। सेर्योझा मोरचे पर मारा गया था। और जहां तक हमारे पिताजी की बात है, तो उनके बारे में तो हमें कुछ सुनने को भी नहीं मिल पाया! हमारे गांव का अब नवनिर्माण हो चुका है, फ़सल पकी हुई है और अब फिर शामों को हम अपने गाने गाते और नाचते हैं। लेकिन मैं अकेली हूं। मैंने शादी नहीं की और मैं अकसर सेर्योझा के बारे में सोचा करती हूं।"

कीयेव

कीयेव की तत्ती धूप में मैं द्नेपर के किनारे टहल रहा था और बहुत साल पहले यहां आनेवाले एक और अमरीकी के बारे में सोच रहा था। इसलिए कि अमरीकी इंजीनियर ह्यूग एल० कूपर, जिन्होंने विराट द्नेपर बांध के निर्माण में सोवियत संघ के लोगों के साथ इतनी अच्छी तरह मिलकर काम किया था, इस नदी और इस इलाक़े के इतिहास का अंग बन गये हैं।

कीयेव में हर कहीं इतिहास का बोध बहुत प्रबल है। यह संत सोफ़िया में – पहले १०३७ में संपूर्ण होने के साथ तातारों द्वारा मिट्टी में मिला दिये जानेवाले और बाद में और भी अधिक भव्यता के साथ निर्मित होनेवाले गिरजाघर – विद्यमान है।

यह उन चौड़े छायादार राजमार्गों और इमारतों में विद्यमान है, जिन्होंने युद्ध के दौरान विनष्ट भवनों और मार्गों का स्थान ले लिया है। और यह वीर मार्ग के छोर पर स्थित विशाल सूचीस्तंभ में, उन आदमियों, औरतों और बच्चों के सम्मान में खड़े सूचीस्तंभ में विद्यमान है कि जिन्होंने नात्सियों के खिलाफ़ जूझते हुए इसलिए अपनी जानें दी थीं कि उनका शहर एक बार फिर खड़ा हो सके। यह हाल के समय के इतिहास का सोवियत संघ है। यह गत युद्ध की ट्रेजेडी और गहन व्यथा है।

यहां, कीयेव में मेरी एक उक्रइनी कलाकार, अंद्रेई बूद्नीकोव, से मुलाक़ात हुई, जिनके चित्र इन वर्षों को अभिलिखित करते हैं। हम उनके स्टूडियो में बैठे हुए थे और बूद्नीकोव पुरानी बातों को याद कर रहे थे।

"मेरा ख़याल है कि मैंने हमेशा ही कलाकार बनना चाहा था, जब से याद है, मुझे तसवीरें बनाना ही अच्छा लगता था। मैं बुजुलुक नगर में – रूसियों और कज़्ज़ाकों से आबाद एक इलाक़े में – एक रेल स्टेशन के अहाते में मिट्टी के छोटे से घर में पैदा हुआ था। गरमियों में स्कूल के ग्रीष्मावकाश के लिए बंद होने पर मैं नमक की खानों के इलाक़े में काम किया करता था। क्रांति के कुछ ही बाद रेलकर्मियों ने एक सांस्कृतिक क्लब और एक थियेटर का संगठन किया। मैंने इसी में पंद्रह साल की उम्र में दृश्य बनाना शुरू किया।

"हमारे छोटे से क़सबे में कला में सच्ची दिलचस्पी ली जाती थी। यह हमारी जनता में संस्कृति के महान उत्थान का ज़माना था। मैंने अपने आसपास की ज़िंदगी का, कज़्ज़ाकों की ज़िंदगी का रेखांकन और चित्रण करना शुरू कर दिया। बेशक, मेरा कोई शिक्षक, कोई सहायता

करनेवाला न था। एक बार जब मेरे चित्रों की क्लब में प्रदर्शनी हो रही थी, तो कई इंजीनियरों ने उसे देखा और मुझसे चित्रों के बारे में पूछा।

"उन्होंने कहा, 'इस छोकरे को कुछ कलाचित्र देखने चाहिए।' और इस तरह रेल मज़दूर क्लब ने मुझे संग्रहालयों को देखने के लिए मास्को भेजा। मुझे मास्को में पहुंचने की याद है। कितना बड़ा शहर था! मैंने कभी इतने सारे लोग नहीं देखे थे! स्टेशन पर मैंने पूछा कि त्रेत्याकोव चित्रशाला कैसे पहुंचा जा सकता है। आखिर में वहां पहुंच ही गया और कोई दो हफ़्ते मैंने रेल मज़दूर गृह में रातें बिताते हुए चित्रशाला को ही अपना घर बनाये रखा।

"सुबह मैं थोड़े से बिस्कुट ख़रीद लेता और संग्रहालय के दरवाज़े पर उसके खुलने के इंतज़ार में खड़ा हो जाता। मैं सारा दिन चित्रों को देखते बिता देता। अपने देखे कृतित्व से मैं अभिभूत और अत्तेजित हो रहा था। मैंने जीवन के सौंदर्य और अर्थ को अनुभव किया और मैं जान गया कि जनता के जीवन में कुछ सुंदरता का योगदान करने के लिए मुझे कलाकार बनना होगा।

"घर लौटने के बाद मैंने मज़दूरों से बातें कीं। मैंने उन्हें बताया कि मैंने क्या देखा है और यह भी बताया कि मैं कलाकार बनना चाहता हूं। बाद में कई बार कई कलाकार हमारे इलाक़े में आये और उन्होंने मेरी रंग मिलाने में और रचना के बारे में कुछ जानने में सहायता की। उसी समय उक्रइना में महान सामूहिकीकरण की शुरूआत हुई। शिक्षा निदेशक के साथ-साथ मेरा काम शिक्षाप्रद प्रचार फ़िल्में दिखाना था।

"हम घोड़ा जुते छकड़े में बैठकर कुछ गांवों में जाते – अकसर हम ठिकाने पर रात को ही पहुंचते। हम सड़कों पर 'किनो' (सिनेमा) चिल्लाते हुए निकलते और लोग इकट्ठा हो जाते। फिर मैं परदा लगा देता और प्रोजैक्टर चलाता।

"बाद में मैं स्तालिनग्राद चला गया और कुछ समय वहां एक कारखाने में काम किया। मज़दूरों ने मेरे चित्र देखे और जल्दी ही मेरे एक कला विद्यालय में दाख़िले का इंतज़ाम कर दिया। उसी के साथ-साथ मैंने मज़दूरों के अख़बार के लिए काम करना शुरू किया। छात्र प्रदर्शनी के समय कुछ कलाकार मास्को से आये और उन्होंने मेरे कुछ चित्रों को चुन लिया। मैं पढ़ाई में अच्छा था, क्योंकि मुझे चित्रकार बनने की प्रबल लालसा थी।

"मेरी इच्छा थी कि मैं अपने क़सबे वापस जाऊंगा और अपने लोगों के लिए सांस्कृतिक कार्य करूंगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुझे स्तालिनग्राद कलाकार संघ में ले लिया गया और मैं चित्रकारी करने लगा। लेकिन जल्दी ही जर्मनों ने सोवियत संघ पर हमला कर दिया और इस तरह वह भयानक युद्ध शुरू हो गया। मुझे याद है कि किस तरह हम – युवा लोग – मोरचे पर गये थे, जर्मनों को रोकने के लिए खाइयां खोदी थीं और कमर-कमर तक पानी में काम किया था। मैं मोरचे पर ही रुका रहा। मेरी ख़राब निगाह के कारण मुझे सेना में नहीं लिया जा रहा था। इसलिए मैंने पोस्टर बनाना और मोरचे के अख़बारों के लिए चित्र बनाना शुरू कर दिया। मैं मोरचे की अगली पांतों पर लोगों के रूपचित्र बनाया करता और सिपाही उन्हें पसंद करते। उन्हें ये चित्र फ़ोटोचित्रों से अधिक वैयक्तिक लगते। मुझे एक सिपाही का चित्र



बनाने की याद है – हम दोनों पत्थरों के एक ढेर और एक मकान के मुड़े-तुड़े जंगले के सहारे खड़े थे। अचानक एक गोली सनसनाती हुई बराबर से निकल गयी। फिर एक और इसी तरह से निकल गयी। मैं अचानक झुकने लगा, कहीं जा छिपना चाहने लगा, मगर सिपाही ने कहा, 'घबराइये मत साथी कलाकार, ये गोलियां ख़तरनाक नहीं हैं। मैं इनकी आवाज़ से ही बता सकता हूं। अगर बात ज़्यादा ख़तरनाक हो जायेगी, तो मैं आपको बता दूंगा।'

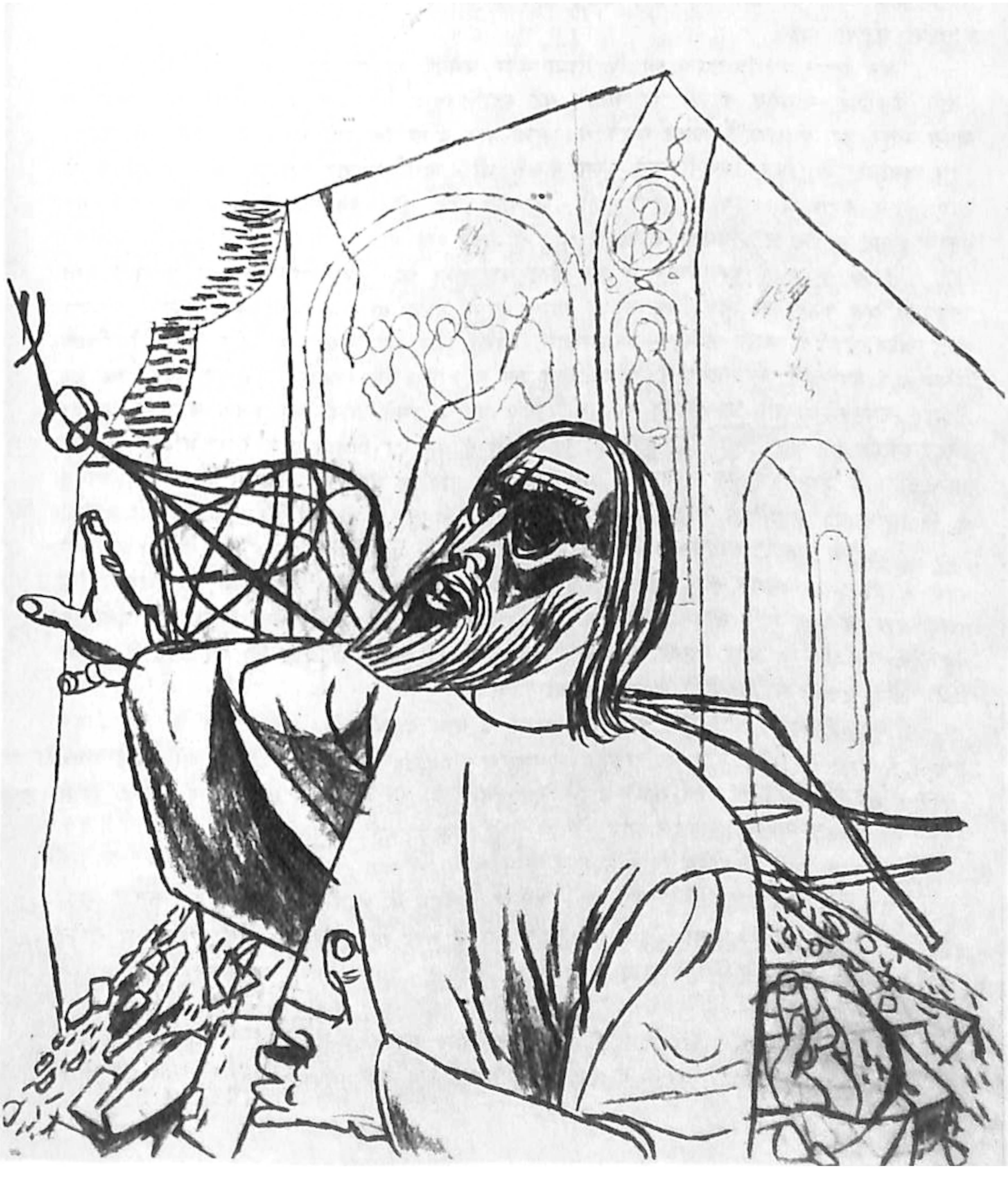
"स्तालिनग्राद में मैं उस मकान के ६५ दिन के घेरे में, जो सार्जेंट पाव्लोव भवन के नाम से मशहूर हो गया है, बिलकुल ही अगली क़तार में था। यहां हमारे कई जनतंत्रों के लोग – उक्रइनी, जार्जियाई, कज़ाख़, रूसी – जर्मनों को खदेड़ने के लिए लड़ रहे थे।

"मुझे वास्या ज़ाइत्सेव की याद आती है। स्तालिनग्राद की लड़ाई का वह मशहूर कमीनदार था। जब तक उसकी ख्याति बर्लिन पहुंची, तब तक वह ३०० जर्मन अफ़सरों और सिपाहियों को मौत के घाट उतार चुका था। उसका ख़ात्मा करने के लिए एक इतना ही मशहूर जर्मन कमीनदार स्तालिनग्राद भेजा गया। कई दिन तक वे एक-दूसरे को ढूंढ़ते रहे – मकानों के बीच में, खंडहरों में, सड़कों के आरपार, ध्वस्त मकानों की मंज़िल-मंज़िल पर। कई बार उनका आमना-सामना भी हुआ, पर फिर वे एक-दूसरे की आंखों से ओझल हो गये। और फिर एक दिन, जब वास्या कई सिपाहियों के साथ एक मकान के खंडहरों में बैठा हुआ था, एक सिपाही ने अपने सिर को बेपरवाही से उठाकर आड़ के पत्थरों से ऊंचा कर दिया और बेजान होकर गिर पड़ा – उसके सिर को एक गोली ने बींध दिया था। यह सब इतनी जल्दी – निमिष मात्र में हो गया था! और ज़ाइत्सेव जानता था कि ऐसा सिर्फ़ एक ही आदमी है कि जो किसी निशाने पर इतनी तेज़ी से गोली चला सकता है, और वही तो उसका आदमी है!

"कोई ३०० गज़ की दूरी पर उसे एक अधगिरी दीवार दिखाई दी और उस दीवार की पतली सी दरार में उसे एक आदमी का पार्श्व चेहरा दिखाई दिया। उसने ज़मीन पर पड़ी एक लकड़ी को उठाया, उस पर अपना दस्ताना फैला दिया और फुरती से उसे अपने सिर के ऊपर उठा दिया। फ़ौरन ही एक गोली चली और उसके दस्ताने में से होकर निकल गयी। ज़ाइत्सेव ने सोचा कि अब शक की कोई गुंजाइश नहीं है – अब उसे सिर्फ़ यही करना है कि उस आदमी को इस तरह हिलवाये कि वह दरार के बिलकुल सामने आ जाये। 'सुनो,' उसने फुसफुसाकर अपने साथियों से कहा, 'मैं उधर दाहिनी तरफ़ जा रहा हूं। जब मैं अपने सिर से इशारा करूं, तो तुम चिल्ला देना। चिल्लाना अचानक और ज़ोर से – मानो तुम पागल हो गये हो।' उसने दरार पर निशाना साध दिया और फिर अपने सिर को हिलाकर इशारा कर दिया। उसके साथी चिल्लाये। जैसे ही एक छाया अनायास ही दरार में हिली, वास्या ने गोली चला दी।

"बाद में जर्मन कमीनदार की लाश से उन्हें ३००–३०० मार्क के कई कूपन मिले – हर कूपन उसके मारे एक आदमी का इनाम था।"

पुरानी बातों को फिर याद करते हुए बूद्नीकोव ने आगे कहा, "ज़ाइत्सेव एक अलमस्त और हिम्मती आदमी था। कोई नहीं जानता था कि वह कब क्या कर बैठेगा। एक दिन उसने अपने साथियों से कहा, 'आओ, जर्मनों को दिखा दें कि हम अविजेय हैं।' वे लोग जर्मनों द्वारा अधिकृत



ममायेव पहाड़ी के तले में धातु के एक वड़े टुकड़े को घसीट लाये। एक सिपाही अपना अकार्डियन ले आया। 'चलो, शुरू करो!' ज़ाइत्सेव ने कहा। अकार्डियन की धुनों के साथ ज़ाइत्सेव अपने भारी फ़ौजी बूटों से धातु पर थाप देकर ताल निकालने लगा। उनके सिरों पर होकर जर्मन गोलियां उड़ती रहीं।

"जब हमने स्तालिनग्राद को ले लिया और जर्मनों का सफ़ाया कर दिया, तो मैं चित्र वनाने के लिए ममायेव पहाड़ी पर गया। यह स्तालिनग्राद में सवसे ऊंची जगह थी, जहां से जर्मन शहर पर गोलावारी किया करते थे। मुझे याद आया कि शांतिकाल में, जव मैंने उसका चित्र बनाया था, वह कितनी हरी हुआ करती थी, जहां परिवार आराम और पिकनिक के लिए आया करते थे। अब वह हरी नहीं, ललछौंह भूरी थी। मैंने उसकी सतह में अपना बूट गड़ाया। वह ज़मीन पर बिखरी ज़ंगखायी धातु से भरी पड़ी थी।

"जर्मन क़ब्ज़े के एक शहर में एक धातु कारख़ाना था। यहां सोवियत संघ में लूटी गयी धातु को युद्ध कार्यों के लिए पिघलाने के वास्ते लाया जाता था। कारख़ाने के मज़दूर ज़्यादातर रूसी और उक्रइनी दास श्रमिक – किशोरियां, औरतें और बूढ़े लोग – थे और उनके निरीक्षक जर्मन थे। कारख़ाने के अहाते में हमेशा धातु का बड़ा ढेर पड़ा रहता था। एक दिन उस ढेर में एक उक्रइनी युवती को लेनिन की मूर्ति मिल गयी। उसने औरों को इसके बारे में बताया और उन्होंने तय कर लिया कि मूर्ति को किसी भी क़ीमत पर पिघलाने के लिए भट्ठियों में नहीं जाने देंगे। वे जानते थे कि इंतज़ार के अब सिर्फ़ कुछ ही दिन बाक़ी हैं, लेकिन वे यह भी जानते थे कि मूर्ति को अहाते से बाहर लाने का मतलब अपनी ही जानों को ख़तरे में डालना होगा।

"उन्होंने प्रभारी इंजीनियर से बात करने की सोची, जो जर्मन था और काफ़ी कुछ अपने काम से ही काम रखता था। आख़िर उन्होंने उससे बात करने का निश्चय कर ही लिया। 'मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता,' उसने कहा। 'और न मैं उस तरफ़ देखता ही हूं।' प्रत्यक्षतः वह भला आदमी था और नात्सी नहीं था। उसी रात को स्त्रियों ने मूर्ति को एक शेड में पहुंचा दिया और लकड़ी के शहतीरों के नीचे छिपा दिया।

"कुछ ही समय के भीतर लाल सेना शहर के पास पहुंच गयी। जर्मन भाग खड़े हुए। तब स्त्रियों ने नगर के प्रवेश मार्ग पर लकड़ी का एक मंच बनाया और कांस्य प्रतिमा को उसके ऊपर स्थापित कर दिया। आप सोच सकते हैं कि जब हमारे सैनिकों ने लेनिन को अपना स्वागत करते देखा, तो उनको कितना आश्चर्य और रोमांच हुआ होगा! वह अद्‌भुत था।

"युद्ध के बाद मैं कीयेव में रहने और काम करने आ गया," बूद्‌नीकोव ने कहा।

शाम तक हम शहर में घूमते रहे। ऑपेरा थियेटर के सामने हरे ट्रकों की क़तार खड़ी हुई थी। बूद्‌नीकोव ने बताया, "आज रात के शो के सारे टिकट एक सामूहिक फ़ार्म ने ख़रीद लिये हैं। मेरा ख़याल है कि वे लोग शहर में ही कहीं हैं – शायद शाम का खाना समय से कुछ पहले ही खा रहे हों।"

"मैं यहां १९५९ में आया था," मैंने बूद्‌नीकोव को बताया, "और मुझे याद है कि मैंने उस्पेन्स्की (उद्‌ग्रहण) गिरजे के खंडहरों के सामने एक बूढ़े मठवासी साधु से वातें की थीं।

"उसने कहा था, 'नात्सी यहां दो साल से ज़्यादा रहे थे। और सितंबर, १९४१ में उन्होंने ३० हज़ार लोगों – उक्रइनियों, रूसियों, यहूदियों और बंजारों – को क़त्ल कर दिया था। गोद के छोटे-छोटे बच्चों तक को। बूढ़ों और बीमारों को भी। नात्सी सैनिक उन्हें वध के लिए पशुओं की तरह सड़कों पर हांकते हुए ले गये थे – उन्हें चलते रहने को विवश करने के लिए वे उनकी टांगों में संगीनें चुभाते जा रहे थे।'

"मुझे न्यूरेमबर्ग मुक़दमे की, और कीयेव में नात्सियों के अत्याचारों के बारे में अख़बारों में छपी ख़बरों की याद आ गयी।

"साधु ने आगे बताया था, 'एक छोटा सा बच्चा था – पांच ही साल का और इतना ख़ूबसूरत। हम सभी उसे प्यार करते थे। हमने उसे समझाने की कोशिश की कि उसे छिपे और चुप रहना चाहिए। लेकिन भला किसी बच्चे को, जिसने सिर्फ़ प्यार और सदयता को ही जाना है, आप नफ़रत और बदी कैसे सिखा सकते हैं? एक दिन वह चुपके से बाहर खिसक गया। हमने उसे फिर कभी नहीं देखा। हमने यहूदी नागरिकों को बचाने की कोशिश की थी, मगर नात्सियों ने उनका पता लगा लिया।

"'यह फ़ासिस्टों की कारस्तानी है,' ढहे हुए भित्तिचित्रों की तरफ़ इशारा करते हुए उसने कहा था। 'ज़रा इन चित्रों की तरफ़ तो देखिये! सलीब के इस मुड़े-तुड़े लोहे की तरफ़ तो देखिये! यह कितना पुराना और कितना ख़ूबसूरत था! लेकिन इसे इतना नुक़सान पहुंचा है कि इसकी मरम्मत नहीं की जा सकती। यह उनका बदला था। जब जर्मन यहां थे, तो पार्टीज़ान हमारी भूलभुलैयों में छिप जाया करते थे और जर्मनों पर रात में हमले किया करते थे। हमारे मठ में भी कुछ लोग पार्टीज़ान बन गये थे। जब लाल सेना ने फ़ासिस्टों को कीयेव के बाहर खदेड़ा, तो उन कुत्तों ने आख़िरी दिन गिरजे को बारूद से उड़ा दिया।'"

फ़सल कटाई

जुलाई में सोवियत संघ के उष्ण प्रदेशों – उक्रइना, बेलोरूस, मध्य एशिया – में फ़सल कटाई शुरू हो गयी। और कई शामों को हमने टेलीविज़न पर हलकी बयार में लहराते, दूर क्षितिज में जा मिलते गेहूं के अंतहीन विस्तारों पर एक-दूसरे के पीछे तिरछे जलूस में जाती महाकाय हार्वेस्टर कंबाइनों और आसमान में बदलियों के हलके गुच्छों का दृश्य देखा।

हमने काम के कीर्तिमान स्थापित करनेवाले वीरों – पुरुषों और स्त्रियों को, चालकों को और समारोहों के दृश्यों को देखा। मुझे टेलीविज़न पर देखा एक विशेषकर हृदयग्राही दृश्य याद है – लोगों की भीड़ में खड़े एक मुसकराते हुए आदमी का चेहरा, बेक़ाबू बालों से ढंका उसका पसीने में भीगा माथा, और बजता हुआ बैंड। एक लड़की आकर उसके गले में लाल फ़ीते से बंधा गेहूं की बालों का हार डाल देती है – हवाई में अलोहा लोगों के स्वागत समारोह की ही तरह।

फिर एक और दृश्य याद आता है। आटा गूंथती एक सुंदर युवती, जो क़शीदेकारी का ब्लाउज़ पहने हुए है और जिसकी मज़बूत बांहें उसकी आस्तीनों में लिपटी हुई हैं – उसके हाथों की बंधी

हुई गति, आटे के उस मुलायम और बड़े ढेर में उसकी उंगलियां। वह लोई को लकड़ी के बेलचे पर रखकर अपनी घरेलू भट्ठी में डाल देती है। इसके बाद मैं रोटी को भट्ठी से निकलते और अब खुली खिड़की के दासे पर ठंडी होने के लिए रखी देखता हूं। सूरजमुखी के बड़े-बड़े फूल हवा में अपने बंदनवारों से सजे सिरों को हिला रहे हैं।

हम पीछे लौटकर फिर गेहूं की बालों के हार को पहने खड़े आदमी के पास चले जाते हैं। एक युवा स्त्री आती है, उसके हाथों में बढ़िया क़शीदे के काम के तौलिये पर रखी ताज़ा अनाज की बनी डबल रोटी है। आदमी खुलकर मुसकराते हुए उसे ग्रहण करता है। बाजा बज रहा है, युवा लोग नाचने लगते हैं, यह फ़सल का त्योहार है, हज़ारों साल पहले की प्राचीन प्रथा है, जो आज सामाजिक उपलब्धियों की ख़ुशी का प्रतीक है।

मुझे एक और दृश्य याद आता है। पिछले पतझड़ में एक अप्रत्याशित ओलावृष्टि ने गेहूं को ज़मीन पर गिरा दिया। लोग रात भर ट्रैक्टरों की रोशनी में काम करके जितना भी हो सका, उतना बचाने में लगे रहे। "हमने कुछ अनाज बचा लिया, मगर बरबाद बहुत हुआ," एक आदमी ने कहा। "मैंने अपने पके हुए गेहूं को कीचड़भरी मिट्टी में मिलते देखा, तो मैं बच्चे की तरह रोने लगा।"

'सोवेत्स्काया कूल्तूरा' समाचारपत्र में मैंने स्थानीय फ़सल के बारे में रोस्तोव प्रदेश की एक रिपोर्ट पढ़ी। पता लगा कि कई लोगों ने काम के नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। "उस इलाक़े में पहुंचने पर हमने जिस उत्तेजना का अनुभव किया, उसे आसानी से समझा जा सकता है," एक सफ़री संगीत-मंडली के एक गायक ने कहा। "इस ख़बर को सुनते ही हमने तुरंत वहां जाने का फ़ैसला किया। हम अपने गीतों और अपने संगीत से फ़सल काटनेवालों और उनकी उपलब्धियों का समारोह मनाना चाह रहे थे।

"सभा खेतों में ही हुई और जैसे ही कंबाइनों ने काम करना बंद किया कि अचानक गेहूं के खेतों पर एक गीत की लहर दौड़ने लगी। यह घटना कोई अनुपम नहीं है। श्रम और कलाओं का घनिष्ठ संबंध हर कहीं – कारख़ानों में और खेतों में – प्रत्यक्ष है।"

हम जिस घर में रहा करते थे, उसी के पास लेनिनस्की प्रोस्पेक्त की पेड़ों की लंबी क़तारों से घिरी पगडंडियों पर मैं अकसर बूढ़ी औरतों को काग़ज़ के थैलों में रखे रोटी के टुकड़े पक्षियों को चुगाते देखा करता था। ये पक्षी आदमी के आदी हैं, वे लोगों के बिलकुल पास आ जाते हैं। कभी-कभी तो वे आदमी के कंधों पर उड़ते आ जाते हैं। मैं भी घूमते समय मास्को के पक्षियों को चुगाने के लिए जेब में रोटी का एकाध टुकड़ा ले जाया करता था।

मेरे एक मित्र ने कहा, "कुछ समय पहले हमारे यहां फ़सल ख़राब हुई थी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सोवियत संघ के लोगों को रोटी की क़िल्लत न हो, सरकार ने संयुक्त राज्य अमरीका से बड़ी मात्रा में – एक अरब डालर से अधिक का – अनाज ख़रीदा। मगर, जानते हैं, इसके बावजूद हमारी रोटी की क़ीमत वही रही।"

और रोटी की बात करते हुए मुझे याद आ जाता है कि हमारे पड़ोस में एक बेकरी की दीवार पर मैं अकसर एक सुंदर पोस्टर देखा करता था, जिस पर यह लिखा था :



"रोटी का इसके अलावा और कोई काम नहीं है कि वह अपने को मनुष्य को दे, उसका स्वाद से पेट भरे, दिन प्रति दिन उसका पूरी तरह पेट भरे। आदमी की कई और ज़िम्मेदारियों में एक मुख्य ज़िम्मेदारी है ज़मीन को जोतना, बीज को बोना और अच्छी फ़सल पैदा करना। रोटी जीवन का सत्व है। यह तंदुरुस्ती का अक्षय स्रोत है। यह कहना कि जिसके पास रोटी है, उसके पास ताक़त है, सिर्फ़ हमारे लिए ही नहीं, सिर्फ़ आज के लिए ही सही नहीं है। रोटी सिर्फ़ पोषण की चीज़ ही नहीं है। रोटी शायद मनुष्य के जीवन का माप और मियार है। जिस आदमी को रोटी बिना मेहनत के मिलती है, वह कर्तव्य की भावना के बिना जीता है। जो आदमी मुश्किल के वक़्त में अपनी रोटी बांटकर खाता है, वह भला, निस्स्वार्थ और दयालु है। जो अपनी रोटी कमाता है, वह मेहनतकश है।

"उन लोगों के बारे में क्या कहा जाये, जो रोटी को बेपरवाही के साथ फेंक देते हैं? लगता यह है कि रोटी सबसे महत्वपूर्ण तब होती है कि जब उसकी कमी होती है और जब वह आसानी से मिल जाती है, तो इतनी महत्वपूर्ण नहीं रहती। लेकिन न तो रोटी की भौतिक उपलभ्यता, न उसका सस्तापन और न उसका सर्वसुलभ होना ही उसे कोई मामूली चीज़ बना देते हैं। बात ऐसी नहीं है। धरती पर सूरज चमके या न चमके, पानी बरसे या न बरसे, रोटी को प्राप्त करना बहुत मुश्किल काम है।

"अच्छी और भरपूर फ़सल के पहले सख़्त काम करना होता है, जिसकी प्रचंडता में किसी भी बड़ी लड़ाई से तुलना की जा सकती है। इसमें वैज्ञानिक, सस्यविज्ञानी, कृषिविद, कृषिजीवी, और निर्माणकर्मी – कृषि प्रविधियों के निर्माता, प्रविधिज्ञ, आविष्कारक और खेतों में काम करनेवाले श्रमजीवी – मेहनत करते हैं। दिन-रात जुताई और कटाई करनेवालों, पीसनेवालों, बेकरों और अंत में रोटी के प्रदाय से संबंधित लोगों और दूकानों में काम करनेवालों की मेहनत लगती है।

"लेकिन अगर हम व्यापक नज़रिये से देखें, तो हर कोई – चाहे वह धरती के संपर्क से कितनी ही दूर क्यों न हो, सभी लोग रोटी से संबद्ध हैं। रोटी हमारी राष्ट्रीय संपत्ति है और रोटी के प्रति हमारा दृष्टिकोण मनुष्य के योग्य होना चाहिए।"

सोवियत समाज में स्त्री

सोवियत संघ में स्त्री को वाद्यवृंद की सदस्य के रूप में, यातायात का नियंत्रण करते, अस्पताल में आपरेशन करते या कारखाने अथवा सामूहिक फ़ार्म की प्रधान की हैसियत में देखना कोई असाधारण बात नहीं है, क्योंकि सभी रोज़गार और सरगरमियां उसके लिए खुले हुए हैं। एक दिन शहर के बाहर कार में जाते हुए मैंने एक स्त्री को ज़मीन की पैमाइश करते देखा। मैं उतरकर उसके पास गया, अपना परिचय दिया और मैंने उससे कहा कि मैं सोवियत संघ में स्त्री की भूमिका के बारे में कुछ जानना चाहता हूं।

"समझ में नहीं आता कि क्या कहूं," उसने जवाब दिया। "बात यह है कि हम अपनी



स्थिति को इतना स्वाभाविक मानने की आदी हैं कि सिर्फ़ जब कोई ऐसा सवाल उठता है, तभी जाकर मुझे इसके बारे में सोचना पड़ता है।"

"आपने अमरीका में नारी स्वातंत्र्य आंदोलन के बारे में पढ़ा है?" मैंने पूछा।

"हां-हां। हमारा ख़याल है कि वह शानदार है। बेशक, हमारे लिए उसे समझना कोई आसान नहीं है – ख़ासकर उसकी कुछ अतिशयताओं के बारे में पढ़ते समय। लेकिन हम अमरीकी नारी की सराहना करते हैं। आप जानते हैं कि ज़ारशाही का तख़्ता उलटे जाने के पहले रूसी नारी अमरीका में नारी की स्थिति का बड़े सम्मोहन के साथ अनुगमन किया करती थी – सफ़रगेट (स्त्री मताधिकार) आंदोलन, उसकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता। मेरे ख़याल में अब हालत उलटी हो गयी है। मैं जानती हूं कि वहां हमारी स्थिति सराहना और ईर्ष्या की चीज़ है।"

"हमारे तो कुछ नौजवान यहां भी नारी स्वातंत्र्य आंदोलन के विकसित होने की आशा कर रहे हैं," मैंने कहा।

"ख़ैर, यह तो बेवकूफ़ी की बात है। वे यह हमारी हालतों के अज्ञान के कारण कहते हैं। नारी स्वातंत्र्य का सबसे महत्वपूर्ण आधार आर्थिक आधार है। यह हमारे पास है। बेशक, हमारे यहां अब भी कुछ समस्याएं हैं, ख़ासकर मध्य एशियाई जनतंत्रों में। आप जानते हैं कि स्त्रियों ने वहां परदा छोड़ने में बड़ी वीरतापूर्ण भूमिका अदा की थी। वह एक क्रांतिकारी कार्य था। लेकिन फिर भी, पुरानी आदतें जड़ जमाये रहती हैं, कुछ आदमी अब भी ज़िंदगी के पुराने ढर्रे से चिपटे हुए हैं।"

"मैं जानता हूं," मैंने उत्तर दिया। "मैं इनमें से कुछ जनतंत्रों में जा चुका हूं और इस तरह की कुछ बातें देख चुका हूं। उदाहरण के लिए, मुझे दिये गये एक विदाई भोज में सिर्फ़ आदमी ही आये थे, स्त्री एक भी नहीं थी।"

"हां, लेकिन हमारे नौजवान, हमारी युवतियां इसे बरदाश्त करने के लिए तैयार नहीं हैं," उसने कहा। वह मुसकराई और बोली, "जानते हैं, पहली और अभी तक एकमात्र महिला अंतरिक्षयात्री हमारी वलेंतीना तेरेश्कोवा ही है और आप हमारी मशहूर जहाज़-कप्तान के बारे में भी सुन चुके हैं – संसार की पहली महिला जहाज़-कप्तान आन्ना श्चेतीनिना है, जो दुनिया के अधिकांश सागरों और महासागरों में तरह-तरह के पोतों का संचालन करते हुए जा चुकी है। जब आप हमारे किसी अस्पताल में जाते हैं, तो कोई स्त्री ही आपकी – आपरेशन करने में, निदान करने में, इलाज में – देखभाल करती है।"

"हां, मुझे इसका अनुभव है," मैंने कहा, "और अपनी ज़िंदगी और सेहत का किसी स्त्री के हाथों में होना मुझे बड़ा सांत्वनाकारी लगता है। अलबत्ता मैं आपको बता दूं कि ज़्यादातर अमरीकी आदमी किसी स्त्री से आपरेशन करवाने के लिए हरगिज़ तैयार न होंगे।"

"ख़ैर,, यह तो आदत और परंपरा की ही बात है," उसने जवाब दिया।

"लेकिन मैं यह देखता हूं कि सोवियत संघ में स्त्रियां अब भी दो काम करती हैं – वे दिन भर कहीं काम करती हैं और, काम के बाद, घर के रास्ते पर वे ख़रीदारी करती हैं। वे घर आकर खाना पकाती हैं और शायद फिर बरतन भी साफ़ करती हैं।"

"हां, अफ़सोस की बात है कि काफ़ी आदमियों ने पारिवारिक जीवन के इस पहलू की अपनी ज़िम्मेदारी को अभी तक स्वीकार नहीं किया है।"

"हां, यह मेरे लिए साफ़ है," मैंने जवाब दिया। "सच तो यह है कि अमरीका में कुछ आदमी बरतनों को बरतन साफ़ करने की मशीन में रखने और साफ़ होने के बाद बाहर निकालने को बिलकुल तैयार हैं। मेरे ख़याल में बरतन साफ़ करने की मशीन चलाना सिंक में बरतन साफ़ करने की बनिस्बत अधिक पुरुषसुलभ है।"

"ये समस्याएं अभी भी हमारे साथ हैं। लेकिन हमें सकारात्मक पहलू की तरफ़ देखना चाहिए। महत्व की बात यह है कि अपने पतियों पर आर्थिक निर्भरता से हम सोवियत नारियों का दरजा घटता नहीं है और व्यक्तियों के बीच संबंधों में यह अपार महत्व की बात है।

"आप जानते हैं कि सोवियत संविधान स्त्रियों को सभी – आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक – क्षेत्रों में पुरुषों के समकक्ष अधिकार प्रदान करता है। उन्हें काम पाने और समान वेतन, शिक्षा, विश्राम और मनोरंजन, निःशुल्क चिकित्सीय देखभाल और वृद्धावस्था पेंशन (पेंशन-आयु स्त्रियों के लिए ५५ और पुरुषों के लिए ६० साल है) के वही अधिकार प्राप्त हैं। उन्हें ११२ दिन का सवेतन प्रसूति-अवकाश भी मिलता है और शिशुसदनों की विस्तृत व्यवस्था है।

"समानता का दरजा हमें प्रतिष्ठा की भावना प्रदान करता है। हमने सामाजिक तथा आर्थिक जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर लिया है – सरकार में, कलाओं में, सभी क्षेत्रों में स्त्रियों की पहुंच है और यह सब उस कोटा प्रणाली के बिना, जो पश्चिम में अब भी है।"

"यह सही है," मैंने कहा। "पश्चिमी देशों में एक महिला कला प्रदर्शनी समाज है। प्रदर्शनियों में, शिक्षा में भेदभाव के कारण उन्हें एक अलग प्रदर्शनी संगठन के माध्यम से अपने अधिकार को स्थापित करने की ज़रूरत पड़ी है।"

"यह एक अच्छी मिसाल है," उसने कहा। "निस्संदेह सोवियत संघ में ऐसे किसी भी संगठन की ज़रूरत नहीं है।"

हम कुछ देर बातें करते रहे। उसने संयुक्त राज्य अमरीका में जीवन के बारे में कई सवाल पूछे। कुछ देर बाद मैंने उससे रुख़सत ली और गाड़ी में बैठकर कीयेव लौट आया।

१९७१ की एक पत्रिका में मैंने लीदिया लित्वीनेंको की एक भेंटवार्ता पढ़ी थी, जो सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद की श्रमिक तथा वेतन समिति से संबद्ध हैं। इस भेंटवार्ता में उन्होंने 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' में छपे कुछ पत्रों का उत्तर दिया है।

"जिस स्त्री ने समाज के लिए कुछ नहीं किया है, वह अपने बच्चों के लिए कदाचित ही अच्छी हो सकती है," एक पाठक कहता है, तो दूसरा स्त्री की "मातृत्व के आनंद" की तरफ़ वापसी की वक़ालत करता है। कुछ लोग सोचते हैं कि स्त्री को अपने बच्चे के पैदा होने के पहले काम करना चाहिए, उसके आत्मनिर्भर बनने तक घर पर रहना चाहिए और उसके बाद फिर काम करना शुरू कर देना चाहिए।

"मैं इससे असहमत हूं," लेखिका कहती है। "उस स्त्री का क्या होता है, जो अपना काम छोड़ देती है और फिर दस, पंद्रह या बीस साल बाद वापस काम पर जाती है? तब तक

उसकी व्यावसायिक कुशलता ख़त्म हो गयी होती है। उसका ज्ञान पुराना पड़ गया होता है और उसकी काफ़ी शक्ति और स्फूर्ति भी ख़त्म हो चुकी होती है। उसे फिर से बिलकुल प्रारंभ से ही शुरू करना पड़ता है – लगभग नौसिखियों की ही तरह। इससे समाज को भी हानि होती है। उसे एक कर्मी से तब हाथ धोना होता है, जब वह सबसे उत्पादनशील होती है। सबसे अच्छे सर्जनात्मक साल बीस और चालीस के बीच होते हैं, जब आप साहसपूर्ण निर्णय कर सकते हैं, क्योंकि आपके पास ग़लतियों को सही करने के लिए काफ़ी समय होता है, जब आप सबसे उदार-मति और निष्पक्ष और शारीरिक दृष्टि से सबसे ज़्यादा स्वस्थ होते हैं।

"कुछ लोग कहेंगे, 'तब तो इसकी और भी ज़रूरत है कि स्त्री ये गुण अपने बच्चों पर समर्पित करे। चूंकि परिवार ही प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई है, इसलिए समाज के प्रति स्त्री का सबसे बड़ा कर्तव्य अपने बच्चों को पालना-पोसना है।' यह बात तर्कसंगत प्रतीत हो सकती है, लेकिन वास्तव में यह बड़ी कपटपूर्ण है।

"पहली बात तो यही है कि लिंग के आधार पर ज़िम्मेदारियों के विभाजन को कदापि स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए, चाहे उसका नतीजा कुछ ही क्यों न हो (बेशक, मैं कड़े शारीरिक श्रम की बात नहीं कर रही हूं)।

"दूसरे, यह प्रत्यक्ष है कि जिस स्त्री को कर्मी समूह से, जो जीवन का एक बड़ा क्षेत्र है, बाहर किया जाता है, उसे ठगा जाता है। यह बात विशेषकर तब और भी सही है, जब उसे बचपन से ही ऐसे काम के लिए तैयार किया गया और जनमत द्वारा प्रोत्साहित किया गया है। और न ही वह अपने बच्चों को उत्पादकों के नाते अपनी भूमिका के वास्ते तैयार करने में कोई बेहतर सिद्ध होगी।

"तीसरे, बहुत से लोग यह भूल जाते हैं कि स्त्री के लिए आर्थिक निर्भरता उतनी ही पीड़ादायी है कि जितनी पुरुष के लिए। स्त्री अपने पति को चाहे कितना ही प्यार क्यों न करे, वह उसके द्वारा 'रखा' या 'पाला' जाना नापसंद करती है।"

लीदिया लित्वीनेंको स्त्रियों के प्रति कृपालुता दिखाये जाने की आलोचना करती हैं:

"यह कहना अनावश्यक है कि गृहकार्य का यंत्रीकरण, घरेलू उपकरणों की मात्रा और कोटि में वृद्धि पति की ज़्यादा सहभागिता संभव बनाते हैं। घरेलू उपकरणों और सेवाओं में सुधार हो रहा है और घरेलू काम में कम समय लगता है। लेकिन, मिसाल के लिए, यह कहना सही नहीं है कि रोज़मर्रा की चीज़ों की घर डिलीवरी स्त्रियों के लिए सहूलियत है – वह तो सारे ही परिवार के लिए सहूलियत है।

"हम जो लेख पढ़ते हैं, उनमें से कुछ में यह प्रत्यक्ष है कि लेखक घरेलू काम को स्त्री के काम का समानार्थक मानता है। लेखक स्त्री हो, तब तो यह और भी बुरा होता है। मिसाल के लिए, अगर क़ीमा बनाने की कोई नयी मशीन बनती है, तो लेख का शीर्षक होता है – 'स्त्रियों के लिए एक उपहार' या जब कोई नयी दूकान खुलती है, तो आप पढ़ते हैं – 'गृहिणी ख़ुश होंगी'। यह एक कालातीत नज़रिया है और इसकी प्रेस में गंभीरता से आलोचना की जानी चाहिए। संबंधों का इस तरह का उलझाव और गिराव बहुत हानि करते हैं – वे आदमी और औरत – दोनों – की वास्तविक समानता का अर्थ समझने में बाधक होते हैं।"

वह यंत्रीकरण और पड़ोस में ही खाद्य केंद्रों जैसी सेवाओं को हल बताते हुए अपनी बात को पूरा करती हैं, जो अंततः कई तरह के पके भोजन मुहैया करेंगे, जिन्हें खाने के लिए समय पर घर पहुंचा दिया जाया करेगा।

"यहां इस विषय पर कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में लिये गये रुख़ को याद करना समीचीन रहेगा। उसमें सिर्फ़ घरेलू काम के बोझ को कम करने की ही नहीं, बल्कि इस बोझ से पूरी तरह निजात पाने की, आधुनिक विज्ञान और इंजीनियरी की सहायता से सामुदायिक सेवाओं के सुधार पर मुख्य ज़ोर देने की ज़रूरत की बात भी कही गयी है।

"देश के आर्थिक तथा सांस्कृतिक मामलों में स्त्रियों की समान सहभागिता हमारी सामाजिक व्यवस्था की एक निर्विवाद्य श्रेष्ठता, मानवजाति के नैतिक विकास में एक बड़ा डग है। इस क्षेत्र में हर संभव काम अभी तक किया नहीं गया है, लेकिन हम में से कोई भी उसे नकारेगा नहीं कि जितना किया जा चुका है। पारिवारिक जीवन के बारे में चाहे कितना ही प्रचार किया जाये या उसे चाहे कितनी भी रोमानियत क्यों न दी जाये, उससे हम अपनी राय को नहीं बदलनेवाले हैं।"

४. लाटविया

"आपके फ़्लैट में जाने में कुछ विलंब हो जायेगा," ताईर सलाखोव ने कहा। "हमने आपके लिए विज्ञान अकादमी के एक नये रिहायशी मकान में फ़्लैट की व्यवस्था की थी। उसमें वाल-पेपर लगाया जा रहा है और पार्कीट जमाया जा रहा है। इसमें दो-तीन हफ़्ते और लग जायेंगे, इसलिए हम सोच रहे हैं कि आप शायद इस बीच एकाध महीना हमारे किसी विश्राम-गृह में – काकेशिया में या बाल्टिक तट पर – बिताना पसंद करें।"

काकेशियाई पहाड़ मैं पहले भी देख चुका था, इसलिए मुझे बाल्टिक सागरतट का ही खयाल आया और लीला भी राज़ी हो गयीं। हम मास्को से रात की ट्रेन से रवाना होकर अगली सुबह लाटवियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की राजधानी रीगा पहुंच गये, जहां हमारी कलाकार अतिथि-सदन के हंसमुख निदेशक कोरोल्योव से मुलाक़ात हुई, जो प्लेटफ़ार्म पर लीला के लिए गुलाबों का गुलदस्ता लिये खड़े हुए थे।

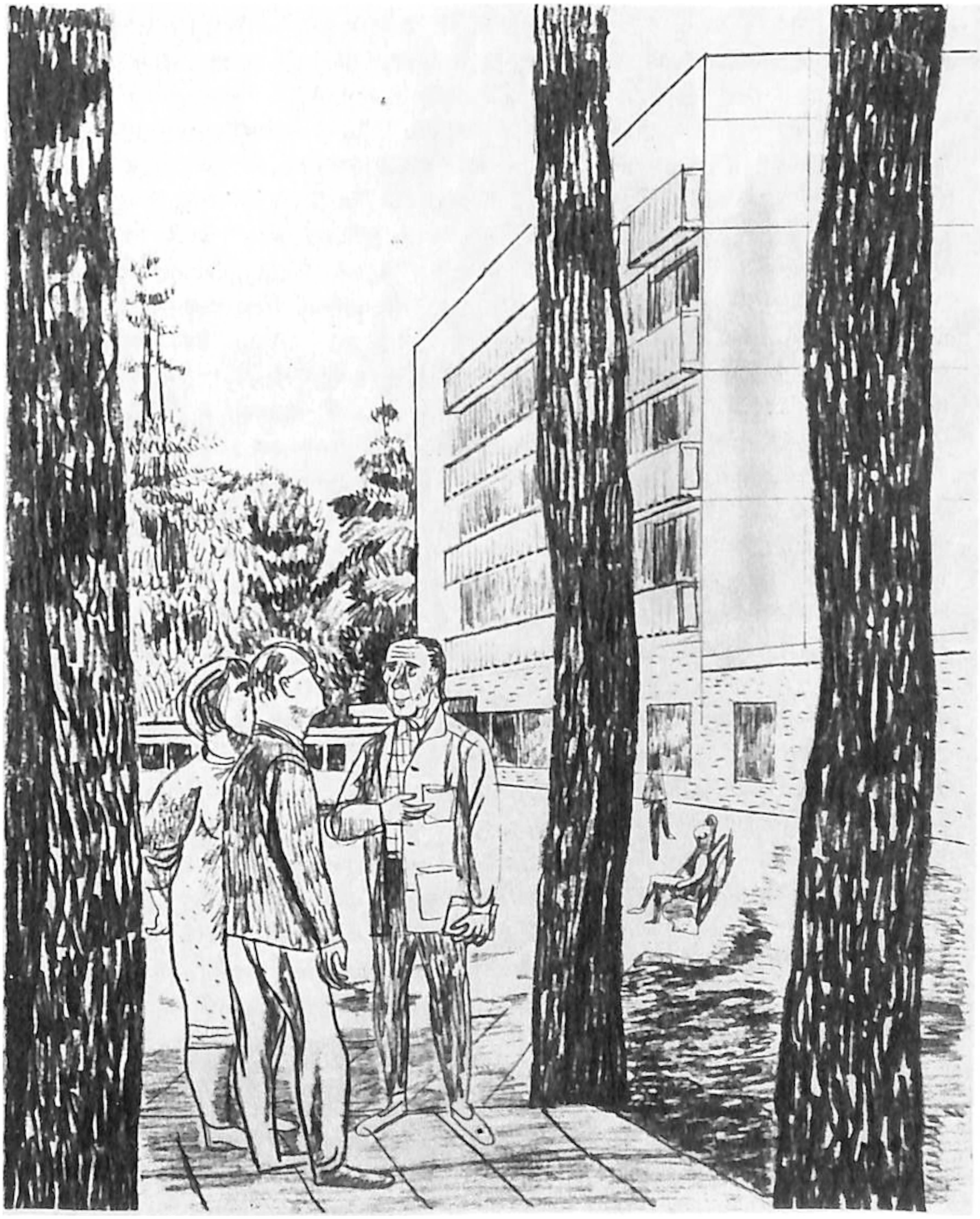
हम कार द्वारा चीड़वनों के बीच बने रास्ते पर होकर यूरमाला नगर के दि्ज़ंतारी इलाक़े में पहुंच गये। कार एक फूलभरे बाग़ में जाकर खड़ी हो गयी – एक तरफ़ फ़ौव्वारा था और ऊंचे चीड़ों के पास बेंचें पड़ी हुई थीं, दूसरी तरफ़ एक पांच-मंज़िला इमारत थी। हमें एक दो कमरेवाले फ़्लैट में पहुंचा दिया गया, जिसका छज्जा बाग़ की तरफ़ था। इसके बाद हमने कोरोल्योव के साथ नाश्ता किया।

"आप शायद सागरतट देखना चाहेंगे," उन्होंने कहा। "चलिये, मिनटों का पैदल रास्ता है।"

बाग़ से बाहर निकलकर हम एक प्रदर्शनी हाल, कई छोटे-छोटे क़हवाघरों और एक खुले कंसर्ट हाल के सामने से गुज़रे और लगभग फ़ौरन ही सड़क के छोर पर हमें खाड़ी का नील-धूसर पानी दिखाई देने लगा। मैं सीमेंट की सीढ़ियों पर से लपकता हुआ उतरकर पानी के किनारे नरम-नरम सफ़ेद रेत पर चला गया। धूपदार दिन था, सामने खाड़ी का प्रशांत विस्तार था। वापस जाते समय कोरोल्योव ने सुझाव दिया कि हम आराम कर लें और उसके बाद उनके दफ़्तर में जाकर प्रवास के बारे में कुछ बातचीत कर लें।

जब हम उनके दफ़्तर गये, तो उन्होंने कहा, "आराम कीजिये और हमारी स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग कीजिये, किसी व्यायाम दल में शामिल हो जाइये। हमारे यहां एक बढ़िया पुस्तकालय है। सदन के पीछे की तरफ़ आप जंगल में दूर-दूर तक घूमने जा सकते हैं। हम रीगा की सैर का भी इंतज़ाम करेंगे।" इसके बाद उन्होंने अपने सदन के बारे में बताया।

"हम जल्दी ही एक और इमारत का निर्माण करने जा रहे हैं। अंततः यहां एकसाथ २०० अतिथि ठहर सकेंगे। यह सदन हमारे संघ के छः सदनों में से एक है। हमारे देश में सिनेकर्मियों, अभिनेताओं, लेखकों, वैज्ञानिकों, संगीतज्ञों, ट्रेड यूनियनों – सभी के इसी तरह के सदन हैं। गरमियों में कलाकार यहां अपने परिवारों के साथ विश्राम करने और चिकित्सीय देखभाल के



लिए आते हैं। हमारी स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधाएं उन्हें निःशुल्क उपलब्ध हैं। लेकिन साल के दस महीनों में यहां कलाकारों के दल बिला ख़र्च दो-तीन महीने ठहरकर काम करने आते हैं। हो सकता है कि यह कोई मृत्तिकाशिल्पियों का (जैसा कि आप जानते हैं, हमारा इलाक़ा मृत्तिका-शिल्प के लिए मशहूर है) या मूर्तिकारों का दल हो। हमारे यहां अच्छा साज़सामान और निपुण कारीगर हैं। दूसरे सदन ग्राफ़िक कला, चित्रकला और मूर्तिकला के केंद्र हैं। हमारे यहां मृत्तिका-शिल्पियों के और पोस्टर कलाकारों के दल हैं। आप जानते ही हैं कि हमारे पोस्टर सारी दुनिया का ध्यान आकर्पित करते हैं। हमारा काम सुसंगठित है। हमारे यहां एक पोस्टर आयोग है, जिसमें हमारे पंद्रह के पंद्रह जनतंत्रों के कलाकार हैं। पोस्टरों में विभिन्न विपयों को लिया जाता है – स्वास्थ्य का सवाल, पर्यावरण संरक्षण, विश्वशांति, या कोई तात्कालिक सामाजिक अथवा अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक घटना।"

कोरोल्योव ने बताया कि हर कार्य-दल का नेतृत्व कोई प्रसिद्ध कलाकार करता है। उसका काम बहस को आयोजित करना, कुछ मात्रा में सामूहिक कार्य-अनुशासन को क़ायम रखना और सत्र के अंत में तैयार कृतियों का मूल्यांकन करना है। यह किसी आगामी अखिल-संघीय प्रदर्शनी के लिए या विदेशों में प्रदर्शनार्थ कृतियां तैयार करनेवाला कार्य-दल हो सकता है। दल में आम तौर पर विभिन्न जनतंत्रों के कलाकार होते हैं। इससे उनको विभिन्न इलाक़ों की संस्कृतियों को जानने में सहायता मिलती है।

कंसर्ट हाल जाना, जो चीड़ के कुंज में छतदार, मगर खुली इमारत है, वहां कोंद्राशीन द्वारा संचालित वाद्यवृंद को सुनना, क्यूबाई नृत्य-मंडली के नृत्य देखना, अफ़्रीकी कार्यक्रम देखना और लाटवियाई संगीतज्ञों और नर्तकों के प्रदर्शनों का आनंद लेना कितना सुखद है!

यहां हमारी लेनिनग्राद, ताशक़ंद, आज़रबैजान, तुर्कमेनिया, अर्मीनिया और जार्जिया के लोगों – चित्रकारों, मूर्तिकारों, ग्राफ़िक कलाकारों, कला-इतिहासज्ञों और कला-समीक्षकों – से मुलाक़ातें हुईं। मैंने रंगीन पारदर्शियों पर अपनी कृतियां और अमरीका से अपने साथ लायी फ़िल्म दिखलायीं। इसके बाद सवाल पूछे गये और बहस हुई।

"हम यथार्थवाद पर ज़ोर देते हैं," एक चित्रकार ने कहा। "यह किसी भी तरह बंधनकारी नहीं है। इसके विपरीत यह हम में से प्रत्येक को अपने ही ढंग से काम करने का अवसर प्रदान करता है, जैसा कि आप दैनेका, गुत्तोस्सो, सिकेइरोस, पोर्तीनारी और स्वयं अपनी कृतियों में देखते हैं।

"जनता के साथ घनिष्ठ संपर्क हमें विकसित करता है। आज हमारे युवा कलाकार अभिव्यक्ति के नये रूपों की खोज कर रहे हैं। इस समय हम जनसाधारण के लिए ग्राह्य भाषा में गहनतर अभिप्राय रूपों को खोज रहे हैं।"

एक अध्यापक ने कहा, "हम कला विद्यालय से व्यावसायिक जीवन में संक्रमण-काल की ओर बहुत ध्यान देते हैं। हमारा शिक्षण छात्र को अपनी कला के ज्ञान में, रेखांकन और चित्रण में ठोस आधार प्रदान करता है। हो सकता है कि रचना के अध्ययन में कुछ कमज़ोरी रह गयी हो। मेरे ख़याल में हमारे ग्रीष्म कार्यक्रम बहुत उपयोगी रहे हैं, जिनमें छात्रों के दल अपना समय

खानों में, नये नगरों की निर्माणस्थलियों पर, फ़ार्मों पर रेखांकन करने और चित्र बनाने में व्यतीत करते हैं। इस तरह वे यहां जीवन और श्रम के सभी पहलुओं को, अपने विषयों को देखते हैं। कला विद्यालयों की शिक्षा पूरी करनेवाले छात्रों को उद्यमों, कारख़ानों या फ़ार्मों से संबद्ध किया जा सकता है, जहां वे अध्यापन कर सकते हैं, भित्तिचित्र बना सकते हैं, मनोरंजन की जगहों में लटकाने के लिए चित्र बना सकते हैं, या स्वयं अपने लिए चित्रमाला बना सकते हैं। वे महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों में भाग ले सकते हैं (निर्णायकों के सामान्य अनुमोदन के बाद) और अपनी कृतियों के प्रमुख प्रदर्शनियों में दिखाये जाने के बाद वे कलाकार संघ की सदस्यता के लिए आवेदन कर सकते हैं।

"ऐसे भी कलाकार हैं कि जो संघ के सदस्य नहीं हैं – या तो इसलिए कि उनका कृतित्व मानकों तक नहीं आता है, या इसलिए कि वे सदस्यता के लिए आवेदन नहीं करना चाहते। लेकिन फिर भी वे राष्ट्रीय और प्रादेशिक प्रदर्शनियों में भाग ले सकते हैं, बशर्ते कि निर्णायक-मंडलों को उनकी कृतियां स्वीकार्य हों।

"कलाकार संघ कलाकारों के लिए उन्हें काम दिलवाने और उनकी कृतियों को बेचने के एजेंट की तरह काम करता। लेकिन ग़ैर-सदस्यों को निजी संपर्कों के ज़रिये काम पाने का हक़ है। वे लोग पुस्तकों के लिए चित्र बनाते हैं, मंच प्रस्तुतियों के लिए डिज़ाइन बनाते हैं, ग्राफ़िक शिल्पशालाओं में काम करते हैं। हमारे यहां कुछ ऐसे कलाकार हैं, जिन्हें पर्यटकों के लिए काम करना, अपनी कृतियां विदेशी दूतावासों को बेचना ज़्यादा पसंद है। यही कलाकार 'अनधिकृत कला' के रहस्यमय नाम के जनक हैं, जो कुछ यात्रियों को आकर्षक लगता है। यह नाम बड़ा रोमानी लगता है और इसका निहित आशय यह है कि कलाकार अभागा है, उसे समझा नहीं जाता है और उसे वैयक्तिक संरक्षण की आवश्यकता है।

"अभाग्यवश इनमें से कुछ लोग विदेशों में सोवियतविरोधी प्रचार के लिए उपयोगी राजनीतिक भूमिका अदा करते हैं। निस्संदेह, हमारे यहां ऐसे कलाकार हैं, जिनका कार्य शैली या जीवन के प्रति दृष्टिकोण के लिहाज़ से अत्यधिक वैयक्तिक है, जिससे उसकी सार्विक स्वीकृति की परिधि कुछ सीमित हो जाती है। हमारी जनता के सांस्कृतिक विकास, मूल्यानुभूति और समझ के बढ़ने के कारण आज यह समस्या इतनी नहीं रही है। लेकिन हम जानते हैं कि सोवियत जनता की व्यापक, औसत रुचि में और सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक विकसित तबक़ों की, जिनकी संख्या हमारे व्यापक सांस्कृतिक निर्माण-कार्यक्रम के कार्यान्वयन के फलस्वरूप लगातार बढ़ रही है, रुचि में अब भी काफ़ी अंतर है। लेकिन हम यथार्थवादी हैं, हम जनवादी हैं और जहां दुनिया के कुछ भागों में 'सारी जनता के लिए संस्कृति' के हेतु की ज़बानी सेवा की जाती है, वहां हम इसे वास्तविकता में परिणत करने की अपनी लगन में यथार्थवादी, युक्तिसंगत और दृढ़प्रतिज्ञ हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि हम जानते हैं कि हमारे देशवासी अपने सहज बोध से ही आम तौर पर श्रेष्ठतम को ही स्वीकार करते हैं।"

मैंने कहा, "आपके कलाकार संघ का ढांचा, उसकी प्रबंध व्यवस्था, कलाकारों की लगन, सामूहिकता की भावना – यह सब मुझे संयुक्त राज्य अमरीका के इतिहास में एक अनुपम और

समृद्ध काल की याद दिलाता है, जब हमारे यहां मंदी के ज़माने में राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के मार्ग-दर्शन में एक संघीय कार्यक्रम शुरू किया गया था। इसमें चित्रकार और दूसरे पेशों के लोग – अभिनेता, कवि, लेखक और नर्तक – भी सम्मिलित थे।"

मैंने उन्हें जन-संस्कृति के निर्माण में हमारी उपलब्धियों के बारे में, कलाकारों के सामाजिक और राजनीतिक कार्य के बारे में, ग्राफ़िक कला, भित्तिचित्रकला, चित्रकला और मूर्तिकला में होनेवाले उत्साहपूर्ण कार्य के बारे में, उन पचास लाख से ज़्यादा अमरीकियों के बारे में बताया, जिन्हें अपनी ज़िंदगियों में पहली बार सांस्कृतिक हलचलों में खींचकर लाया गया था। मैंने उन्हें १९३४ से लेकर युद्ध के आरंभ होने तक के इस काल के पहलेवाले जॉन रीड क्लबों के शक्ति-शाली सामाजिक आंदोलन के बारे में, आइज़ेन्स्टाइन, पुदोव्किन की प्रारंभिक फ़िल्मों को देखने, मयाकोव्स्की की कविता, सोवियत पोस्टरों और ग्राफ़िक चित्रों से अनुभूत हमारी उत्तेजना और मेक्सिकी कला के प्रभाव के बारे में बताया। मैंने अमरीकी कलाकार संघ जैसे फ़ासिस्टविरोधी संगठनों के बारे में बताया।

"आज कलाकार बूर्जुआ सैलों (वार्षिक प्रदर्शनी) के रहम पर है। आज वह कला के दलालों के साथ निजी जोड़तोड़ के रहम पर है। लेकिन हम एक नये युग की दहलीज़ पर हैं। अश्वेतों, मेक्सिकी अमरीकियों, प्वेर्तोरीकाइयों, अमरीकी इंडियनों और युवा अमरीकियों के संघर्ष से शक्तिशाली कला का उदय हो रहा है।"

"हमें इसके बारे में ज़्यादा जानना चाहिए," एक मूर्तिकार बोला। "यह बहुत ही दिलचस्प है। हमने संयुक्त राज्य अमरीका के इस काल के बारे में पढ़ा है, लेकिन हमारे लिए इसके बारे में आपकी ज़बानी सुनना, जो उसके एक भागीदार थे, विशेषकर रोचक है।"

उसने आगे कहा, "हमें अत्यधिक सुनिश्चिंतता और अभय का एहसास है और शायद हम बहुत सी बातों को मानकर ही चलते हैं। लेकिन फिर भी तथ्य यही है कि हम शांति से, आर्थिक परेशानियों के बिना काम कर सकते हैं। हम जानते हैं कि किस तरह दूसरे देशों में कलाकार का कार्य फ़ैशन के बाहर जा सकता है, जो लोग पहले आराम से रहते थे, उनके लिए बुढ़ापे में अपने को विस्मृत और अपनी रोटी जुटाने में मुसीबतों में पाना कितना मुश्किल हो सकता है। यह हमारे यहां असंभव है।"

"हम 'ला बोहेमे' के रोमानी विचार को, इस विचार को नहीं मानते कि कलाकार को आर्थिक और भौतिक संकटों से त्रस्त होना चाहिए," एक चित्रकार बीच में बोल उठा, "ताकि वह सृजन कर सके। हम इसका उलटा ही सोचते हैं। हम काम के लिए श्रेष्ठतम अवस्थाएं प्रदान करना चाहते हैं और हम अपने युवा कलाकारों की ज़रूरतों की तरफ़ विशेष ध्यान देते हैं।"

"मैं हमारी किताबों के बारे में कुछ कहना चाहूंगा," कीयेव के एक ग्राफ़िक कलाकार ने कहा। "हमारी किताबें लाखों की तादाद में छपती हैं। उनमें से अधिकांश सचित्र होती हैं और हम इस कार्य को उच्च सर्जनात्मक स्तर का समझते हैं। मैंने हाल ही में वाल्ट ह्विटमैन और हैमिंगवे की किताबों पर काम किया था, जो – जैसा कि आप जानते ही हैं – हमारे देश में बहुत लोकप्रिय हैं।"



एक और कलाकार ने स्मारक-कला के बारे में बताया, "हम भित्तिचित्रण का एक विराट कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं। हमें यहां तक पहुंचने में विभिन्न कारणों से बहुत समय लगा है। एक कारण यह है कि हमने अभी हाल तक कम ही निर्माण-कार्य किया था, और दूसरा कारण तात्कालिक उपयोग के लिए तेज़ निर्माण की आवश्यकता है। फिर शायद हम सैद्धांतिक दृष्टिकोण से भी इसके लिए तैयार नहीं थे।"

उस शाम के बाद हमने अपनी बातचीत को सागरतट के तनावहीन वातावरण में या ऊंचे चीड़ों के तले छलछलाते फ़ौवारे के पास बैठे-बैठे जारी रखा।

एक दिन हम रीगा गये। वहां डोम गिरजे के (जो अब संग्रहालय और कंसर्ट हाल है) बाग़ में, जहां एक शाम को हमने यूरोप के सबसे बड़े आर्गनों मे से एक के सुंदर संगीत का आनंद लिया था, मैंने झाड़ियों और पेड़ों के बीच घास में सजी कुछ सुंदर, विषय-विहीन, ज्यामितीय (अथवा मुक्त आकार) मृत्तिकाशिल्प कृतियां देखीं। यह एक सुखद आश्चर्य था, क्योंकि यह बहुत कुछ उसी तरह की कला थी, जिसकी अभी कुछ ही समय पहले तक "बूर्जूआ" और "ह्रासोन्मुख" कहकर आलोचना की जाती थी।

यहां संग्रहालय-पृष्ठभूमि (जिसके साथ अनिवार्यतः आधिकारिक अनुमोदन का एहसास रहता है) में नहीं, बल्कि प्रकृति के सान्निध्य में वह बिलकुल वही बन गयी थी, आनंद की अनुभूति देनेवाली, – जो वह वस्तुतः है – एक आलंकारिक, कल्पनाप्रवण और प्रेरणादायी अभिव्यक्ति। और सिर्फ़ मृत्तिका कृतियां ही नहीं, बल्कि धातु और कांच के भी उतने ही कल्पनाप्रसूत टुकड़े, जिन्हें मैंने पार्कों में और सड़कों पर देखा है।

लाटविया के शिल्पकार कुछ बहुत ही सुंदर कृतियां पैदा कर रहे हैं। वे श्रेष्ठ ग्राफ़िक-कलाकार भी हैं, जो कितनी ही नयी प्रविधियों का उपयोग करते हुए कल्पनाप्रवण अभिव्यक्तियां प्रदान कर रहे हैं। वे बढ़िया चित्रकार और मूर्तिकार हैं, जिसका प्रमाण मैंने सलासपिल्स में, रीगा में और एक बड़ी प्रदर्शनी में इतनी सजीवता के साथ देखा है।

सलासपिल्स

यूरमाला सागरतट पर एक बार बातचीत में मैंने सलासपिल्स शब्द सुना। कुछ कलाकार वहां होकर अभी वापस आये थे। मुझे सलासपिल्स के बारे में मालूम था – अधिकृत इलाक़ों में बनाये गये कितने ही बंदी शिविरों में से एक। मुझे वहां हाल ही में निर्मित स्मारक के छायाचित्र देखने की याद आ गयी। मैंने एक सोवियत पत्रिका में जो चित्र देखे थे, उन्होंने मुझे विचलित कर दिया था। वह एक अत्यंत प्रभावोत्पादक और मर्मस्पर्शी मूर्ति-समूह था।

"कितनी दूर है वह?" मैंने पूछा।

"कार से कोई आधे घंटे का रास्ता है।"

मुझे तो अंदाज़ भी नहीं था कि हम उसके इतने पास हैं। मैं तो सिर्फ़ सलासपिल्स देखने के लिए ही लाटविया जाने को तैयार हो जाता, और यहां वह हमारे ठहरने की जगह से बस ज़रा ही दूर था!

कुछ दिन बाद कलाकार अतिथि सदन के निदेशक कोरोल्योव ने मुझे बताया कि प्रबंध हो गया है और सलासपिल्स में स्वयं मुख्य मूर्तिकार हमारे साथ होंगे। "हम रीगा होकर ही जायेंगे, इसलिए उन्हें वहीं से साथ ले लेंगे," उन्होंने कहा।

अगले दिन शुरू अपराह्न में लेव बूकोव्स्की से मुलाक़ात हुई – लंबे, स्वर्णकेशी, लाल रंगत, स्पष्टभाषी और मैत्रीपूर्ण।

रीगा से जंगल में होकर बने रास्ते पर कार में उन्होंने बताया, "यह एक सामूहिक परियोजना थी। यह प्रतियोगिता की तरह शुरू हुई थी, जिसमें कई वास्तुकारों और मूर्तिकारों ने भाग लिया था। प्रथम पुरस्कार तो किसी को भी नहीं मिला, पर प्रतियोगिता में कई अच्छे सर्जनात्मक विचार सामने आये। इसलिए कुछ वास्तुकारों और मूर्तिकारों को यह निमंत्रण दिया गया कि वे अपनी टोली बनाकर योजना और मूर्ति-समूह का ख़ाका प्रस्तुत करें।

"आरंभ में मुझे नहीं लगता था कि यह संभव हो पायेगा। आख़िर हम में से हर किसी की अपनी शैली, अपनी विशेषताएं और सृजन का अपना ही तरीक़ा था। आप पूछ सकते हैं कि फिर यह हुआ कैसे? जब हम वहां पहुंचे, जहां भूतपूर्व शिविर हुआ करता था, तो हमने झाड़-झंखाड़ से घिरा एक बड़ा मैदान देखा। शिविर का लगभग कोई निशान बाक़ी नहीं रहा था। जब लाल सेना पास आयी, तो जर्मनों ने क़ैदियों को और कहीं भेजकर लकड़ी की बारकों को जला दिया। फिर उन्होंने कुछ सामूहिक क़ब्रें खोदकर उनमें अपनी नृशंसता के निशानों को छिपा दिया।

"हमें यहां जंगली गुलाब की झाड़ियां और कुछ खड़ी चिमनियां दिखाई दीं। लेकिन जिस चीज़ ने हमें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, वह था यहां का सन्नाटा और ख़ालीपन। वहां खड़े हुए-हुए और आदमियों, औरतों और बच्चों की हत्या की जानकारी और अपने आसपास की नीरवता के एहसास से हम बेहद विचलित हो गये। और न जाने क्यों, हमें इसका इतना ख़याल नहीं आया कि क्या किया जाना चाहिए, जितना इसका कि क्या नहीं किया जाना चाहिए, ताकि जितना बिलकुल ही ज़रूरी हो, उससे ज़्यादा इस जगह को कलाकार के हाथों का स्पर्श न होने पाये।

"काम की आरंभिक मंज़िलें ही सबसे मुश्किल थीं। कई मूर्तिकारों और वास्तुकारों ने परियोजना से अपने को अलग कर लिया। हम एक सर्वांगीण विचार को ध्यान में रखते हुए छोटे-छोटे प्रतिरूपों पर काम कर रहे थे। कुछ विचार पहले ही बन चुके थे – बाहर की दीवार और मूर्तियों के बारे में कुछ बातें।

"जैसे ही हमने सामग्री – सीमेंट – के बारे में फ़ैसला किया कि हमारा काम चल पड़ा। हमने कांसे और संगमर्मर को अपने गुण से ही अत्यधिक भड़कीला मानकर सामग्री के रूप में अस्वीकार कर दिया। हमने सीमेंट को इसलिए नहीं चुना कि वह सस्ती सामग्री है, बल्कि प्रकृति के साथ उसके विपर्यास के कारण पसंद किया।

"बाहरी दीवार ज़िंदगी और मौत के बीच की सीमा-रेखा थी। उसके दूसरी तरफ़ अविश्वसनीय आतंक की जगह थी। हमारा विचार यह था कि दीवार से पूरा दृश्य नज़र आना चाहिए, मगर सिर्फ़ एक ही तरफ़ से, ताकि मूर्तियां घास के बंजर मैदान के दूसरे सिरे पर उस





ज़मीन से उठती हुई नज़र आयें, जिसके गर्भ में इतने सारे मृतक पड़े हुए हैं। सीमेंट के चयन ने वास्तुकला और मूर्तिकला को एक कर दिया और उस रूप को निर्धारित किया, जिसने हम सबको एक करने में सहायता की। हमारे विचार में अनचिकनाये सीमेंट का खुरदरापन परियोजना में एक आवश्यक तत्व था। हमने अनुभव किया कि मूर्तियों को सरल, निश्चल और आंतरिक गति से परिपूर्ण होना चाहिए। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गये, हम अपनी कल्पना को तराशकर सर्वावश्यक न्यूनतम पर लाते गये। हम ऐसी सरलतम अभिव्यक्ति को खोज रहे थे कि जो ऐसी हो कि मानो उसी प्रकृति का अंग हो, जो पहले क़ैदियों के आसपास थी और जो हमारे बच्चों और उनके भी बच्चों के आगे एक साक्षी की तरह रहे।"

मुख्य मार्ग से हम एक सादे ब्लाक के साथ, जिस पर "सलासपिल्स १९४१–१९४४" खुदा हुआ था, बायीं तरफ़ मुड़कर छोटी सड़क पर आ गये। हम उस सड़क पर जा रहे थे, जिस पर हज़ारों लोग एक ही दिशा में जाकर मृत्यु को प्राप्त हुए थे। कार को पार्किंगस्थल पर खड़ा करके हमने एक वक्राकार सड़क पर चलना शुरू किया, जो हलके-हलके ऊपर उठती जा रही थी। धीरे-धीरे, मोड़ के पास पेड़ों के अलग होने के साथ हमें धूसर-सफ़ेद लंबी दीवार दिखाई दी, जो दूसरे सिरे पर झुककर ऊपर की तरफ़ उठ गयी थी और ग्रेनाइट के काले ब्लाकों पर जाकर टिक गयी थी। पास आने पर हम ब्लाकों के नीचेवाली सीढ़ियों पर होकर उतरे – हर सीढ़ी पर उतरने के साथ-साथ हमारी आंखों के सामने एक विशाल हरा मैदान आता गया। दूसरे सिरे पर सीमेंट की ऊंची-ऊंची आकृतियां थीं।

"हमारी योजना इस तरह की थी कि लोग स्मारक के प्रकट होने को देखें और उसमें भाग लें," बूकोव्स्की ने कहा। दीवार पर सामने की तरफ़ हम पढ़ते हैं – **"इस दीवार की दूसरी तरफ़ धरती रो रही है।"** समान निशानोंवाली काले पत्थरों की क़तारें खड़ी हैं – जिनमें से हर पत्थर १९४१ से लेकर १२ अक्तूबर, १९४४ के तेज़ी से आते मुक्ति के दिन के लिए है।

हम दीवार के नीचे से निकलकर खुली जगह में आ गये, जिसके हर किनारे पर क़ैदियों के लगाये बांज के पेड़ों की क़तारें हैं। बायीं तरफ़ काले ग्रेनाइट का एक ब्लाक है, जो यहां आनेवाले लोगों के अंतहीन प्रवाह द्वारा लाये फूलों से ढंका रहता है। भीतर एक जगह एक तालमापी की आदमी के दिल की धड़कन जैसी आवाज़ को सुना जा सकता था।

"यहां हर साल मुक्ति दिवस की वर्षगांठ के अवसर पर बच रहे भूतपूर्व बंदी, सारे सोवियत संघ से आये प्रतिनिधिमंडल और बच्चे इकट्ठा होते हैं," बूकोव्स्की ने कहा। हमने धीरे-धीरे चलते हुए सीमेंट की पगडंडी के साथ-साथ मूर्तियों और मैदान का चक्कर लगाया। हम एक युवती की बड़ी आकृति के पास खड़े हो गये। **"अवमानित"** नाम की विवस्त्र कर दी गयी यह मूर्ति घुटनों के बल हाथों से मुंह को छिपाये खड़ी हुई है। खुरदरी बनावट की इस मूर्ति की ढलाई के सीवन बड़ी लयबद्धता के साथ ऊपर की तरफ़ उठे हुए हैं। उसके पास खड़े होकर बूकोव्स्की ने अपना हाथ सीमेंट पर फेरा। "हमने इसे खुरदरा, अधूरा ही छोड़ दिया है। हमने अनुभव किया कि इससे इसका भावनात्मक प्रभाव और प्रबल होगा। हमने पहले आकृतियों को मिट्टी से

वनाया, उन्हें प्लास्टर में ढाला, ढले हुए ढांचों को यहां लाये, यहां सीमेंट मिलाने का एक छोटा संयंत्र लगाया और सांचों में सीमेंट डाल दिया।"

उन्होंने आगे कहा, "यहां बच्चों को अपनी मांओं की गोद से छीन लिया जाता था। यहां जर्मन मोरचे पर पहुंचाने के लिए उनका शिशु रक्त ले लिया जाता था," वह चुप हो गये और कुछ ठहरकर फिर बोले, "हम सोच नहीं पा रहे थे कि इन बच्चों की याद में यहां क्या किया जाये। फिर एक विचार पैदा हुआ – किसी बच्चे से चित्र बनाने के लिए कहा जाये। हमने एक लड़के से कहा और उसने एक आदमी, सूरज और मकान बना दिया। हमने उसके रेखाचित्र को विवर्धित किया और उसे कांटेदार बाड़ में बंद करते हुए सीमेंट के ब्लाक में ढाल दिया।"

इस सीधे-सादे और मर्मस्पर्शी स्मारक के पास काले ग्रेनाइट का एक नीचा सा ब्लाक पड़ा हुआ है। उस पर एक ताज़ा गुलदस्ता और कुछ मिठाई है – उसे शायद यहां आनेवाले बच्चे लाये हैं और उसके ऊपर गरम धूप में मधुमक्खियां उमड़ रही हैं।

हम चलते रहते हैं। आकृतियां स्थिति बदलती जाती हैं, नये संबंध में आकर सूक्ष्म मुद्राएं प्रकट करती जाती हैं। "**मां**" बच्चों से घिरी एक सीधी खड़ी आकृति है। ओजस्वभरी और सूक्ष्म। मानव देह को प्रकट करतीं (लेकिन उसकी अनुकृति करती नहीं) विशालाकार आकृतियों के परिप्रेक्ष्य में वह बहुत ऊंचाई तक पहुंच जाती प्रतीत होती है। हम चार आकृतियों के समूह के पास जाते हैं। "**एकजुटता**" एक को थामे दूसरा आदमी है, जिसका सिर अपने साथी के कंधे पर टिका हुआ है, "**क़सम**" – बांहें ऊपर उठाये हुए आकृति है। तीसरी, "**लाल मोरचा**" की सादी रचना सर्वावश्यक विवरणों – चेहरों, बांहों और सिरों – तक ही जाती है। हम वृत्ताकार पगडंडी पर चलते-चलते ज़मीन पर गिरे आदमी की आकृति के पास पहुंच जाते हैं – "पराजित, किंतु नष्ट नहीं," बूकोव्स्की कहते हैं। एक बांह देह के साथ समकोण पर सीधे स्तंभ की तरह उसे सहारा दे रही है। दूसरी उसके बदन के साथ-साथ घिसटती हुई ज़मीन को छूती हुई उंगलियों में जाकर ख़त्म हो जाती है। वृत्ताकार पगडंडी के उस ओर हमें सीमेंट की नीची-नीची सिल्लियां दिखाई देती हैं, जो भूतपूर्व बारकों की जगह को दिखाती हैं।

"देखिये न, इस परियोजना में विषय, विश्वास और एक-दूसरे के प्रति आदर से हम कितने एकजुट हो गये थे," बूकोव्स्की ने कहा। "मैं यह नहीं कहता कि मैं इस तरह के सहकारी प्रयास को जारी रखने के लिए तैयार हूं। शायद यह ज़रूरी नहीं है। फिर भी, इस परियोजना पर हमने जो छः साल लगाये, वे मेरे लिए बहुत ही मूल्यवान, उद्विग्नकारी, कठिन और अत्यंत फलदायी थे।"

वापसी पर हमने दीवार के अंदर प्रवेश किया – यह प्रभावोत्पाद ख़ाली ब्लाक है, जिसमें सीढ़ियां ऊपर की तरफ़ जा रही हैं। ऊपर पहुंचकर हम छोटे से संग्रहालय में पहुंच जाते हैं, जिसमें कई आले हैं। यहां शिविर के उच्चतम नात्सी अधिकारियों और उनके स्थानीय सहयोगियों के चित्र, क़ैदियों के चित्र और उन तीन व्यक्तियों के रूपचित्र हैं, जो शिविर में गुप्त कार्य करते हुए क़ैदियों के मनोबल को बनाये रखते थे। यहां छोटे-छोटे बच्चों की लाशों से भरी एक खुली क़ब्र का चित्र भी है। और अंत में सावधान करने की मुद्रा में ज़मीन से बाहर निकला एक हाथ है। उसके नीचे लिखा है – "**यह फिर कभी नहीं होगा**"।

सारे ही सोवियत संघ में स्मारकों का निर्माण किया जा रहा है। कुछ स्मारक पारंपरिक हैं, तो सलासपिल्स की तरह दूसरे स्मारक गहराई के साथ अनुभव किये जानेवाले और रचनात्मक प्रयास की दिशा में नया पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

खाड़ी के तट पर

सफ़ेद, नरम रेतीला किनारा खाड़ी के नीले-हरे पानी और ऊंचे लाल चीड़ों के जंगल के बीच फैला पड़ा है। लहरें यहां अधिकांशतः मृदुल रहती हैं, तल धीरे-धीरे होता हुआ किनारे से ख़ासी दूरी पर जाकर गहरा होता है। जंगल के छोर के पास लकड़ी के तख़्तों का बना एक ऊंचा ढांचा खड़ा है, जो पढ़ने, गपशप करने या शतरंज खेलने की बढ़िया जगह है।

मेरे सुबह यहां पहुंचते-पहुंचते कुछ कलाकार पहले ही पहुंच चुके होते हैं – आज़रबैजानी चित्रकार सलाम, बूद्नीकोव और उनकी बेटी ओल्या। मैं सलाम के साथ पानी के किनारे के साथ-साथ टहलता हूं, जहां हलकी छपछपाती लहरें रेत को सख़्त बनाये रखती हैं। हम चित्रकला, अपने लक्ष्यों, अपने अनुभवों के बारे में बातें करते हैं। हमारी बातों में बहुत कुछ ऐसा होता है, जो एक-दूसरे के लिए नया है।

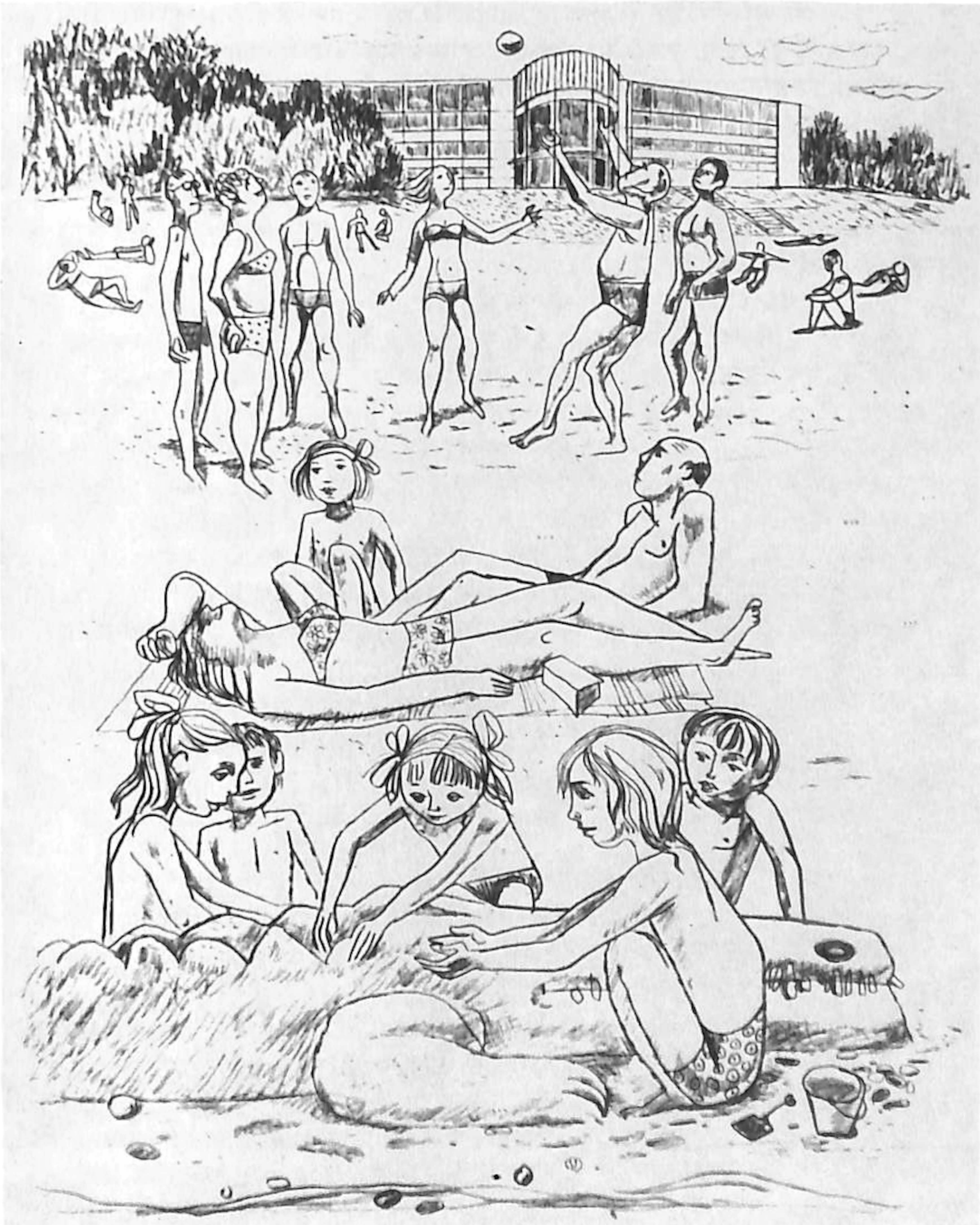
"मैं जब आदमी को चित्रित करता हूं," सलाम कहते हैं, "तो मैं उसकी अंतरात्मा को, उसके चरित्र के गहनतम भाग को प्रकट करने का यत्न करता हूं। कलाकार को न केवल अपनी निजी अनुभूतियों को, न केवल भावों को, बल्कि अपने विचारों को भी व्यक्त करना चाहिए – कलाकार के कृतित्व में ये दोनों ही बातें होती चाहिए और उसे इस तरह चित्रकारी करनी चाहिए कि लोग उसकी कृति से प्रेरित और प्रभावित हों।"

"मैं सहमत हूं, मैं भी इसी तरह महसूस करता हूं," पानी में घुसते हुए मैं जवाब देता हूं। सलाम भी साथ-साथ पानी में आ जाते हैं। जब तक हमारे बदन भीग नहीं जाते, तब तक ख़ासा ठंडा लगता है, लेकिन फिर हवा और पानी गरम लगने लगते हैं। हम तैरते हैं और फिर गरम धूप में घूमते हुए अपने को सुखाने के लिए तट पर वापस आ जाते हैं।

बालू के टीलों के किनारे पर बने लेखक अतिथि सदन के पास लोग वालीबाल खेल रहे हैं। पास ही कुछ छोटे बच्चे रेत में खेल रहे हैं। एक युवा शिक्षिका उनकी निगरानी कर रही है। वे सफ़ेद फ़ीते से अलग किये अहाते में हैं। एक तरफ़ उनके जूतों की लंबी क़तार क़रीने से लगी हुई है। रेत से उठकर वे हाथ में हाथ डाले पानी तक जाते हैं, भीग जाते हैं और फिर हंसते, चिल्लाते, शोर मचाते हैं।

हथठेले को धकेलती सफ़ेद कोट पहने एक स्त्री आती है। हम उससे बीयर और सासेज ख़रीदते हैं और रेत में लेटे-लेटे उनका मज़ा लेते हैं। बच्चों से घिरा एक नौजवान तट पर फैला एक लंबा और डरावना मगर बना रहा है।

तट पर होकर संगीत की तानें बह रही हैं – कोंद्राशीन रिहर्सल कर रहे हैं। मैं उठकर ओल्या के पास चला जाता हूं। वह एक पुरातात्विक उत्खननस्थली से सीधी यूरमाला आयी थी,



जहां उसने गरमियां खुदाई करने में विता दी थीं। वहां वह धूप से काफ़ी संवला गयी थी और नीली आंखों के साथ उसकी तांवई खाल बड़ी सुंदर लग रही थी। वह धाराप्रवाह अंग्रेज़ी और फ़्रांसीसी वोलती है और उसे अमरीकी कला की अच्छी जानकारी है।

"आओ, टहलें," मैं सुझाव देता हूं। हलकी-हलकी लहरें हमारे पांवों पर से लुढ़कती हुई रेत पर वहकर हमारे पैरों के निशानों को मिटाती जाती हैं।

ओल्या कला-इतिहास की छात्रा और अपने विद्यालय में कोम्सोमोल नेता है। मेरे व्याख्यान सुनने के वाद उसने मुझसे कहा था कि वह अपना शोध प्रवंध मेरे कार्य पर ही लिखेगी। वह अमरीकी कला से सुपरिचित है।

"मुझे एवरगुड का काम पसंद है और उनके वारे में 'मास्को न्यूज़' में आपका लेख मुझे वहुत अच्छा लगा," उसने मुझसे कहा। "मैं समझती हूं कि वह प्रतिभाशाली कलाकार हैं। वह जीवन को वड़े निजी भावानुराग के साथ रेखावद्ध करते हैं। उनका अभिव्यंजनावाद व्यक्ति को गहनतम मनोवैज्ञानिक अर्थों में प्रकट करता है। उनके कृतित्व में मैं कलाकार के निजी विश्व को अनुभव करती हूं। उनका कार्य मुझे ऐसे कलाकार के काम से अधिक प्रेरित करता है कि जो केवल प्रकृति को चित्रित करता है। और उनका रेखांकन तो मुझे वहुत ही प्रिय है। वह इतना अभिव्यंजनापूर्ण है।"

"ओल्या," मैंने टोकते हुए कहा, "तुमसे एवरगुड की वात सुनकर मुझे वहुत खुशी हो रही है। वह मेरे वहुत प्रिय मित्र थे और मैं उन्हें एक महान कलाकार मानता हूं।

"लेकिन यह वताओ, तुम्हारी पीढ़ी के नौजवानों की किस चीज़ में दिलचस्पी है?" मैंने पूछा।

"हमारे कुछ युवाओं की रुचि देवचित्रों में है। इसका धर्म से कोई सरोकार नहीं। हमारे देवचित्रों में ये लोग (संत) सुंदर, आंतरिक आत्मिक भावना से युक्त हैं। और यही – गहनतर, मानवीय, मनोवैज्ञानिक – चीज़ वह है, जो हमें आकर्षित करती है, जिसे युवा कलाकार जीवन में ढूंढता है। हमारे स्कूलों में चित्रकला की कक्षाओं में अध्यापक हमें नयी दिशाओं के वारे में वताते हैं और अगर हम प्रयोग करना चाहें, तो वे हमें रोकते भी नहीं। मुझे याद है कि हमारी एक प्रोफ़ेसर तत्याना याब्लोन्स्काया ने अपने इटली के दौरे से लौटने पर अपने एक व्याख्यान में हमें समकालीन इटालवी चित्रकारों और मूर्तिकारों के सवसे अग्रवर्ती विचारों से अवगत करवाया था। हमारी, छात्रों की, इसमें वहुत दिलचस्पी हुई और हमने इस व्याख्यान में देखी-सुनी चीज़ों के वारे में आपस में वहस को जारी रखा।"

तट लोगों से भर रहा है। एक वस पत्थर की सीढ़ियों के ऊपर आकर खड़ी हो जाती है और उससे निकलकर अपने कैमराओं, रेडियो और दूरवीनों के साथ जापानी पर्यटकों का एक दल तट पर विखर जाता है।

हम तख़्तों के ढांचे पर वापस आ जाते हैं। वहां मेरी जन-नियंत्रण आयोग के उस सदस्य से भेंट हुई, जिसे मैंने हमारे सदन के भोजनकक्ष में देखा था, जहां वह और सफ़ेद कोट पहने दो और लोग खाना खानेवालों के पास जा-जाकर उनसे भोजन और सेवा के वारे में उनके विचार

जान रहे थे। मैं जानता था कि वह लाटवियाई रायफ़ल दस्ते का भूतपूर्व सदस्य है। यह लाल सेना का एक विशेष दस्ता था, जिस पर नवस्थापित सोवियत सरकार और लेनिन के जीवन की रक्षा का दायित्व था (मैंने रीगा में इन लोगों के इतिहास के बारे में एक सग्रहालय और इन वीरों का एक प्रभावोत्पादक स्मारक देखा था)।

"मैं लाटवियाई किसानों का बेटा हूं," उसने मुझे बताया। "सात ही साल की उम्र में मैं गायों और सूअरों को चराने का काम करने लग गया था। बारह का होने पर मैंने एक कारख़ाने में काम करना शुरू किया। फिर मुझे फ़ौज में भरती कर लिया गया (यह पहले विश्व युद्ध की बात है)। फ़ौज में मेरी क्रांतिकारी मज़दूरों से भेंट हुई। मैं ज़ारशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष की आवश्यकता को समझने लगा। मज़दूर वर्ग तेज़ी से बढ़ रहा था। रूसी और जर्मन कारख़ाना मालिक हमारा शोषण करते थे। शुरू में ही हम में मज़दूर वर्गीय चेतना विकसित हो जाती थी। जब फ़रवरी क्रांति ने ज़ार का तख़्ता पलट दिया, तो हमारी लाटवियाई टुकड़ियों ने युद्ध को ख़त्म करने के बोल्शेविक कार्यक्रम का समर्थन किया। अक्तूबर क्रांति के बाद बोल्शेविक सरकार के सामने अपनी नवप्राप्त सत्ता को सुनिश्चित करने की समस्या थी। पुरानी सेना भंग हो रही थी – सैनिक अपने घर लौट रहे थे। सरकार को ऐसे लोगों की ज़रूरत थी कि जिन पर सोवियत सरकार के केंद्र स्मोल्नी और लेनिन के जीवन की रक्षा करने के लिए विश्वास किया जा सके। हमारे पास अपनी टुकड़ियों से सबसे विश्वस्त, साहसी और निर्भर करने योग्य लोग चुनने का अनुरोध भेजा गया। कुल मिलाकर ४०० लाटवियाई सैनिक पेत्रोग्राद गये।

"बाद में मुझे टाइफ़स हुआ, मगर मैं बच गया और फ़ौज में फिर शामिल होकर जार्जिया और अर्मीनिया में प्रतिक्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ लड़ा। इसके बाद दूसरा विश्व युद्ध आ गया। अगर वह न हुआ होता और उसमें हमारा सभी कुछ नष्ट न हो गया होता, तो आप हमें पहचान भी न पाते! हम इतने ज़्यादा आगे निकल गये होते! फिर भी, हमने जितना कुछ हासिल कर लिया है, वह भी काफ़ी उल्लेखनीय है।"

"आजकल आप क्या कर रहे हैं?" मैंने पूछा।

"मैं अब पेंशनर हूं, मगर चूंकि मैं अब भी सक्रिय हूं, इसलिए मैं जन-नियंत्रण आयोग में हूं। हमें मज़दूरों की सभाओं में चुना जाता है और हमारा कार्य कारख़ानों, स्कूलों, अस्पतालों और सभी सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के काम की जांच करना है। हमें उनकी सरगरमियों के सभी पहलुओं को देखने का और उनकी ख़ामियों की आलोचना करने का अधिकार है और हम यह सुनिश्चित करते हैं कि अगर हमारी जांच के परिणाम आलोचनात्मक हैं, तो उन पर ध्यान दिया जाये और ख़ामियों को दूर किया जाये। हमारे यहां आजकल एक बढ़ती हुई समस्या है श्रमशक्ति की, और विशेषकर निपुण मज़दूरों की कमी। इस मामले में हम संतृप्ति बिंदु पर पहुंच रहे हैं कि हम कितना अधिक और उत्पादन कर सकते हैं। इसका उत्तर स्वचलन है। उससे हमें अतिरिक्त श्रमशक्ति उपलब्ध हो जायेगी।"

एक और दिन मेरी कवि दोलमातोव्स्की और उनकी कला-इतिहासज्ञ पत्नी से मुलाक़ात हुई। वे दोनों कुछ ही पहले संयुक्त राज्य अमरीका गये हुए थे, सान-फ़्रांसिस्को भी आये थे और उन्होंने

डाकघर में मेरे भित्तिचित्र देखे थे। दोलमातोव्स्की की कई कविताओं को संगीतवद्ध कर दिया गया है। वह सारी दुनिया देख चुके हैं ("कह नहीं सकता कि मैं कितनी बार अफ़्रीका हो आया हूं," उन्होंने मुझे बताया)। वे लोग पास ही लेखक सदन में ठहरे हुए हैं।

मुलाक़ात मेरी एदुम इवानेस्ने से भी हुई। यह आकर्षक, मूर्तिवत सुंदर स्वर्णकेशी लाटवी महिला कम्युनिस्ट पार्टी की यूरमाला नगर समिति की द्वितीय सचिव हैं। मुझे वह, उनकी बेवाकी और साफ़गोई पसंद हैं।

उन्होंने मुझसे कहा, "आप जानते हैं कि हम अव, वरसों कई वुनियादी समस्याओं के हल में लगे रहने के वाद, इस हालत में आ गये हैं कि अपने सामाजिक जीवन की कुछ तफ़सीलों की तरफ़ देख सकें। उदाहरण के लिए, हम स्वीकार करते हैं कि पुराना बूर्जुआ वर्ग अपने वच्चों को सामाजिक तौर-तरीक़े की अच्छी समझ देता था। हम इसकी वात नहीं कर रहे हैं कि कॉफ़ी पीने के कौनसे तरीक़े का फ़ैशन था। हम ज़्यादा गंभीर वातों की चर्चा कर रहे हैं – दूसरे लोगों की इज़्ज़त करना, सामाजिक संवंधों को एक विशेष रूप देना – इनका महत्व था। आज वहुत से लोग गांवों से शहरों में आ रहे हैं। वे धरती के सान्निध्य में रहते समय विकसित सामाजिक स्वरूपों की अपनी पुरानी समझ को खो वैठे हैं। लेकिन फिर भी उन्होंने शहरी ज़िंदगी के सामाजिक स्वरूपों और संस्कृति को ग्रहण नहीं किया है। यह वात असभ्यता को, कभी-कभी वदतमीज़ी को भी जन्म देती है। हमारे कुछ लोग वच्चों के पालन-पोषण में सामाजिक संवंधों में आवश्यक तमीज़ की तरफ़ और मिलकर अधिकतम सुगमता और एक-दूसरे के प्रति शिष्टता के साथ काम करने की क्षमता के लिए ज़रूरी आचरण की तरफ़ काफ़ी ध्यान नहीं देते। हम अव माता-पिता को इस समस्या की तरफ़ ध्यान देने के लिए उत्साहित करते रहे हैं।"

"मेरे लिए यह एक नयी बात है, लेकिन मुझे खुशी है कि आप लोग ज़िंदगी के इस पहलू की तरफ़ भी देख रहे हैं," मैंने जवाव दिया।

"क्यों नहीं!" उन्होंने कहा। "यह हमारी जिम्मेदारी है।"

फिर उन्होंने मुझे यूरमाला के वारे में बताया। इसे रूसी बूर्जुआ वर्ग की अवकाशस्थली के रूप में वसाया गया था।

"आप जानते हैं कि लाटविया १९४० में जाकर ही समाजवादी देश बन पाया था। लेकिन तभी युद्ध आ गया। हम जर्मनों के अधिकार में रहे और हमारी सभी सामाजिक उपलब्धियां नष्ट हो गयीं। लाल सेना द्वारा १९४४ में हमारी मुक्ति के बाद हमने अपनी समाजवादी अर्थव्यवस्था का फिर से निर्माण करना शुरू किया। स्वास्थ्य केंद्र के नाते हमारे यहां ९८ अवकाशगृह, सैनेटोरियम और बाल शिविर हैं। यहां हर साल २५ हज़ार लोग आराम करने के लिए आते हैं – एकदम निःशुल्क, उनके आने-जाने का खर्च भी संगठनों या ट्रेड-यूनियनों द्वारा उठाया जाता है। हमारे यहां छोटे पारिवारिक मकानों के इलाक़े और बालकेंद्र भी हैं, जहां माता-पिता अपने बच्चों को योग्यताप्राप्त शिक्षकों के सुपुर्द कर सकते हैं।

"यहां तट की हवा में एक विशेष गुण है। तटवर्ती पट्टी की हवा में आयोडीन है। यह विशेषकर स्वास्थ्यप्रद है और हमारे कुछ नये सैनेटोरियम अपना उपचार दवाओं के न्यूनतम उपयोग के साथ इसी

गुण पर आधारित कर रहे हैं। मैं आपको यह सब दिखाना चाहूंगी। कहिये, कल तीसरे पहर कैसा रहेगा?"

मैंने प्रसन्नतापूर्वक यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया और अगले दिन हम कार में घूम रहे थे। हमारी सैर लकड़ी की पुरानी इमारतों के पास से शुरू हुई।

"ये हमें क्रांति के बाद पुराने बूर्जुआ वर्ग से विरासत में मिली थीं। जैसा कि आप देखेंगे, हम धीरे-धीरे इनकी जगह आधुनिक इमारतें बना रहे हैं।" हमारी कार ईंट की कई पंचमंज़िला इमारतों के सामने से निकली। "ये हमारे पचास के दशक के प्रारंभिक निर्माण का हिस्सा हैं। देखते हैं, इनमें ग़लती यह हुई है कि मकानों को सड़क के बहुत पास रखा गया है, इनमें हरियाली का क्षेत्र बहुत कम है। अब हम ऐसा नहीं करते।"

हम एक फ़ौवारे के पास रुके, जिसका नाम है यौवन का फ़ौवारा। कई लोग अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। हमने पानी से हाथ-मुंह धोया। फिर हम कार से एक पार्क में पहुंचे। यहां हमने बांज का एक पुराना पेड़ देखा, जो अब मृत है।

"इसका नाम प्रेमवृक्ष था। मेरे पिता और माता यहां आया करते थे। तब यह ज़िंदा और हरा था, अब हम इसे बचाकर रख रहे हैं। बात यह है कि लोग हम पर पुराने को नष्ट करने का आरोप लगाते हैं, लेकिन हम तो उसे परिरक्षित करने का काम करते हैं," उन्होंने मुसकराते हुए कहा।

आगे जाकर हम गोर्की और उनके मित्र, जातीय कवि राइनिस की मूर्ति के सामने रुकते हैं। एदुम ने बताया, "बच्चे और युवा लोग यहां कविता पाठ के लिए आते हैं। यह उत्सवों और सांस्कृतिक अवसरों पर एकत्र होने की एक लोकप्रिय जगह है।"

हमारी कार चीड़ के जंगल में होकर एक नये सैनेटोरियम पर जाकर रुकी। "हम अपनी इमारतों को चीड़ के पेड़ों की ऊंचाई तक ही जाने देते हैं (आम तौर पर पांच मंज़िल), लेकिन यह इमारत काफ़ी बड़े जंगल में है और इसलिए एक अपवाद है। आप ख़ुद देख सकते हैं कि यह एक सुंदर आधुनिक इमारत है।"

बाद में हम कुछ दूर स्थित मछुओं के सामूहिक फ़ार्म गये। यहां फ़ार्म के निदेशक ने संस्कृति सदन के भोजनकक्ष में हमारा स्वागत किया और हमें बहुत ही स्वादिष्ट मछली खिलायी गयी। निदेशक ने बताया, "यह भट्ठी से ताज़ा ही आयी है।"

मैंने संस्कृति सदन के निदेशक से भी बातें कीं, जिसने बताया, "हमने सांस्कृतिक कार्यों पर एक लाख रूबल ख़र्च किये हैं – हमारे गायकवृंद की पोशाकों पर, किताबों पर, अपने सदस्यों के लिए आयोजित कला प्रदर्शनियों पर, कंसर्टों पर और कितने ही क्षेत्रों में शौक़िया गतिविधियों पर।"

बाहर, चीड़ों के बीच में हमें एक खुला कंसर्ट स्थल दिखाई दिया। "यहां हम गरमियों में अपने मछुओं और उनके परिवारों के लिए कंसर्टों का आयोजन करते हैं।"

यूरमाला की अपनी आख़िरी शाम को हम खुले कंसर्ट हाल में कोंद्राशीन के संचालन में संगीत का आनंद लेने के लिए गये। संगीत, हमारे आसपास चीड़ के पेड़, आसमान पर जालों जैसी आकृतियों में जाते चांदनी से चमकते बादल – यह सब बहुत ही सुंदर लग रहा था। कंसर्ट के बाद हम तट पर गये। हवा कोमल थी। लहरें आहिस्ता से रेत पर छपछपा रही थीं। सामने बहुत दूर मुझे आते-जाते जहाज़ों की रोशनियों के धब्बे दिखाई दे रहे थे।

५. अर्मीनिया

बच्चों का संग्रहालय

अर्मीनियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की राजधानी येरेवान में १६७० में संसार में अपने ढंग के पहले और एक अनूठे संग्रहालय का संगठन और उद्घाटन किया गया – इस संग्रहालय में बच्चों की कलाकृतियां ही प्रदर्श हैं। राजधानी के एक मुख्य मार्ग पर स्थित इस संग्रहालय में दो मंज़िलें हैं – ऊपर मुख्य दीर्घा है, जिसमें अस्थायी प्रदर्शनियां होती हैं और निचली मंज़िल में संग्रहालय का स्थायी संकलन है। यहां मेरी इस संग्रहालय के संस्थापक और निदेशक हेनरिख़ इगित्यान से भेंट हुई।

उन्होंने मुझे बताया, "दुनिया भर में बच्चे चित्र बनाते हैं। वे सड़क की पटरियों और दीवारों पर रंगीन चाक और कोयले के टुकड़ों से चित्र बनाते हैं या धातु के टुकड़ों से खुरचकर अपनी तसवीरें बनाते हैं। जब भी उन्हें रंग मिल जायें, वे चित्रकारी करते हैं। इसलिए हमने यहां न तो कोई खोज ही की है और न ही कोई पहली बार बच्चों की कृतियों को प्रदर्शित किया है। लेकिन हमने जो किया है, वह यह है कि बाल कला को प्रदर्शित करने के लिए एक स्थायी दीर्घा का संगठन किया है। इसमें हम सर्वप्रथम हैं।

"हम अर्मीनिया के विभिन्न प्रदेशों और अन्य जनतंत्रों के स्कूलों से प्राप्त चित्रों की प्रदर्शनियां करते हैं। हम विशिष्ट आयु-वर्गों की – उदाहरण के लिए तीन से सात साल – प्रदर्शनियां संगठित करते हैं। हम विषय-संबंधी प्रदर्शनियां करते हैं और एक-व्यक्ति प्रदर्शनियां भी आयोजित करते हैं। कुछ शिक्षक कहते हैं, 'यह बच्चों को बिगाड़ने की बात है – इससे उन्हें अपने महत्व का गुमान हो सकता है।' लेकिन हम ऐसा नहीं समझते। आख़िर, भला जो बाल संगीतज्ञ किसी वाद्यवृंद में एकल वादक का काम करता है, उसे आप क्या कहते हैं?

"हमारी दीर्घा को लोग खूब अच्छी तरह से जान गये हैं, क्योंकि उनके बच्चे हमारी प्रदर्शनियों में भाग लेते हैं और मैं नहीं समझता कि अब कोई भी परिवार ऐसा होगा कि जो हमारे काम से परिचित न हो।

"अपनी प्रदर्शनियों में हम लगातार नयी प्रतिभा को उभरता देखते हैं। हो सकता है कि वह पहाड़ों में किसी दूर-दराज़ गांव का हो, या ऐन हमारे शहर का ही हो। हम उनके साथ संपर्क बनाये रखते हैं, विशेषकर उनके उच्च शिक्षालयों में प्रवेश करने के बाद। हाल ही में हमने फ़्रांसीसी बच्चों के चित्रों की प्रदर्शनी की थी। हम अन्य देशों के बच्चों की कृतियों की भी प्रदर्शनियां करना चाहते हैं। हम दुनिया भर के बच्चों के साथ संपर्क करना चाहते हैं। हम संसार के विभिन्न भागों के बच्चों की कृतियों में राष्ट्रीय और जातीय गुण देखते हैं। यही हमारी संपदा है।

"दीर्घा में अपने काम में, प्रदर्शनियों में हम वर्धमान बालक के लिए उसकी रंग की और कल्पना की प्रभूत अनुभूति को अक्षुण्ण रखने की आशा करते हैं। और इस सबके ऊपर, उसकी अबाधित सृजनशीलता की। जिस तरह बाल गायक का आयु के साथ सुर बदल जाता है और उसे अपनी आवाज़ के पुराने गुण को क़ायम रखते हुए नये सांगीतिक स्वर को खोजना होता है,



उसी तरह बढ़ते बच्चों में हमें उन्होंने अब तक जो किया है, उसमें उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना होता है, जिससे वे अपने आसपास देखे जानेवाले किसी प्रत्यक्ष अथवा सनसनीख़ेज़ कलारूप से कुंठित न हों। लेकिन हमें उन्हें याद रखाना चाहिए कि बचपन में वे नक़ल नहीं करते थे, बल्कि नवरचना करते थे – और यही वह सबसे मूल्यवान गुण है कि जिसका सातत्य बना रहना चाहिए।

"हर साल मई के मध्य में हम एक असाधारण आयोजन करते हैं। उस दिन हम बच्चों को निमंत्रित करते हैं कि वे आपेरा हाउस आकर उसकी पटरी पर तसवीरें बनायें। यह बहुत ही सुंदर दृश्य होता है। और निस्संदेह यहां अपने स्थायी संकलन के लिए तथा प्रदर्शनियों के लिए काफ़ी नयी प्रतिभाएं भी हमारे सामने आती हैं।"

और एक दिन येरेवान आपेरा की तरफ़ ले जानेवाली सीढ़ियों के सामनेवाले चौक में कई लड़के-लड़कियां एकत्र हो गये। चौक में कई आयत बने हुए थे, जिनमें प्रत्येक एक बच्चे के लिए था। ज़रा ही देर में पटरी चटक रंगों के चीतों और पेड़ों, लोगों और शांति के प्रतीकों, सूरज और चिड़ियों और फूलों से सजीव हो उठी। अंत में, जब काम पूरा हो गया, तो बच्चों को छोटे-छोटे उपहार – मिठाई, रंग और किताबें – दिये गये।

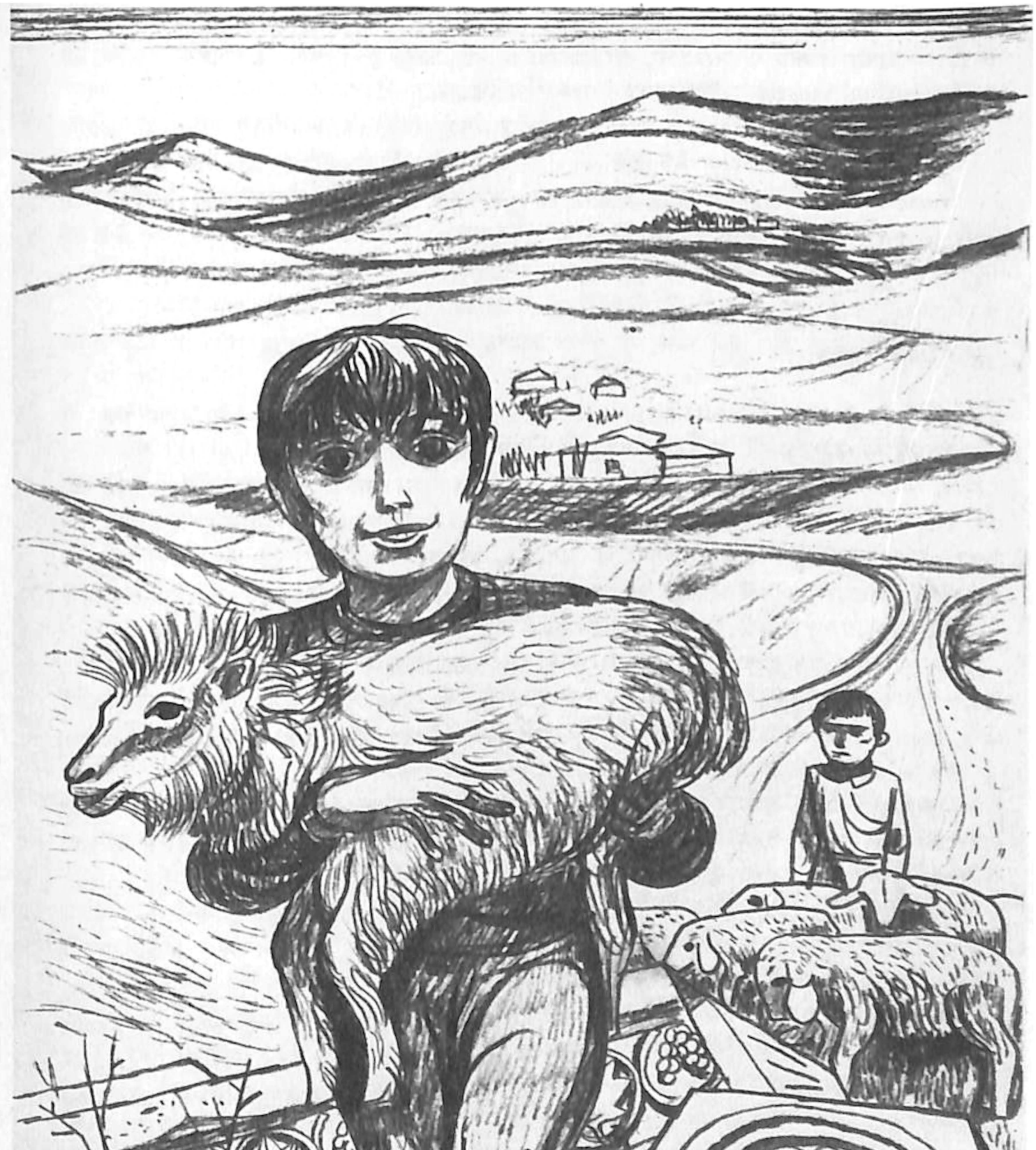
बाद में मैं येरेवान के एक स्कूल में गया, जहां मैंने पिछले साल न्यूयार्क के वुडस्टाक स्कूल की दीवारों पर अमरीकी बच्चों के बनाये कुछ भित्तिचित्रों की रंगीन पारदर्शियां दिखायीं। मैंने इन बच्चों के साथ कई सप्ताह मार्गदर्शन करते हुए, पर किसी भी बड़े भित्तिचित्र पर उनके काम को छुए या प्रभावित किये बिना काम किया था। वह बच्चों के रेखांकनों से ही बना हुआ था। वहां भी पेड़, सूरज और फूल थे। काम में जो अकेला अंतर था, वह बच्चे के पर्यावरण के प्रेक्षण से आया था। घोड़ों और गायों का लाल सायबान शुद्धतः अमरीकी था। बिलकुल उसी तरह, जैसे पत्थर पर नक़्क़ाशी बिलकुल अर्मीनियाई है। बच्चों को परदे पर अमरीकी बच्चे देखना बड़ा रोचक लगा। उनका ख़याल था कि अमरीकी बच्चों का काम बहुत अच्छा है। उन्हें सामूहिक प्रयास का विचार पसंद आया।

और बच्चों ने भी इन पारदर्शियों को देखा। अमरीकी बच्चे और नगरों – अश्क़ाबाद और तुर्कमानियाई शहरों, बाकू और रीगा और मास्को – के स्कूलों के कमरों में भी नज़र आये, और हमेशा खुले, सच्चे, उत्साहमय कुतूहल के साथ।

"क्या हम उन्हें अपने चित्र भेज सकते हैं? क्या हम पत्रव्यवहार कर सकते हैं? उनसे कहिये कि हमें उनका काम बहुत पसंद आया।" और उन्होंने रायें लिखीं।

झेन्या: "मुझे वह तसवीर बहुत अच्छी लगी, जिसे एक अमरीकी स्कूल के बच्चों ने बनाया था। उस तसवीर को कई लड़कों और लड़कियों ने दीवार पर बनाया था। हर छात्र ने जो चाहा, वही बनाया था और नतीजे के तौर पर एक शानदार और धूप से भरा हुआ चित्र बनकर सामने आया है।"

यूलिया: "एंटन रेफ़ेझिये बच्चों की बहुत परवाह करते हैं। मुझे स्कूल की वह दीवार बहुत पसंद आयी, जिस पर उनकी देखरेख में बच्चों ने चित्रकारी की है। दीवार असाधारण और बहुत दिलचस्प हो गयी है। चित्रकार बच्चों को सिर्फ़ चित्रकारी करना ही नहीं, बल्कि साथ-साथ, सामूहिक रूप में, दोस्ती के साथ रहना और काम करना भी सिखाते हैं।"



दूसरे बच्चों को मुसकराता सूरज, चांद पर कूदती गाय और लाल ट्रैक्टर पसंद आये। उनकी अमरीकी बच्चों के बारे में और ज़्यादा जानने की, उनके साथ पत्रव्यवहार करने की उनकी वास्तविक इच्छा को देख पाना बिलकुल प्रत्यक्ष था।

मेरे पास एक दस साल की बच्ची का ख़त है। वह अंग्रेज़ी में लिखती है:

"हम उन बच्चों को अपने स्कूल निमंत्रित करते हैं, जिन्हें आपने पारदर्शियों में दिखाया है। यहां आने का सबसे अच्छा समय गरमियां हैं, जब हम उन्हें दिलचस्पी की सभी जगहें दिखला सकते हैं। मैं और मेरे मित्र स्कूल की दीवार पर उनकी चित्रकारी की प्रशंसा करते हैं। वह बहुत शानदार है। सभी अमरीकी बच्चों के लिए अभिवादन के साथ, मरीना।"

लड़का और मेमना

येरेवान से कार में कलाकार संघ के प्रधान सुरेन सफ़र्यान और लेखक रूबेन के साथ मैं ऊंचे पहाड़ों में येहेग्नद्ज़ोर नगर के निकट एक सामूहिक फ़ार्म देखने के लिए जा रहा हूं। सड़क नयी है और रास्ता लंबा। शहर के कुछ ही आगे हम एक स्मारक के सामने से निकलते हैं, जो अभी बन ही रहा है – यह सड़क-निर्माताओं का स्मारक है। जल्दी ही हम मुड़कर गड्ढों और पत्थरों से भरे एक पुराने पहाड़ी रास्ते पर आ जाते हैं। हमारे गिर्द ऊंचे-नीचे पहाड़ों का ख़ूबसूरत नज़ारा है, शिखरों पर फैला बर्फ़ का जाल आसमानी पृष्ठभूमि में चमचमा रहा है। सड़क के साथ-साथ एक तरफ़ पहाड़ी चश्मे का निर्मल पानी बह रहा है।

कुछ समय बाद हम पत्थरों के घरोंवाले एक गांव से होकर गुज़रते हैं। यहां हम रोटी, पनीर और कोन्याक की बोतल ख़रीदते हैं। गांव के बाहर आकर हम एक एकाकी बड़े पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। पहाड़ी हवा में, इस ख़ूबसूरत फ़िज़ा में इस रोटी और पनीर के आगे बढ़िया से बढ़िया रेस्तरां का खाना भी क्या चीज़ है!

तरोताज़ा होने के बाद हम फिर चल पड़ते हैं। हम लगातार ऊपर चढ़ रहे हैं। बायीं तरफ़ सड़क के पास ही दो लड़के बकरियों के रेवड़ को चरा रहे हैं। हम रुक जाते है और मैं कार से निकलकर उनके पास चला जाता हूं।

"तुम्हारा क्या नाम है?" मैं बड़े बच्चे से पूछता हूं।

"तिग्रान," वह बताता है।

"तुम स्कूल जाते हो?" मैं पूछता हूं।

"हां, और ख़ाली समय में मैं इनकी भी देखभाल करता हूं," वह काली और सफ़ेद मेमनों की तरफ़ इशारा करता है।

"इनमें कोई तुम्हें ख़ास पसंद भी है?" उसे एक ख़ासे बड़े हिमश्वेत मेमने को उठाते देख मैं पूछता हूं।

"यह रहा, यह मेरा दोस्त है," वह मुझे बताता है।

हम फिर रवाना हो जाते हैं। धूप में गरमी है और सड़क धूलभरी है। एक मोड़ के आगे

मैं तीन आदमियों और एक स्त्री को खाना खाते देखता हूं। वे सड़क की मरम्मत कर रहे होंगे, क्योंकि हम अभी-अभी ठीक किये हिस्सों पर होकर आये थे। अब उनके चमकते हुए बेलचे उनकी बग़लों में पड़े हैं। वे हाथ हिलाते हैं। हम फिर रुक जाते हैं और उनके पास जाते हैं। वे हमें रोटी और पनीर पेश करते हैं। हम उसे ले लेते हैं।

मेरा विदेश से आना उनके लिए कुतूहल की चीज़ है। इन्हें, इन पहाड़ी लोगों को, हमारी ज़िंदगियों के बारे में कम ही मालूम है, पर वे मुझसे पूछते हैं कि मुझे अर्मीनिया कैसा लगा, मैं आराम से तो हूं। वे जानते हैं कि हमारे देशों के संबंध सुधर रहे हैं और आशा करते हैं कि अमरीकी लोग यह जानते हैं कि वे सिर्फ़ शांति ही चाहते हैं।

"हमारे गांव में किसी का एक रिश्तेदार अमरीका में है," स्त्री ने कहा। "अब तो वह बहुत बूढ़ा हो गया होगा। वह १९१५ के हत्याकांड में बच गया था और किसी तरह अमरीका पहुंच गया।"

"संयुक्त राज्य अमरीका के कई हिस्सों में काफ़ी अर्मीनियाई रहते हैं। कुछ केलीफ़ोर्निया की उपजाऊ ज़मीन में खेतों में काम करते हैं – लेखक सरोयान वहीं के हैं। न्यूयार्क में मैं और मेरे मित्र अकसर अर्मीनियाई इलाक़ों में अर्मीनियाई रेस्तरांओं में जाया करते हैं," मैंने बताया।

यह बात उनके लिए दिलचस्प थी। "आपको अर्मीनियाई खाना कैसा लगता है?"

"मुझे बेहद पसंद है," मैंने जवाब दिया, "और मुझे रेस्तरांओं का वातावरण अच्छा लगता है।"

"अमरीका में अर्मीनियाई रेस्तरां!" उनमें से एक आदमी ने गर्व के साथ कहा।

हम उनसे रुखसत होते हैं और फिर कार में बैठ जाते हैं। आखिर हम अपने गंतव्य – येहेग्नद्ज़ोर पहुंच जाते हैं। यहां कुछ लोग हमारा इंतज़ार कर रहे थे – सामूहिक फ़ार्म के प्रधान, संगीत विद्यालय के निदेशक और पार्टी संगठन की प्रभारी मेलानिया, जो लोगों के साथ अपने स्नेह को हर संपर्क में विकिरित करतीं गहरी भूरी आंखों और मृदुल मुसकानवाली सुंदर स्त्री हैं। बढ़िया मध्याह्न भोजन के बाद हम शहर में घूमने निकल पड़े। मुझे एक बड़ा – निर्माणाधीन – संस्कृति सदन, एक अस्पताल और सामूहिक कृषकों के लिए नवनिर्मित पत्थर के मकान दिखाये गये।

"हमारे यहां नया संगीत विद्यालय है, जिसमें आजकल दो सौ लोग अध्ययन कर रहे हैं," संगीत विद्यालय के निदेशक ने बताया। "हमारे कई भूतपूर्व विद्यार्थी तो अब मास्को के संगीत महाविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। हमारे कुछ पुराने विद्यार्थी आजकल यहीं पढ़ा रहे हैं। याद रखिये कि अगर हमें यह अवसर न प्राप्त होता, तो कितनी ही प्रतिभाएं प्रसुप्त ही पड़ी रहतीं या नष्ट हो गयी होतीं। हमारे छात्र सिर्फ़ इसी नगर के ही नहीं हैं – आसपास के गांवों के भी हैं।"

पेड़ों की क़तारों से घिरी सड़क के उस ओर जाकर हमने एक बाल कला विद्यालय देखा। वहां कई चित्रों ने मुझे बहुत प्रभावित किया, विशेषकर एक लड़के की कृतियों ने। मुझे एक अध्यापक ने बताया कि उसके कुछ चित्र येरेवान के बाल संग्रहालय में दिखाये गये थे। अध्यापक की मेज़ पर मुझे प्राचीन यूनानी प्रतिमा "सपक्ष विजय" की छोटी-सी प्लास्टर प्रतिकृति दिखाई दी।

"इसे बाहर फेंक दीजिये," मेरी प्रतिक्रिया ज़रा ज़्यादा ही तेज़ थी। "यहां आपकी शानदार संस्कृति की पृष्ठभूमि में, यहां के शानदार प्रस्तर उत्कीर्णन को देखते हुए, जो बच्चों के लिए रोज़मर्रा की चीज़ें हैं, उनके लिए इस मृत सफ़ेद पिंड से रेखांकन करना मेरी राय में भयानक है। कुछ भी हो, इनके लिए अभी उसका समय भी नहीं आया है। प्राचीन यूनानी कला की समझ के लिए बच्चे में परिष्कार की जितनी मात्रा होती है, उससे अधिक मात्रा अपेक्षित होती है। उन्हें अपने आसपास की चीज़ों का, ज़मीन पर उगनेवाली चीज़ों – सब्ज़ियों, फलों, मिट्टी के बरतनों का रेखांकन करना चाहिए। याद रखिये, सामान्य वस्तु में सुंदरता देखना उसके चित्रण से अधिक महत्वपूर्ण है, जिसे स्वयं ही सौंदर्य के निर्विवाद्य प्रतिमान का वाहक माना जाता है। मैं इस मुरदा सफ़ेद चीज़ को कम से कम यहां तो बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता।"

हम फिर घूमने निकले, तो मेलानिया बोलीं, "आपने जो कहा, वह दिलचस्प है। मुझे खुशी है कि आपको शिक्षा में हमारे कार्य को देखने का इतना अच्छा मौक़ा मिला। हमारा लक्ष्य हर आदमी को एक शिक्षित, सुविज्ञ और विवेकपूर्ण व्यक्ति बनाना है।"

उन्होंने आगे कहा, "मेरे दादा एक प्रतिभाशाली युवक थे। वह पढ़ना चाहते थे। उनके माता-पिता ने उन्हें प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र एच्मिआद्ज़िन भेज दिया। वहां शिक्षक उनकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुए, लेकिन जब उन्हें पता लगा कि वह संपन्न वर्ग के नहीं, निर्धन परिवार के हैं, तो उन्हें उच्च विद्यालय में प्रवेश ही नहीं दिया गया।

"साथ ही हमें यह याद रखना होगा कि हमारा विश्वविद्यालय सातवीं सदी में ही स्थापित हो गया था और हमारे देश ने श्रेष्ठ वैज्ञानिक और खगोलज्ञ पैदा किये हैं। क्रांति के पहले धनवानों के बेटे-बेटियां अध्ययन के लिए विदेश – जर्मनी और फ़्रांस – जाया करते थे, आज हम इसकी विपरीत प्रक्रिया देख रहे हैं – जर्मनी, इंगलैंड, अफ़्रीका के लोग हमारे विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए आते हैं।"

इसके बाद मैंने सामूहिक फ़ार्म के प्रधान से उपलब्धियों के गौरवमय आंकड़े सुने – इतने टन शहद, अंगूर और भेड़ें। आंकड़े प्रभावशाली थे, लेकिन आंकड़े मैं ग्रहण नहीं कर पाता। मैंने उनसे कहा कि मैं उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों से अधिक प्रभावित हुआ हूं। मैंने बच्चों के लिए कला विद्यालय और संगीत विद्यालय देखे थे; मैंने इस बात पर ग़ौर किया था कि आधी सदी पहले भी उनके जनतंत्र के लोग ग़रीबी और शोषण के जूए में पिस रहे थे।

लेकिन प्रधान मुझे सिर्फ़ अपने फ़ार्म की उपलब्धियां ही नहीं दिखानेवाला था। वह एक सुसंस्कृत व्यक्ति है और जल्दी ही हमारी कार शहर से निकलकर और भी ऊपर चढ़ने लगी – पहाड़ों में हम एक प्राचीन स्थली को देखने के लिए जा रहे थे – और वह अतीत की संस्कृति के बारे में, अपनी विरासत के बारे में बताने लगा।

हम शाम घिरने के साथ एक मकान में लौट आये, जहां हमें शाम का खाना खाना था। आर्पा नदी के द्रुतप्रवाही पानी के किनारे फलोद्यान में सफ़ेद कपड़े से ढंकी एक लंबी मेज़ लगी हुई थी। हम देर तक बैठे रहे – गोश्त और सब्ज़ियों की प्लेटें लगातार बदलती रहीं और रोटी और शराब और सुगंधित बूटियां आती रहीं।

"आपको इस फलोद्यान को मुकुलित होते देखने के लिए यहां वसंत में आना चाहिए," मेरे पड़ोसी ने कहा।

"जी नहीं, पतझड़ में आइये," मेलानिया बोलीं। "तब हमारे फल पक चुके होते हैं और लताओं पर से अंगूर चुने जाते हैं।"

सेवान झील

सुप्रसिद्ध रूसी लेखक मक्सीम गोर्की ने सेवान का इस तरह वर्णन किया था: "झील एक असीम नीले दर्पण की तरह आंखों के सामने प्रकट होती है – मानो आसमान का एक टुकड़ा धरती पर उतर आया हो और पहाड़ों के बीच आकर बैठ गया हो।" और वह अकेले ही नहीं थे – दूसरे लेखक, कवि, संगीतकार और चित्रकार भी उसके तटों पर जा चुके हैं।

एक सिरे पर यह पहाड़ों के घेरे में बंद हो जाती है। दूसरा सिरा कम ऊंचे-नीचे पठार में है, पर वह भी समुद्र तल से कोई २,००० मीटर की ऊंचाई पर है। यह पर्वतीय झील विराट आकार की है। सतह की यह विराटता वैज्ञानिकों के लिए बहुत समय से चिंता का विषय रही है, क्योंकि पानी की सतह का क्षेत्रफल जितना ही अधिक होगा, वाष्पन, पानी का क्षय, भी उतना ही अधिक होगा।

अर्मीनिया में बड़ी नदियों, झीलों या पानी की पूर्ति की अन्य बड़ी राशियों की कमी है, इसलिए सेवान को बहुत समय से विद्युत शक्ति और सिंचाई का स्रोत माना जाता रहा है। अंत में छ: पनबिजलीघरों की एक बड़ी परियोजना – सेवान-रज़दान सिंचाई तथा जलविद्युत संकुल – शुरू की गयी। यह अर्मीनिया में विद्युत शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत बन गयी। लेकिन झील से पानी के परिवाह की प्राकृतिक साधनों से पूरी तरह से प्रतिस्थापना नहीं होती थी। इस कारण झील का जल-स्तर लगातार गिर रहा था। ज़ाहिरा तौर पर परिवाह को संतुलित करने के लिए पानी की पुन:पूर्ति करना आवश्यक था। पहाड़ों में, सेवान से ऊंचाई पर आर्पा नदी बहती है और इंजीनियरों ने इसी नदी के पानी को नीचे सेवान में लाने का फ़ैसला किया। निर्माण-कार्य कई साल से चल रहा है।

एक मित्र के साथ मैं कार द्वारा निर्माणस्थली को देखने के लिए गया। मुख्य मार्ग को छोड़कर जब हम उठती पहाड़ियों के बीच से गुज़र रहे थे, अचानक झील हमारे सामने आ गयी। उसका दूसरा छोर सुदूर क्षितिज और आकाश से जा मिला था। पानी के किनारे-किनारे जाते समय मुझे सफ़ेद पत्थर दिखाई दिये थे। लेकिन और ऊपर जाने पर एक सतत अर्धव्यास के भीतर वे भूरे पत्थरों में बदलकर पानी के भूतपूर्व स्तर को दर्शा रहे थे।

सामनेवाले तट के पास ही और उससे एक लंबी, संकरी नयी सड़क द्वारा जुड़ा हुआ एक छोटा सा अर्द्धद्वीप है। पानी के वर्तमान स्तर पर पहुंचने के पहले यह पूर्ण द्वीप था, जिस पर तट से नाव द्वारा आसानी से पहुंचा जा सकता था। नवीं शताब्दी में यहां एक मठ का निर्माण किया गया था, जो दस्तावेज़ों के अनुसार, अभिजातों और रईसों के निर्वासन की जगह का काम देता था।

मौसम बदल गया। हमारे पीछे पहाड़ों के उस ओर तक घनी घटाएं फैल गयीं। पहाड़ अब सुरमई-स्याह, आकारहीन और सपाट लगते हुए पानी में जाकर गिरते लग रहे थे। पानी की पहली कुछ बूंदें बरसीं, बंद हो गयीं और उसके बाद झील पर भारी वर्षा की झड़ी लग गई। कुछ देर हम तट के साथ-साथ जाते रहे। फिर सड़क दायीं ओर मुड़ गयी और हम ऊपर चढ़ने लगे। आसमान में फैलते और एक-दूसरे से मिलते नीले टुकड़े नज़र आने लगे। जल्दी ही हम बारिश के बाहर निकल आये। सड़क धूसर पहाड़ियों के बीच बल खा रही थी। हमारे सामने एक पुलिया पर एक पताका फैली थी, जिसकी लाल सतह पर सफ़ेद अक्षरों में लिखा था: "हमने पुराने सपनों और लोक-कथाओं को वास्तविकता बनाने के लिए जन्म लिया है!"

हवा अब कुछ ठंडी हो गयी है, सड़क अब भी ऊंची होती जा रही है। अपराह्न में हम लकड़ी की इमारतों के एक झुंड के पास जाकर रुक जाते हैं। बीच में खदान के कूपक की लकड़ी की ऊंची मीनार है। एक तरफ़ मिट्टी और पत्थरों का एक बड़ा सा टीला है, दूसरी तरफ़ छोटी कर्मशालाएं हैं। खंड का प्रभारी युवा इंजीनियर हमारा अभिवादन करता है और हमें मीनार के मंद प्रकाशित भीतरी भाग में ले जाता है। मोटे कोट और पतलूनें पहने आदमी लिफ़्ट के पास जमा हैं। दो आदमी संकरी पटरियों पर पत्थरों और गर्द से भरे धातु के ठेले को धकेल रहे हैं। एक आदमी नाटा, मज़बूत काठी का है, उसकी ऊंची गंडास्थियों और बादाम जैसी आंखों से लगता है कि वह मध्य एशिया का है। उसका साथी बिलकुल दूसरी तरह का है – लंबा, दुबला, सुनहरे बाल, हलका रंग – वह शायद किसी बाल्टिक जनतंत्र का रहनेवाला है।

प्राचीन स्थापत्य

"आप कहां के रहनेवाले हैं?" मैंने बादाम जैसी आंखोंवाले से पूछा।

"क़िर्ग़ीज़िया का," ठेले को रोककर उसने जवाब दिया। "सोवियत संघ के कितने ही जनतंत्रों के लोग यहां इस परियोजना पर साथ-साथ काम कर रहे हैं।"

"आप यहां कब से हैं?" मैंने पूछा।

"मैं अपने परिवार के साथ यहां दो साल पहले आया था। इसके पहले मैं दूसरी निर्माण-स्थलियों पर – ब्रात्स्क और मास्को में और वोल्गा पर – काम कर चुका था। और एक बार मैं कोम्सोमोलियों की टोली के साथ मिस्र में भी काम करने के लिए गया था।"

"आप यहीं जमे रहेंगे?" मैं फिर पूछता हूं।

"क्या कहते हैं! मैं चाहता हूं कि उस समय यहीं होऊं कि जब हम दूसरे खंड के मज़दूरों से जा मिलेंगे, जो दूसरी तरफ़ से हमारी तरफ़ आ रहे हैं। जब हम मिट्टी और चट्टानों की उस आख़िरी बाधा को गिरा चुके होंगे, जो हमें अलग किये हुए है, तब इस पहाड़ के नीचे वह मिलन हमारी ज़िंदगियों का एक महान क्षण होगा," उसने कहा। "हम सभी उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह कितने आनंद का दिन होगा!" वह इस तरह देखता है, मानो वह दिन आने ही वाला हो। "और मैं यहां तब तक काम करता रहूंगा कि जब तक सुरंग के सभी हिस्से नहीं

जुड़ जायेंगे। जब मैं यहां का काम ख़त्म करूंगा और किसी दूसरी निर्माणस्थली पर जाऊंगा, तो मैं अपने सभी साथियों को हमारे कठिन कार्य के बारे में, हमारे साथीपन के बारे में और इस बारे में बताऊंगा कि किस तरह मैंने इन पहाड़ों के आरपार खोदी इस सुरंग के ज़रिये आर्पा के पानी को सेवान के जल से मिलने के लिए भेजने में सहायता की थी।"

अर्मीनिया का ऐतिहासिक मानचित्र संकेतों का एक संकुल प्रतिदर्श है, जिनमें से प्रत्येक अतीत के किसी स्मारक का प्रतीक है। और इसके लिए येरेवान से कोई बहुत दूर भी नहीं जाना पड़ता, क्योंकि कार से एक घंटे से भी कम समय के भीतर कुछ दर्शनीय स्थलों पर पहुंचा जा सकता है। अपनी स्केचबुक में मैं तारीख़ लिखता और अपनी छापें अंकित करता जाता था।

ज्वार्थनोत्स दसवीं सदी में भूकंप से नष्ट हुई पत्थर के गुंबदवाली एक पंचकोना तिमंज़िला इमारत है। यह खंडहर बनी पड़ी हुई है, सदियों के दौर में इसके पुराने पत्थरों में से काफ़ी को वे लोग उठाकर ले गये हैं, जिन्हें उनकी "ज़रूरत" थी। पत्थर के वृत्ताकार फ़र्श पर कुछ भारी प्रस्तर आधार अब भी खड़े हुए हैं। जहां-तहां स्तंभों के आधार हैं, जिनमें से कुछ पर शेष स्तंभ का छोटा सा टुकड़ा भी है। समूहों में एकत्र स्तंभों के शीर्ष पर नक़्क़ाशी के खंडों में अनिवार्यतः अंगूर की पत्तियों और अंगूरों के गुच्छों का और शतरंजी बुनाई का रूपांकन है। अत्यंत रीतिबद्ध पुष्प रूपांकन और उक़ाव – यह सब निर्माताओं के अतिविकसित नैपुण्य को प्रमाणित करता है।

यहां घूमते हुए सदियों पहले आदमी के हाथ के काम को देखते हुए मुझे सुदूर अतीत में विद्यमान होने की चकरानेवाली अनुभूति हो रही थी। मेरी भी ज़िंदगी से पहलेवाले लोगों के पैरों से घिसकर गोलाकार हुई सीढ़ियों पर चलते हुए मुझे मेक्सिको का ख़याल आ गया। वहां भी ख़ूबसूरत मंदिरों, पिरामिडों और गेंद खेलने के मैदानों में बाहर खुले में इतिहास मौजूद है और आज के आदमी की ज़िंदगी को उसके समस्त बीते दिनों की ज़िंदगी के साथ जोड़ रहा है। इसलिए इसमें अचरज की कोई बात नहीं कि महान मेक्सिकी भित्तिचित्रकार सिकेइरोस जब कुछ समय पहले (अपनी मृत्यु के बहुत पहले नहीं) यहां आये थे, तो उन्होंने जो देखा, उससे वह बहुत रोमांचित हुए थे और उन्होंने अपनी संस्कृति और अर्मीनिया की संस्कृति में संबंध और समानता को देखा और अनुभव किया था।

गेगार्द – शिलाओं और ऊंची चट्टानों से परिपूर्ण कंदर में कार द्वारा हम चट्टानों पर टिके मठ पर पहुंच जाते हैं। यह पत्थर की एक सादा इमारत है, जिसका भीतरी भाग स्वयं चट्टान के भीतर तराशकर बनाये कमरों के रूप में अंदर तक चला गया है। मुख्य प्रवेश मार्ग पर द्राक्षा-लताओं, दोनों तरफ़ दो फ़ाख़्ताओं और मैथुन में रत होने का आभास देते मेमनों की घनी आलंकारिक नक़्क़ाशी है। धूसर-पीले पत्थर के बने मुख्य कक्ष में होकर हम एक नीचे दरवाज़े के ज़रिये ठोस चट्टानों में तराशे एक और कमरे में प्रवेश करते हैं। यह विशुद्ध तक्षण है। केंद्रीय स्तंभ मेहराबी छत तक चला जाता है, जिस पर एक ज्यामितीय नमूने का छितरा हुआ अलंकरण है। छत के बीच में बड़ी सूक्ष्म नक़्क़ाशी से युक्त झरोखा है, जिससे कमरे में प्रकाश का एक पुंज आ जाता है। लकड़ी की एक ऊंची, लंबी और संकरी मेज़ पर जलती कुछ छोटी-छोटी मोमबत्तियां हलकी सी रोशनी दे रही हैं। सामने एक और दरवाज़ा और एक और कक्ष है।

मुख्य कक्ष में एक तरफ़ का दरवाज़ा बाहर की तरफ़ लाल रंग में रंगा हुआ है और दीवार की धूसर-श्वेत वैंगनी सतह को मनोहर आभा प्रदान कर देता है। यहां से एक ज़ीना चट्टानों में तराशी कुछ गुफाओं की तरफ़ ले जाता है। प्रलंबी चट्टान के नीचे लगी पत्थरों की सिल्लियों पर हलके उभारवाले ललछौंह खचकार (पत्थर के सलीब) तराशे हुए हैं।

येरेवान से बीस किलोमीटर की दूरी पर अर्मीनिया का एक प्राचीनतम नगर **एच्मिआद्ज़िन** स्थित है। सड़क के दोनों ओर ऊंचे सरू के पेड़, फलों के बाग़ और अंगूरलताएं हैं। दूर तक यही नज़ारा फैला चला गया है।

यहां का प्राचीन मठ कैथोलिकोस – अर्मीनियाई ईसाई संप्रदाय के प्रधान – का निवास है। यह मठ भवनों, धर्मशास्त्र विद्यालय और मुख्य गिरजे का समूह है। गिरजा बहुत बढ़िया हालत में है। मेरे देखे कई और गिरजे अब संग्रहालय हैं, लेकिन यह गिरजा अब भी काम कर रहा है और दर्शनार्थियों और उपासकों का तीर्थ है।

शायद समय के चक्र ने मेरे देखे और गिरजों को, जिनसे मैं इतना प्रभावित हुआ था, उनके तात्विक रूप में पहुंचा दिया है और उन्हें सुंदर बना दिया है। लेकिन यहां मैं हाल के पुनरालं-करण के निशान देख सकता था, जो ज़रा ज़्यादा ही भड़कीले हैं – खासकर बिल्लौरी शमादान, जो बेमौक़ा लगते हैं और ऐसा प्रतीत होता है, मानो उन्हें अभी हाल ही में किसी यूरोपीय डिपार्ट-मेंट स्टोर से लाकर लगाया गया हो। यह सब इस विलक्षण वास्तु के आधारभूत सौंदर्य और और गरिमा को घटाता है।

एक छोटे से क़सबे से कुछ दूर जाकर, जो बल खाती सड़क के किनारे खड़ी चढ़ाई पर है, मैंने एक अर्धनष्ट गिरजे को देखा, जिसकी एक दीवार के कुछ हिस्से ज़मीन पर टुकड़े बनकर पड़े हुए हैं। पत्थर की छत का कुछ हिस्सा भीतर गिर गया है। यहां एक उठा हुआ मंच सा है, जो कभी गिरजे की वेदी थी। रस्सी पर एक काला शाल लटका हुआ था – किसी बुढ़िया का चढ़ावा। पत्थर पर थोड़ी जली एक मोमबत्ती रखी हुई थी, जिसे शायद जलाये जाने के कुछ बाद ही पहाड़ी हवा ने बुझा दिया था।

जब अर्मीनिया ने ३०३ ई० में ईसाई धर्म को अंगीकार किया, तो "काफ़िरों" के मंदिरों को नष्ट कर दिया गया, कहीं-कहीं तो नये गिरजों का निर्माण इन्हीं मंदिरों की नींवों पर ही किया गया था। मित्रों ने मुझे बताया था कि **गरनी** मंदिर का, जो अभी तक खंडहर पड़ा हुआ था, अब पुनर्निर्माण किया जा रहा है और उन्होंने उसे चलकर देखने का सुझाव दिया था। इस-लिए एक दिन एक कलाकार के साथ हम कार में बैठकर ऊबड़-खाबड़ इलाक़े से होते हुए ऊंचे पठार पर जा पहुंचे। हम ढहती हुई दीवार में प्रवेश करके उस हिस्से से होकर गुज़रते हैं, जो बहुत-बहुत पहले दुर्ग का फाटक रहा होगा। गरनी का मंदिर प्राचीन यूनानी काल के अवशेषों में एक है।

मुझे छायाचित्रों की याद आ गयी – खड़ी सी सीढ़ियोंवाले ऊंचे चबूतरे के आसपास घास में बिखरे गोल स्तंभ, कारनिसों के टुकड़े और इमारती पत्थर। लेकिन अब मैंने पत्थर का एक आयताकार ढांचा देखा, जिसे लकड़ी के पाड़ों में बंद स्तंभ घेरे हुए थे। एक तरफ़ पटरियों पर



चलता काला क्रेन पत्थरों को उठाकर जगह पर रख रहा था। इस प्राचीन पृष्ठभूमि में, नीचे घाटियों और ऊपर पहाड़ों के ऊंचे-नीचे भूदृश्य के परिप्रेक्ष्य में यह क्रेन ज़रा बेतुका सा लगता है।

कई संगतराश कारनिसों और स्तंभों के लुप्त भागों की प्रत्यास्थापना करने के लिए अपने पास ही पड़े मूल अलंकृत टुकड़ों की दक्षतापूर्वक अनुकृति करते हुए पत्थर तराश रहे थे। "वे पत्थर खोये कैसे होंगे?" मैंने पूछा। संगतराशों में से एक ने जवाब दिया, "हो सकता है कि सदियों के दौरान लोग उन्हें तोड़-तोड़कर अपनी इमारतों के निर्माण में लगाने के लिए उठाकर ले गये हों और कुछ नीचे के खड्ड में गिरकर लुप्त हो गये होंगे।" लकड़ी की वल्लियों पर टिकी धातु की छत से ढंकी कर्मशाला से रुदन जैसा शोर आ रहा था। उसमें लोग पत्थर काटने की मशीनों से बड़े-बड़े पत्थरों को वांछित आकार में काट रहे थे।

"यह मंदिर तो भूकंप से नष्ट हुआ था," मेरे साथी ने कहा, "लेकिन हमारी अधिकांश संस्कृति का विनाश आक्रमणकारियों द्वारा किया गया है। हमारा इतिहास अनवरत युद्धों का इतिहास रहा है। हमारे देशवासी कभी भी आक्रामक नहीं रहे, लेकिन हम अपनी रक्षा हमेशा करते रहे हैं। सदियों हम पर हमले होते रहे, हमें नष्ट करने की कोशिशें होती रहीं, लेकिन हम अपनी रक्षा करते रहे।

"हमारे यहां न जाने कितने हत्याकांड हुए हैं, पर सबसे भयानक १९१५ में हुआ था, जब दुनिया पहले विश्व युद्ध में फंसी हुई थी, और इसलिए उसकी तरफ़ कोई ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया था। अविश्वसनीय आतंक का दौर था वह! तुर्कों की अश्वारोही टुकड़ियों ने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का निर्ममतापूर्वक संहार किया था। सारा इलाक़ा लाशों से भर गया था – पूरे के पूरे परिवारों और गांवों को ख़त्म कर दिया गया था। कुछ लोग बच भागे – कुछ को प्राचीन ज़ारशाही रूस में शरण मिल गयी। कई विदेश चले गये। हमारे देश के पूरे के पूरे ज़िलों के लोग आज बुल्गारिया, इटली और फ़्रांस में रह रहे हैं। और, जैसा कि आप जानते ही हैं, कई संयुक्त राज्य अमरीका में भी हैं। उनमें से कुछ लोग देश लौट आये हैं और बहुत से अपने देश को देखने के लिए आया करते हैं। आकार में हमारा देश संसार का बहुत ही छोटा सा हिस्सा है, लेकिन उसकी अनुपात में हमारी उपलब्धियां बहुत विशाल हैं।

"अर्मीनिया ने विश्व संस्कृति और विज्ञान को अनेक विशिष्ट लोग दिये हैं। हमारे प्रसिद्ध खगोलज्ञ अंबरत्सुमिआन संसार की कई प्रमुख अकादमियों के सदस्य हैं। ख़चातूरिआन का संगीत संसार भर के वाद्यवृंद प्रस्तुत करते हैं। सबसे प्रसिद्ध अमरीकी लेखकों में एक विलियम सरोयान अर्मीनियाई हैं। अमरीकी सिने निदेशक रुबेन ममुलिआन अर्मीनियाई ही थे और विश्वविख्यात आधुनिक कलाकार एर्चिल गोर्कि, जो न्यूयार्क में रहते और काम करते थे, वह भी अर्मीनियाई ही थे।"

"हां," मैंने उनकी बात के बीच में कहा, "मैं गोर्कि को जानता था और उनके कृतित्व का बहुत मान करता था। येरेवान में मेरी कई लोगों से मुलाक़ात हुई है, जो उनकी चित्रकला से परिचित हैं।"

"एक और नाम का भी उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए – अर्मीनियाई कवि मीकूस

मनूगिआन। पेरिस पर फ़ासिस्ट अधिकार के ज़माने में वह एक अंतर्राष्ट्रीय पार्टीज़ान दल के नेता थे। वह मारे गये थे और अब एक वीर के नाते उनका नाम फ़्रांसीसी मज़दूरों में विख्यात है।"

मेरे मित्र ने आगे कहा, "शायद हम में हमारी सांस्कृतिक उपलब्धियों की चेतना से, अपनी मर्यादा की चेतना से, बने रहने की अविनश्य लालसा पैदा हो गयी थी। इस तरह अर्मीनिया बच गया। अब, अपने इतिहास में पहली बार, सोवियत संघ के अंग के रूप में हम बिना किसी भय के अपनी ज़िंदगियां जी रहे हैं। हम अपनी संस्कृति को विकसित करने के लिए आज़ाद हैं।"

राजधानी येरेवान

येरेवान मई दिवस मना रहा था। सुबह से लोग लेनिन चौक में और राजधानी की अन्य सड़कों पर जमा होने लगे थे। (मैं मास्को का अविस्मरणीय जलूस देख चुका था, पर मित्रों ने कहा था कि दूसरा ही रंग देखने के लिए, औपचारिकता के बिना जलूस को देखने के लिए किसी छोटे शहर में मई दिवस बिताना दिलचस्प रहता है)।

सलामी-मंच मेरे होटल के पास ही लेनिन स्मारक के नीचे था। कुछ देर मैं होटल की एक खिड़की से जलूस को देखता रहा। फिर मैं एक छोटी सी सड़क पर वहां जाकर खड़ा हो गया, जहां से जलूस में भाग लेनेवाले चौक में प्रवेश कर रहे थे। यहां मैंने कुछ चित्र बनाये। ऊंचे ध्वज-स्तंभों पर अपने रंगबिरंगे रेशमी झंडों को ख़ूबसूरती से लहराते हुए खिलाड़ी, जातीय परिधान पहने लोग, कारख़ानों के मज़दूर, सामूहिक कृषक और हज़ारों स्कूली बच्चे, छोटे लड़के-लड़कियां और विश्वविद्यालय-छात्र सामने से निकल रहे थे।

सबसे प्रभावशाली दृश्यों में एक एड़ी तक लंबे धूसर-हरे फ़ौजी लबादे और फ़ौलादी टोप पहने सैनिकों का एक दल था, जिनमें से प्रत्येक एक-एक बच्चे को लिये हुए था – यह बर्लिन में लाल सेना के स्मारक की जीती-जागती प्रतिकृति थी। घंटों तक लोग मज़दूरों के त्योहार की ख़ुशियों में भरे चौक में जलूस की क़तारों में उल्लासपूर्वक निकलते रहे।

शाम को चौक रंगबिरंगी बत्तियों से जगमगाते छलछल करते फ़ौवारों के बीच संगीत की लहरियों में घूमते लोगों से भर गया था। अख़बारों के किओस्कों में 'ओगोन्योक' के ताज़ा अंक रखे हुए थे, जिस पर मेरा बनाया मई दिवस आवरण था और स्वाभाविक तौर पर यहां, येरेवान में, अपनी कृति को देखकर मुझे काफ़ी ख़ुशी हो रही थी।

अगले दिन एक मित्र मुझे शहर दिखाने के लिए ले गये। वह बोले, "हम पहले कुछ देर कार में घूमेंगे और फिर जाकर पांडुलिपि संग्रहालय देखेंगे।"

हमारी कार महाकाव्य-नायक ससूनवासी दवीद की अश्वारोही प्रतिमा के सामने से, विजय स्मारक के आगे से, नये और सुंदर होटल अनी के सामने से और फूलों की क्यारियों, छोटे-छोटे तालों, पानी के सोपानों और कितने ही फ़ौवारों के सामने से गुज़री। आख़िर वह मातेनादारान के भव्य भवन की एक लंबी वृक्षवीथी के आगे जाकर खड़ी हो गयी।

"यहां हज़ारों ही पांडुलिपियां संरक्षित हैं," मेरे साथी ने बताया। "इतने सारे हत्याकांडों

की, हमारे देशवासियों के विनाश की और उनकी सही सभी आपदाओं की बात देखते हुए यह सचमुच विस्मयजनक है। लेकिन इंजील की और ईसा के सभी पट्ट शिष्यों की पांडुलिपियां हमारी क़ौमवालों को जान से ज़्यादा प्यारी थीं। कहा जाता है कि जब हमारे देश पर आक्रमणकारी हमला करते थे, तो उनसे बचने के लिए भागती स्त्रियां पुस्तकों को अपने कपड़ों में छिपाकर ले जाती थीं। वे उन्हें सबसे मूल्यवान संपत्ति समझती थीं।"

हलके सुरमई पत्थरों की बनी इस आलीशान इमारत के आधार पर अर्मीनियाई वर्णमाला के जनक मेस्रोप मश्तोत्स की मूर्ति है। अपने हाथ फैलाये वह शान से बैठे हुए हैं, उनके पैरों के पास एक बच्चे की आकृति है। हम ढाल के साथ जाकर सीढ़ियों पर चढ़कर सूक्ष्म अलंकरण से सज्जित मुख्य द्वार पर पहुंच जाते हैं, जिसके दोनों ओर प्राचीन दार्शनिकों और कवियों की आकृतियां हैं।

निदेशक ने हमारा स्वागत किया और फिर हमें प्रदर्शनी कक्ष में ले जाया गया। यहां मैंने कुछ मूल पांडुलिपियां और कुछ अत्यंत सुंदर अनुकृतियां देखीं। हमारे गाइड ने कहा, "हमने कोशिश की है कि मूल पांडुलिपियों को आवश्यकता के बिना तनिक भी प्रकाश न लगने दिया जाये, यद्यपि प्राचीनतम पांडुलिपि का रंग भी एकदम ठीक है। पांडुलिपियों को चित्रित करने की परंपरा कई संस्कृतियों में विकसित हुई थी। हमारी परंपरा का आरंभ ४०५ ई० में वर्णमाला के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। हमारे यहां जो सबसे पहली काल-निर्धारित पांडुलिपि है, वह ८८७ ई० की है। सभी पांडुलिपियां वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं।"

मुझे चित्रण की इस महान कला से बड़ा प्रेम है, जो लिखित शब्द के साथ सफ़ेद चर्मपत्र पर इतनी सुंदर लगती है – आकृतियों के चारों ओर के अलंकरण की सुंदरता और रत्नों जैसे रंगों की सुंदरता, जिसमें अकसर सोने से और भी श्रीवृद्धि हो जाती है।

अपने आगमन के तीसरे दिन, अर्मीनिया के सबसे प्रसिद्ध कलाकार सारिआन के जन्म-दिवस पर मैं कुछ लोगों के साथ उनकी समाधि पर गया, जो नगर के केंद्र में जनतंत्र के प्रख्यात लोगों के लिए आरक्षित छोटी सी क़ब्रगाह में है। उनका देहांत अभी हाल ही में हुआ था, इसलिए अभी स्मारक नहीं बना है और समाधि फूलों से पूरी तरह से ढंक गयी थी। कुछ लोगों ने संक्षिप्त और सीधी-सादी बातें कहीं। इसके बाद कई लोग कारों में सारिआन के घर गये और वहां उनके भोजनकक्ष में एक अंडाकार मेज़ के इर्दगिर्द बैठ गये। मैं उनकी विधवा की बराबर में बैठा था।

"हम यहां सारिआन के साथ वक़्त गुज़ारने के लिए आये हैं, जैसे हम पहले भी अकसर आया करते थे," एक युवा कलाकार ने कहा। और लोग भी उनके जीवन और उनकी कला के बारे में बोले। फिर मेरी बारी आयी। मेरे लिए सारिआन की कृतियों के बारे में कुछ कहना आसान था, क्योंकि मैं उनकी बहुत सराहना करता था।

मैंने कहा, "वह एक असाधारण चित्रकार थे, जिनका कृतित्व संयुक्त राज्य अमरीका में हम लोगों के लिए ताज़ा हवा के झोंके की तरह था। वह बहुत ही सुखद और आश्चर्यजनक था। उनके कृतित्व में सन्निहित आनंद, रंग, धूप का गायन, विशाल भूदृश्य और धरती की समृद्धि – ये सब उनके अर्मीनिया के प्रति प्रेम और अनुराग को जताते थे। बहुत जल्दी ही उनका नाम आदर



और प्रशंसा प्राप्त करते हुए सोवियत संघ के एक सबसे महत्वपूर्ण कलाकार के रूप में विख्यात हो गया था।"

बाद में हम एक साथवाली इमारत में गये – यह नवनिर्मित सारिआन संग्रहालय है। उनके इतने चित्रों को देखते हुए मुझे मास्को में किसीके साथ अपनी बातचीत याद आ गयी।

"मैं सारिआन के चित्रों को ग्रहण नहीं कर पाता था," उस आदमी ने कहा था। "मुझे लगता था कि नीली और बैंगनी छायाएं, लाल और नारंगी भूदृश्य मिथ्या और भड़कीले हैं। लेकिन जब मैं सारिआन के देश, आर्मीनिया पहुंचा, तो मैंने इन सभी बातों को अपने चहुं ओर इस प्रकृति में देखा और तब मैं उन्हें समझ गया।"

मैंने अपने मन में कहा, "है बुरी बात कि कुछ लोगों को इस तरह के प्रमाणों की ज़रूरत पड़ती है। कलाकार की नयी दृष्टि, उसकी कल्पना और उसके निजी दृष्टिकोण को स्वीकार करने की क्षमता का हम में होना आवश्यक है।"

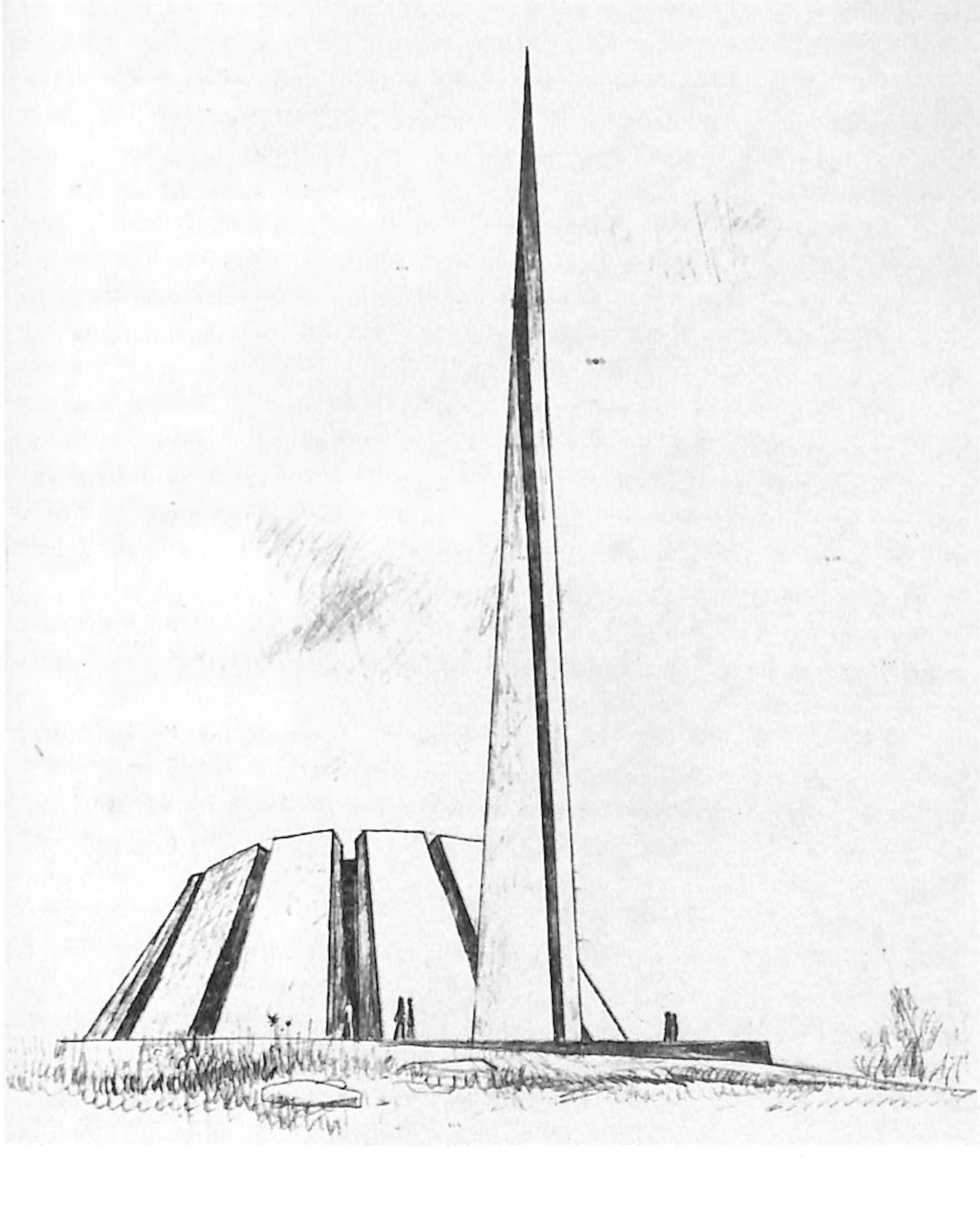
बाद में हम १६१५ के हत्याकांड के शिकारों के स्मारक पर गये – घासभरे मैदान में स्थापित सीमेंट की शिला। मैंने सीमेंट की मोटी दीवार के तिरछे खंडों की एक चक्राकार रचना देखी, फूल की पंखड़ियों की तरह उन्होंने पत्थर के धंसे हुए फ़र्श को घेर रखा था, जिसके बीच में अमर जोत जल रही थी। यहां खड़े होकर मैंने एक शांत भव्यता का, झुकी हुई दीवार द्वारा व्यक्त शोक का अनुभव किया, जो नीरवता की इस जगह में एकमात्र गतिमान वस्तु की तरफ़ – नारंगी लौ की तरफ़ – झुकी हुई थी।

पास ही एक ऊंचा सूचीस्तंभ है, जिसके कोने इस तरह टूटे हुए हैं, मानो शक्तिशाली प्रहार से खंडित कर दिये गये हों। यह विभाजित देश का, जिसके निवासियों का एक बड़ा भाग – अतीत के उत्पीड़नों से भागनेवाले – विदेशों में रह रहा है, प्रतीक है।

मैं इस समूह से इतना पीछे हट आया कि सारे के सारे को एक साथ देख सकूं – नीचे शहर और क्षितिज की तरफ़ उठते पहाड़ों की पृष्ठभूमि में वास्तु-प्रतीक बड़ा प्रभावशाली लग रहा था। मैंने मन में सोचा कि यह स्मारक कितना गहन, कितना काव्यमय है, जो दुख को किसी प्रकट रूप में व्यक्त नहीं करता, बरन पत्थर की अपनी सादी बनावट से हम में से हर किसीके दिल में श्रद्धा की भावना उपजाता है।

इसके बाद मैं सरदारापात के युद्ध के विशाल स्मारक को देखने गया, जिसकी ढलवां पगडंडी के दोनों ओर ऊंचे स्तंभों पर घंटे लटके हुए हैं और काले पत्थर के उक़ाब हैं, और मैंने अक्तूबर क्रांति का स्मारक देखा। एरेबूनि संग्रहालय को और पहाड़ी पर अपने मंदिर, महलों और सुंदर आलंकारिक निशानों में लेखों से युक्त पत्थर की दीवारों के कुछ हिस्सों को देखते समय मैं इतिहास को अनुभव कर रहा था।

एरेबूनि येरेवान का प्राचीन नाम है। एरेबूनि के दुर्ग का निर्माण उरार्तुई राजा अर्गीश्तीस ने एक सैनिक और प्रशासनिक केंद्र के रूप में ७८२ में किया था। (यह नगर रोम से कोई ३० साल पहले बसा था)। यह आश्चर्य की बात है कि इस गढ़ी के हिस्से बीच की इन सदियों के बावजूद आज तक बच रहे हैं।



येरेवान की पुरानी सड़कों और गलियों के अब ज़्यादा निशान नहीं रह गये हैं, मगर मैंने कुछ को देख ही लिया। संकरी गलियों को झांकते छज्जोंवाले मिट्टी के नीचे-नीचे, इकमंज़िला और दुमंज़िला मकान, जिनके छज्जे इतने पास-पास हैं कि लोगों को एक दूसरे के पास जाने के लिए गली को भी पार न करना पड़े ; कहीं-कहीं सख़्त मिट्टी की कच्ची सड़क के एक तरफ़ संकरी सी नाली है। मकान मटमैले या पीले से रंग के हैं, दरवाज़े रंगे हुए हैं और खिड़कियों पर धातु की जालियां लगी हुई हैं।

"रविवार को हम आपको फ़ुटबाल दिखाने ले चलेंगे," मेरे अर्मीनियाई दोस्तों ने कहा। और जब रविवार आया, तो मैं उनके साथ लोगों की एक भीड़ में जा रहा था। सभी लोग एक नदी की तरह एक ही दिशा में – पहाड़ी पर बने सुंदर से आधुनिक लगते स्टेडियम की तरफ़ – जा रहे थे। "यह मुझे सांड़ों के साथ लड़ाई देखने के लिए जाते मेक्सिकाइयों की भीड़ों की याद दिला रहा है," मैंने कहा।

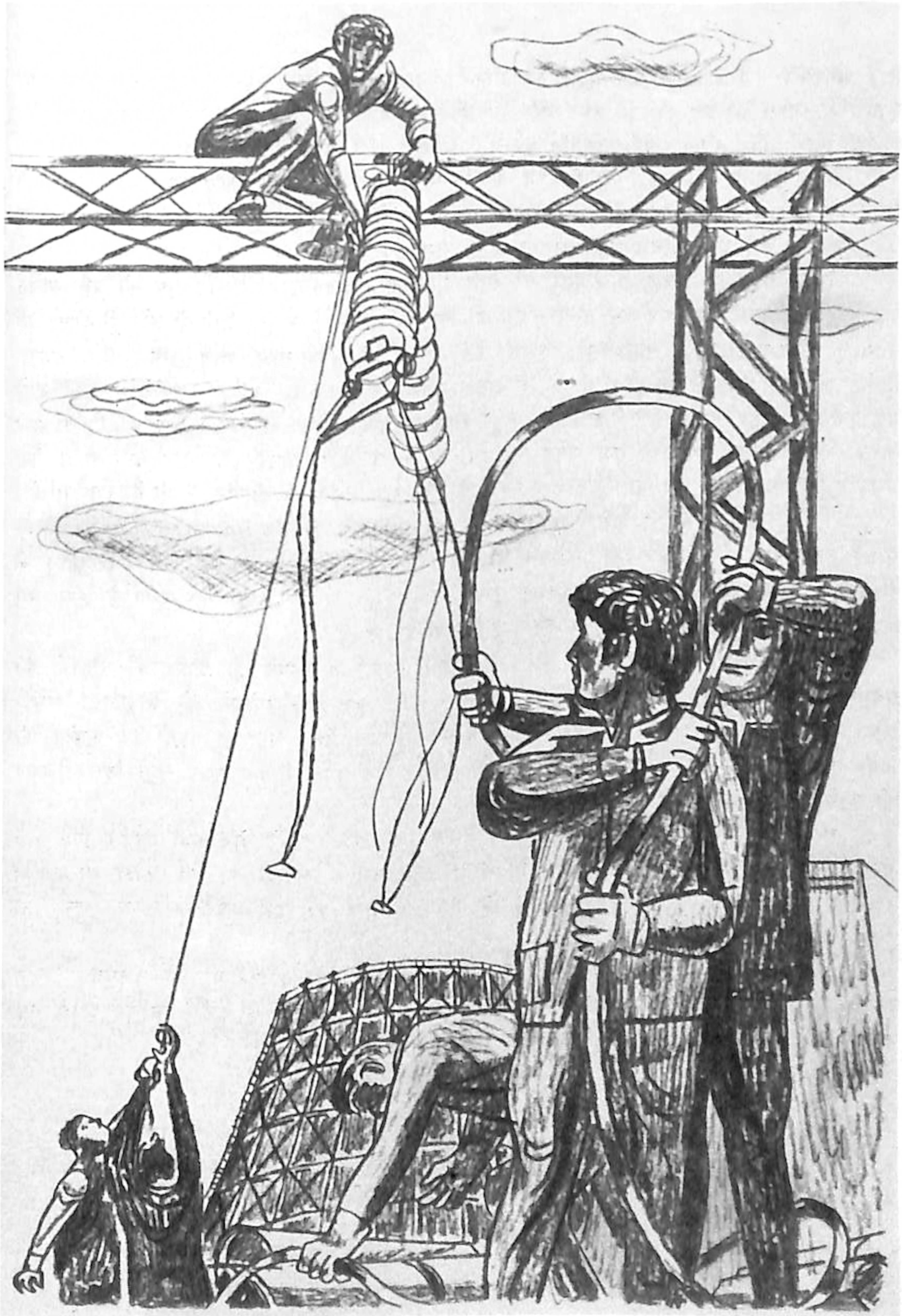
हमने अपनी सीटें ढूंढ लीं। "आप हमारे बीच में बैठ जाइये," उन्होंने मुझसे कहा और मैंने सोचा कि यह दोस्ती के लिहाज़ में कहा जा रहा है। लेकिन यह बाद में मेरी समझ में आया कि उनके ऐसा कहने का विशेष कारण था। अचानक, अंतिम क्षण में येरेवान जीत गया – और उसके बाद तो जैसे तूफ़ान आ गया। लोगों का जोश भावातिरेक में परिणत हो गया – वे अपने पासवालों से चिपटने, अपनी सीटों पर कूदने और चिल्लाने-शोर मचाने लगे। तब मैंने इस संरक्षण के लिए अपने मित्रों का आभार माना।

परमाणु बिजलीघर

शहर से कार में लंबे सीधे राजमार्ग पर जाते हुए हम एक हवाई अड्डे के सामने से गुज़रते हैं और कुछ और आगे जाने पर हमें दाख़बारी में काम करतीं, मुड़ी-तुड़ी लताओं के बीच पांचा फेरतीं, पिछले पतझड़ में काटी गयी लताओं के डंठलों को बांधती स्त्रियों का दल दिखाई देता है। क़तारों के बीच अपने सामूहिक कार्य में लगी मज़बूत और हृष्टपुष्ट स्त्रियों का यह समूह बड़ा मनोहर लगता है।

और आगे जाने पर मुझे काली भेड़ों का एक बड़ा रेवड़ चरता दिखाई देता है, एक बूढ़ा – मेषपाल – एक तरफ़ एक बड़े से पत्थर पर बैठा हुआ है। हम एक पुराने गिरजे के सामने से निकलते हैं। अब तक मैं प्राचीन संस्कृति के काफ़ी सौंदर्य को – पहाड़ियों और शिखरों पर टिके पुराने गिरजों और मठों – और नये भूदृश्य को देख चुका हूं – औद्योगिक इमारतें, कंक्रीट या पथरीले ढांचोंवाले बिजलीघर, विशाल ट्रांसफ़ार्मरों से निकलकर तने तारों के मकड़ी के से जाले, जो इस भूदृश्य में नगरों पर सुंदर कंठहारों जैसे लगते हैं।

मैंने धरती के गर्भ से प्राकृतिक गैस को बाहर लाती पाइपलाइनें, नये रासायनिक कारख़ाने, तांबा कारख़ाने, रेशम और संश्लेषित कपड़ा कारख़ाने देखे। मैंने खुली खानों से निर्माण सामग्री के रूप में गुलाबी, बैंगनी और धूसर-हरित रंगों की विभिन्न आभाओं की ज्वालामुखीय चट्टानों



और संगमर्मर, वैसाल्ट और ग्रेनाइट को निकाले जाते देखा। मैंने नयी रेल लाइनों और नयी सड़कों को और उन पर दौड़ती छोटी बस्तियों और बड़े-बड़े शहरों को आपस में जोड़ती बसों को, सिंचाई नहरों को, नये स्कूलों, संस्कृति सदनों, थियेटरों और अस्पतालों को देखा।

और अब मैं अर्मीनिया के निर्माण के उच्चतम चरण – परमाणु विजलीघर – को देखने के लिए जा रहा था। अब तक सोवियत संघ शांतिपूर्ण कार्यों के लिए छः परमाणु संयंत्रों का निर्माण कर चुका है, जिनमें से सबसे बड़ा लेनिनग्राद के पास है।

सामने बहुत दूर विशाल आकार की धातु की अजीब शंक्वाकार आकृति धूप को प्रतिबिंबित कर रही थी। पास आने पर हम मुख्य सड़क को छोड़कर बायीं तरफ़ मुड़ जाते हैं और निर्माणाधीन परमाणु विजलीघर को जानेवाली विद्युत रेल लाइन के साथ-साथ जाने लगते हैं। बंजर, निर्वृक्ष ज़मीन, पथरीली मिट्टी। फाटक के अंदर घुसने पर मैंने एक विशाल एक्सकेवेटर को बड़े-बड़े ट्रकों में मिट्टी डालते हुए देखा। एक और मशीन नालियां खोद रही थी। एक आदमी बड़े-बड़े पाइपों पर कोलतार चढ़ा काग़ज़ लपेट रहा था और एक और आदमी उन पर गरम-गरम तेज़ गंधदार कोलतार पोत रहा था। सड़क धूलभरी है और शुरू वसंत की दोपहर में भी बेहद गरमी है।

"अरे, जुलाई में तो और भी ज़्यादा गरमी होगी," इस विभाग का प्रभारी इंजीनियर बोला। वह मुझे विजलीघर की प्रशीतन प्रणाली दिखाता है – उथले तालाब, जिन पर धातु के शंक्वाकार ढांचे लगे हुए हैं। एक लगभग पूरा हो चुका है, दूसरा आधा बन चुका है और शेष अभी धातु के साथ संपर्क की प्रतीक्षा करते कंक्रीट के ढेर ही हैं।

एक और स्थान पर धातु की जालियों के एक विराट ताने-बाने को कंक्रीट की दीवारों को प्रबलित करने के लिए वेल्ड किया जा रहा है। ऊंचाई पर वेल्डनकर्मियों की आकृतियां छोटी-छोटी मकड़ियों जैसी लगती हैं। दाहिनी तरफ़ एक निर्माणाधीन, अब भी बढ़ती हुई कंक्रीट की ऊंची मीनार हलके नीले आसमान की पृष्ठभूमि में अरारात पर्वत के कुहराछन्न हिममंडित शिखर की ज़मीन पर पार्श्वचित्र सी लग रही है।

जनश्रुति के अनुसार महाप्रलय के बाद हज़रत नूह और उनकी नाव यहीं आकर टिके थे। कुछ दिन पहले मैंने एच्मिआदि़ज़न के गिरजे के संग्रहालय में लकड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा देखा था, जिसके बारे में माना जाता है कि वह उस नाव का एक अवशेष – उसका एक टूटा हुआ कोना है।

"यह रूस की साम्राज्ञी को दी एक भेंट है," एक युवा पादरी ने मुझे बताया। "जब साम्राज्ञी एलिज़ाबेथ ने इस लकड़ी के बारे में सुना, तो उसे बहुत ईर्ष्या हुई। इसलिए इसके एक कोने के टुकड़े को तोड़कर उसे उपहारस्वरूप भेज दिया गया।"

६. तुर्कमानिया

सोवियत संघ की अपनी एक यात्रा के दौरान, जब मैं मास्को में होनेवाली तीसरी अखिल-संघीय कलाकार कांग्रेस में भाग लेने गया था, तब मेरा जिन कलाकारों से परिचय हुआ, उनमें तुर्कमानिया के इज़्ज़त क्लीचेव भी एक थे। मुझे याद है कि यह सरदियों की बात है और अधिकांश समय बर्फ़ गिरती रहती थी। लेकिन होटल रस्सीया, जहां सभी प्रतिनिधि ठहरे हुए थे, के उनके कमरे में गरमियों की फ़िज़ा थी – मेज़ों पर अंगूरों के गुच्छे, एक बड़ा सा सरदा, अनार, सेब और नाशपातियां। "ये हमारे प्रतिनिधि अपने यहां से लाये हैं," उन्होंने मुझे बताया। "आपको हमारा जनतंत्र, हमारे लोग और उसकी पुरानी संस्कृति और नयी ज़िंदगी देखना चाहिए। आइये हमारे यहां। हम आपको चित्रकारी के लिए एक दीवार भी मुहैया कर देंगे।"

विचार लुभावना था। मैंने संसार के इस हिस्से को कभी नहीं देखा था। हमने पत्रव्यवहार के ज़रिये संपर्क बनाये रखा और बीच-बीच में मैं सोवियत कला पत्रिकाओं में उनके नये चित्र भी देखता रहा।

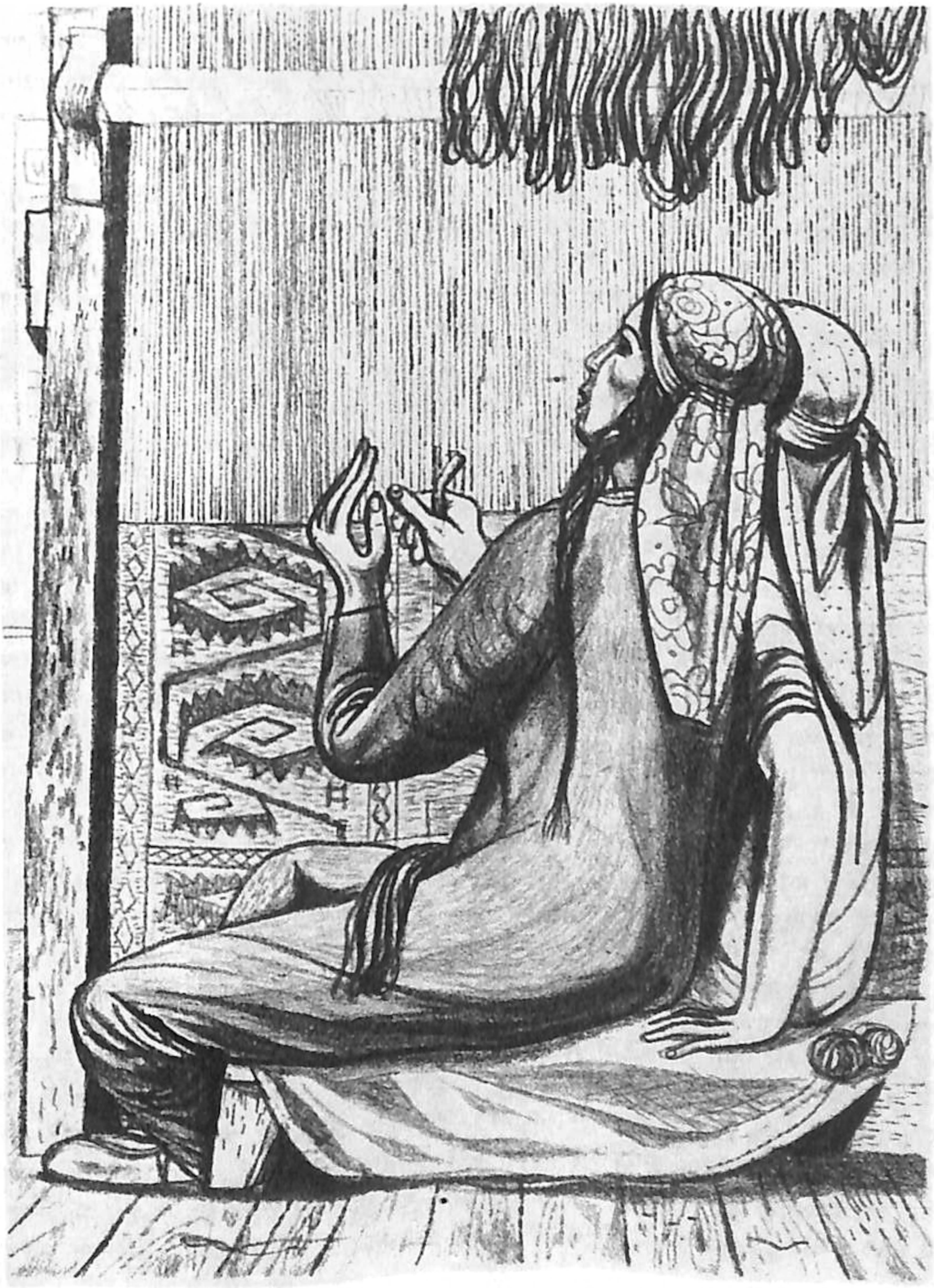
आख़िर मैं उनके देश को देखने जा रहा था – मैं और लीला अश्क़ाबाद जा रहे थे और जल्दी ही हमारा जहाज़ वहां उतरनेवाला था। जैसे ही जहाज़ रुका और हम नीचे उतरे कि हमने इज़्ज़त और उनकी पत्नी आन्ना को देखा, जो अपनी एड़ीचुंबी लाल पोशाक, नारंगी रत्नजड़ी चांदी की पिन और भारी काम के कर्णफूलों में बड़ी सुंदर लग रही थीं। वहां कई नौजवान भी थे, जिनके बारे में बाद में पता चला कि वे भी कलाकार हैं। हवाई अड्डे की एक तरफ़ मुझे नंगे सुरमई पहाड़ दिखाई दे रहे थे और दूसरी तरफ़ दूर तक फैला चला गया सपाट मैदान था – रेगिस्तान।

"स्वागतम!" आलिंगन करते हुए इज़्ज़त ने कहा।

हमारी कार नीची इमारतों से भरे शहर में से गुज़री। बहुत सी इमारतें नयी शैली की थीं। "आप जानते होंगे कि यहां १९४८ में भूकंप आया था, जिसमें बहुत कुछ तबाह हो गया था," आन्ना ने कहा।

हमारी कार नये होटल के सामने जाकर खड़ी हो गयी, जो एक विख्यात तुर्कमानी वास्तुकार अहमेदोव की कृति है। "वह तो इस पर पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं, लेकिन हमारा जनतंत्र धनवान है और इसलिए मेरे ख़याल में अपनी जनता को श्रेष्ठतम और सुंदरतम चीज़ें हम दे सकते हैं। बाद में हम इसी वास्तुकार के पुस्तकालय को देखने चलेंगे। वह आजकल निर्माणाधीन है," लाबी में इज़्ज़त ने बताया। इसके बाद हम भोजनकक्ष चले गये। खाना बहुत ही मज़ेदार था।

अगली सुबह कार ने हमें कलाकार संघ पहुंचा दिया, जहां इज़्ज़त और कई अन्य कलाकार हमें मिले। "सौभाग्य से आजकल हमारी दीर्घा में कई युवा कलाकारों की कृतियों की सामूहिक प्रदर्शनी हो रही है," उन्होंने बताया।



कलाकार संघ की इमारत भी वास्तुकार अहमेदोव की बनायी हुई है। प्रदर्शनी मुझे पसंद आयी – उसका वैविद्य प्रत्येक कलाकार की विशिष्टता को और अपने पर्यावरण के प्रति उसकी रंगमय अनुक्रिया को दर्शाता था। प्रदर्शनी के बाद कार ने हमें क़ालीन बुनने के कारख़ाने पहुंचा दिया।

यह कारख़ाना एक अहाते की दो पुरानी दुमंज़िला इमारतों में स्थित है, जिसमें कई सायवान और नीची इमारतें भी हैं। यहां हमारी कारख़ाने के निदेशक से भेंट हुई, जिसने हमें कारख़ाने का संग्रहालय दिखाया, बुनाई की प्रविधियों और विक्रय-व्यवस्था के बारे में बताया।

"हमारे क़ालीन विश्वविख्यात हैं," निदेशक ने कहा। बुनाई खाता दूसरी मंज़िल पर था – एक लंबे और चौड़े कमरे में ऊंची-ऊंची खड्डियां इस तरह एक-दूसरी पर झुकी हुई थीं कि ऊंचे तंबुओं जैसे लगते थे। खड्डियों पर धागे तने हुए थे। उनके आगे छोटे-छोटे स्टूलों पर स्त्रियां बैठी हुई थीं – कोई अकेली, तो कोई जोड़ों में और कहीं-कहीं तीन-तीन भी एक साथ काम कर रही थीं। यह चटकदार रंगों का अद्भुत दृश्य था, क्योंकि न सिर्फ़ क़ालीन ही सुखद लाल, कत्थई, नीले और काले रंगों के थे, बल्कि स्त्रियों की पोशाकें भी बीच-बीच में कहीं-कहीं हरे और पीले रंगों के छींटों के साथ इन्हीं रंगों की थीं। उनमें से कुछ किशोरियां थीं और वे अपने से बड़ी स्त्रियों के साथ बैठीं हुनर सीख रही थीं।

"ये सीखती बहुत जल्दी हैं," निदेशक ने कहा। "तीन ही महीने के भीतर वे अपने पैरों पर खड़ी हो जाती हैं।

"क़ालीन बुनना एक प्राचीन कला है। ये विभिन्न मोटाइयों के होते हैं। क़ालीनों का जन्म उन लोगों की आवश्यकता के कारण हुआ, जो अभी कुछ ही समय पहले तक अधिकांशतः ख़ानाबदोश ज़िंदगियां बसर किया करते थे। इनसे कपड़े और सामान रखने के थैले बनाये जाते थे, यूर्तों (तंबुओं) के दरवाज़ों पर लटकाने के परदे बनते थे, और उनका सबसे महत्वपूर्ण उपयोग यह था कि रेतीली ज़मीन पर वे अस्थायी फ़र्श का काम देते थे। मनुष्य की उपयोग की आवश्यकता उसकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति की आवश्यकता और उसके सौंदर्य बोध के साथ जुड़ी हुई है। इसलिए बुना हुआ क़ालीन इकरंगा ही नहीं रह गया, बल्कि विभिन्न रंगों के धागों की, मनुष्य के प्रकृति, पौधों, पशुओं और ज्यामितीय आकारों के प्रेक्षण पर आधारित अति रीतिबद्ध अलंकरणों की पच्चीकारी बन गया।"

तुर्कमानी क़ालीन की बारीक़ी ताने की दो खड़ी लटों के चहुं ओर रंगीन ऊन की गांठ लगाने में है। मैंने बुनकर के हाथों की तेज़ हरकतों को देखा, लेकिन गांठ का लगाना मैं सिर्फ़ तब ही जाकर देख पाया कि जब उसने सारी क्रिया को बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता करके दिखाया। यह सोचकर अचरज होता है कि क़ालीन की सतह इस तरह की सैकड़ों गांठों की ही बनी होती है (दरअसल, मुझे बताया गया था कि प्रति वर्ग मीटर में डेढ़ से चार लाख तक गांठें होती हैं!)। इस तरह क़ालीन बुनाई एक धीमी और श्रमसाध्य प्रक्रिया है, जिसमें एक-एक क़ालीन के बुनने में महीनों लग जाते हैं। बुनकर की नमूने को याद रख सकने की योग्यता भी अचरज की चीज़ है और इसका प्रमाण है कि सदियों से यह कला मांओं से अपनी बेटियों को मिलती रही है।

क़ालीनों का रंग बुनियादी तौर पर – विभिन्न रंगतों में – लाल होता है। रंग को गहनता और वैविध्य प्रदान करने के लिए सफ़ेद, नीले और गहरे – लगभग काले – रंगों का भी उपयोग किया जाता है। समाजवादी क्रांति के पहले लगभग सभी सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां स्त्रियों की पहुंच के बाहर थीं, पर क़ालीन बनाने की कला पर उनका एकाधिकार था। अब स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष दरजा हासिल है और सभी सामाजिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनके बराबर अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन क़ालीन बुनना अब भी उन्हीं का अनन्य क्षेत्र है।

मैंने इस प्राचीन कला में आधुनिक विचारों का समावेश करने के लिए किये गये कुछ प्रयोगों को देखा है। काफ़ी पहले एक बुनकर ने लेनिन का ख़ासा अच्छा चित्र बुना था और कुछ आकृतिमय रचनाएं क़ालीनों पर उतारी थीं। लेकिन रंगों की परिधि और बुनाई की प्रविधि की सीमाएं प्रभाविता को एक तरह से सीमित कर देती हैं। पारंपरिक क़ालीनों का सिर्फ़ फ़र्शों पर बिछाने के लिए ही नहीं, बल्कि नये और आधुनिक मकानों में भी उपयोग किया जाता है। वे दीवारों के लिए भी सुंदर अलंकरण का काम देते हैं।

मैं जब दूसरी बार कारख़ाने गया, तो मेरे साथ कई युवा कलाकार भी गये थे। उन सबने यहां रेखांकन किया है और इस सुंदर दृश्य को चित्रित किया है। कारख़ाने से निकलकर हम पासवाले बाग़ में चले गये और बेंचों पर बैठकर बातों में लग गये।

"क्या आपके यहां, अमरीका में भी क़ालीन बुने जाते हैं?" एक कलाकार ने पूछा।

"क़ालीन बुनाई उत्तरी अमरीका में अमरीकी इंडियनों द्वारा सदियों से व्यवहृत एक पुरानी कला है," मैंने उन्हें बताया। नवाहो क़बीले के सुंदर और सादे नमूनों के क़ालीन ख़ासकर दिलचस्प हैं और आज भी बनाये जाते हैं। डिज़ाइन में वे बहुत सशक्त हैं, लेकिन उनके बुनने की प्रविधि आपसे भिन्न है। उन्हें करघों पर बुना जाता है। हमारे यहां क़ालीन बुनाई अब एक शौक़ है – कई पेशेवर कारीगरों ने इसे अपना लिया है और इन बुनाइयों का समकालीन आंतरिक सज्जा में बहुत सफलतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है।

"इस कला से मेरा भी संबंध है, लेकिन सिर्फ़ डिज़ाइनकार के नाते। मेक्सिको की अपनी एक प्रारंभिक यात्रा के समय मेरी दो अमरीकी मित्रों से बात हुई थी, जिनकी बुनाईशाला में परदों तथा अन्य कामों के लिए कपड़ा बुना जाता था। हमने मेक्सिकी बुनकरों को, जिन्होंने अपने शिल्प को स्पेनी हमले के बहुत-बहुत पहले ही विकसित कर लिया था, मेरे डिज़ाइनों के अनुसार बुनाई करने पर लगा दिया। उन्हें अपने लिए एकदम पराये नमूनों को स्वीकारने में एक साल से ज़्यादा लग गया। लेकिन उसके बाद हम कई नयी इमारतों, बैंकों, होटलों, विश्वविद्यालयों, आदि-आदि के लिए कई बड़ी-बड़ी दीवारदरियां तैयार कर चुके हैं। मुझे विश्वास है कि मैंने मेक्सिकी बुनकरों की समकालीन दीवारदरियां पैदा कर सकने में सहायता की है।"

"आप अमरीकी लुर्कात हैं!" एक कलाकार बोला।

बुनाई का दृश्य, आकृति की खड्डी से संबंध, नियंत्रित गति और देह की तालबद्धता में और क़ालीन के नमूने में सहचलन एक बहुत ही सुंदर और काव्यमय दृश्य है। मैंने इस इरादे से कई रेखाचित्र बनाये हैं कि अमरीका लौटने के बाद शायद इस दृश्य पर कुछ चित्र बनाऊंगा।

बाज़ार

इतवार अश्क़ाबाद में हाट का दिन है। हम आन्ना, इज़्ज़त और चित्रकार नज़ीर के साथ कार में शहर के नीचे-नीचे मकानोंवाले पुराने हिस्से को पार करके उपांत में लकड़ी के ऊंचे जंगले तक आ जाते हैं और उसके फाटक पर आकर उतर जाते हैं। नज़ीर जाकर गाड़ी को पार्क कर देते हैं और हम धीरे-धीरे चलती भीड़ में जाकर मिल जाते हैं। भीड़ क्या है, रंगों की धारा है – स्त्रियां लाल रंग की विभिन्न आभाओं की अपनी सामान्य पोशाकें पहने हुए हैं, कुछ ने सलवारें भी पहन रखी हैं। आदमी ज़्यादातर रोज़मर्रा के सूट पहने हुए हैं, लेकिन कुछ ने, विशेषकर बूढ़ों ने, उंगलियों तक की आस्तीनोंवाले लंबे चोग़े पहन रखे हैं।

आन्ना ने कहा, "आपको यह जानना चाहिए कि ये लोग यहां सिर्फ़ ख़रीद-फ़रोख़्त के लिए नहीं आते हैं। यह एक तरह का क्लब है। लोग यहां समाचारों का आदान-प्रदान करने, गपशप सुनने के लिए आते हैं। कुछ दूरवाले यहां दोस्तों से मिलने के लिए आते हैं। बेशक, पुराने ज़माने में, अख़बारों और रेडियो के पहले लोगों के ख़बरों और महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में जान सकने की एकमात्र जगह यही थी। पुराने ज़माने में यहां सरकारी मुनादियां पढ़कर सुनायी जाती थीं।"

हम ज़मीन पर बैठी सफ़ेद कपड़े पर पड़े पुराने ज़ेवर – बढ़िया कामवाले कंगन, कर्णफूल, अंगूठियां, जड़ाऊ पिनें और सिक्के लटके बड़े-बड़े गहने – बेचती स्त्रियों की क़तार के आगे से गुज़रते हैं। हम यहां रुक जाते हैं और आन्ना एक गहने के लिए, जो मैं लीला के वास्ते ख़रीदना चाहता हूं, मोलभाव करती हैं (मोलभाव करना यहां का स्वीकृत रिवाज है, जिसमें बीच-बीच में इधर-उधर की बातचीत के साथ ख़ासा वक़्त लग सकता है – यह दिन बिताने का एक तरीक़ा है)।

बायीं तरफ़ क़ालीन बेचे जा रहे हैं, उन्हें नलों की तरह लपेटा हुआ है। कुछ एक दूसरे के ऊपर रखे हुए हैं, तो कुछ ज़मीन पर फैले हुए हैं। यहां मुझे भारी नमदे के असामान्य क़ालीन दिखाई देते हैं। मैं आन्ना से उनके बारे में पूछता हूं।

"ये क़ाश्मा हैं। इन्हें बनाने के लिए पहले ज़मीन पर काले ऊन की परत बिछा दी जाती है, जिसे पहले लपेटकर और फिर उबलते हुए पानी में भिगाकर तैयार किया जाता है। सूखने के बाद उस चौकोर टुकड़े पर अलग-अलग रंगों के ऊन के नमूने बिछा दिये जाते हैं – कहिये कि रंगों की पच्चीकारी करके – उसे फिर दबा दिया जाता है। इसके बाद फिर उसे लपेट दिया जाता है और फिर उबलते पानी में भिगाया जाता है। इसके बाद उसे इसी तरह कई बार लपेटा और फैलाया जाता है। ये क़ालीन बुने हुए क़ालीनों जैसे टिकाऊ नहीं होते और इनका ज़्यादातर दीवारों पर लटकाने या बेंचों और संदूक़ों पर चढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।"

मैं घर पर अपने संकलन में जोड़ने के लिए एक ख़ूबसूरत ज्यामितीय नमूनोंवाला क़ाश्मा ले लेता हूं।

फिर हम मज़े में धक्कमधक्का करते आगे बढ़ते हैं, क्योंकि यहां बिक्री करनेवालों के बीच चलने की संकरी जगहों में अपनी चाही जगह पर पहुंचने के लिए सभी इस तरीक़े का इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोग लंबे काले चोग़े पहने हुए हैं, तो कुछ ने सफ़ेद भेड़ों की चटक पीले रंग की



खालें समूर अंदर करके पहन रखी हैं। सभी ऊंची क़राकूली टोपियां पहने हुए हैं, जो ऊन की लंबी लटों के कारण अजीब तरह के नक़ली बालों जैसी लगती हैं।

लकड़ी के बाड़े के उस ओर सुरमई पहाड़ों की झुर्रियां दिखाई देती हैं, एक तरफ़ बड़े से पेड़ पर कस्तूरा पक्षी शोर मचा रहे हैं और भीतर, दायीं तरफ़ शाशलिक (एक तरह का क़बाब) के स्टालों से धूआं उठ रहा है।

"आओ, कुछ शाशलिक चखें," इज़्ज़त ने कहा और हम सब उनके पीछे-पीछे उसी तरफ़ चल दिये। लंबी सलाख़ों पर भेड़ का गोश्त पकाते लोगों की क़तारों में चलते-चलते वह बोले, "न, यह तो अच्छा नहीं लगता। नज़ीर, यहां शाशलिक के लिए कहां जाना चाहिए?"

"मेरे घर," नज़ीर ने जवाब दिया।

हम हाट से निकले, तो सम्मोहन के साथ-साथ मुझे यह भी लग रहा था कि यहां कुछ अजीब बात है, पूर्व के और देशों की हाटों की सोचते हुए मुझे किसी चीज़ के न होने का एहसास हो रहा था। मैं ख़ुशपोश लोगों की भीड़ को देखता हूं और अचानक मुझे उसकी याद हो आती है। यहां कोई भिखारी, लूले-लंगड़े, चिथड़े पहने बूढ़ी औरतें, ख़ौफ़नाक मज़हबी दीवाने या मदद के लिए हाथ फैलाये, बच्चों को गोद में चिपटाये जवान औरतें – कोई नज़र नहीं आ रहे थे। 'कभी, बहुत पहले, यहां की यही तसवीर हुआ करती थी। मैंने पुराने चित्रों में उसे देखा था। पुराना समाज अपने भिखारियों को ज़िंदगी का सामान्य ढब मानता था। उसके लिए यह एक अनोखा दृश्य था! मैंने अपने मन में कहा, "यही बात है! एक भी भिखारी दिखाई नहीं दे रहा है – न इस हाट में और न पूरे अश्क़ाबाद में!"

हमारी कार एक मकान के सामने जाकर खड़ी हो गयी, जिसके अहाते के चारों ओर नीचा सा जंगला था। ड्योढ़ी का नक़्क़ाशीदार कटहरा चटक नीला रंगा हुआ था। एक तरफ़ एक नीचा सा सायबान था। यह मुरग़ियों और भेड़ों के लिए था, बीच में एक छोटा सा चौकोर ढांचा था, जहां नज़ीर का बेटा कबूतरों में मगन था।

बड़े कमरे में घुसने के पहले हमने अपने जूते उतार दिये। फ़र्श पर क़ालीन बिछे थे। बच्चे को गोद में लिये नज़ीर की पत्नी ने हमारा अभ्यर्थन किया और फिर अपने बच्चों से परिचित करवाया।

ज़रा ही देर में चाय आ गयी और हम फ़र्श पर बैठे-बैठे उसे पीने लगे। बाहर नज़ीर शाशलिक भून रहे थे और जल्दी ही कमरे का बीच का हिस्सा खाने से भर गया। खाना बहुत ही सादा और स्वादिष्ट था। लेकिन नज़ीर की पत्नी माफ़ी मांगे जा रही थीं, "घर में ऐसे मेहमान आयें! अगर मुझे पता होता, तो मैं इतनी चीज़ें और पका लेती।"

वह बच्चे को स्तनपान करवा रही थीं। उनके पास ही गद्दी पर एक बच्चा सोया हुआ था। एक लंबी, सुंदर और बड़ी बेटी परोस रही थी। और बच्चे टेलीविज़न देख रहे थे।

इज़्ज़त और मैं पास-पास बैठे चाय पी रहे थे। मैंने अपने मेज़बान की मेहमानबाज़ी के बारे में कहा, "सचमुच सब कितना अच्छा था – कितनी सादगी के साथ किया गया था, और फिर, नज़ीर की बीबी तैयार भी तो नहीं थीं! उन्हें क्या मालूम था कि हम इस तरह आ टपकेंगे।"

इज़्ज़त ने जवाव दिया, "यह तो हमारी जाति का पारंपरिक आतिथ्य है। अगर दुश्मन भी घर आ जाये, तो उसका पूरे सौजन्य से स्वागत किया जायेगा, और घर में जो कुछ भी है, उसके आगे पेश किया जायेगा। अलवत्ता अगर वाद में पुरुषों का सामना हो जाये, तो वे लड़ेंगे। लेकिन घर आनेवाले का कभी अपमान नहीं किया जायेगा, चाहे वह कोई ही क्यों न हो। हमारे यहां कई परंपराएं और कई रिवाज हैं।

"मिसाल के लिए, आपके यहां कोई आयेगा, तो वह सफ़ेद रूमाल में कोई भेंट लायेगा। जब वह जाता है, तो आपको उसके रूमाल में कुछ मिस्री रख देनी चाहिए। उसकी सफ़ेदी आपकी सदाशयता दिखाती है–'वह नेक हो, वह मीठी हो।' लेकिन उसे भेंट के बिना कभी भी न भेजिये। अगर कोई यात्री घर का दरवाज़ा खटखटाता है, तो उसका एक ऐसे मेहमान के रूप में स्वागत किया जाना चाहिए कि जो घर के मालिक पर इज़्ज़त बख़्श रहा है।"

इज़्ज़त ने आगे कहा, "पिछली आधी सदी में हम बहुत रास्ता तय कर चुके हैं। लेकिन हम संतुष्ट नहीं हैं। हम ज़िंदगी को और भी वेहतर बनाना चाहते हैं। मास्को में ख़ूबसूरत मकान थे, जो जनता को विरासत में मिले। हमें बस ऊंट और क़ालीन ही मिल पाये। अश्क़ाबाद शहर में तिजारती लोग रहा करते थे, लेकिन यहां जो अकेले पक्के मकान थे, वे थे ज़ारशाही फ़ौजी छावनी के और रेल स्टेशन के मकान। लोगों के घर मिट्टी के थे। एक भूकंप ने सारे शहर को मिट्टी में मिला दिया और हमें अश्क़ाबाद का नये सिरे से निर्माण करना पड़ा। लेकिन तब हमने और चीज़ों का भी निर्माण किया–मिसाल के लिए, क़राक़ूम नहर, जो रेगिस्तान में ज़िंदगी लायी है।"

उधर वह ये वातें बता रहे थे, इधर मैं बच्चों की तसवीरें बना रहा था। आख़िर वहां से रवाना होने का वक़्त हो गया।

"मैं आप लोगों का चित्र खींच सकता हूं?" मैंने नज़ीर से पूछा। वे लोग तैयार हो गये और वाहर ड्योढ़ी पर आ गये और जिस तरह लोग आम तौर पर अकड़कर खड़े हो जाते हैं, उसी तरह जम गये।

"भई, ज़रा ढीले पड़िये," दो छोटे बच्चों को जंगले पर विठाते हुए मैंने कहा। वे सभी मुसकरा दिये और मैंने बाद में उन्हें उनका पारिवारिक चित्र भेंट किया।

मारी

हमारे प्रवास के पांचवें दिन इज़्ज़त ने तुर्कमान पठार के केंद्र में स्थित मारी शहर की सैर की व्यवस्था की। हवाई जहाज़ ने ज़रा ही देर में हमें वहां के हवाई अड्डे पर पहुंचा दिया, जहां मस्कवा (मास्को) सामूहिक फ़ार्म के प्रधान तथा कई और लोगों ने हमारा स्वागत किया। हमें कार में सामूहिक फ़ार्म की अतिथिशाला ले जाकर अपने कमरों में पहुंचा दिया गया, जहां हमने अपना सामान खोला। ज़रा ही देर बाद हमें भोजनकक्ष ले जाया गया, जहां हमारे सामने शानदार खाना लगा दिया गया।

"कल सुवह हमें नये विजलीघर की निर्माणस्थली पर जाना है, इसलिए सामूहिक फ़ार्म हम परसों देखने चलेंगे," इज़्ज़त ने कहा।

अगली सुवह एक कार हमारा इंतज़ार कर रही थी। हम शहर की हरियाली से निकलकर धूसर ज़मीन और रेत के सूने इलाक़े में आ गये। थोड़ी ही देर में हमें पीली धुंध में धूप में चमचमाता एक सफ़ेद घन दिखाई दिया। हम पास पहुंचे, तो वह मुख्य भवन के विराट कांच और कंक्रीट के ढांचे में वदल गया, जिसके पास ही और इमारतें अभी वन ही रही थीं।

इज़्ज़त ने वताया, "यह विजलीघर अंततः सारे ही जनतंत्र को विजली प्रदान करेगा। यह प्राकृतिक गैस पर चलता है, जो अंतर्भौम निक्षेपों से आसानी से उपलभ्य है। अभी कुछ ही समय पहले तक यहां रेगिस्तान था। अव हम इसे एक शक्तिशाली औद्योगिक क्षेत्र में परिणत कर रहे हैं और इस तरह सारे भूदृश्य को वदल रहे हैं। मुझे याद है कि पहले लकड़ी के खंभों पर एक ही तार की लाइन जाया करती थी। फिर टेलीफ़ोन आया। उसके बाद बिजली पारेषण लाइनों की ऊंची-ऊंची मीनारें बनीं। फिर टेलीविज़न रिले केंद्र आये। अव हमारे यहां सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए एक प्रायोगिक केंद्र भी काम कर रहा है।"

हमने इमारत की छांह में कार खड़ी ही की थी कि कई लोग हमारे पास आ गये। उनमें एक नवयुवक भी था, जो विजलीघर का मुख्य इंजीनियर था।

उसने बताया, "पास ही हमें प्राकृतिक गैस का एक विराट निक्षेप मिला है। हम इस गैस को बिजली पैदा करने के लिए टर्वाइनों को गरमाने के वास्ते यहां ले आये हैं।"

इमारत के भीतर हम धातु की विराट आकृतियों, पाइपों, पंचमंज़िला छत तक जाती अजीब शक्लों की चीज़ों के बीच में घूम रहे थे। मेरे लिए इस विराट ढांचे को समझना मुश्किल हो रहा था, जो विसंयोजित और असंबद्ध पुरज़ों का सिलसिला सा लग रहा था। कहीं लोग क्रेनों की मदद से भारी-भारी चीज़ों को ले जा रहे थे और कहीं वे सफ़ेद लपटों के साथ चिंगारियां उड़ाते हुए धातु को वेल्ड कर रहे थे। हम धातु की सीढ़ियों पर चढ़े, कई जगह नीचे झुकते हुए वेल्डनकर्मियों के रवड़ के पाइपों के बीच से निकले और जटिल फलकों और डायलों से भरे नियंत्रण कक्ष को देखने गये। उसके बाद फिर नीचे उतरकर हमने वड़े-बड़े पाइपों से भरी जगह में प्रवेश किया, जिन्हें युवतियों की एक टोली रंग रही थी।

"ये कोम्सोमोली हैं – हमारी शान!" मुख्य इंजीनियर ने कहा।

अपने मिरज़ई जैसे कपड़ों और सिरों पर फूलदार रूमालों में वे सचमुच सुंदर लग रही थीं। मैं उनमें से एक से बातें करने को रुक गया – बड़ी-बड़ी नीली आंखें, सुनहरे बाल, लाटवी थी वह, जिसे यहां तुर्कमानिया में देख मुझे अप्रत्याशित आश्चर्य हुआ।

वह बोली, "निर्माण कार्य पर पहली गरमियां मेरी ज़िंदगी में सबसे सुखद थीं। मेरी नयी दोस्तियां हुईं। सामान्य हित हों, सामूहिक कार्य हो, तो लोग एक-दूसरे के पास आते हैं। बेशक, बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि आप जाते कहां हैं। कभी-कभी ऐसा हुआ है कि निर्माण सामग्री देर से पहुंची। तब इसके सिवा कुछ काम न होता कि बैठे इंतज़ार किया जाये और बोर हुआ जाये।"



इससे मुझे मास्को में कोम्सोमोल कार्यालय में एक सचिव से हुई बात की याद आ गयी।

उसने कहा था, "मुझे वह वक़्त याद आता है, जब मुझे एक निर्माण टोली के नेतृत्व का ज़िम्मा दिया गया था। हम एक अत्यावश्यक अनाज गोदाम बना रहे थे। काम की आख़िरी मंज़िल में, छत के पूरा होने के ऐन पहले सामग्री के आने में देर हो गयी। आख़िर वह हमारे वहां से रवाना होने के तीन दिन पहले ही पहुंची। और जिस दिन हमें काम करना था, उस दिन बारिश हो गयी। हम चाहते, तो काम अधूरा छोड़कर जा सकते थे। लेकिन इसके बजाय हमने बरसते पानी में सभा की और हर किसीने छत को पूरा करने के लिए मत दिया। जिस दिन हम वहां से रवाना हुए, छत हमारे साथीपन का, हमारी लगन का प्रतीक बन गयी थी। आदमी की परीक्षा ऐसी ही परिस्थितियों में होती है।"

"बहुत सुंदर क़िस्सा है," मैंने कहा।

"हां, काम के संबंध में आदमी अपनी क्षमता के उच्चतम स्तर पर पहुंच सकता है," उसने कहा। "उसके गुण प्रकट होते हैं। हां, कुछ लोग विभिन्न निजी कारणों से असफल भी रहते हैं।

"क्रेमलिन प्रासाद में हुई सत्रहवीं कोम्सोमोल कांग्रेस में हमने नौजवानों की पहली टोली को सभा-स्थल से सीधे बाम (बाईकाल-आमूर रेलमार्ग) की निर्माण स्थली पर रवाना होते देखा था। हमें उनसे रश्क हो रहा था, यद्यपि हम जानते थे कि उन्हें मुश्किलों का सामना करना होगा, उस वीराने में अपने पहले मकान बनाते हुए तंबुओं में रहना होगा। वे ही वहां रास्ता डालनेवाले और उसके कुछ हिस्से का निर्माण करनेवाले पहले लोग होंगे। बाद में और लोग भी जायेंगे, लेकिन वे तो पहली टोली द्वारा शुरू किये काम को ही जारी रखेंगे – वे अग्रगामी – पथप्रदर्शक होंगे!"

उसने अपनी बात पूरी की, "अब विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में ग्रीष्म निर्माण पर जाने के वास्ते हर एक स्थान के लिए दस अर्ज़ियां होती हैं। बेशक, उसके लिए हर किसी को पगार मिलती है और सामान्य छात्रवृत्ति से ऊपर पैसे का हर छात्र उपयोग कर सकता है। लेकिन अधिकांश युवाओं के लिए पैसा ही सबसे बड़ा कारण नहीं है। मुख्य कारण निस्स्वार्थ कार्य में अनुभूत जीवन का गुण है।"

मुख्य इमारत में देर तक रहने के बाद हम बाहर अहाते में आ गये। यहां बड़े पैमाने पर निर्माण चल रहा था। मज़दूरों की भीड़ में विभिन्न जातियों के, तरह-तरह के लोगों के चेहरे नज़र आये। मैंने यह बात मुख्य इंजीनियर को बतायी।

"हां, सब जगह यही देखने में आता है – यह सोवियत संघ है!"

सामूहिक फ़ार्म

धूपदार और निरभ्र सुबह को हम सामूहिक फ़ार्म देखने गये। हमारी कार एक बड़े फलोद्यान से गुज़री, हमने सब्ज़ी के बाग़ देखे और फिर संस्कृति प्रासाद देखने गये।



पहले कमरे में फ़ार्म के नेताओं, युद्ध-वीरों और श्रेष्ठतम स्त्री और पुरुष कर्मियों के रूप-चित्र लगे हुए थे। इज़्ज़त ने बताया, "यह कलाकार संघ के कार्यों में एक है। रूपचित्रण हमारे कई कलाकारों की विशेषता है। जब हमारे पास कोई अनुरोध आता है, तो हम पता लगाते हैं कि कौन कलाकार व्यस्त नहीं है, कौन काम चाहता या उसकी ज़रूरत में है और हम कलाकार और ग्राहक को एक-दूसरे के संपर्क में ला देते हैं।"

दूसरे कमरे में लटके कलाचित्र ज़्यादा प्रभावोत्पादक थे – स्थिर वस्तुचित्र, भूदृश्य और कुछ इतिहास-संबंधी चित्र। इसके बाद हमने कंसर्टों, नाटकों, सभाओं और फ़िल्मों के लिए काम में आनेवाला एक बड़ा सभागार देखा। निदेशक ने कहा, "हम हर साल सांस्कृतिक गतिविधियों पर, अपने पुस्तकालय पर और बाहरी मंडलियों को यहां लाने पर दस लाख रूबल ख़र्च करते हैं।"

सामूहिक कृषकों के नये मकान सलेटी-नीले रंग में रंगे हुए थे और नये लगाये पेड़ों से घिरे थे। एक मकान में लंबी काली पोशाक पहने एक बूढ़ी स्त्री छत्ते की शक्ल के चूल्हे (तंदूर) में रोटी (नान) सेंक रही थी। हम पास आये, तो उसने हमारे हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर पारंपरिक तरीक़े से हमारी अभ्यर्थना की। रोटी की महक बड़ी स्वादिष्ट लग रही थी।

"हमारी क़ौमवाले अपने रिवाजों को संजोकर रखते हैं," आन्ना ने कहा। "बेशक, वे चाहें, तो दूकान से डबल रोटी खरीद सकते हैं, लेकिन उन्हें यही ज़्यादा पसंद है।"

शाम को वापस आने पर, बढ़िया खाना खाने के बाद, युवा कृषकों की एक टोली हमें प्राचीन, पारंपरिक तुर्कमान संगीत की धुन पर गीत सुनाने और नाच दिखाने के लिए आयी। बाद में, उनके जाने के बाद, फ़ार्म के एक नेता ने स्वयं एक प्राचीन वाद्य को बजाते हुए हमें कई गीत गाकर सुनाये – दुख के गीत, हर्ष के गीत और प्यार के गीत। मैं मुलायम क़ालीन पर चौकड़ी मारे बैठा था। एक बुढ़िया धूप में सुखाये सरदों, मिठाइयों और मेवों से भरी प्लेटें लेकर आयी। इन्हें उसने मेरे सामने अर्धवृत्त में रख दिया। वह आदमी बीच-बीच में चाय की चुस्कियां लेता हुआ देर तक गाता रहा। हम काफ़ी रात को ही जाकर सो पाये।

अगली सुबह हम हवाई जहाज़ से अश्क़ाबाद वापस आ गये। उसी दिन तीसरे पहर मैं इज़्ज़त के स्टूडियो में अपने चित्र के लिए पोज़ करने चला गया, जिसे उन्होंने कुछ दिन पहले बनाना शुरू किया था। इज़्ज़त पुरानी बातों को याद करते हुए बातें करते जाते, फिर रुक जाते, मेरे चित्र पर नज़र दौड़ाते, फिर मेरी तरफ़ देखते, चित्राधार से पीछे हटते और फिर काम में निमग्न हो जाते। कुछ देर वह ख़ामोश रहते और उसके बाद यही सिलसिला फिर शुरू हो जाता।

उनके स्टूडियो में लेनिन के दो साल पहले बनाये एक बड़े चित्र ने एक दीवार को घेर रखा है। दूसरी पर उनके बुनकरों के, मेषपालों के, स्थिर वस्तुओं के, तुर्कमान भूमि की निधियों के बहुरंगी चित्र टंगे हुए हैं।

उन्होंने कहा, "हमारी क़ौम के लिए समाजवाद क्या है? एक ऐसे बड़े रेगिस्तान की कल्पना कीजिये, जिसमें एक पेड़ है। पानी की कमी की वजह से कुछ समय के बाद उसकी वृद्धि की कोई संभावना नहीं रहती है। लेकिन अगर पेड़ तक पानी पहुंचा दिया जाये, तो वह फूलता-फलता रहेगा। इसी तरह हमारी व्यवस्था जनता को पोषाहार का सतत प्रवाह प्रदान करती

रहती है और इससे वह मुकुलित होती रहती है। और हां, पानी की ही बात करें, तो जानते ही होंगे कि हमने क़राक़ूम रेगिस्तान में कितनी बड़ी सिद्धि की है – क़राक़ूम नहर, जिसने इस मृत, झुलसे हुए इलाक़े को जीवन प्रदान कर दिया है।

"पचास साल पहले स्त्री किसी पुरुष को अपना मुंह भी नहीं दिखा सकती थी – वह परंजा (बुरक़ा) पहनती थी। तेरह-तेरह साल की लड़कियों को पैसे लेकर शादी की चक्की में डाल दिया जाता था। और यह तो कल की ही बात है!" ये बातें कहते हुए उनकी गहरी आंखों में गर्व और जोश उतर आया था।

"जब मैं छः साल का था," इज़्ज़त ने आगे कहा, "तो मैं मिट्टी से लोगों और जानवरों की आकृतियां बनाया करता था। बाद में मैं चित्र बनाने लगा। उस वक़्त भी यह मुश्किल था – हमारे गांव के मज़हबी लोगों को मेरा तसवीरें बनाना पसंद नहीं था।

"समाजवादी विकास के प्रारंभिक वर्षों में लोग ट्रैक्टरों से डरते थे। बूढ़े सोचते थे कि उन्हें भूत-प्रेत चलाते हैं। हमारे सामने बहुत सी समस्याएं थीं, जिनमें एक तो यही थी कि हमारे यहां मज़बूत मज़दूर वर्ग नहीं था। ज्ञान के बिना, जिसकी इतनी ज़रूरत थी, हम प्रगति की बात सोच भी नहीं सकते थे।

"अब हमारी क़ौम की ज़िंदगी अच्छी हो गयी है। हमारा जनतंत्र बड़ा समृद्ध है – हमारे यहां कपास, तेल और प्राकृतिक गैस है। आज हमारा कार्यभार यह है कि अपनी नयी पीढ़ी को अपनी परंपराओं का आदर करना और यह याद रखना सिखायें कि अपनी क़ौम के लिए सुख हम किस क़ीमत पर लाये हैं।"

मैंने उनके स्टूडियो की दीवारों पर लटके चित्रों पर नज़र डाली। कला पत्रिकाओं में देखी उनकी प्रतिकृतियों से मुझे उनकी याद थी। मुझे याद आया कि उनके रंगों की उष्णता – हरे और नीले रंगों की अनुपस्थिति, आकृतियों की पृष्ठभूमि, जो अकसर अजीब रेतीले रंगों की होती थी – से मैं उलझन में पड़ जाया करता था। अब तुर्कमानिया को देखकर मैं उनके भूदृश्यों को समझ गया था – रेत के अंतहीन टीले, क़राक़ूम रेगिस्तान। मैंने यह बात उन्हें बतायी।

"मुझे लाल रंग प्रिय है," उन्होंने कहा। "मैं इसे हर कहीं देखता हूं। आपने देखा होगा कि हमारी बहुत सी स्त्रियां हमारी क़ौमी पोशाक पहनती हैं – लाल रंग की विभिन्न आभाओं के लंबे चोग़े। हमारी औरतों ने जिन क़ालीनों को इतनी शोहरत दिलायी है, वे भी लाल हैं। मुझे तो यही लगता है कि हम इसी रंग से और तेज़ धूप से घिरे हुए हैं। मुझे लाल रंग शक्ति देता है, रागात्मकता देता है। यह क्रांति का रंग है। मुझे अपनी कृतियों में इसका उपयोग करना बहुत प्रिय है।

"किसी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम पर फ़ैसला लेने के पहले हमारी सरकार, हमारी पार्टी हमें बुलाती हैं," उन्होंने कहा, "पार्टी सदस्य चित्रकारों को ही नहीं, बल्कि दूसरे ज़िम्मेदार, बुद्धिमान और अपने काम में अच्छे लोगों को। इस तरह जनता की सांस्कृतिक आवश्यकताओं और भावी योजनाओं के बारे में हमेशा कई संबद्ध और सुयोग्य व्यक्ति ही मिलकर फ़ैसले लेते हैं।"

"भविष्य के बारे में आपका क्या ख़याल है?" मैंने पूछा।

वह पीछे झुक गये, सामने आकाश में नज़र गड़ायी और फिर बोले, "यूनानियों ने संसार को महान दार्शनिक दिये थे और इटली ने अपने चित्रकार और मूर्तिकार। ऐसे वक़्त आते हैं कि जब लोगों की ओजस्विता और कर्मशक्ति की परिणति किसी महान अभिव्यक्ति में होती है। हमारा देश छोटा सा है। लेकिन इससे इसकी संभावना ख़त्म नहीं हो जाती कि हम न सिर्फ़ अपने लिए, बल्कि सारी दुनिया के लिए निधियां उत्पन्न करेंगे।"

अश्क़ाबाद में मेरा युवा कलाकारों के एक बढ़िया और प्रतिभाशाली समूह से परिचय हुआ। वे मेरे यहां सदा के संगी बन गये। और उनमें एक युवक ऐसा था कि जो मेरे प्रवास के दौरान कलाकारों के सामने, नौकरीपेशा लोगों के सामने, वास्तुकारों के सामने, सिनेकर्मियों के सामने, स्कूलों में बच्चों के सामने, सामूहिक फ़ार्म में और कला विद्यार्थियों के सामने दिये मेरे सभी व्याख्यानों में मौजूद मालूम होता था। मैंने अपने अमरीकी व्याख्यानों में दिखाने के लिए रंगीन पारदर्शियां बनायीं। मैं उनके घरों में, अंतरंग पार्टियों में गया। और जिस दिन हम अश्क़ाबाद से रवाना हुए, उनमें से सात सुबह छः बजे हमारे होटल अपने साथ कोन्याक और वोद्का की बोतलें, पनीर, रोटी, सासेज, टमाटर और अंडे लेकर पहुंच गये और हवाई अड्डे के छोटे से क़हवाघर में उन्होंने इन सभी चीज़ों को खोल दिया और हमने बढ़िया नाश्ता किया और अपने आख़िरी जाम पिये।

उनमें से एक ने कहा, "आपकी यात्रा के बाद हम अपनी कृतियों को नये नज़रिये से देखेंगे," और मेरे लिए इससे बड़ी कोई बात शायद ही हो सकती थी। जब हमें जहाज़ पर सवार होने के लिए बुलाया गया, तो दरवाज़े पर उन्होंने हमें सरदे, फल और सब्ज़ियां उपहार में दिये, जिन्हें हम अपने साथ सरदी की जकड़ में बंद मास्को ले आये।

७. जार्जिया

त्विलीसी

मैं जार्जिया कई बार जा चुका हूं। एक बार तो तव विलकुल अप्रत्याशित रूप में कि जव ललित कला संग्रहालय में अपनी प्रदर्शनी के उद्‌घाटन के लिए मास्को पहुंचने पर उसमें विलंव लग जाने पर मुझे त्विलीसी में विश्राम के लिए निमंत्रित कर लिया गया था।

मुझे याद है कि तव जार्जिया की राजधानी अपने विख्यात कवि शोता रुस्तावेली की आठवीं जन्मशती मनाने की तैयारियां कर रही थी। मेरे होटल के सामने ही मुख्य सड़क का पुनर्निर्माण हो रहा था। हर कहीं तैयारियों की धूम थी। एक मित्र ने वताया था, "वारहवीं सदी का यह व्यक्ति अपनी कविता 'वाघंवरधारी सामंत' के लिए सवसे ज़्यादा मशहूर है, जिसने मानवतावाद का उद्‌घोष किया था और अपने उस मध्य युग में अंतर्राष्ट्रीय मैत्री और मनुष्य के भाईचारे की आवाज़ उठायी थी।"

हमेशा ही की तरह मैं कलाकारों में था। वे मुझे हवाई अड्डे पर मिले, वे जानते थे कि मेरे लिए सवसे ज़्यादा दिलचस्प क्या होगा और उनमें से एक न एक अनिवार्यत: लगातार मेरे साथ रहता था। मैंने उनके कृतित्व को देखा और कलाकारों से उनके स्टूडियो में मिला।

मूर्तिकार मेराव वेद्‌र्जेनिश्वीली के स्टूडियो में, जो एक ऊंचे पठार पर है, जहां से सारे शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है, मैंने मास्को के एक पार्क में रुस्तावेली के प्रस्तावित स्मारक का प्रारूप देखा। यहां मैंने यह भी जाना कि शहर के एक मुख्य मार्ग पर मैंने कवि गुरमिश्वीली की जो सुंदर मूर्ति देखी थी, जो मुझे वहुत समय में अपनी देखी सवसे सुन्दर और कल्पनाप्रसूत मूर्तियों में एक लगी थी, इसी शिल्पी की कृति थी।

यहां से हम संग्रहालय गये, जहां निदेशक से सामान्य औपचारिक भेंट के वाद मनाना नाम की एक सुन्दर संग्रहाध्यक्ष ने हमारा ज़िम्मा ले लिया और जल्दी यह महसूस कर लिया कि मेरी तिथियों में, या हर ही चीज़ के वर्णन में, या गाइडों की आम वातें सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। हमने आराम से प्रारंभिक धातुशिल्प, प्रस्तरशिल्प और चेकान्का – धातु उत्कीर्णन कला की चीज़ों को देखा। चेकान्का सदियों पुरानी जातीय कला है, जिसमें धातु को पीछे की तरफ़ से पीटकर हलका उभार दिया जाता है और जिसे जार्जियाई कलाकार अव पुनर्जीवन दे रहे हैं। लेकिन जहां कुछ कलाकार इस कार्य को जातीय गौरव की भावना से कर रहे हैं, वहां – जैसा कि मैंने वाद में देखा, अभाग्यवश कुछ लोग इसे पर्यटक स्मृतिचिह्नों के स्तर पर ही रख रहे हैं।

धीरे-धीरे हम आधुनिक विभाग में आ गये। यहां एक कमरे में मैंने पहली वार उस कलाकार की कृतियों को देखा, जिसके वारे में मास्को में मेरे मित्रों ने मुझे वताया था – नीको पीरोस्मनिश्वीली। मनाना से मेरा कुतुहल छिपा न रह सका।

"मुझे प्रसन्नता है कि आपको उनका कार्य पसंद है," उसने कहा। "हमें वह वहुत प्रिय है। वह एक सीधे-सादे आदमी थे – किसान के वेटे। वचपन में पहले उन्होंने भेड़ें चरायीं और

बाद में कुछ समय तिफ़लीस (वर्तमान त्विलीसी) में घरेलू नौकर की तरह काम किया। बचपन में वह स्थानीय साइनबोर्ड बनानेवालों को काम करते देखा करते थे। अंत में वह भी साइनबोर्ड पेंटर बन गये और शहर-शहर जा-जाकर दूकानदारों के साइनबोर्ड बनाने लगे और शराबख़ानों और रेस्तरांओं की दीवारों पर चित्र बनाने लगे। उनका कार्य अधिकाधिक ध्यान आकर्षित करने लगा और अंत में जार्जियाई चित्रकार समाज ने उन्हें अपनी एक सभा में बुलाया।

"लेकिन वह तो उन लोगों के लिए एक अजनबी थे। उनके जीवन के अनुभव आम लोगों, मज़दूरों, किसानों, दूकानदारों के निकट थे। उनमें बूर्जुआ वर्ग और अमीरों की संगत में रहनेवाले व्यावसायिक कलाकारों जैसी कृत्रिमता और दुनियादारी नहीं थी। कहते हैं कि सभा की कार्रवाई के बाद उन्होंने कहा, 'भाइयो, असल में हमें जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह यह कि शहर के बीच में ही, हर किसीके घर से पैदल जाने लायक़ दूरी के भीतर लकड़ी का एक बड़ा सा मकान हो, जहां हम लोग एक साथ इकट्ठे हो सकें। हम उसमें एक बड़ी सी मेज़ रख देंगे और उसपर एक समोवार रख देंगे। फिर हम उसके चारों तरफ़ बैठकर चाय पीते-पीते कला और आम लोगों के बारे में ख़ूब बातें कर सकते हैं। लेकिन आप तो यह नहीं चाहते। आप लोग तो और चीज़ों की बातें करते हैं और आपकी बातें मेरे लिए अनजानी हैं।

"उनकी इन कलाकारों के साथ नहीं पटी, जिनकी ज़िंदगी का ढंग और शौक़ उनके लिए परकीय थे। वह एकाकी रहे और लोगों के चित्र बनाते और उनकी ज़िंदगियों को अनुभव करते रहे – मछुए, किसान, अंगूरों की चिनाई, सुरानिर्माण, फ़सल। वह जार्जियाई अभिजातों का उनके मेलों और रंगरलियों में, और आम आदमियों का उनके काम में चित्रण करते। स्वयं-शिक्षित होने और साइनबोर्ड बनाने के मूलतत्वों के ज्ञान के कारण उनके चित्र स्पष्ट और सीधे हैं। वह सस्ते तैलरंगों से काले मोमजामे पर चित्र बनाते थे। ख़ुद उन्होंने समुद्र कभी देखा नहीं, फिर भी और लोगों से सुने क़िस्सों के आधार पर उन्होंने समुद्रों और तूफ़ानों के दृश्य भी बनाये हैं। उन्होंने भारत में शिकार के, जिराफ़ों के और दूसरी चीज़ों के चित्र बनाये हैं। वह ५६ साल की उम्र में अपनी किसी यात्रा के दौरान मृत्यु को प्राप्त हुए और यह ज्ञात नहीं है कि वह कहां दफ़नाये गये थे।"

मैंने एक और छोटा सा संग्रहालय देखा – चित्रकार कहाबाद्ज़े का संग्रहालय, जो इस शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में – फ़्रांसीसी चित्रकारों के प्रयोगों के बाद – प्रयोगवादी चित्रकला के प्रवर्तकों में एक थे। उन्होंने कुछ समय पेरिस में निवास और काम किया था। वहां से उनकी ख्याति संयुक्त राज्य अमरीका तक पहुंच गयी, जहां सुप्रसिद्ध अमरीकी कला-इतिहासज्ञ और समीक्षक कैथरीन ड्रायर ने उनके कई चित्रों को ब्रूकलिन संग्रहालय के लिए तीसरे दशक के प्रारंभ में आयोजित प्रदर्शनी में शामिल किया था। इनमें से कुछ चित्र ब्रूकलिन संग्रहालय के पास ही रह गये हैं। वह १९२७ में अपनी जन्मभूमि जॉर्जिया लौट आये और उन्होंने कलाकारों की बढ़ती हलचलों में अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

एक दिन मेरे मित्र मुझे प्रसिद्ध उद्यानविज्ञानी ममूलाश्वीली से मिलाने के लिए म्त्स्ख़ेता ले गये। मैंने इस आकर्षक वृद्ध के साथ उनके फूलों के बाग़ की सैर की और बाद में, उनके

घर पर, उनकी अतिथि पुस्तिका में हस्ताक्षर किये, जो सोवियत संघ और संसार के कितने ही भागों से आनेवाले लोगों के नामों से भरी हुई है।

जब मैं वापस आने लगा, तो वह मेरे साथ लकड़ी के फाटक तक आये और अपने फूलों की तरफ़ देखते हुए बोले, "मेरे गुलाबों के बाग़ में कितनी शांति है! हमारी दुनिया के सभी लोगों को ऐसी ही शांति मिलनी चाहिए।" यह बात, यह भावना अपनी यात्राओं के दौरान बार-बार मेरे सुनने और देखने में आयी है।

सामूहिक चाय फ़ार्म में

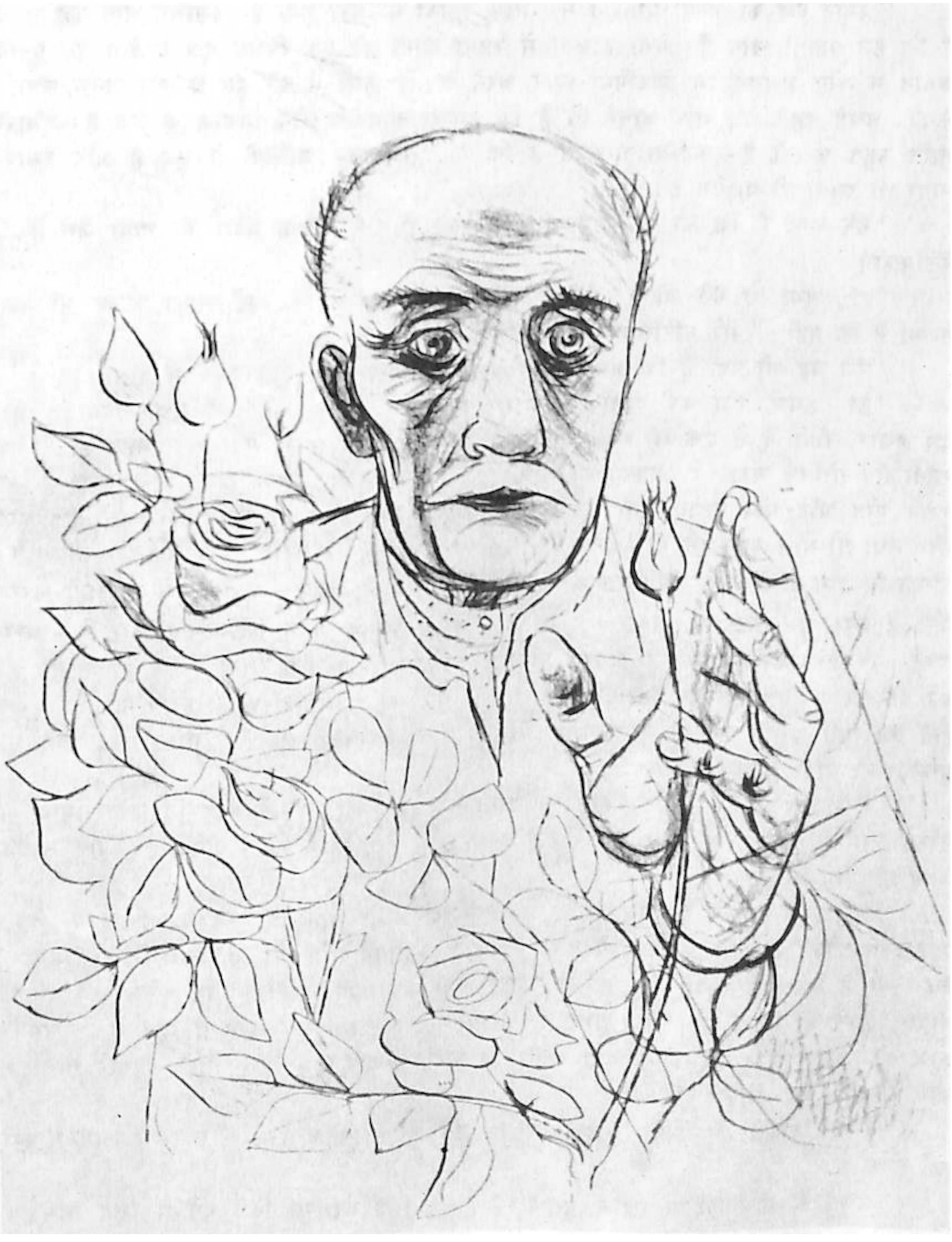
मैं जार्जियाई राजधानी में कुछ दिन ठहरा। फिर मैं बतूमी गया। मुझे स्टाकहोम में विश्व शांति परिषद की बैठक के बाद अमरीकी प्रतिनिधिमंडल के साथ यहां की एक पुरानी यात्रा की याद आ गयी। हम में से कई को सोवियत संघ की तीन हफ़्ते की सैर के लिए बुलाया गया था, जिसके दौरान हम कई जनतंत्रों में घूमे थे और सामूहिक फ़ार्म के मेहमान बनकर एक दिन के लिए यहां भी आये थे। मुझे याद है कि अपने दुभाषियों के साथ कई कारों में हम यहां पहुंचे थे। एक बड़ी इमारत के बाहर कुछ लोग इंतज़ार कर रहे थे। हमें चाय की झाड़ियां दिखायी गयीं। स्त्रियां अपनी उंगलियों से तेज़ी से पत्तियां चुन रही थीं। उनकी बग़लों में बड़ी-बड़ी टोकरियां लटकी हुई थीं। यहां से हमें एक तरह से कांच में बंद बरामदे में ले जाया गया।

यहां एक लंबी मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजनों की प्लेटें और शराबों और कोन्याक की बोतलें सजी हुई थीं। हम अपने मेज़बानों के साथ बैठ गये। अपरिहार्य तमादा मेज़ के सिरे पर मुख्य स्थान पर विराजमान था। वह ऐसे समारोहों में संचालक की भूमिका अदा करता है। वह लोगों से भाषण देने और जाम तजवीज़ करने के लिए कहता है और शरारत में "निरंकुश" बनकर वह किसीको बोलने की अनुमति देने से इन्कार भी कर सकता है। वह रोब तो जमाता है, पर अगर बातचीत ठंडी पड़ जाये, या दावत का रंग हलका पड़ने लगे, तो वह उसमें फिर से गरमी लाने के लिए भी मौजूद होता ही है।

मेज़ पर मेरी बग़ल में एक भीमकाय मगर स्नेही जार्जियाई बैठा हुआ था। उसके बड़े से सिर के साथ लंबी सी नाक और काली-काली मूंछें थीं, जिससे वह बड़ा रोबीला लग रहा था। वह निरायास बातें कर रहा था।

उसने आंकड़ों से शुरूआत की। "हमारे जनतंत्र की आबादी चालीस लाख से ज़्यादा है। पश्चिम में वह काले सागर तक फैला हुआ है। काकेशियाई पर्वतमाला उसकी पूर्व की ठंडी हवाओं से रक्षा करती है और यही हमारे जलवायु की मृदुलता का कारण है। हमारा देश पहाड़ों और घाटियों, पुराने जंगलों, बढ़िया चरागाहों और पहाड़ी नदियों का देश है।

"हमारा देश संसार के प्राचीनतम देशों में एक है। हमारी वर्णमाला ई० पू० सातवीं सदी में विकसित हुई थी और ई० पू० चौथी सदी में हमारे यहां ऐसे विशेष विद्यालय थे कि जिनमें यूनान के लोग भी अध्ययन करने के लिए आया करते थे।



"हमारे देश का अस्सी प्रतिशत से अधिक पहाड़ों से घिरा हुआ है, इसलिए आप कह सकते हैं कि हम पहाड़ी लोग हैं। ऐसी हालतों में रहना लोगों को एक विशेष गुण दे देता है। पुराने ज़माने में लोग अलग-थलग ज़िंदगियां बसर करते थे। वे कुलों में बंटे हुए थे और उनमें लड़ाई-झगड़े चलते रहते थे। आप जानते ही हैं कि हमारी क़ौम के लोग मिज़ाज के तेज़ हैं। हमारी जाति बहुत पुरानी है – कई लोग कहते हैं कि यह प्राचीनतम जातियों में एक है और हमारी भाषा भी इतनी ही प्राचीन है।"

"मैंने सुना है कि आपकी भाषा में कुछ शब्द स्पेन के बास्क प्रदेश की भाषा जैसे हैं," मैंने कहा।

"हां, सुना तो मैंने भी है, लेकिन यह नहीं कह सकता कि कोई इसका कारण भी बता सकता है कि नहीं," मेरे परिचित ने जवाब दिया।

"मैंने यह भी पढ़ा है कि आपके लोग बहुत-बहुत उम्र तक जीते हैं," मैं बोला।

"हां, हमारे यहां कई दीर्घायु लोग हैं, विशेषकर आदमी," उसने उत्तर दिया। "हर दस हज़ार लोगों में से एक सौ साल से ज़्यादा जीता है। ऐसे लोगों से मिलना बहुत ही रोचक रहता है। सोचिये ज़रा, वे आपको सौ साल पहले जो हुआ था, उसके क़िस्से सुना सकते हैं, वे पुराने गीत और लोक-कथाएं सुना सकते हैं, उनमें से कुछ बहुत ही बढ़िया क़िस्सागो हैं। कुछ लोग सवा सौ साल या उससे भी ज़्यादा उम्र तक पहुंच जाते हैं। वे स्वस्थ, हृष्टपुष्ट और सक्रिय हैं। उनका विश्वास है कि सतत सक्रियता और काम की बदौलत वे तंदुरुस्त रहते हैं। वे घर बनी शराब पीते हैं और ख़ूब चटपटा, मसालेदार खाना खाते हैं। उनके बहुत बड़े-बड़े परिवार हैं – उनके बच्चे, बच्चों के बच्चे – और इसी तरह पीढ़ियों तक सिलसिला चला जाता है। मेरी एक ऐसे ही बड़े परिवार से नातेदारी है। साल में एक बार वे सभी लोग पारिवारिक पुनर्मिलन के लिए एकत्र होते हैं। ऐसा कुनबा तो छोटे-मोटे गांव जैसा ही होता है – सभी लोगों के नाम याद रखना भी मुश्किल हो जाता होगा!"

"मेरी बड़ी इच्छा है ऐसे किसी पुनर्मिलन को देखने की," मैंने कहा कि तभी तमादा ने मुझसे जाम पेश करने के लिए कहा। मैंने मित्रता के लिए जाम की तजवीज़ की और सभीने जाम टकराये।

"ज़ारशाही रूस में जार्जिया को एक उपनिवेश माना जाता था – कच्चे मालों का स्रोत। यहां रूसी फ़ौजी बस्तियां आबाद की गयी थीं और अर्मीनियाइयों और जार्जियाइयों और आज़र-बैजानियों में लगातार झगड़े पैदा करवाये जाते थे। आप जानते ही होंगे कि स्कूलों को हमारी भाषाएं पढ़ाने की मनाई थी। फिर बेहद ग़रीबी थी – लोग इतनी बुरी तरह से रहते थे कि उसका आज की हालतों से मुक़ाबला भी नहीं किया जा सकता। लेकिन अब आप यहीं – हमारे सामूहिक फ़ार्म को ही – देख लीजिये!"

मैंने उसे टोकते हुए कहा, "ज़रा यह बताइये कि सामूहिक फ़ार्म और राज्य फ़ार्म में क्या फ़र्क़ होता है?"

"सामूहिक फ़ार्म को कोलखोज़ भी कहते हैं। जब वे स्थापित किये गये थे, तब सामूहिक



फ़ार्म के लिए आवश्यक चीज़ों का समाजीकरण कर दिया गया था, लेकिन हर व्यक्ति के पास अपने निजी उपयोग के लिए एक गाय, दस भेड़ों और एक सब्ज़ी बाग़ को रहने दिया गया था। इनकी उपज को वह खुले बाज़ार में बेच सकता है।

"ज़मीन राज्य की है, लेकिन वह सामूहिक फ़ार्मों को निःशुल्क दे दी गयी है। हर सामूहिक फ़ार्म के अपने नियम हैं। फ़ार्म का प्रबंध सामूहिक कृषकों की सामान्य सभा करती है, लेकिन सामान्य सभाओं के बीच की अवधि में यह कार्य एक चुनी हुई समिति करती है, जिसका अध्यक्ष सामूहिक फ़ार्म का प्रधान होता है। कोलख़ोज़ के मुनाफ़े को अपने-अपने काम की मात्रा के अनुसार सदस्यों में बांट दिया जाता है।

"राज्य फ़ार्म कारख़ाने या गोदाम जैसा होता है। वह अनाज, औद्योगिक फ़सलें, चारा, आदि-आदि पैदा करता है। उसके कर्मचारियों को नियमित वेतन दिया जाता है।"

तभी हमारे एक मेज़बान ने जाम तजवीज़ किया और फिर गिलास टकराये और हंसी के फ़ौवारे छूटे। रसोई से सामूहिक फ़ार्म की स्त्री सदस्य लगातार खाने की चीज़ों की नयी-नयी प्लेटें ला रही थीं। मगर उनमें से एक भी हमारे साथ नहीं बैठी – मेज़ पर सिर्फ़ आदमी ही थे!

हमारे दल में तीन केलीफ़ोर्नियाई स्त्रियां भी थीं। जैसे-जैसे वक़्त बीतता गया, शराब ढलती गयी और नये-नये जाम तजवीज़ किये जाते रहे। तभी एक जाम जार्जिया की सुंदर नारियों के लिए भी तजवीज़ किया गया। हमारे दल की एक स्त्री ने तमादा से बोलने की अनुमति मांगी। अनुमति मिलने पर वह खड़ी हुई और बोली कि अमरीकी स्त्री के नाते वह इस बात को नहीं समझ पा रही है कि हमारी मेज़बानियां सिर्फ़ हमें चीज़ें परोस क्यों रही हैं, जबकि पुरुष मज़े ले रहे हैं।

"यह नहीं हो सकता कि पुराना रिवाज, पुराना पूर्वाग्रह अब भी है। मैं तब तक नहीं बैठूंगी कि जब तक आपकी स्त्रियां भी दावत में शरीक नहीं होती हैं।"

पुरुष बेचैन नज़र आने लगे, ज़रा तनाव सा पैदा हो गया, लेकिन तमादा ने बात को संभाल लिया और उसने स्त्रियों से कहा कि वे रसोई से आ जायें और हमारे साथ बैठ जायें। उनके लिए और कुरसियां लगायी गयीं और कई औरतें हमारे साथ शामिल हो गयीं। लेकिन मैं देख सकता था कि वे किस तरह अपनी आंखें नीचे किये ख़ामोश, कुरसियों के किनारों पर संकोच से बैठी हुई हैं।

जब हम रवाना होने लगे, तो एक तरुणी हमारी अमरीकी वक्ता के पास आयी और उसका आलिंगन करके मुसकराते हुए बोली, "यह स्थिति हमारे आदमी नहीं पैदा करते हैं, बल्कि आम तौर पर इसका दोष स्त्रियों पर ही है। उनमें से कुछ अब भी पिछड़ी हुई हैं, लेकिन नयी पीढ़ी ऐसी नहीं है।"

विदाई

"आप हमारे टेलीविज़न पर आना पसंद कीजियेगा?" मेरे एक मेज़बान ने पूछा।

"बेशक," मैंने जवाब दिया। "मुझे बहुत ख़ुशी होगी।"

बाद में मुझे टेलीफ़ोन से सूचित किया गया कि मेरा कार्यक्रम तीसरे पहर टेप किया जायेगा।



एक लेखक मित्र के साथ हम लोग रज्जूमार्ग से अविस्मरणीय आनंद का अनुभव करते हुए शहर के ठीक बाहर पहाड़ी के शिखर पर पहुंचे। यहां से टेलीविज़न स्टूडियो तक का छोटा सा फ़ासला हमने पैदल तय किया। यहां एक अधिकारी ने हमारा स्वागत किया और इसके बाद आधे घंटे के साक्षात्कार में मैंने अमरीका में ज़िंदगी, हमारे कला-जगत और जार्जिया के बारे में अपनी छापों के बारे में बताया।

हम कमरे से निकले ही थे कि एक आदमी ने आकर मेरे हाथ में एक लिफ़ाफ़ा दे दिया।

"यह क्या है?" मैंने पूछा।

"आपका मानदेय," उसने जवाब दिया।

मैंने कहा, "देखिये, मैं आपका अतिथि हूं। आप लोगों ने मेरे लिए सभी सुविधाओं की व्यवस्था की है और मुझे आप किसी भी चीज़ के लिए ख़र्च नहीं करने देते हैं। क्या मुझे कम से कम यह छूट भी नहीं दीजियेगा कि मैं इस कार्यक्रम को अपना हिस्सा मानकर आपकी मेहमान-दारी का कुछ जवाब दे सकूं?"

"जी नहीं," उसने जवाब दिया। "नियम यही है – आपको अपने समय के लिए मुआवज़ा दिया जाना चाहिए।"

"भाई," मैंने कहा, "संयुक्त राज्य अमरीका में अगर हम कलाकारों को रेडियो या टेलीविज़न पर समय दिया जाता है, तो हम अपने को जनता से परिचित होने का अवसर दिये जाने के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। और उसके लिए हमें पैसे दिये जाने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता!"

हम इमारत के बाहर आये, तो अंधेरा हो चुका था। नीचे शहर की बत्तियां जगमगा रही थीं।

"नीचे पैदल चलना चाहेंगे?" मेरे साथी ने पूछा।

मैं सहमत हो गया। आधा रास्ता चलने के बाद हम एक छोटे से क़ब्रिस्तान के सामने पहुंच गये। यहां लेखक ग्रिबोयेदोव की समाधि है।

मेरे साथी ने कहा, "और यह वह जगह है, जहां स्तालिन की मां दफ़न हैं।"

बाद में मैं एक प्राचीन गिरजे के कुछ चित्र बनाने के लिए फिर म्तस्खेता चला गया। आंगन में दीवार की छाया में चार लोग घास पर पिकनिक का मज़ा ले रहे थे। उनके बीच एक सफ़ेद कपड़ा बिछा हुआ था, जिस पर गोश्त, रोटी और शराब की बोतलें थीं। उन्होंने मुझे देखा और उनमें से एक – घुंघराले बालों और बड़ी-बड़ी काली मूंछोंवाला लंबा जार्जियाई मेरे पास आया।

"आइये, हमारा साथ दीजिये," उसने कहा। मैंने जाकर उन लोगों से हाथ मिलाये। यह जानने पर कि मैं न्यूयार्क से आया हूं, उन में से एक ने अपने साथियों से मुख़ातिब होकर कहा, "शैंपेन लानी चाहिए!"

"कृपया नहीं," मैंने कहा। "मैं आप जो यहां ले रहे हैं, उसीमें शामिल होना चाहूंगा और मैं गिलास भर आपकी शराब पियूंगा।"

और मैं सारा तिपहर उनके साथ बैठा-बैठा बातें करता, खाना खाता और शांति, हमारे देशों के लोगों में दोस्ती, अच्छी ज़िंदगी, महान जार्जियाई कवि शोता रुस्तावेली और अमरीकी

कवि वाल्ट ह्विटमैन (जिसकी कविता से वे परिचित थे) के नाम उनकी बढ़िया शराब के अंतहीन जाम पीता रहा। हमने चांद के लिए एक जाम पिया, "यह उनके रास्ते को रोशन करे, जो अपने घर वापस जा रहे हैं।"

इस तरह मैंने अपनी आख़िरी शाम जिन लोगों से मेरी मुलाक़ात हुई थी, उनके लिए स्नेह का अनुभव करते हुए शराब पीते गुज़ारी।

अगले दिन मैं त्बिलीसी लौट आया और वहां से मास्को वापस आ गया।

अब हमारे पास कुछ ही दिन और रह गये थे और जल्दी ही हम अपने फ़्लैट में सामान की पैकिंग में लग गये। मेरे लिए पैकिंग करना उदासी का समय होता है – इसका मतलब है अपने दोस्तों से जुदाई, उन जगहों से जुदाई, जो हमारे लिएँ महत्वपूर्ण हो गयी थीं और जीवन के एक विशेष गुण, उसकी एक खूबी से, अलहदगी। कारण यह था कि सोवियत संघ में हमने जो एक साल गुज़ारा था, उसमें ज़िंदगी शांतिमय, सुखद और अकसर प्रेरणादायी रही थी।

आख़िरी कुछ दिनों में मैं कई लोगों के पास गया। पहले मैं वोलखोन्का सड़क पर ललित कला संग्रहालय गया और उसकी निदेशक श्रीमती अंतोनोवा से विदाई ली। कुछ साल पहले यहां मेरे चित्रों की एक प्रदर्शनी हुई थी और इसलिए इन बातों की याद से कि किस तरह मेरे चित्र लटकाये गये थे, औपचारिक उद्घाटन समारोह, दर्शकों की भीड़, उनमें युवाओं की बड़ी संख्या और उनमें आपस में हुई एक बहस की याद से मैं इस जगह से बड़े सामीप्य का अनुभव करता हूं।

"हम इस तरह के चित्रों को जानते हैं – ये हमारे लिए नये नहीं हैं," एक युवती ने कहा था, जो प्रत्यक्षतः कला-छात्रा थी।

"नहीं," एक युवक ने गरमी से जवाब दिया था। "हम कलाकार की रचनाओं, रंग-विन्यास की विशिष्टता, विषय के प्रति दृष्टिकोण और मानवतावाद से बहुत कुछ सीख सकते हैं।" और लोग भी इस बहस में शामिल हो गये थे।

मैं इन लोगों से कुछ दूर खड़ा यह आशा कर रहा था कि मुझे पहचाना नहीं जायेगा और इसके लिए आभार का अनुभव कर रहा था कि मेरे कृतित्व ने इतनी गरमागरम बहस पैदा की है।

लीला और मैंने आख़िरी बार मेत्रोपोल होटल के शानदार भोजनकक्ष में खाना खाया।

मैं मास्को मेत्रो के क्रोपोत्किन्स्काया स्टेशन पर उतर गया। मुझे यह स्टेशन डिज़ाइन में सबसे सुंदर स्टेशनों में एक लगता है – छत तक जाते संगमर्मर के सादे स्तंभ, जो शांत भव्यता का बोध कराते हैं। यहां से सोवियत कलाकार संघ की इमारत तक कुछ ही देर का पैदल रास्ता है – वृक्षाच्छादित गोगोल बुलवार (वीथिका) होकर। यहां लोग बेंचों पर बैठे पढ़ रहे थे, बुढ़ियां बच्चों के साथ टहल रही थीं या बैठी हुई थीं, शतरंज के वृद्ध खिलाड़ियों ने पूरी की पूरी बेंचों पर क़ब्ज़ा कर रखा था।

ग्रेनाइट की कुछ सीढ़ियां मुझे संकरी-सी गली में सामने की तरफ़ स्तंभों से अलंकृत एक पीली इमारत के सामने ले आती हैं। इस भव्य भवन पर पत्थर का एक फलक लगा हुआ है, जो इसकी याद दिलाता है कि महान लेखक तुर्गेनेव यहां अकसर आया करते थे। मास्को शहर

भर में फैली इतनी और पुरानी इमारतों की ही तरह यह भवन भी कभी एक धनी आदमी का निजी निवास हुआ करता था। अब ये सभी इमारतें किसी न किसी जन-संगठन की सेवा में हैं – कलाकार संघ, शांति समिति, मैत्री भवन, आदि-आदि।

प्रवेशकक्ष के सामने ही लाल क़ालीन बिछा ज़ीना है। क्लोक रूम और स्वागत-अधिकारी दाहिनी तरफ़ हैं। मेरी स्नेहपूर्वक अभ्यर्थना की जाती है। अब तक मैं एक परिचित और स्वीकृत अतिथि बन चुका हूं। मैं ऊपर विदेश विभाग में तान्या, गलीना, मरीना और लेना को अलविदा कहने के लिए जाता हूं – ये सुयोग्य युवतियां ही इस शानदार विभाग का संचालन करती हैं, जो पत्रव्यवहार, प्रतिनिधिमंडलों और प्रदर्शनियों के ज़रिये शब्दशः सारी ही दुनिया से संपर्क रखता है।

फिर मैं इस लंबी इमारत के दूसरे छोर पर, अध्यक्ष पोनोमर्योव और प्रथम सचिव ताईर सलाख़ोव के कार्यालयों में जाता हूं। दोनों ही श्रेष्ठ कलाकार हैं, जिन्हें सदस्यों ने इन उत्तर-दायित्वपूर्ण पदों पर चुना है। ताईर आज़रबैजानी हैं – धीरगामी, प्रभावशाली और तौर-तरीक़े में शांत। मैं यहां आराम और अपनापन महसूस करता हूं। यहां फिर मर्मस्पर्शी विदाई दी जाती है।

"फिर आना, एंटन," ताईर ने कहा।

"जल्दी ही आना," पोनोमर्योव कहते हैं।

यहां से मैं सोवियत शांति समिति के अध्यक्ष कोतोव के पास जाता हूं। हम कितनी ही सभाओं और सम्मेलनों में – मास्को में, सोफ़िया में, स्टाकहोम में – साथ रहे हैं। उनके कार्यालय में घंटे भर हम सामयिक घटनाओं की चर्चा करते रहते हैं।

बाद में मैं कुछ दूर पैदल चलकर मैत्री भवन जाता हूं, जो कितनी ही वास्तु शैलियों का एक भयानक मिश्रण है। (क्रांति के प्रारंभिक दिनों में यह कुछ दिन बोल्शेविकों से लड़ रहे अराजकतावादियों के एक गिरोह का गढ़ रहा था। बाद में लाल सेना ने उन्हें बिना ख़ून-ख़राबे के यहां से खदेड़ भगाया था।) यहां फिर मैं सोवियत-अमरीकी संबंध संस्थान के लोगों से विदा लेता हूं – ऐसे लोग, जिनसे मेरा परिचय ख़ासा गहरा हो गया था।

फिर मैं यह महसूस करते हुए कि "फिर मिलेंगे" कह रहा हूं, लाल चौक और क्रेमलिन का एक आख़िरी चक्कर और लगाता हूं। यह अंतिम विदा नहीं होनेवाली है। मैं यहां पहले भी इतनी बार आ चुका हूं। मैं फिर कभी इन सुंदर गिरजों, चमचमाते सुनहरे गुंबदों, गढ़ी की सादी ईंट की दीवारों, मशहूर विशाल घंटे और नेपोलियन से छीनी तोपों को आकर देखूंगा, और फूलों की क्यारियों के बीच बनी ग्रेनाइट की विचारमग्न लेनिन की मूर्ति को। मैं बोल्शोई थियेटर के सामने एक बेंच पर बैठ जाता हूं। यहां, इन स्तंभों के पीछे, कांस्य अश्वों के नीचे मैंने 'बोरीस गोदुनोव' और 'होवानश्चीना' को सुना था, उलानोवा, 'हंस सरोवर' बैले और आधुनिक 'स्पार्ताकस' को देखा था।

मैं जानता हूं कि जल्दी ही मेरे वर्तमान जीवन का सातत्य भंग हो जायेगा और यह सब एक अनुभूति, एक याद बनकर रह जायेगी, और यह जानते हुए मैं हर अंतिम अनुभव को अति लालसा से निगलता हुआ और देखना, और प्रचंडता से अनुभव करना चाहता हूं।

आखिरी शाम को कई दोस्त अलविदा कहने के लिए आये। लीला ने मास्को में हम लोगों का आखिरी खाना पकाया।

सबसे पहले वीक्तोर ही आये। हमेशा ही की तरह इसके लिए कि कहीं किसी तरह हमारे लिए मददगार तो नहीं हो सकते हैं। फिर उनकी पत्नी रीमा आयीं, जो अस्पताल में संवेदनाहरण-विज्ञानी हैं।

वलेरिआन नेस्तेरोव एक और रीमा – अपनी पत्नी – के साथ आये (वे लेग वुडस्टाक में हमारे घर आ चुके थे, जब नेस्तेरोव वाशिंगटन में सोवियत दूतावास में सांस्कृतिक संबंधों के प्रथम सचिव थे)।

यूरी प्रोकोफ़्येव और येव्गेनी सीनीत्सिन एक दोस्त के साथ आये। यूरी शादीशुदा हैं और पिछले कुछ सप्ताह से हम सभी उनके बेटे के जन्म की प्रतीक्षा कर रहे थे, क्योंकि इस बार उन्हें पक्का विश्वास था, लेकिन इसके बजाय उन्हें और उनकी पत्नी को एक और बेटी – कात्या – मिल गयी। सीनीत्सिन बड़े स्नेही व्यक्ति हैं – ऐसे रूसी, जो अपना स्नेह खुलकर देते हैं और अपनी भावनाओं को दिखाने के लिए तैयार रहते हैं।

प्रतिभाशाली कलाकार और राजनीतिक व्यंग्यचित्रकार अंद्रेई क्रिलोव आते हैं, जो कुक्रिनिक्सी के नाम से विख्यात कलाकार त्रिमूर्ति में से एक के बेटे हैं। क्रिलोव 'क्रोकोदील' के कला निदेशक हैं और मैंने कई बार उनकी पत्रिका के लिए चित्र बनाये हैं। वह अपनी पत्नी नीना के साथ आये हैं, जो डाक्टर हैं। विदाई भेंट के रूप में वे एक सुंदर व्यंग्यचित्र लाये हैं। वह इतना सुदर और मज़ेदार है कि हर कोई हंसी से दोहरा हो जाता है।

युवा कलाकार और अध्यापक अनातोली अंद्रियानोव आये हैं। कई साल पहले उन्दोंने अपने शोध प्रबंध के लिए मेरे कलाकार्य के बारे में जानकारी पाने की इच्छा से मुझे पत्र लिखा था। उसके बाद, मास्को में हम अच्छे दोस्त बन गये हैं।

और अंत में ओल्गा आती हैं, कलाकार संघ में काम करनेवाली हमारी बहुत ही अच्छी और प्रिय मित्र, जिन्होंने मेरा और लीला का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा है।

इन बड़े-बड़े लोगों के बीच मुझे बेहद खुशी हो रही थी। ये सभी हमारे मित्र थे – प्रिय और सदा के मित्र। और अपनी खुशी में हमेशा की तरह मैंने काफ़ी शराब पी और अंत में एक रूसी नाच भी दिखा दिया, जो पूर्ण संतोष का परिचायक था।

रात को साढ़े ग्यारह बजे अपने सारे सामान के साथ हम सभी तीन टैक्सियों पर सवार हुए और स्टेशन पहुंच गये। हमने लेनिनग्राद जानेवाली मशहूर रात की ट्रेन 'सुर्ख़ तीर' में अपना डिब्बा ढूंढ़ा। रवानगी के कुछ ही पहले, आलिंगनों और चुंबनों के बीच, वीक्तोर ने गाना शुरू कर दिया। औरों ने भी गीत के बोल पकड़ लिये और गाड़ी रवाना हुई, तो हमारे दोस्त ट्रेन के दरवाज़े के साथ-साथ, जहां हम खड़े रो रहे थे, प्लेटफ़ार्म पर चलने लगे। वे तब तक उसके साथ चलते रहे कि उसने रफ़्तार पकड़ ली और हम गीत के अंतिम विदा-शब्द सुनते रहे।

अगली सुबह अस्तोरिया होटल के हमारे कमरे में टेलीफ़ोन बजा। वीक्तोर मास्को से फ़ोन कर रहे थे।

"एंटन" उन्होंने कहा, "जब गाड़ी चली गयी और हम ख़ाली प्लेटफ़ार्म पर खड़े रह गये, तो हम जान गये कि अब हम यहां से अपने-अपने रास्ते जा ही नहीं सकेंगे। इसलिए हम सभी अंद्रेई क्रिलोव के स्टूडियो चले गये और वहां हमने कविता पाठ किया और हम गाते रहे और तुम्हारे और लीला के लिए जाम पीते रहे। आख़िर जब हम घर गये, तो सूरज निकलने लगा था।"

लेनिनग्राद में कुछ दिन और एक बार फिर हम 'लेर्मोंतोव' पर सवार हो गये। फिर दो हफ़्ते का विश्राम, फिर कप्तान ओगानोव और जहाज़ के कर्मियों – पुराने मित्रों – से मुलाक़ात। आख़िर, एक दिन अलम सवेरे, पौ फटने के समय, हमें दूरी पर ज़मीन दिखाई दी। और कुछ ही देर बाद हमारे जहाज़ ने न्यूयार्क बंदरगाह के जहाज़ घाट पर लंगर डाल दिया था।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आप के विचार जान कर आप का अनुगृहीत होगा। आप के अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

प्रगति प्रकाशन,
ज़ूबोव्स्की बुलवार, १७,
मास्को, सोवियत संघ।



एंटन रेफ़ेझिये

अमरीकी कलाकार एंटन रेफ़ेझिये का जन्म १९०५ में हुआ था। उन्होंने प्रोवीडेंस (संयुक्त राज्य अमरीका), पेरिस और म्यूनिख़ के कला विद्यालयों में कला का अध्ययन किया। चौथे और पांचवें दशकों में उन्होंने कई सर-कारी इमारतों के लिए भित्तिचित्र और मोज़ाइक तैयार किये। १९३९ में न्यूयार्क की विश्व प्रदर्शनी में अपने सोलह फलकों में उन्होंने बड़ी ख्याति अर्जित की। बाद में वह चित्रांकन करने लगे।

रेफ़ेझिये ने अन्तर्राष्ट्रीय शांति आंदोलन में महत्वपूर्ण कार्य किया है और वह विश्व शांति परिषद के सदस्य हैं। मास्को में १९६९ में हुई "शांति-संघर्ष में व्यंग्य" विषयक पहली अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में उन्हें प्रथम पुरस्कार और शांति संघर्षकर्ता स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था। उनकी सामाजिक गतिविधियां और सर्जनात्मक कार्य मानवतावादी आदर्शों, सामाजिक न्याय और प्रगति की ओर लक्षित हैं।

रेफ़ेझिये सारे सोवियत संघ में घूम चुके हैं। 'सोवियत संघ की तसवीर' मास्को, लेनिनग्राद, काकेशिया और मध्य एशिया की और अत्यधिक भिन्न-भिन्न काम करनेवाले लोगों से उनकी भेंटों की छाप का एक कलात्मक निष्कर्ष है। लेखक-कलाकार सोवियत संघ के विभिन्न भागों के सुदूर अतीत और वर्तमान जीवन के सजीव स्पंदनों को अनुभव और व्यक्त करने में पूरी-पूरी तरह सफल रहे हैं। उनके चित्रों ने उनके इस वर्णन को और भी सजीवता, सटीकता और सामयिकता प्रदान कर दी है।